श्री

सुबोधपत्रिका.

(उत्तरार्द्ध)

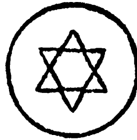
३४५२

ॐ

सुबोध पत्रिका

(उत्तरार्ध.)

राजयोग.



धर्मजिज्ञासु बंधु अने भगीनिओने

मनन करवा निमित

प्रसिद्ध कर्त्ता.

सुरत सनातनधर्म सभाना सम्पादक.

नौत्तमराम उत्तमराम त्रिवेदि.

चैत्र संवत् १९४४.

शाके १८१०.

मूल्य रु १-४-०

अमदावाद युनाईटेड कंपनीना प्रेसमां
रणछोडलाल गंगारामे छापी.

अर्पण पत्रिका.

सर्व धर्मजिज्ञासु बंधु अने भगिनिओ! आ पुस्तक आपना हस्तप्रान्ते निवृत्तिना समयमां शोभे अने आप आ ग्रंथ आ पुस्तक वांची मनन करी, सत्य ग्रहण करी, सनातन धर्मनुं तत्व समजी, ते धर्मनी मर्यादामां रही, धर्म, अर्थ, काम ने मोक्षरूपी महत् पुरुषार्थ सिद्ध करी, जन्मनुं सार्थक करशो एतदर्थ, अमे सप्रेम आ पुस्तक आपनेज परमार्थ बुद्धिथी अर्पण करीए छीए.

ईप्सित अर्थ सिद्धिना आतुर

सुरत सनातनधर्मसभाना सभासदो.

सुचिपत्र.



उपोद्घात.

पुनरावृत्तिना नियम प्रमाणे, आपणा भरत खंडी आर्य वर्तना मनुष्य प्राणीना घणा समोहनुं वलण, सांप्रत काळमां मानसिक ज्ञाननी उन्नति करवाभणी थतु जायछे, तणे करी पंच विषयनी वस्तु प्राप्त थइ संसारना उत्तम मानी लीधेला सुख प्राप्त करवानी त्रष्णा, अपरीमित उत्पन थवाथी, धारेला कोइपण महत्वना कार्यनी यथा योग्य प्राप्ति थवामां, अनेक प्रकारना विक्षेप आवेछे; ते विक्षेप टाळवाने यथार्थ प्रबळ इच्छाशक्ति नहीं होवाथी, घणा मनुष्योना धारेला कार्योनी परीपुर्णता नहीं थवाथी, उलटो खेद अने संताप मात्र उत्पन थायछे. ते माटे कोइ पण महत्वना कार्यनी संपुर्ण रीते परीपुर्णता करवा सारु, इच्छाशक्ति योग्य रीते प्रबळ थवानी अगत्य छे; माटे त्रष्णा अने इच्छा ए बेउमां शुं भेद छे, तेनुं यथार्थ ज्ञान मेळवी इच्छा शक्ति प्रबळ करवानी अगत्यछे. परंतु चालित एवुं जे मानसिक ज्ञान तेनी उन्नति करवाथी इच्छाशक्ति यथा योग्य प्रबळ थइ शकती नथी, इच्छाशक्तितो, यथा योग्य निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी यथार्थ उन्नति करवाथीज, प्रबळ थइ शके छे. एवो निश्चय थवाथी मानसिक ज्ञाननी योग उन्नति पामेला धर्म जीज्ञासु तथा ब्रह्म जीज्ञासु जनो सुरतनी सनातन धर्म सभामां एक

वृत्तिथी एकठा मळी, निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी योग्य उन्नति करी, पोतानी शुभ इच्छा अति प्रबळ करी, धर्म, अर्थ,काम, अने मोक्ष ए चारेनी प्राप्ति योग्य रीते करवाना साधनो मेळववाने प्रयत्न करेछे.

ए सभामां प्रथम वर्षमां एवा विषयो उपर ३७ व्याख्यानो थया छे,तेमांथी १३व्याख्यानोनुं सुबोध पत्रिका पुर्वार्धनुं पुस्तक एज सभा तरफथी प्रसिद्ध थयुं छे अवे आ पुस्तकमां बाकी रहेला २४ व्याख्यानोनो संग्रह छे. ए पुस्तकनुं सुबोध पत्रिका उत्तार्ध (राजयोग) एवुं नाम राख्युंछे.

एना विषयो आ साथेना सुचिपत्रमां दर्शावेला छे, ते उपरथी निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी उन्नति पामेला ब्रह्म जीज्ञासु जनोने ए पुस्तकनी योगता स्पष्ट जणाशे. परंतु एमां जणायेला सघळा विषयोनुं आग्रह पुर्वक पठन, मनन, अने निदिध्यास करवाथी अंतःकरणमां गुप्त रहेली, महा प्रबळ अने अदभुत इश्वरी शक्तिनी उन्नति थवा मांडशे, अने तेथी आगळ आग्रह पुर्वक अभ्यासना प्रमाणमां अलौकिक शक्ति प्राप्त थइ दिव्य चक्षुना योगे ब्रह्मजीज्ञासु विद्यार्थिने सघळी स्थुळ श्रष्टिनो परीपुर्ण अभाव थवाथी सुक्ष्म ज्ञानथी सुक्ष्म वस्तुनो प्रकाश थवा मांडशे.

एवी रीतनुं महा अलौकिक ज्ञान, पंचविषयनी अपरीमित तृष्णावाळा मानी पुरुषोने मानसिक ज्ञा-

नवी गमे तेवी उत्तम उन्नति थइ होय तोपण तेमने प्राप्त थइ शकवानो संभव नथी, केम जे पंचविषयनी अति बळिष्ट तृष्णाने लिधे अंतरना दिव्यचक्षु उपर स्थुळ विषयोनुं मोटुं आवरण आवेछे, तेथी उलटु तेवा जनोने महा प्रतापवान अलोकिक इश्वरीशक्ति, अने अद्भुत ज्ञान ए बेउनुं नास्तिकपणु थायछे. ते माटे जे जनोने मात्र स्थुळ श्रष्टि अने तेना पंच विषयोज सत्य जणायलाछे, ते शिवाय बिजु सघळु मिथ्या अने कल्पित समजेछे, तेवा अकुंचित बुद्धिना जनोने एवा अद्भुत विषयोनुं ज्ञान प्राप्त करवाने भिति कदापी थाय नहीं, माटे आ पुस्तक, मुख्यत्वे करी सनातन धर्म संपन अने उत्तम मानसिक ज्ञानवाळा, निष्पक्षपात रीते सत्यनी परीक्षा करी सत्य ज्ञान मेळववानी इच्छा राखनारा धर्मजीज्ञासु तथा ब्रह्मजीज्ञासु जनोसारु, प्रसिद्ध कर्युंछे.

नौ. उ. त्री.

सनातनधर्म सभाना सम्पादक



॥ ॐ ॥

तत्सत्परमात्मनेनमः

सतगुरु प्रसन्नोस्तु.

राज योग.

ज्ञाननी उन्नति अने कैवल्य मोक्ष.

प्रथम गुप्त विद्या कइ अने तेने गुप्त राखवानुं प्रयोजन शुं ए आपणे जाणवानी अगत्य छे, माटे तेनो विचार करीये. महा अद्भुत अने चमत्कारी योग विद्या गुप्तविद्या केवाय छे, केमजे ए विद्यानुं सविस्तरज्ञान सघळा मनुष्य प्राणीने बीजी उपयुक्त विद्याना ज्ञाननी पेठे सामान्य रीते आपवानो परीचय मुळथी नथी. अने एज कारणने लीधे संसार सुखनी अपरीमित तृष्णावाळा मनुष्य प्रणीमांथी घणा, ए विद्यानी यथार्थ अने परीपुर्ण रीते निष्पक्षपात रीते परीक्षा कर्या विना ए महा सर्वोपरी अति उत्तम विद्याने, असत्य अथवा कल्पित माने छे; वळी ए विद्याना घणा नीयमो बीजी साधारण संसारीक उपयुक्त विद्याना नियमो करतां भिन्न छे, अने ते घणाना जाणवामां आवेला नथी तेथी ए विद्या असत्य हशे एवी कल्पना घणा मनुष्यो करे छे. हवे ए

महा अद्भुत विद्याने, साधारण जन समोहथी गुप्त राखवाना हेतुनो, आपणे निष्पक्षपात रीते विचार कर्याथी, जणाय छे जे, ए विद्यानुं ज्ञान कोइ अपात्र अथवा संसार सुखनी अपरीमित तृष्णावाळा पुरुषने कींवा जेनी निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्य ज्ञाननी यथार्थ उन्नति थइ नथी, विगरे अयोग्य मनुष्यने, आप्याथी अंते परीणाम, ते विद्यार्थीने जाते अने बीजा तेना संगपणवाळा मनुष्यने, विभित अने दुखदायक थया विना रहेतुं नथी; जेम कोइ अनुभवी विद्वान, रसायण प्रयोगथी विद्युत, किंवा अग्नी उत्पन्न करी देखाडतो होय तेनी पासे कोइ अविद्वान अने मुर्ख मनुष्य होय, ते तेनुं जोइ एवी रीतनो वगर अनुभवे प्रयोग करवा जाय, तो कोइ समये परीणाम विभीत, निश्चय थाय, तेमज उपर कहेला अपात्र मनुष्यथी योग साधनानुं, परीणाम, विभित अने दुःखदायक थया विना रेहेज नही. सघळा बुद्धिवाळा पुरुषना जाणवामां छे जे, कोइ पण जातनी उंची उपयुक्त विद्या एकदम प्रथम विद्यार्थीने प्राप्त थइ शकती नथी. विद्यार्थीये प्रथम पोतानी शक्ती अने वय प्रमाणे थोडुं थोडुं अल्प ज्ञान प्राप्त करी साधारण विद्या मेळव्या पछी कोइ पण जातनी उंची विद्यानुं ज्ञान मेळवता मेळवता मानसिक ज्ञाननी, उन्नति यथार्थ रीते परी पक्क थाय, तोज कोइ पण जातनी उपयुक्त विद्या समजी शकाय; अने ते

विद्या परीपूर्ण प्राप्त थया पछी तेनो सत्य अने यथार्थ घटित उपयोग कर्याथी पोताने अने वीजाने जेम लाभ थइ शके छे, तेमज मानसिक ज्ञाननी उन्नती थइ बुद्धि चैतन्यनुं निश्चयात्मक ज्ञान प्राप्त थयाथी, अखंड अने अविनाशी एकज सत्यने मायाना आवरणमांथी सोधी काड्या पछी योग विद्याना साधन करवा मांडे तो, तेथी अल्प काळमां ते विद्या प्राप्त करी अलोकीक लाभ पोताने प्राप्ती थइ, वीजाने पण तेवो केवळ सत्य लाभ आपी शके. ए शिवाय मानसिक ज्ञाननी यथार्थ उन्नति कर्या विना, हठयोगना अभ्यासथी मात्र बाह्य अवयव अने ईंद्रि आदिकने अनेक प्रकारना कष्ट आपी प्राणायाम आदीक बिजी केटलीएक क्रीयानी साधना दिर्घकाळ सुधी यथा योग्य रीते करी शकाय तो तेथी केटलाएक अदभुत अने चमत्कारी कार्यो करवानी शक्ती आवी शके छे. पण तेवा योगीने मायानुं आवरण नडे छे. तेथी तेवा अदभुत चमत्कार अविद्वान, अने अल्पज्ञानी लोकना समुहमां कर्याथी ते तेमने देव अने इश्वर रुप मानी तेमनी सेवा अने भक्ति कर्याथी पोतानुं सार्थक थइ अंते कल्याण थाय छे एम समज्याथी गुरु अने शीष्य बेउने निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यनुं यथार्थ ज्ञान मेळववानी इच्छा मर्ण पर्यंत थती नथी तेथी तेमनुं अकुंचित ज्ञान रही संसारनी त्रष्णा दग्ध नहीं थवाथी पुनराव्रतिने पामे छे. अने

उपर कह्युं एवी रीते योगीने जो घणा दीवस सुधी अलौकीक मान प्रतिष्ठा अने सेवा पूजा थाय तो तेने पण मायानुं आवर्ण नड्याथी योग विद्याना साधन न्युन थता जाय तेथी संसारना असत्य सुखमां सत्यतानो भास जणायाथी घणाखरा योगी सत्य मार्गमांथी भ्रष्ट थइ विभत्स, वाम, अने तांत्रिक मार्गनी प्रवृति करे छे. ए आपणे तांत्रिक अने वाम मार्गना ग्रंथनुं अवलोकन कर्याथी स्पष्ट जणाय छे. अने एवि रीते मायाना आवरणथी विरक्त थइ हठ योगी कदापी एकांत स्थानमां दीर्घ काळ सुधी रेहे तोपण तेने उत्तम ज्ञाननी प्राप्ति थइ कैवल्य मोक्षनी प्राप्ती थइ शक्ती नथी ए हठदीपिकाना ग्रंथमां पण स्पष्ट दर्शाव्युं छे जे हठ योगनी साधना कर्या पछी अंते राजयोगनी प्राप्ती कर्याथीज काळमृत्युथी रक्षा थइ कैवल्यमोक्षनी प्राप्ति थाय छे. एवुं हठ दीपीकाना श्लोक १०३ मां कह्युं छे.

सर्वेहठलयोपायाराजयोगस्यसिद्धये ॥
राजयोगसमारूढःपुरुषःकालवंचक ॥

एनो स्पष्टार्थ टिकाकार ब्रह्मानंद स्वामिये एवो कर्यो छे जे—“ हठोपाया आसन कुंभक मुद्रारूपः ॥ लयो पाया नादानुसंधान शंभवि मुद्रादयः ॥ राजयोगस्य मनसःसर्व वृत्ति निरोध लय सिद्धये निष्पतये प्रोक्ताइनि शेषः राजयोग समारुढःसम्यगारुढः प्राप्तवान्॥यंपुरुषःसःकालवंचकःकालं मृत्युवंचयती॥”

ए उपरथी संशय रहीत जणाय छे जे हठयोगथी आपणे उपर कह्या प्रमाणे आसन, कुंभक वीगरे मुद्रानी द्रढता थइ तेमां लय थवायछे खरूं; परंतु राज योगथी सर्वे वृतिनो निरोध थइ संपूर्ण निश्चय लय थाय छे. तेथी महा अद्‌भुत अनंत कार्यो करवानी शक्ति वीगरे आवी अंते काळ एटले विप्रीत समयथी रक्षा थइ जन्म मर्ण एटले देव्यलोकमां पण जन्म मर्ण छे, तेनाथी पण राजयोगी मुक्त थइ तेनी कैवल्य मोक्षनी प्राप्ति थाय छे. माटे ज्ञानीओने सारु सर्वोपरी अने श्रेष्ट राज योग कह्यो छे. केमजे तेमां उत्तम ज्ञान रह्युं छे. अने उत्तम ज्ञाननाज योग आ लोकमां पण उत्तम कार्यो कर्ता छतां तेमांथी विरक्त रही अंते कैवल्य मोक्षनी प्राप्ती थइ शके छे परंतु राजयोग उत्तम प्रतिना मानसिक ज्ञाननी प्राप्ति विना थइ शकतो नथी, अने मानसीक ज्ञान, उंची विद्या विना, आवी शकतुं नथी; माटे उंची विद्या प्राप्त थया पछी अने मानसिक उत्तम ज्ञान मेळव्या पछी, निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यनुं ज्ञान, प्राप्त थया पछी पात्र थवाय छे; अने ते थया पछी राजयोगना नियम अने पद्धति प्रमाणे द्रढ आग्रहथी चालवानी अगत्य छे. परंतु केटलाएक अल्प ज्ञानी एवुं समजेछे जे कांइ महा समर्थ योगीनां दर्शन करी, तेनी सेवा करी, तेने राजी कर्याथी, कांइ ज्ञान कींवा योगविद्यानि सिद्धि प्राप्त थइ शकशे, ए सा-

धारण बुद्धिथी पण विचार करतां असत्य भासे छे केमजे योग पण बीजी विद्या जेवी एक महा अद्भुत विद्या छे. अने विद्या मात्र गुरु कृपाथीज प्राप्त कदापी थइ शके नहीं, तेतो पुरुष प्रयत्न करी द्रढ आग्रहथी अनुभव करवाथीज प्राप्त थइ शके छे. माटे उत्तम ज्ञान अने उत्तम योगादिक विद्या प्राप्त करवानी इच्छा राखनारा विद्यार्थीए तेना नियम प्रमाणे वर्तववानी अवश्य अगत्य छे.

योग अथवा गुप्तविद्या प्राप्त करवानी इच्छा राखनारा विद्यार्थीये प्रथमथी संसार संबंधी सुख प्राप्त करवामांज तदाकार थइ आसक्त थवुं नहीं, तेमज एकदम संसार त्याग करी अरण्यमां जइ निवास करवानी पण अगत्य नथी; केमजे कदापी अंतर विकारनो नाश थया विना कोइ समयना कारणने लीधे, बाहारथी त्यागीनो वेश लइ अरण्यमां बेठाथी कांइ लाभ थतो नथी, ते छतां तेम करे तो त्यां त्रष्णानो नाश नहीं थयाथी, मनमां अनेक प्रकारना विकार उत्पन्न थइ, अंतर सदाकाळ दग्ध रहे छे,तेणे करी आ लोक अने परलोक बंनेना कार्यो बगडेछे. माटे तेम संसारनो त्याग नहीं करतां संसारमां रहि संसारना कार्यमां लक्षमात्र कारण जेटलुंज आपी निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्य ज्ञाननी उन्नति करवाना साधनमां पोतानो घणो काळ काढवानो अभ्यास राख्याथी ते संसारमां रह्या छतां तेमां आसक्त नहीं पामतां तेथी

विरक्त थतो जाय छे.

सघळा मनुष्य प्राणीमां बे जातनी विचारशक्ति गुप्त रीते रहेली छे. मानसिक अने बुद्धि चैतन्य ए बंने किया किया तत्वनी बनेली छे, अने एना स्थ ळ शरीरमां स्थान कीयां छे ए विगरेनो यथार्थ निर्णय आपणे सुबोध पत्रीना पुर्वार्धमां करेलो छे. तेथी आ प्रसंगे ए विषे अधीक विचार करवानी अगत्य नथी. ए बेउ शक्तीनो परस्पर निकट संबंध छे, तेथी ए बेउनो यथार्थ उपयोग कर्याथी, उत्तम रीते कार्य सिद्ध थइ शके छे; परंतु तेम नहीं कर्ता मात्र पोतानी मानसिक शक्तिनी उपयुक्त विद्या विगरेना योगे उन्नति करी तेनी सघळी शक्ती माइक संसारनाज कार्यमां अखंड उपयोग करे तो तेथी केवळ स्वार्थी अने मायावी थतो जायछे, अने ते पोतानी मानसिक शक्ति, मात्र अल्प अने क्षणभंगुर कार्यमांज सदा रावे छ तेथी पोताने पंचमाभुतवाळो जीव समजी तेवा अल्पकार्योमां जेम जेम अधीक लक्ष आपतो जाय छे, तेम तेमं तेना ज्ञाननी मर्यादा, अंकुचित थयाथी, केवळ स्वार्थी थइ निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञानवाळो पोते महा समर्थ छतां पोताने अति अल्प ज्ञानी समज्याथी महा अलौकीक अने चमत्कारी कार्यो करवाने असमर्थ समजी, पोतानुं सामर्थ पोतानी मेळे खोय छे. हवे कदापी कोइ विद्यार्थी पोताना मानसीक ज्ञाननी यथार्थ उन्नति वि-

द्या विगरेना योगे कर्या शिवाय आपणे उपर कह्या प्रमाणे आसन प्राणायम विगरे क्रिया अति आग्रह अथवा हठथी कर्या पछी, कांइक चमत क्रतीओ करवामां अने जोवामां आवे तोपण तेनुं यथार्थ अने सत्य कारण ते समजी शके नहीं, तथा ते अकुंचीत ज्ञानवाळो संशइ, अने स्वपनावस्थावाळा जेवो रहेछे; तेणे करी बुद्धि चैतन्यनी उन्नति थइ सत्य असत्यनो अथार्थ निणर्य करवानी शक्ती तेने आवती नथी माटे मानासिक ज्ञान अने बुद्धि चैतन्यज्ञान ए बेउ सरखा प्रमाणमां मेवळववाना साधनो करे तो, मानसिक ज्ञाननी उन्नति अति उत्तम रीते थयाथी, तेने जणाय जे आ श्रष्टिना सघळा पदार्थोना प्रथःकरण अने संयोग कर्णना नीयम, जाण्या छतां महातत्वादीकना संयोगकर्ण अने प्रथक्कर्णना नियम जाणवानी तेने अगत्य जणाया पछी पोताना पंच महाभुतवाळो देह तेनुं प्रथक्कर्ण अने संयोगकर्ण करवाना नियम जाणवा उपर लक्ष गयाथी, तेने बुद्धि चैतन्यना निश्चयात्मज्ञाननी योग्यता जणायछे; तेथी मानासिक अने बुद्धिज्ञान ए बेउनी उन्नती अधिक थयाथी पोतानी गुप्त रहेली सप्त प्रकारनी अथवा मुख्यत्वे करी त्रणे प्रकारनी स्थितिनुं पण सत्व ज्ञान प्राप्त कर्या पछी बुद्धि चैतन्यना निश्चयात्मकज्ञानना बळथी इच्छा शक्ति पण अति प्रबळ थइ उपर कहेला स्थुळ सुक्ष्म, अने कारण ए त्रणे प्र-

कारनी स्थिति अने तत्वादीकनां मनन अने निदि
ध्यासना अभ्यासे करी अति बळवान थइ महा अ-
लौकीक अने चमतक्रती जोइ अने ते करी शके
छे. माटे मानसिक अने निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्य
ए बेउ ज्ञाननी उन्नति थाय तोज अति उत्तम
लाभ थाय.

बुद्धि चैतन्यना ज्ञाननी उन्नति थवानुं मुळ साधन
स्वार्थ रहित परमार्थना कार्योमां लक्ष आपवुं एजछे
माटे योग्यविद्या मेळववानी इच्छा राखनारा वि-
द्यार्थिए स्वार्थनुं निरमुळ काडवा सारु अहंपदनो
त्याग करी एटले मारु शरीर, मारी वस्तु, मारा स-
गा संबंधी, विगरेमां जेम बने तेम स्वार्थ न्युन क-
रता जवुं, अने पंच महाभुतवाळो पोताने समजवो
नही. पोतानो देह मिथ्या अने क्षणभंगुर समजी
बीजा पंचकोशने प्रक्रतिना कार्य समजी तेनुं प्रथ-
कर्ण थइ पोते महा स्वयंप्रकाश अखंड अने अवीना
शी अति बळवान समजी सघळी प्रक्रतिना अंश अ-
ने परमाणुं विगरेना संग्रहथी जे ब्रह्मांडादीकनी उ-
त्पति स्थिति विगरे जे थाय छे ते सघळी उत्तम
शक्तीना कीर्णवाळो आ क्षणभंगुर देहमां रहेलो म-
हा प्रतापवान अने जेमां बधा देह रहेला छे एवो, ए-
क शुद्ध चैतन्य छे, अने तेज मात्र हुं निरंजन अने
निर्लेप एक सत्य छुं. एवो द्रढ निश्चय करी एनुं म-
नन करवानो अधिक अभ्यास राखवो.

घणे प्रसंगे महान विद्वानोए कह्युं छे जे मनुष्यनुं स्थुळ शरीर सत्य अने अविनाशी नथी, ए सत्यछे, केमजे आपणे उपर कह्युं जे, एक अविनाशी आत्मा, स्थुळ सुक्ष्मादिक दोषथी विरक्त, एक आभास रूप सत्य छे. ते कोइ चक्षु इंद्रीथी जोइ शकतो नथी. कर्णथी सांभळी शकतो नथी. अने स्पर्शथी जणातो नथी, परंतु कर्म जे असर करे छे; ते असर जाणी शकाय छे. एटले प्रकृतिना संयोग कर्णथी पंच महाभुतमां शक्ति उत्पन थइ, तेनी गतीथी स्थुळ देहना मन उपर संस्कार थयाथी मनने ज्ञान थाय छे. तेवी रीते सुक्ष्म माहाभुतना परमाणुना संयोग कर्णथी, जे अल्प स्थुळ शरीर बनेलुं छे. ते सदाकाळ महाभुतना परमाणुओना संयोगकर्ण, अने प्रथकर्ण थवाथी ते निरंतर बदलातुं जायछे. स्नायु, चर्म, वीगरेना सुक्ष्म परमाणुआ, सदा धीमे, अथवा जलदीथी तेना आकर्षणना प्रमाणमां बदलाया करे छे एटले जुनानो नाश थायछे अने तेनी जगा उपर बीजा नवानो संग्रह थाय छे. जे प्रमाणे कपायली आंगळीमांथी सडेलो मास चर्च जइ नवि चामडी आवे छे अने जे प्रमाणे सर्प कांचळी बदले छे.तदवत मनुष्यना शरीरमां अति सूक्ष फेरफार मर्ण पर्यंत थया करे छे तेज प्रमाणे स्थुळ शरीरनी आकृति सदा एक सरखी रहेती नथी ते स्थुळ शरीरनुं बाल्यावस्थामां, युवावस्थामां, अने वृद्धावस्थामां एक

सरखुं रूप, रंग वीगरे रहेतुं नथी अने अंते तेनो नाश थाय छे ए सघळाना जाणवामां छे. माटे स्थुळ शरीर मिथ्या अने असत्य छे.

आपणुं स्थुळ शरीर मीथ्या अने नाशवंत सिद्ध थयुं, परंतु केटलाएक पुराण अने शास्त्रमां पण आत्माने अजन्म, अने अवीनाशी कही पुनर्पिदेहने जन्म मर्ण करनार मन कह्युं छे. एटले मननी जेवी त्रष्णा होय तेवी कल्पना कर्याथी जे कर्म थाय ते प्रमाणे तद्रूप देहने धारण करी जन्म अने मर्णादीक भोगवे छे. माटे मन नाशवंत छे, के अवीनाशी छे. एनो विचार करीये. आपणे पुर्वे कह्युं छे जे मन ए आकाश अने वायुना अति सूक्ष्म परमाणुनी साथे इच्छाशक्तिना तात्वीक परमाणुना समीलन थवाथी कार्य करवानी चंचळ शक्ति आवे छे. तेना योगे मघळा बाहारना मानसिक विचारना सुक्ष्म परणुओ जेना उपर आकाश अने वायुना संस्कार थयाथी, उपर कहेला विचार अथवा कल्पनाना छूटा परमाणु मनोमय चक्रमां एक ठेकाणे स्थित थइ तत्क्षण ज्ञान उत्पन्न करे छे. आपणा जाणवामां छे के, जे प्रमाणे समय बदलायछे ते प्रमाणे विचार पण बदलाता जाय छे, एटले जुना विचार बदलाइ बीजा नवा तर्क अथवा कल्पना उत्पन्न थाय छे. एक वखत थयेला विचारने अक्षय अथवा घणा समय सुधी राखवाने इच्छाशक्ति असमर्थ थायछे. स्मरण

शक्ति निस्तेज थयाथी, मन पोतानां कार्यो करवानी रीत बदले छे. अने ज्ञान पोतानां रुप बदले छे. बाल्यावस्थाना विचार युवावस्थामां रहेता नथी, अने युवावस्थानी कल्पना वृद्धावस्थामां रहेती नथी, जे आज तेने सत्य अने डहापणवाळुं जणाय छे, ते काले तेने असत्य अने गांडपणा जेवुं जणाय छे आपणे सूक्ष्म रीते विचार करीशुं तो जणाशे जे, आपणी सत्य अथवा असत्य कल्पना अने आपणी धार्मिक अथवा कोइ उपयुक्त विद्या, अने तत्वज्ञान आदीकना जे विचारो जे देशमां आपणे रहेता होइए. ते देश जन समोहनुं वलण अने जेवा विचार होय तेवा विचारनो रंग अथवा सत्ता उपर कहेला विचार उपर बेसे छे. अने ते प्रमाणे आपणुं वलण करावे छे. ए उपरथी स्पष्ट जणाय छे जे ज्ञान, ए कल्पनानो जन्म थइ, वृद्धिने पामी तेनी उन्नती भिन्न भिन्न वलणना योगे थाय छे. कदापी एवी रीते थती क्रिया मंद पडे अथवा अधिक थाय तो पण तेमां आपणा स्थुळ शरीरनी पेठे अनेक प्रकारना फेरफार थइ अंते मानसिक परमाणुनं प्रथःकर्ण थइ जायछे. माटे मन जेवी वस्तुमां अविनाशीपण नथी, माटे मन अनीत्य छे—हवे आपणे मनुष्य प्राणीनुं जे निश्चयात्मक बुद्धिचैतन्य तेनो विचार करीये. बुद्धि चैतन्य आकाश अने तेजना सुक्ष्म परमाणुना संयोग कर्णनुं थयेलुं छे, माटे ते मनुष्योनो चैतन्य जीव के-

वायछे. घणा मनुष्यमां ए चैतन्य जीव प्रवाहीक शु-
न्यावस्थामांज होय छे, तेथी तेमने चैतन्य जीवनुं
सत्यज्ञान कांइज होतु नथी, माटे मनुष्यना उन्नति
पामेल्ला मानसिक ज्ञाननो, तेनी साथे मिश्र थया
विना ते चैतन्य जीव जाणे छेज नहीं एवुं जणायछे
चैतन्य निश्चयात्मक बुद्धिनी उन्नति थइ ते मनुष्यनी
अंतनी स्थिति,जे आत्मा, परमात्मा, अथवा परब्रह्मनी
साथे समीलन थाय छे. ते अज्जर, अम्मर, अने अ-
विनाशी इश्वरी चैतन्य एक सत्यछे. ते अखंड छे ते-
थी तेनुं विभाकर्ण थइ तेना परमाणुं अंश, मनुष्य
प्राणीमां बीजा प्रक्रतीना परमाणुनी पेठे प्रवेश करी
स्थित थता नथी, पण ते मात्र आभास रुपे सदा
सर्वदाकाळ सघळाने विशे छे. अने मनुष्यनुं ज्ञान
जेम जेम उन्नतिने पामतुं जायछे. तेम तेम तेनी मा-
नसिक अने बुद्धि चैतन्यनी शक्ति अधिक प्रकाशने
पामती जाय छे. अने जेम जेम ते परब्रह्म साथे
समिलन थती जाय छे, तेम तेम, तेनी ऐक्यता
अधिक थती जइ, अंते प्रत्येक चैतन्य जीवने गुप्त
रीतेसर्व व्यापकपणुं जणाइ, तेज मात्र एक शुद्ध चै-
तन्य ब्रह्म सघळामां रहि सघळा तत्वादीकनो समाव-
श तेमां छे. ए सिद्धांत उपरथी स्पष्ट जणाय छे जे
सत्य अने अविनाशी एक परब्रह्मज छे. ए उपरथी
सघळा मनुष्य प्राणीनुं स्थाइकपणुं अने चपळता वि-
गरे शक्ति रुप चैतन्य जीव तेना प्रक्रतीवाळा शरी-

रमांज मर्यादा रुपे रहेलो नथी पण ते सुक्ष्म रीते अवकाषमां पसरी तेमां रही शके छे. अने तेनी मनवांतरनी पुनरावृतिने अंते ते जे प्रमाणे उन्नति पामेलो चैतन्य जीव जे प्रमाणमां शुद्ध चैतन्य ब्रह्मना किर्णनुं आकर्षण करी जाते प्रकाशमान थइ जेम प्रकाश आपे छे. ते प्रमाणे सघळुं अवकाश प्रकाशित करी शके छे.

संवत् १९४१ना द्वि जेष्ट वद्य ८ ने रविवार.

व्यष्टि समष्टि अने स्थूळ सुक्ष्मनो विचार.

मानसिक ज्ञाननी यथा योग्य उन्नति थया पछी गुप्त विद्या प्राप्त करवानी इच्छा राखनारो विद्याथी जो निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यना प्रकाशवडे, अवलोकन करशे तो तेने स्पष्ट जणाववा मांडशे जे, महा ब्रह्मांडमां जेवी रीते अंतरीक्षमां प्रकृतिना चैतन्यतात्विक परमाणुओना कार्यथी सुर्य चंद्र प्रथ्वि ग्रह अने तारा विगेरे अगणित पदार्थोनी उत्पत्ति थइ भिन्न भिन्न तत्वामिश्रित वातावर्ण तेने विषे रह्या छे. तेमां प्रथ्वि विषे जे मनुष्य प्राणीछे. ते पण प्रकृतिना स्थुळ अने सुक्ष्म तात्विक परमाणुओना बनेला छे. तेमां जे लोहचुबक जेवा, पण चैतन्य शक्ति अने कृतिवाळा परमणुनी जे आकर्षिक वस्तुछे ते एवा मनुष्य प्राणीनी आसपास अनेकप्रकारना कांतिवाळा चैतन्य परमाणुओना समुहमां रहेलाछे, तेना योगे

अनेक प्रकारना मिथ्या अने क्षणभंगुर कार्यो निरंतर स्वाभाविक प्रयोगथी उत्पन्न थइ ते मनुष्य प्राणीना अंतःकरणरुपी मध्यमां स्थित थायछे.अने भ्रांतिथी उत्पन्न थयेलां जे कार्यो तेने कारण समजेछे. अने अज्ञानने लीधे जे नाशवंत स्वप्नावस्था जेवा जे रुपो द्रष्टोत्पत्तिमां आवेछे. ते सत्य मनायछे. क्षणिक स्वाप्नावस्था तुल्य जे कृतियो उत्पन्न थायछे ते सत्य मनायाथी मनने आनंद उत्पन्न थयाथी, ते प्रत्यक्ष देखायछे. तेणे करी जे इच्छा उत्पन्न थायछे, ते निरउपयोगी अने मिथ्या छे; जेवी रीते सूर्यना प्रकाषित किर्ण कोइ अपारदर्शक वस्तु अथवा पारदर्शक वस्तु काच, छींपाणी विगेरे उपर पडवाथी, अनेक प्रकारना रंगो उत्पन्न करी तेने प्रकाशमान करेछे. अने अवकाशमां मनोहर रंगोनुं जे धनुष्य सूर्यनाकिर्ण. परजन्यना जळवाळा वातावर्णमां संस्कार थयाथी उत्पन्न थाय छे. तेवी रीते संसारना अगणित पदार्थोमांथी कल्पनाना योगे किर्ण जेवा अति सुक्ष्म परमाणुओ, चैतन्याकर्षणथी, अंतर इंद्रिओमां, संग्रह थइ, तेना रुपो मनरुपी दर्पणमां परावर्तन पामी तेनी छाया, रुपो, अने मिथ्या पदार्थो उत्पन्न थता थता, ते जोवानी अने जाणवानी इच्छा उत्पन्न करे छे; ए सघळुं ते मनुष्यप्राणीनी कल्पनानुज कार्यछे. एवी रीते उन्नति पामेला निश्चयात्मक ज्ञानवाळा मनुष्यने जणाववा मांडेछे.

एवी रीते थतां थतां, ने विद्यार्थिने सत्य अने असत्यनो निर्णय करवानी शक्ति, आवती जायछे, तेणे करी ते असत्यमांथी सत्य शोधी काडेछे. ए सघळुं निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यनी जेम जेम उन्नति थति जायछे,तेम तेम सत्य शोधक विद्यार्थीने जणातुं जायछे; तेथी ए विद्यार्थीने बुद्धि चैतन्यना सत्य ज्ञाननी उन्नति थवा सारु, तेणे प्रथमथीज, स्वार्थनी इच्छा, असत्य अने दुःखदायक जाणवी, अने कोइ पण अहंपद अक्षय नथी अने अहंपदनी प्रथक प्रथक् उत्पत्तिवाळी स्थिति, कोइ नथी, पण सामान्य सघळानी एकज स्थिति छे. एवी रीते सत्य शोधक विद्यार्थी यथार्थ रीते समजी, पोतानी प्रथक् अहंपदनी कल्पनाने दग्ध करी नाश करे तोज, निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यना सत्य ज्ञाननो प्रकाश तेना उपर थवा मांडे, अने तेथी अंते सर्व व्यापक शुद्ध चैतन्यनुं साक्षात प्रथक् रुप थइ,पोते अजर अने अम्मर थायछे.

आपणे उपर कहेला, सघळा सिद्धांतनी सत्यतानो, निश्चय हालना भणेला अने विद्वान गणायला पुरुषोने, थवा सारु पश्चिम देशना विद्वानोमांथी केटलाएक विद्वाननो, ए विषे सिद्धांत केवी रीतनो छे; ते आपणे आ प्रसंगे जोइए."बुलवरलीटन नामनो सत्य शोधक विद्वान एनाझनोनी नामना ग्रंथमां एवुं केहेछे जे कांइ अमुल्य, अने महत्वनुछे, ते जाणवासारु प्रथम तेनी केवळ सत्यता, स्वच्छ अने नि-

मेळ ज्ञान मेळववानी अगत्यछे; वळी बीजा विद्वान एवुं केहेछे जे आपणे अति प्राचिनकाळना घणा भिन्न भिन्न धर्मना पुस्तकमांथी भिन्न भिन्न रीते केवळ सत्यताना जे अंकुरो जणायाछे, ते हालना उ- उन्नति पामेला ज्ञान, अने भाषाथी, तेना सत्य गुह्यार्थ स्पष्ट रीते जाणवामां आव्याछे, ते उपरथी जणाय छे जे, प्रकृतीना तात्विक परमाणुमां केवळ शुद्ध चैतन्य भाश्य रूपे आवेछे. त्यार पछी ते सर्व व्यापक शुद्ध चैतन्यना तात्विक आभाष रूप परमाणु व्यक्त प्रकृतीना कार्यना स्थुळ परमाणुमां, आभाष रूपे जणाइ, जेम सुर्यना कीर्णना भिन्न भिन्न रंग अने प्रकाशना, आभाष पडेछे, तेवी रीते भिन्न भिन्न पशुपाक्षि आदिक, प्रथक् प्रथक् जातीमां ते चैतन्य रहेलो होयछे, ते पुनरावर्तीना नियम प्रमाणे, उर्ध्वगतीने प्रथक् प्रथक्पणे पामेछे. तेम थतां थतां ते निचा वर्गमांथी अती उत्तम स्थिती जे मनुष्य प्राणी तेमां उपर कहेला चैतन्यना तात्विक परमाणु आ स्थितिमां एटले मनुष्य प्राणीमां शुद्ध चैतन्यना तात्विक परमाणु उर्ध्वगतीने पामेछे. पण ते पशुपाक्षि आदीकमां जेवी रीते ते चैतन्य आभाष पोतेज पडेछे, पण ते, निचला वर्गना प्रकृतिना परमाणु तेने अधिक आकर्षण करी शकता नथी तेवी रीते मनुष्यप्राणीमां थतुं नथी पण तेमां प्रकृतिना तात्विक परमाणु अधिक बळवान होय छे. तेथी ते परमाणुओ पण ते

चैतन्यने आकर्षण करे छे. माटे उपर कहेला सर्व व्यापक चैतन्यमां प्रकृतिना परमाणुनो प्रथक् बनेलो जीव समीलन थइ शके छे. ते चैतन्य उतरती अने चडती ए बेउ पुनरावृत्तिमां एकज सरखो छे, तेमज प्रत्येक मनुष्य प्राणीमां पण, सरखोज छे. परंतु ते जेम जेम उंची स्थितीये चडेछे तेम तेम प्रत्येक भिन्न भिन्न मनुष्य प्राणीना भिन्न भिन्न उंचा, मानसिक ज्ञानना प्रबळ परमाणुओना संयोगथी ते आभाप रूप चैतन्यना कीरणो भिन्न भिन्न प्रकारे दर्शावेछे. एटले कदापी मानसिक ज्ञानना अधीक उंचा परमाणुओनो अधिक संग्रह थयो होय अने बुद्धि चैतन्यनुं ज्ञान प्राप्त करवा तेनो उपयोग थतो होय तो ते चैतन्यनो प्रताप अधिक जगाइ अधिक उर्ध्वगति पामतो जाय, अने ते मनुष्य प्राणीनी केवळ जुदीज प्रकृती करे, अने जो मानसिक ज्ञाननी उन्नति नाहिं करे, अथवा ते मानसिक ज्ञाननो उपयोग निरंतर संसारना कार्यमां, अथवा पोताना केवळ स्वार्थ करवानाज कार्यमां करेतो, चैतन्य परमाणुना कीर्णोनु आकर्षण न्युन थतुं जायछे; तेथी निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यनी चंचळ शक्ती प्रकाशित थइ शकती नथी, तेणे करी माइक त्रष्णाना, प्रकृतीना परमाणुओनो तेने अधिक संग्रह थतो जायछे, तेथी आ लोकमां केवळ स्वार्थी थयाथी, मुआ पछी मिथ्या त्रष्णाना योगे माइक सुक्ष्म अने लिंग शरीर धारण करी के-

टलाक काळ सुधी पृथ्वि उपर अने अंतरीक्षमां भ्रमण करवुं पडेछे. अने अंते पाछो पृथ्वि उपर काळांतरे मनुष्य देहे धारण करी त्यां मानसिक ज्ञानना वळवान उंचा परमाणुनो अधिक संग्रह करी निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यनी उन्नति कर्या पछी, उर्ध्वगतिने मार्गे जइ शकायछे. ए उपरथी स्पष्ट जणायछे जे, जेम जेम मानसिक ज्ञान, अधिक मेळवी तेनी उन्नति करी तेनी साथे बुद्धि चैतन्यना ज्ञाननुं समीलन करतो जाय, तेम तेम निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यनी सत्यतानो पायो अचळ थतो जायछे, अने तेथी तेनी अधिक चैतन्य स्थिति थती जायछे, तेथी दैविक डहापण अने शुद्ध परमार्थना गुणो प्राप्त थयाथी, आगळ दैविक शुभ गुणो अनंत महासागर रूप थइ सर्व व्यापक शुद्ध चैतन्यपणाने प्राप्त थायछे.

निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्य ज्ञाननी उन्नति पामेला प्रथम विद्यार्थिनी स्थीती, केवी थती जायछे. ते आपणे जोइए, तेवा विद्यार्थिनी वृत्ति बदलाती, आपणे जणाती जायछे, ते पोते स्थुळ अने सुक्ष्म शरीरवाळो प्रकृतिना परमाणुनो अल्प प्राणी पोताने समजे छे, एटलुंज नहीं पण सघळा मनुष्य प्राणी तेवी रीते अल्प अने न्युन समजे छे. मनुष्य तेने कल्पनानो बनेलोज जणायछे. सघळा मनुष्य प्राणीनी स्थिति तेने, एक महा अनंत महासागरना कीनारा उपर रेतीना कण जेवो जणायछे. तेने द्रव्य अने स्म्रद्धि,

किर्ति, स्नेह, अने सर्व संसारना सुख विगेरे. पाणीना परपोटा जेवा क्षणभंगुर जणायछे; तेथी ते संसारनी सघळी वस्तुने नाना बाळकनी रमतनी वस्तु जाणी, तेनो त्याग मनपुर्वक आनंदथी करेछे;एवी रीते उपली सघळी वस्तुनो त्याग करवाथी तेना सुखनो नाश थयो एम समजवुं नहीं, केमजे जेम मोटा थयला छोकरा अने छोकरीओ पुतळी वीगेरे सर्व रमकडा निरउपयोगी समजी तेनो त्याग करेछे, तेमज निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननी उन्नति पामेलो पुरुष, संसारना सुखनी सघळी वस्तु निरउपयोगी जाणी, तेमां आसक्त नहीं थता तेनो त्याग करतो जायछे. जे प्रमाणे तेना सत्य ज्ञाननी उन्नति थति जाय छे, ते प्रमाणे ते अधिक उपयोगी वस्तु तरफ लक्ष आपतो जाय छे; अने तेना चैतन्यनो प्रकाश थयो एटले, तेने पोतानी आसपासनी सघळी वस्तु अने पोते जे पृथ्वि उपर रहेछे ते पण जेम कोइ मनुष्य अंतरिक्षमां रही तेने पृथ्वी अति सुक्ष्म जणायछे. तेवी रीते ते उन्नति पामेला पुरुषने सघळी वस्तु अति सुक्ष्म जणाय छे, अने तेज समये अनंत कोटी ब्रह्मांडनी रचना अति महत्वनी जणाती जायछे; तेथी तेना विचार महत्वना थता जायछे.

एवी रीतनी उन्नति पामेलो ज्ञानी पुरुष, सत्य केवळ शुद्ध चैतन्यना ज्ञानमां आनंदथी स्थित थवानो, अभ्यास राख्याथी ध्यान अने धारणामां

निमग्न थयाथी पोताना घर अने देश आदीकनी तेने विस्म्रति थइ, तेनी महा अदभुत महा तत्वना दैव्य लोकमां स्थिति थयाथी पोताना साक्षी चैतन्यने अल्प समजवानुं जे अज्ञान तेनो नाश थइ तेने अनंत अने अविनाशी समजी, पोतानी क्षणभंगुर माइक स्थुळ शरीरमांथी, विरक्त थवानी शक्ती आवे छे. तेथी तने ते सर्व शक्तीवान शुद्ध चैतन्य, अक्षय अने सर्व व्यापक स्थितिने मार्गे लगाडे छे. एटलु लक्षमां राखवानुं अगत्यनुं छे जे जीवरुपी पारदर्शक थयला दर्पणमां पृथ्वि अने स्वर्ग ए बेउनुं एक समये परावर्तन थइ शकतुं नथी, ज्यारे एक देखातु बंध थइ जाय त्यारेज, बीजु प्रकाशित थइ, द्रष्टीतपतिमां आवे; माटे अहंपदनो समुळ नाश थइ, एटले हुं अने मारु ए सघळाथी निवृति पामी, मात्र एक निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यना उत्तम ज्ञाननी उन्नति थवाना साधन जाणवानी प्रथम अगत्यछे.

सघळा मनुष्य प्राणीमां एक महा चमत्कारी शब्द रहेलोछे. तेना योगे गुप्त रहेला मानसिक उत्तम ज्ञान निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्य ज्ञान, अने सघळी माइक स्म्रधि ए सघळानी प्राप्ती थइ शकेछे, अने तेणेज करी द्रश्य अने अद्रश्य अदभुत शक्ति प्राप्त थइ शकेछे; ते शब्द अचल सत्य निश्चयछे; आपणे कोइ महत्वना कार्य करवानी इच्छा होय तो, आपणे प्रथम आपणी सघळी इच्छा तेज कार्य करवामां संपुर्ण ए-

काग्रता करता शीखवुं जोइए, पछी जे प्रमाणमां आपणी एकाग्रता संपुर्ण होय ते प्रमाणमां ते कार्यनी सिद्धि थइ शकेछे; केम जे एक अचळ एवो नियमछे जे, जेवुं बळवान कार्य होय तेवा बळवान-नाज प्रमाणमां, परीणाम तेवुं बळवान थायछे.

आपणे एकाग्रहताथी, दीर्घ विचार करीशुं, तो जणाशे जे, आपणी इच्छानी शक्ती, सर्वोपरी सर्व शक्तिवान थाय छे, परंतु तेने एक अचलित सत्य निश्चयथी, पोताना धारेला कार्यमां, प्रवर्तावबानी, प्रथम अगत्य छे. चंचळ, अस्थिर, अने चलित इच्छाथी, कोइ पण धारेला कार्यनी सिद्धि थइ शक्ती नथी. जे मनुष्यनुं अंतःकर्ण पोतानी जुनी सत्य टेव, असत्य वलण, अने मिथ्या त्रष्णा ए सघळानो त्याग करवाने अनमान करे छे. अने जे पोताना मायावी जीवनो दास छे, अने जे पोताना अंतरना मलीन विकारनी साथे लडाइ करवा बीहे छे, अने आ संसारना क्षणभंगुर कार्यमां, नादरनी पेठे चोंटी रहेछे, तेनाथी कोइ पण महत्वना कार्यनी सिद्धि थइ शक्ती नथी, दुर्गुणो माणसने वळगता नथी परंतु माणस पोते दुर्गुणने वळगे छे, अने ते दुर्गुणने जे बाथ भीडी वळगी रह्यो छे, तेनो त्याग करवाने ते बीहे छे, केमजे तेणे तेनुं मुल्य अने उपयोग अधीक जाणेलोछे. अथवा तेना धारवामां एवुं होयछे जे मारा घणा दीवशना सत्य जाणेला विकारनो

त्याग करवाथी, मारा मायावी जीवने, आ संसारनुं सुख प्राप्त नहीं थता, केवळ, अल्प, प्राणी पशु जेवो थइ, मारु आयुष्य मिथ्या जशे; केमजे मुआ पछी कोणे जाण्युं जे शुं छे, अने शुं थशे माटे देखीतुं सुख भोगववुं एज सार्थक छे. एवुं मिथ्या समज्याथी सर्वस्व पोतानो नाश, पोताने हाथे करीले छे, अने आ अमुल्य मनुष्यादेह व्यर्थ, गुमावे छे. माटे जे मनुष्य अहंपदनो त्याग करी स्वार्थ रहित थाय छे. अने सघळा मनुष्यना स्वार्थ समान समजी पोतानी त्रष्णा अने इच्छा नियममां राखी तेने चलीत थवा देतो नथी तेज मनुष्य सत्य मार्गे जइ अंते अज्जर अने अम्मर थाय छे.

हवे आपणे दीर्घद्रष्टि करी जोइशुं तो जणाशेके जे मनुष्य स्वतःपोताने वश करी शकतो नथी अथवा पोताना काम, क्रोधादिक विकारो उपर सत्ता बेसाडी शकतो नथी तो ते बीजाने शी रीते सत्तामां राखी शके, कदापी चाकर अथवा दासने अधीकारी अथवा वरीष्ट थवानी इच्छा थाय तो प्रथम तेणे पोते स्वतंत्र थवुं जोइए अने स्वतंत्रतानो मात्र सत्य अने आग्रह पूर्वक निश्चय अने प्रबळ थएली इच्छा शक्ति ए बेउनो यथार्थ उपयोग कर्याथी ते प्राप्त थइ शके छे. योगी कोइना करेला अथवा बनावेला थया नथी अने थइ शकता पण नथी. मनुष्य प्राणी योगी थवाने स्वपुरुषार्थ करी धीमे धीमे

आग्रह करेतो ते मार्गे जवाथी योगी थवाय छे. जे मनुष्य प्रथ्विनी मांहे उंडो खाडो खोदी तेमां निवास करेतो तेने सूर्यनां दर्शन कदी थतां नथी एवी रीते जे पुरुष प्रक्रती अथवा मायामां केवळ डुबेलो छे, तेने सुद्ध अने निर्विकार चैतन्यनुं ज्ञान कदापी थतुं नथी, वळी जे मनुष्य असत्यमां सत्यनी निश्चय पुर्वक भावना राखी, दीर्घ काळ सुधी ते मार्ग दोरायलो होय छे; तेने निर्दोप अने सत्य मार्ग जडी शकतो नथी, आपणी प्राचिन कल्पना प्राचीन स्नेह, अने प्राचिन सिद्धांत ए सघलु असत्य होयतो पण तेनो निर्मूळ नाश थवो अति दुर्लभछे. ए सघळा आपणी साथेज वृद्धिने पामेला छे. अने आपणे तेनी साथे सारी रीते स्नेह बांधी हळी गया छइए, माटे जेम आपणे, आपणा कोइ अति स्नेही अथवा प्रितिवाळो सगासबंधीनो वियोग थवाथी जेटलो खेद अने दुःख प्राप्त थाय छे तेटलो खेद अने दुख आपणा प्राचिन असत्य सिद्धांत तथा आपणे जाते उछेरेला आपणा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अने मद आदिक मनना दुर्गुण अथवा वीकारनो त्याग करवाने थाय छे. ते आपणा पोताना संतान जेवा छे. आपणे तेने उत्पन करेला छे, एटलुंज नही पण आपणे तेने उछेरी, अने पोषण करी, तेने बळवान करी तेना कर्ममां कुशळ करेला छे. वळी ते आपणा घणा वर्षना नानपणाना स्नेही छे. तेथी तेने

काडी मुकवा अथवा तेनी हानी करवामां आपणे घातकी कर्म अने कठोरपणुं जणाय छे; ते वारंवार आपणी कृपा मागे छे, अने एक समये तेने काढी मुकीए तो पण ते पाछा आवी आपणी पासे क्षमा मागी, पाछा अंतःकर्णमां निवास करवाने प्रार्थना करे छे; अने घणे प्रसंगे ते पोतानो जुनो हक पण बतावे छे. ए सघळु छतां जो कदापी आपणे आपणी साह्यताने अर्थे आपणी बळीष्ट मानसिक शक्तीना योगे, सत्य निश्चयात्म बुद्धिने बोलावी अति आग्रहथी, तेनी साथे बळीष्ट पामेली इच्छा शक्तीने ते कार्यमां प्रेरीएतो आपणा कार्यनी निश्चय सिद्धि थशे, अने आपणा अंतरना सघळा विकारनो समूळ नाश थइ शकशे. केमजे बळीष्ट पामेली इच्छा शक्तिनुं बळ अतुल्य छे. तेने एक समये अति आग्रहथी कोइ कार्यमां प्रेरीए तो, ते बीजो कांइ पण विचार नही करतां धारेला कार्यनी सिद्धि कर्या विना पाछी हठती नथी. एवी जे प्रबळ इच्छा शक्ति तेने विशे आपणे आगळ प्रसंग आवेथी विचार करीशुं.

संवत् १९४१ना द्वि० जेष्ट वद्य ३ ने वार रविार.

इच्छा शक्ति.

प्रथ्वि उपरना सघळा मत्त पंथमां कदापी अनेक प्रकारना मत भेद छे, तोपण ते सघळानो एक पक्को सिद्धांत्त एवो छे जे सर्व शक्तिवान इश्वर अने शक्ति जे के आ सर्वे ब्रह्मांडनी उत्पतिनुं कारण तेनी अ-

थवा ते जे शक्ति ते सघळी शक्तिकर्ता: प्रथम अति प्रबळ, अने श्रेष्ट छे. वेद अने उपनीषद् आदीक इश्वर प्रणित ग्रंथनुं निष्पक्षपात रीते अवलोकन कर्याथी जणाय छे जे प्रथम अनादी सर्व ब्रह्मांडनुं आदी कारण जे पुरुष कह्यो छे. तेज परमात्मा, ब्रंह्म अथवा केवळ शुद्ध चैतन्य छे. तेनीज आगळ भिन्न भिन्न मत पंथना अधिकारीओए पुरुष अने स्त्रि आदीक महा शक्तिनी अलंकार रुपे कल्पना करेली छे तेनो पण सत्य गुह्यार्थ छे. प्रथ्वि उपरना सघळा मनुष्य प्राणीमां आपणे पाछळ दर्शाव्या प्रमाणे ते शुद्ध चैतन्यनो आभाष अंतर्यामी एक सर्खो समान ज छे. परंतु जे प्रमाणमां प्रक्रतिना भिन्न भिन्न परमाणुओनुं संमिलन थइ तेना उपर जेवा भिन्न भिन्न आच्छादन थयेला छे तेवा भिन्न भिन्न प्रकारनां रुप, रंग, अने आक्रतीओ जणाय छे. माटे गुप्त विद्यानी इच्छा राखनारो विद्यार्थी जेना निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्य ज्ञाननी यथार्थ उन्नति थयेली छे. ते एवुं समजे छे के, मारी आसपास जे भिन्न भिन्न मनुष्य प्राणीना समोहना आत्मा जणाय छे तेनाथी हुं प्रथ्थक अने भिन्न नथी. परंतु सर्व व्यापिक शुद्धबुद्धि चैतन्यना मध्य स्थानोमांनुं हुं पण एक मध्य स्थान छुं. माटे हुं मारा समिपना स्थुळ शरीरवाळा मनुष्य प्राणीना संगठणना योगे तेमना उपर कांइक सता करी शकुं छुं. अथवा मारा उपर तेमनी कांइ-

क सता बेसी शके छे. एटलुंज नही, पण जेवी रीते सूर्य पोताना कीर्णथी घणा अंतरना ग्रह वीगरेने प्रकाष आपी शके छे, तेवी रीते मारो बुद्धि चैतन्य जीव तेनी समीपना बीजा जीवो उपर, जे प्रमाणमां पोतानी उन्नति थइ होय, ते प्रमाणमां सत्ता भोगवी शके छे; अने तेमनी पण सत्ता न्युन अधिक पोताना उपर तेज प्रमाणमां थइ शके छे. एवी रीते उन्नति पाम्याथी निश्चयात्मक बुद्धिचैतन्यनी शक्ति अने ज्ञान व्रद्धि पाम्याथी केटलाएक अति गुह्य मानसिक सिद्धांतोनी सत्यता तेने शोधी काडवी शुलभ लागे छे.

मन अने बुद्धिये, इच्छारूपी शक्ति धारण करेली छे, ते शक्तीने मन अने बुद्धि पोताना कार्योमां प्रेर्या करे छे. मन अने बुद्धिना अति सुक्ष्म परमाणुओ छे, अने ते श्रष्टिमां सर्व व्यापक रूप रही शके छे तेथी मन अने बुद्धि पोतानी इच्छाने कार्यमां लगाडी, जे प्रमाणमां एकाग्रता करी शके, ते प्रमाणमां तेनी शक्ती न्युन अधीक ते कार्यमां जणाइ शके, एटले मन पोते चलीत छे तेथी तेनी शक्ति चलित अने क्षणिक सघळा कार्यमां थइ शकेछे. बुद्धि स्थिर अने अचळ छे, तेथी तेनी शक्ति स्थिर अने प्रबळ होय छे. ए सघळा उपरथी एम तो सिद्ध थइ शके छे जे, इच्छाना कार्यो मात्र स्थुळ शरीरमांज, स्थित थइ रह्या नथी, परंतु मानसिक ज्ञानना योगे

बुद्धिनी जेम जेम उन्नति थती जाय छे, तेम तेम, तेमनी इच्छाशक्ती प्रबळ थइ तेनी चंचळता वृद्धिने पामती जाय छे; अने बुद्धिचैतन्यनी यथायोग्य उन्नति थइ प्रकाप थयो एटले ते इच्छा शक्ति पण प्रबळ थवाथी, ते सजीव प्राणी उपर पोतानी सत्ता बेसाडी शके छे एटलुंज नहीं पण घणा प्रसंगे निर्जीव पदार्थो उपर पोतानी सत्ता बेसाडी, अति अद्‌भुत कार्यों करी शके छे.

महा समर्थ अने दिर्घद्रष्टा योगीओनो एवो सिद्धांत छे जे, केवळ शुद्ध चैतन्यज मात्र, एक अखंड अविनाशी अने सत्यछे; अने तेज सर्वोपरी सघळी दृष्ट वस्तुनुं मुळ कारण छे, अने तेना अंतनुपरीणाम पण तेजछे. ते शुद्ध चैतन्य जाते अचालित छे, परंतु ते आपणा अज्ञाने करी आपणने भिन्न भिन्न प्रथक स्थिति अने प्रथक अगणीत रुपो देखाय छे, ते जेम एक सूर्य अथवा चंद्र भिन्न भिन्न वांकी चुंकी जगामां भिन्न भिन्न अनंत रुपे देखाय छे, तद्वत छे. तेने केटलाएक इश्वर कहे छे. केटलाएक प्रकृति कहे छे. केटलाएक शक्ती कहेछे. अने केटलाएक आत्मा कहेछे. जे जे प्रमाणे मनुष्यने ज्ञान अने विद्या होय छे ते प्रमाणे कल्पना मनुष्य प्राणी करे छे, परंतु अंते सर्वेनुं मुळ अनंत अने अविनाशी सत्य कारण एकज छे.

ते केवळ शुद्ध चैतन्यनी व्यक्त प्रकृती अथवा

कार्मीक इच्छा, अरुप शक्तिमां रहेली होयछे, अ-
थवा ते व्यक्त प्रक्रतिनां रुपो बंधाय छे, तेना मुख्य
वर्ग प्रथम तात्विक अथवा महाभुतनो वर्ग बीजो धातुनो
वर्ग, त्रीजो वनस्पतिनो वर्ग, चोथो पशू पक्षी आ-
दीक सजीव वर्ग पांचमो उत्तमप्राणी मनुष्यनो वर्ग
अने छठो चैतन्य जीवनो वर्ग एवी रीतना मुख्य
वर्गमां अनेक प्रकारनां भिन्न भिन्न रुपो अथवा स्थि-
ति उत्पन थता जाय छे अने तेनो नाश पण थतां
तेना उपर कहेला मुळ वर्ग पण काळंत्तरे बदलाइ जा-
य छे. माटे ते मिथ्या अने दोष रुप कहेवाय छे.
कदापी ते एक क्षण रहे अथवा हजारो वर्ष लगी
घणाकाळ सुधी टकी शके, तोपण ते अंतत्राळा अ-
ने काळथी उत्पन थएला कहेवाय छे; माटे ते जेम
कोई पडदा उपर अंतरना दीपना प्रकाशने योगे
अनेक प्रकारना भिन्न भिन्न पडदामां रहेलां रुपो
बाहार देखाय छे, अने ते प्रकाप न्युन थवाथी ते
झांखा थइ जाय छे, अने ते प्रकाशनुं जेवुं तिव्रपणुं
हो ते प्रमाणमां ते रुपो स्पष्ट देखाय छे, अने ते प्र-
काश गयाथी ते रुपो बंध थई जाय छे, तेवी रीते
माइक सघळां रुपोनुं प्रथकर्ण थवाथी ते चैतन्य र-
हित थाय छे. माटे ते सघळानुं विसरजन थइ एक
चैतन्य मात्र रहेछे.

आपणे पुर्वे स्पष्ट दर्षावेलुं छे के सघळा मनुष्य
प्राणीओनुं मन, अने बुद्धि, आकाश अने वायु अने

आकाषने तेजना अती सुक्ष्म परमाणुओनुं बनेलुंछे
अने आकाश, वायु अने तेज वीगरे तत्वो प्रथम मुळ
क्रती अथवा चैतन्य सहित अव्यक्त अने व्यक्त प्र-
क्रतीना बींदु रुपे स्थित हता तेमांथी सघळा तत्वो
शुद्ध चैतन्य अने प्रक्रतीनी सर्व शक्तीना योगे छुटा
पड्या अने तेना उपर संस्कार थइ भिन्न भिन्न सं-
योगकर्णथी, सघळी श्रष्टि अने ब्रह्मांडादिकनी उत्प
ती थइ, ए उपरथी विद्वान अने बुद्धिवान पुरुषोने
स्पष्ट जणाशे जे उपर कहेली शुद्ध चैतन्य अने प्रक्र-
तीनी दैविक शक्तीनी प्रथम कल्पनानां मन अने बु-
द्धीना परमाणुओनुं संयोगकर्ण थइ तेज मनुष्य
प्राणीनां जे द्रश्य रुपो तेमां स्थित छे. माटे ए सर्व
व्यापक छे एवां सघळां रुपो स्पष्ट रीते मनुष्य प्रा-
णीने जणाइ शकता नथी, केमजे तेनुं द्रश्यपणुं ते म-
न अने बुद्धिना सूक्ष्म परमाणुने परावर्तन करवानी
शक्तीना प्रमाणमां रहेलुं छे, अने जे प्रमाणे परमाणु
ओनो संग्रह थयो होय, ते प्रमाणे ते पदार्थनो स्प-
र्शादीक जणाइ शके, जे प्रमाणे अद्रश्य अति सुक्ष्म
प्राणवायु प्रथम होय छे, पछी तेमांज जेवा परमाणु
ओनो अधिक संग्रह थइ, महत्व थयाथी स्थुळ थय-
ला पदार्थो द्रष्टोतपत्तीमां आवे छे अने स्पर्शादीक-
थी जणाइ शके छे, तेज प्रमाणे मोटाघन स्थुळ प-
दार्थोने, यथा योग्य उष्णता आप्याथी, ते अद्रश्य
करी शकाय छे.

ए उपरथी स्पष्ट जणायछे जे, प्रक्रतीनी उत्पन करवांनी इच्छा शक्तीना, सघळा कार्यो आपणे दृष्टोतपातिमां आवी शकता नथी. एटलुतो सघळाना जाणवामांछे जे श्रष्टिमां अनंत प्रक्रतीना परमाणुओ रहेला छे, अने तेज प्रमाणे ब्रह्मांडमां, अगणीत, अद्रश्य रूपो पण रहेला छे, ए सिद्धांतनी सांप्रतकाळनो विद्वान बुलवरटीटन पुष्टी करे छे. ने एवुं कहे छे जे, 'प्राण ए सर्व व्यापक वस्तु छे, जे, आपणे मरी गयेली वस्तु जणाइ, जेनुं प्रथकर्ण थइ नाश थयेलो जणायछे, तेना प्राण, नवा प्रक्रतीना परमाणुओनो संग्रह करी नवा रुपो करेछे. एटले जेटली श्वासोश्वासवाळी अने स्थिति करवा योग्य श्रष्टिछे, तेमां जळना एक बींदुथी ते एक पात्रमां अनंत कोटी जंतुओ रहेला होय छे, तेमज मनुष्यप्राणीमां अति सुक्ष्म जंतुओनी एक श्रष्टि बनेली छे, तेमां घणा जंतुओनो निवास छे, अने तेना रक्तनी नदीमां लक्षावधी सुक्ष्म जंतुओ रहेला छे, जेवी रीते मनुष्य प्राणीने रहेवानी पृथ्वि छे. तेवी रीते उपर कहेला जंतु अने कीडाओने निवास करवाने मनुष्यनो देह छे. वळी उपलो विद्वान लीटन एवुं केछे जे, साधारण विद्यार्थिने साधारण बुद्धि हशेतो, ते पण जाणी शके जे, चंद्र, तारा विगरेथी लइ प्रथ्वि सूधीना अनंत अवकाश पण बेने रहेवा योग्य अगणीत प्राणोथी भरपुर छे. कदापी तमे एक पाणीनुं बींदु सू-

क्ष्म दर्शकयंत्रथी जोशो तो, तेमां केवा भिन्न भिन्न
जंतुओ देखाय छे, केटलाएक झीणा अने केटलाएक
तेना प्रमाणमां राक्षस अने दैत्यना जेवा मोटा होय
छे तेवीज रीते विशाळ वातावर्णमां अनंत कोटी जी-
व अने प्राणीओ रहेला छे. केटलाएक तेमां रहेला
प्राणी बीजा प्राणीना कर्ता; अधिक डापणवाळा
होय छे, अने केटलाएक भयंकर दुष्ट होय छे, तेमां
केटलाएक मनुष्य प्राणीना शत्रु पीशाच होय छे, अ
ने बीजा केटलाएक नरम गुणवाळा पवित्र अने स्व-
र्ग लोक, अथवा वरीष्ट स्थाननी वचे सूचना कर-
नारा होय छे," आ उपरथी हालना केटलाएक भ
णेला एवुं समजे छे जे, एतो मात्र कल्पित वातो
पोताने अने बीजाने आनंद करवा सारु छे. आपणे
एवा केवळ अवीचारी पुरुषोने निश्चय करवानी अ-
गत्य नथी, परंतु जे आग्रही अने सत्य शोधक गुप्त
विद्या जाणवानी इच्छा राखनारा विद्यार्थी छे तेम-
ने स्वअनुभवथी उपर कहेलुं सघळुं सत्य जणाशे. ते-
मणे निश्चय जाणवुं जे, उपर कहेला अदृश्य प्राणी
छतां, ते परमाणुना संग्रहथी भिन्न भिन्न रुपोवाळा
छे, एवुं जे आग्रही विद्यार्थीये, संपुरण मननथी, इ-
च्छा शक्ती प्रबळ करी छे, तेने जणाइ शके छे, अने
ते जेम जेम अभ्यास अधिक करे छे, तेम तेम तेने ते
अदृश्य प्राणीओ, प्रत्यक्ष, देखाय छे एटलुंज नहीं
पण ते कांइक ज्ञानवाळा, स्थुळ प्राणी जेवा देखाय

छे अने कोइ समये उपयोगी जणाय छे. एनां द्रष्टां तो आपणे जोइशुं तो ते घणा मळी शकशे.

जे प्रमाणे सूर्यमंडळनी उत्पन करवानी अलौकिक शक्तिथी अजाणे अथवा जाणे, अगणीत भिन्नभिन्न रुपो उत्पन थाय छे, कदापी आपणे एकाग्रताथी अथवा ते विना जे कल्पना आपणा मनमां करीये तो तेनां आपणे योग्य रुपो बनावी प्राणीओ उत्पन करीए छइए. पण तेनुं द्रश्यपणुं अथवा प्रकृतीना परमाणुवाळा करवाने जेवा उपायोनी योजना करीये ते प्रमाणे ते थइ शके छे. प्रथम प्रत्येककल्पना अद्रश्य रुपो उत्पन करे छे. ते रुपो यथार्थ एकाग्रता कर्याथी, जेणे उत्पन कर्या तेनेज देखाय छ, एम नथी परंतु जेना विचार अने कल्पना. तेवां रुपो जोवाने संस्कार पामेला होय छे, तेने पण ते जणाइ शके छे.

ए विषे हालना एक (योगी) महात्माए एक प्रसंगे एवुं कह्युं छे जे "मनुष्य प्राणीना प्रत्येक विचार अथवा कल्पना उत्पन थवानी साथे ते कल्पनाना सूक्ष्म परमाणुओ अंतरीक्ष अवकाशमां जइ, तथा बीजा केटलाएक तेने अनुकुळ आवे, एवां परमाणुओनी साथे समीलन थइ, अति अल्प मतीना चंचळ प्राणीयो बने छे, ए कल्पनाना उत्पन थयला प्राणीनी अधिक, अथवा न्युन स्थिति जे प्रमाणे ते कल्पना उत्पन करवामां अधिक अथवा न्युन आतुरता

अने आग्रह होय ते प्रमाणे थइ शकेछे. हवे ए प्राणी उत्पन थवानी व्यवस्था एवी होय छे जे, कदापी कल्पना शुभ अने परोपकार बुद्धिनी होय तो, ते नाथी जे प्राणी उत्पन थाय, ते शुभ गुणना अने परोपकार बुद्धिना प्राणी जेवा जणाय छे; अने अशुभ कल्पनाथी मलीन घातकी अने पिशाच जेवा, प्राणी उत्पन थयला जणाय छे. एवी रीते, मनुष्य प्राणी नीरंतर अवकाशमां तेनी कल्पनानी उत्पत्तिनां प्राणीओ तेनी इच्छा, मनना विकार अने वलण जे प्रमाणे होय ते प्रमाणे उत्पन कर्या करेछे, उपर कहेला मनुष्य प्राणीना मननी शुभ कींवा अशुभ कल्पना अने विकार तेना कर्मानुसार उत्पन थइ, तेनी सत्ता बीजा अंतरीक्षना सुक्ष्म परमाणुनी साथे मळी, कोइ संस्कारी अथवा अशक्त अने निर्बळ शरीरना प्राणी उपर जलदी थइ शके छे कल्पनानां रूपो साधारण माणस पोतानी अजाणमां उत्पन करे छे. तेनी तेने कांइज खबर होती नथी. परंतु योगी अने महात्माओ जाणीने कार्यानुसार कल्पना उत्पन करी, रुपो उत्पन करेछे. तेणे करी तेनाथी अशुभ कार्यो कदी थतां नथी.

उपर कहेला महा अदभुत कल्पनाना प्राणीओने उत्पन करवाना नीयम हालना भणेला अने विद्वानमां गणायला पण संसारनी, अपरीमीत त्रणावाळा, ए विषे पोताना करतां अधिक विद्वानो-

थी, परीक्षा कर्या विना अहंमतीथी असत्य अने क-
ल्पीत माने छे, पण एनी सत्यता हालना पश्चीम दे-
शना आग्रही विद्वानोए स्वअनुभव उपरथी सीद्ध
करेली छे, तेमां एक संकारी अमेरीका देशना विट-
वर्थ नामे विद्वाने करेलीछे तेनी सविस्तर वीना आ-
पणे संवत १९४१ना चैत्र वद्य ११ने वार रवेउना
व्याख्यानमां वर्णवेली छे. तेथी आ प्रसंगे ए बिशे
अधिक कहेवानी अगत्य नथी. माटे उपर कहेलो वि-
टवर्थ नामे विद्वान अंते एवुं कहेछे जे, आपणे जे क-
ल्पना अने शब्द बोलवा ते मात्र शुभ, सत्य अने
परोपकार बुद्धिना होवा जोइए.

कदापी अल्प बुद्धिना वगर अनुभवी एवुं कहे
जे, एवी रीतनां कल्पनानां सुक्ष्म रुपो अद्रश्यछे अने
ते द्रश्य एटले सघळाना जोवामां आवे एवा नथी
माटे ए सघळां कार्यो मात्र कल्पनाना असत्य होवा
जोइये, ते माटे आ प्रसंगे द्रश्य अने अद्रश्य विशे अ-
ल्प विचार करीये.

द्रश्य अने अद्रश्य ए शब्द दोष रुपछे. ए बंने
शब्दोमां अंत्तर मात्र आपणी कल्पनानोज छे. द्र-
श्य अने अद्रश्य ए बेउनी वच्चे आपणे अंतर गणीये
छइये, ते मात्र आपणा जाणवामां आवेला द्रश्य
पदार्थना निश्चय करेला ज्ञान उपरथीजछे ते शीवाय
बीजाने अद्रश्य कहीये छइये ए उपरथी आपणे जे
रुपो द्रश्य अने अद्रश्यछे, ने आपणी जेवा प्रकारनी

स्थिती होय, अने ते समये जेवी रीतना द्रश्य रूपो आपणा जाणवामां आवे, तेवी रीतना ते रूपो आपणा मानी लीधेला, निश्चय प्रमाणे द्रश्य, अने अद्रश्य कहेवाय छे. एटले कोइ अति नानो बाळक, अथवा केवळ मंदबुद्धिनो माणस, जे के कल्पनाना विचारो अने प्रक्रतीना, एकठा मळेला परमाणुओना विचारमां, अंतर समजी शकतो नथी तेने द्रश्य अने अद्रश्य पदार्थो समानजछे. तेना सघळा मिथ्या तुरंगोछे, परंतु जेना ज्ञाननी यथार्थ उन्नति थइ, जेनी इच्छा ज्ञानमय छे, तेनी कल्पनाना तुरंगो, प्रक्रतिना परमाणु संग्रह करी, तेना पोताने रूपो जणाय छे. एटलुज नही पण ते बीजाने पण तेवा रूपो देखाडी शकेछे. माटे एक समये जे कल्पना करी तेना रूपो बंधाइ, प्राणी अने पदार्थ थायछे. परंतु ते करवाने यथा योग्य उपायोनी योजना करवानी प्रथम अगसछे. केवळ ससताथी, आपणेथी कही नही शकाय के, जेटली वस्तु आपणे आपणी पंचइंद्रीओथी, जोइ अने जाणी शकीये छैये तेटलीज, वस्तुनी मात्र उत्पतीछे आपणी इंद्रीयो घणे प्रसंगे आपणने भुलावी आडे मार्गे लइ जायछे, श्रष्टिमां केटली एक एवी वस्तुनी उत्पतीछे के, जे आपणी इंद्रीओथी जणाइ शकती नथी, बाहारना पदार्थोनो प्रथम विचार अथवा कल्पना आपणा मनमां उत्पन थइ, जेवी रीतनु ते पदार्थ विषे ज्ञान प्राप्त थइ, निश्चय कर्यो

होय, ते प्रमाणे ते पदार्थोनी सत्यता मानी लीधेली छे. ए सघळा कारणो उपरथी साधारण बुद्धिवाळाने पण स्पष्ट जणाशे के, आपणे जाग्रत अवस्थामां जे, द्रश्य वस्तुछे, ते स्वप्नावस्थामां अद्रश्य छे, अने स्वप्नावस्थानी सघळी वस्तुओ जाग्रत अवस्थामां अद्रश्यछे, परंतु ते स्वप्नावस्थामां तो द्रश्य अने जाग्रत अवस्था जेवी सत्य लागे छे. माटे जे द्रश्य अने अद्रश्य वस्तु अथवा प्राणी छे ते प्रथक प्रथक अवस्थाने लइनेछे.

आपणे उपर कह्युं जे मुळ मन अने बुद्धि ए महातत्वोमांना, आकाश, अने वायु, अने आकाश अने तेजना अति सुक्ष्म परमाणुओना समीलनथी बनी, तेमां चैतन्यना योगे अलोकीक शक्ती आवी, तेनाथी सघळा पदार्थोनी भिन्न भिन्न रचना, तेमज मनुष्य प्राणीनी पण रचना बनी, तेमां ए बेउ दैविक प्रतापवान वस्तु रहेलीछे. परंतु एने उत्तम ज्ञानना योगे, बळवान कर्या पछी जे प्रमाणे ए बेउनी इच्छाशक्ती प्रबळ थइ होय, ते प्रमाणे सर्वज्ञ अने सर्व शक्तीवान पणु प्राप्त थयाथी, महाअद्भुत अने अलोकीक कार्यो थइ शके छे, माटे सर्वोपरी प्रबळ इच्छाशक्तीछे, ए इच्छाशक्तीनी उन्नति केवी रीते थइ शके एनो विचार आपणे आगळ प्रसंग आवेथी करीशुं.

इच्छाशक्तिनी उन्नतिना साधनो.

आपणे पाछला व्याख्यानमां स्पष्ट रीते दर्शावेलुं

छे के, हालना समयमां विद्वान अने भणेला पुरुषो एवुं मानेछे जे, आपणा विचार, अने कल्पना, विकार अने आपणी त्रष्णा, ए सघळु उत्पन थवानुं कारण, मनोमय चक्रमां रहेला केटलाएक अति सुक्ष्म स्नायु अने रेषाओ उपर केटलाएक संस्कारनी स्थिति छे. ए तेमनो सिद्धांत असत्य अने दोष रूपछे, केम जे उपर कहेला विकार जे आपणा श्वासोश्वासना अति सुक्ष्म परमाणुओ, ते अंतरीक्षमां रहेला प्रकृतिना चैतन्य सहित अल्प प्राणीना समिलन थवाथी, ते जीवंत सत्य प्राणी थइ. ते आपणा शुभ अथवा अशुभ कार्यो करवामां अधिक बळ अने शक्ति आपे छे. विचार, त्रष्णा उत्पन करेछे. अने त्रष्णा इच्छाशक्तीने गती आपेछे; अने इच्छानी जे गति ते वेग उत्पन करेछे. अने ते वेग प्रकृतिना परमाणु अथवा पदार्थने आकार उत्पन करेछे. आपणे उपर कहेली प्रबळ थयेली इच्छाशक्तीना योगे प्रकृतीना गतीवाळा वेगने आपणी सत्तामां राखी शकीये छइये, अथवा ते शक्ती निर्बळ होय तो ते गतीनी सत्ता आपणा उपर थइ शकेछे, अने ते जो थोडी प्रबळ थइ होय तो, आपणे ते गतीनी साथे हली जवाथी ते आपणा कार्यमां साह्य करेछे. अने ते घणी प्रबळ थइ होय तो, अयोग्य मार्गे तेने आपणे नही जवा देता आपणी प्रबळ इच्छाशक्तीथी तेने आपणी सत्तामां राखी शकीये छइये.

जे मनुष्य संसारना अल्प विषय भोगनी त्रष्णामां केवळ लुब्ध थयोछे. अने त्रष्णाथीज सदा दोरायलो छे; ते अति निच कर्ममां प्रवत्याथी घणा घातकी कर्म पण करेछे. आपणा जाणवामांछे जे घणे प्रसंगे केटलाएक मनुष्योने, कांइ पण घातकी कर्म, करवानुं सबळ कारण नही, छतां, ते तेवां कर्म करेछे, तेनुं मुख्य कारण ए छे जे, तेवा मनुष्यनी एवी प्रबळ इच्छाशक्ती नथी जे, ते अयोग्य कर्म करवाना विचारने दबावी शके, अथवा तेवा मनना, अशुभ विचारने दाबी नाखवाने, पोतानी इच्छाशक्तीनो, जोइये तेवो यथार्थ उपयोग ते करतो नथी. अने तवी रीते, असावध रेहेवाथी पोताना मनना, दुष्ट विकारो उपर, सत्ता चलाववानी जे इच्छा, तेनी शक्ती उत्तरोउत्तर मंद थति जायछे, तेथी ते सदा कुकर्मनी सत्तामां रह्याथी, अंते निच योनीने प्राप्त थइ, अंते अधोगतीने पामेछे. एवी रीतनो विकाररूप मनुष्य अंतरीक्षनी प्रक्रतीनी मलीन शक्तीनी सत्तामां आव्याथी घणे प्रसंगे मलीन पिशाच प्राणीनी उपासना करी, पोताना अमंगळ कार्योमां ते दुष्ट प्राणीनी साह्यता मागवाना, उद्योगमां पोतानी इच्छाशक्ति प्रबळ करी, तात्रिक विद्यामां कुशळ थायछे, तेथी उत्तरोत्तर स्वार्थी अने एकलपेटो अधिक थतो जायछे. तेणे करी पोतानो सर्वस्व नाश करी, अनंतकाळसुधी अघोर पापी रहेछे.

योग विद्या अथवा गुप्त विद्या मेळववानी इच्छा राखनारा विद्यार्थिये पोतानी इच्छाशक्तिनी एटली उन्नती करवी जोइये जे, तेथी ते श्रष्टिनी सघळी स्वभाविक शक्तीने पोताने स्वाधीन राखी तेनी उपर सत्ता भोगवी शके, पण ज्ञान मेळव्या शीवाय आगळ तेनी अधिक उन्नति थइ शकती नथी. एवी अदभुत शक्ती, मात्र पोतानी इच्छाने योग्य कार्यमां, सदा प्रवर्तावावानो, अभ्यास राखवाथीज प्राप्त थइ शके छे, ए उपरथी एम नही समजवुं के मात्र एक ठेकाणे बेसी रही पोताना स्वार्थनी त्रष्णाने दाबी राखवी, परंतु स्वाभाविक रीते त्रष्णा उत्पन थवा नही देतां, सघळा मनुष्य प्राणीमां भ्रातु भाव राखी, तेमनी सत्य उन्नाति, थवाना कार्यो करवामां निरंतर प्रयत्न कर्या करवुं. पुनरावृतिनी केटलीएक उतरती स्थितिमां रहेला मनुष्य प्राणीने संसारना सुख भोगववा रुपी केटलीएक त्रष्णा, तेने उन्नति करवामां केटलाएक समय सुधी साधनरुपछे, केमजे एवो एक स्वाभाविक नियम छेके, योग्य कार्य करवाने योग्य समयनी पण अगत्य छे. ए त्रष्णानो भरेलो जीव ए शुद्ध चैतन्यनी भोमीका छे, जेमांथी बुद्धिचैतन्य, मुळतत्व शोधी काढी, बळीष्ट थइ शकेछे. मायारुप थयेलो जे जीव, ते ज्यारे संसार सुखनी त्रष्णाने जीती शके, त्यारेज ते संसार सुख अने तेनी त्रष्णा रहित जन्मने प्राप्त करी शके, परंतु सांप्रत म-

नुष्य प्राणीनी स्थिति जोता, केवळ त्रष्णारहित जन्म प्राप्त करवाने, योग्य स्थिति हजी कोइनी थइ नथी. मनुष्यने युद्धनो प्रसंग आव्या शीवाय हिमत, धैर्यता, अने पोताना सत्य विचारनो भरोशो, आवी शकतो नथी, जेम जेम युद्ध करी अनुभवथी, परीपक्क थायछे. तेम तेम ते आग्रही थइ, पोतानी इच्छाशक्ती, प्रबळ करतो जायछे; माटे उत्तम मानसिक ज्ञान प्राप्त कर्यापछी, अनुभवनी साथे मनना सघळा मलिन विकार अने कनिष्ट त्रष्णा साथे युद्ध करी तेने जीती लेवाथी उत्तम रीते कार्य थइ शकेछे. माटे उत्तमबुद्धि चैतन्यना निश्चयात्मक ज्ञानना योगे स्थुल प्रक्रतीना परमाणुनु प्रथकर्ण करी, चैतन्यतात्विक परमाणुनो संग्रह करी, चैतन्यरुप जीव थयाथी, अदभुत ज्ञाननी प्राप्ती थइ देव समान थवायछे.

ज्यारे इच्छाज सर्व व्यापक महा अदभुत गती अथवा शक्ती छे, त्यारे सघळा ब्रह्मांडमां एकज सर्वोपरी महा अदभुत शक्ती, होवी जोइये अने तेज महाशक्ती भिन्नाभिन्न रुपोमां भिन्न भिन्न प्रकारे स्थितछे. माटे जे प्रमाणे आपणी पोतानी इच्छा, सर्वव्यापक ईच्छानी साथे, अधिक समीलन कर्ता जइये, ते प्रमाणे आपणी ईच्छा अधिक, बळीष्ट थती जायछे; अने कदापी जो आपणी ईच्छाना कार्यो, उपर कहेली सर्व व्यापक महा ईच्छाथी, विरुध करीये तो परीणाम आपणे अति दुःखकारक थइ, एकला पडी जइ

अंते नाश मात्र थायछे. आपणी इच्छाने बळीष्ट करवा सारु, संसारना सुखनी त्रष्णाथी विरक्त थवानी अगत्य छे एक समये आपणे कोइपण पदार्थनी त्रष्णा थइ, एटले पछी ते पदार्थने आपणे आकर्षण करता नथी, परंतु ते पदार्थ निश्चय आपणने आकर्षण करी, तेनो आपणने दास बनावेछे. एक समये त्रष्णा उत्पन थइ एटले ईच्छा, जेनो तेने अभावछे ते पण प्राप्त करी शकेछे. ए सिद्धांत द्रष्टांतथी स्पष्ट समजाइ शकाशे. आपणे आ संसारमां केटलाएक एवा मनुष्यो जोइये छइये के जेमणे मर्ण पर्यंत पोतानो सघळो काळ, द्रव्य प्राप्त करवाना निरउपयोगी अने व्यर्थ काममां काढे छे. ते अंते द्रळीद्र अवस्थामांज मर्ण पामेछे, अथवा तेमने कदापी द्रव्य प्राप्त थयुं तोपण अधिक मेळववानी त्रष्णा रेहेछे, तेणे करी तेवा माणसो पोतानुं सघळु आयुष दुःखदायक अने धिक्कार करवा जोग स्थितीमां काढेछे. वळी आपणा जोवामां आवेछे के, सरकारी नोकरीनी इच्छा राखनारा मनुष्यने अधिकार मेळववानी त्रष्णा अधीक होयछे. तेथी ते ज्यां सुधी पोतानी त्रष्णा पुर्ण थइ नथी त्यां सुधी ते पोतानो काळ अती हलका अने नीचा माणसना पण आर्जव करवामां सदा काढेछे ते छतां घणाखरानी इच्छा पुर्ण थती नथी. तेज प्रमाणे कोइ अति कुरुप वृद्ध छतां स्त्रिनी त्रष्णा राखे तो तेनी प्रतिष्टानी हानी थइ ते हसवानेज पात्र थायछे तेथी घणे प्रसंगे पो-

तानो नाश पोताने हाथेज करेछे; माटे सुखी रेहेवानो सत्य उपाय एजछे के, आपणे द्रव्य अथवा कोइ पण वस्तु सारु त्रष्णा नही राखता जे आपणे प्राप्त थयुं होय तेमां सदा संतोष मान्याथी जेनी पासे अधिक द्रव्य छतां जेने अधीक मेळववानी त्रष्णा होय तेना कर्ता ते अधीक सुखी छे. जो आपणे अधीकार मेळववानी त्रष्णा होय तो आपणे बीजाना कर्ता आपणा मानसिक ज्ञान अने सत्यता अधिक मेळवी, पोतानो स्वार्थ खोइमे पण जो ते बीजाना कार्यो करीये तो आपणी त्रष्णा मोडीवेली सिद्ध थवानो संभव थायछे. जो आपणे बीजानो स्नेह मेळववानी इच्छा राखीये तो आपणे सघळा मनुष्यमां सत्य स्नेहथी वर्तववुं, तेथी सामानो स्नेह वगर इच्छा अने प्रयत्न कर्या शीवाय प्राप्त थइ शकेछे. आपणे जो सत्य अने निरविघ्न सुख प्राप्त करवुं होय तो, आपणे सदा आपणा स्वार्थना विचार करवानो त्याग करवो, तेथी आपणा अंतरमां सदा आनंद अने सुख रेहेशे.

आ सघळा उपरथी एम जणायछे के इच्छाशक्तीनी यथार्थ उन्नति थवी, अने योगविद्यानी प्राप्ति थवी, एनो आधार पुनरावृतीना नीयम उपर रहेलो छे. साधारण मानसीक ज्ञानवाळा सघळा मनुष्यने योगी समान परीपुर्णता मेळववा सारु घणा जन्म धारण करी बुद्धि चैतन्यना ज्ञाननी परीपक्व द्रढता करवानी अगत्यछे. ए छतां पण साधारण मानसिक

ज्ञानवाळो पोतानी इच्छाशक्तिनी उन्नती करवानो, अभ्यास जारी राखे, तो थोडा समयमां कांइक कार्यनी सीद्धी थइ शके. साधारण नीयम एवो छे जे, मनुष्यने पोतानी युवावस्थामां प्रथ्वि उपरना पंच विपयो संबंधी सुख पोतानी स्थुळ देहथी भोगववानी त्रष्णा अति तिव्र होयछे. अने जे प्रमाणे तेना ज्ञाननी ऊन्नति थती जायछे, अने वय पण परीपक्क थती जायछे. ते प्रमाणे उपर कहेला पंच विपय संबंधी सुखने रमतनी वस्तु समजी तेनो त्याग करी कोइपण बीजी वस्तु अधीक उपयोगी होय ते भणी लक्षजायछे.

एवी रीतनो उत्तम ज्ञाननी इच्छा राखनारो, सत्य शोधक कदापी मानसीक उत्तम ज्ञान मेळववाना साधन करी, जेम जेम अनुभव मेळवे तेम तेम तेने एवुं जणाय छेजे,तेनी जन्मपर्यंतनी संसार सुख प्राप्त करवानी महेनत अने प्रयत्न करवाथी अंते लाभतो धुमाडाना बाजका जेवोज मिथ्या छे. तेने आगळ एवुं जणाय छे जे, आ सघळी कल्पित श्रष्टिमां सघळी कल्पितज वस्तुछे. एवुं समजी ते मनुष्य जेम कोइ पक्षीने, कांइ असत्य वस्तु जणायाथी, तेनो त्याग करी उडी जायछे. तेम ते उन्नति पामेला मनुष्यने,सघळी श्रष्टिना सुख उपरथी अभाव थवाथी, ते शुद्ध चैतन्य संबंधी कल्पना करवा वळगी पडेछे. अने ज्यां तेने अघोर अंधकार जणातो हतो, त्यां तेने अति अलौकीक प्रकाष जणाववाथी, तेने सानंदा-

श्चर्य थवा मांडेछे. एवी रीते बुद्धि चैतन्यनु निश्चयात्मक सत्यज्ञान केटलाएकने अल्प समयमां थायछे. केटलाएकने कांइक अधिक समय लागेछे. अने केटलाएक जे आगीया जेवा संसारना मिथ्या अने असत्य प्रकाशने सुर्यना प्रकाश जेवा सत्य समजी, तेमां मर्ण पर्यंत निमग्न रहेछे ते पोतानो नाश पोताने हाथे करी लेछे.

आ संसारमां आपणु सघळुं आयुष्य, सत्य अने असत्य, सारुं अने माठुं जे के आपणा पूर्वजन्मना कर्मनुं परीणाम छे. तेनी साथे युद्ध करवानुं छे. एटले आपणी इच्छा शक्तीना साधनवडे आपणी पंच इंद्रीओनी, विषइ त्रष्णा, निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यना शुद्ध ज्ञाननी साथे युद्ध करवामां जे प्रमाणे इच्छाशक्ति प्रबळ होय ते प्रमाणे ते युद्ध टकी शके छे. जो निश्चयथी इच्छाशक्ति प्रबळ करी तो, ते सघळा मनना अल्प अने मिथ्या विचारो, नाश करी जय मेळवेछे. एवी रीते कोइपण कार्यने लीधे उत्पन्न थता विकारोने जीतवानो निरंतर अभ्यास राखवाथी इच्छाशक्ति उत्तरोत्तर बळीष्ट थती जायछे.

निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यनी उन्नति थइ, इच्छा शक्ति अति बळीष्ट द्रढ थवामां, मोटामां मोटा बे विघ्नो छे. एक विघ्न ईश्वर संबंधी पोते दोषरुप अने असत्य ज्ञान मेळववुं होय ते अने तेज प्रमाणे मनुष्यप्राणी विषे असत्य अने दोषीत ज्ञान छे. सघळा विद्वान

ना जाणवामां छे जे, अति सुक्ष्म पण प्रकृतिना परमाणु शीवाय कोइपण जातनुं रुप थइ शकतुं नथी, अने ज्यारे इश्वरने विषे कोइपण जातना रुपनी कल्पना करी, जो एम समजे के ते कोइ रुपवाळो इश्वर कोइ उपर कृपा करे, अने कोइने शिक्षा करे, एवी रीतनी अकुंचित कल्पना कर्याथी, अने ते अज्ञाने करी अकुंचित ज्ञाननी मर्यादामां रहेछे. तेथी तेना बुद्धि चैतन्यज्ञाननी ऊन्नति थइ शकती नथी. एवा मनुष्य कदापी जो सत्य निश्चयथी मनपुर्वक तेवा ईश्वरनी भक्ति, मर्यादापुर्वक करे, तोपण तेना स्वार्थनो नाश थतो नथी, केमजे ते एम समजेछे जे भक्ति करी आपणे परमेश्वरने राजी करी तेना दैव्य धाममां जइ दैव्य अलोकीक सुख भोगववुं छे, एवी रीतनो स्वार्थ रह्याथी, ते संसारमां केवळ स्वार्थ रहित, थइ शकतो नथी. तेवा मनुष्य कदापी कुकर्म करे नहीं अथवा विषय सुखनो त्याग करे, ते मात्र ते कल्पित ईश्वर शिक्षा करशे तेना भयथी अथवा पोताने उत्तम मानी लीधेला सुखमां विघ्न आवे तेथीज ते शुभकर्म करेछे. परंतु केवळ स्वार्थ रहित कर्म तेनाथी थइ शकतां नथी, अने एवी जातना भयने लिधे, ते बीकणो अने अल्प प्राणी पोताने समजेछे, तेथी तेनी इच्छाशक्ति यथायोग्य उन्नतिने पामती नथी. हवे मानासिक ज्ञाननी उन्नति पामेलो अने बुद्धिचैतन्यना ज्ञाननी ईच्छा राखनारो विद्यार्थि सर्व व्यापक चैत-

न्यनो आभास पोताने समजेछे. अने तेथी ते एम जाणेछे जे बीजा देखीता प्रथक माणसने मन,कर्म अने वचननी शुभ कर्म कर्याथी पोताने शुभ थइ शकेछे. अन बीजाने माठुं कर्याथी पोतानेज अंते नुकसान समजेछे. माटे कोइनुं भुंडुं कर्याथी पोतानेज आत्मद्रोही समजेछे. माटे ते सघळा विषे भ्रातुभाव राखी स्नेह राखवो अति अगत्य समजेछे. ते ईश्वर अने मनुष्यनुं सत्यज्ञान परीणामे एकज समजेछे. जे पोताना सत्य स्वरुपने ओळखी शकेछे. ते परमात्माने सत्यरीते ओलखी शकेछे. जो आपणे दैवीक सत्ता अने शक्तिना अंकुर आपणामांछे एवुं समजीये तो पछी आपणी इच्छा सघळी प्रकृतीनी इच्छा साथे समीलन करवाने दुर्गट पडतुं नथी.एवा ज्ञानथी आपणे बिजी सत्ता अने शक्ति विघ्न करी शकती नथी पण आपणी प्रबळ इच्छाशक्तिथी तेने आपणे सत्तामां राखी शकीये छइये. अने स्वाभाविक नियमना आपणे दास थवाने बदले तेना अधिष्टाता थइ शकीये छइये. तेथी भुत पिशाच विगरे मळीन प्राणीनी सत्तामां आपणे आवता नथी, पण तेना उपर आपणे सत्ता भोगवी इश्वर तुल्य थइये छइये.

आवी रीतनो सिद्धांत नही समज्याथी परीणाम अती भयंकर थाय छे. सर्व व्यापक महा इच्छानी साथे आपणी इच्छा समीलन करवी, एटले एम नही समजवुं के आपणे जे कांइ सुख दुःख आवे तेनो

कोइ विचार नही करी तेनी बेदरकारी राखी, आपणी इच्छा कोइ अज्ञानी मनुष्यनी अथवा कोइ दुष्ट अने घातकी मनुष्यनी इच्छाने स्वाधीन करवी.अने तेनी इच्छा प्रमाणे दोराववुं एथी उलटुं माठुं थाय छे. परंतु आपणेतो कोइना कल्याणने अर्थे जे कांइ परोपकारनुं कार्य आपणाथी थइ शके, एवुं होय ते कार्य करवामां अति द्रढ आग्रह राखवो. कदापी आपणे अल्पज्ञानी अने स्वार्थीना संगष्टणथी, तेनी दोषीत कल्पना प्रमाणे वर्तवानो अभ्यास पड्योतो, आपणी अल्पबुद्धि थता थता निश्चयात्मकबुद्धि चैतन्यज्ञान मेळववा भणी लक्ष आपवानी इच्छा नही थवाथी, आपणे स्वार्थी थता गया एटले इच्छानी प्रबळ शक्ती क्षिण थता थता, पशुवत थइ अंधपरंपराने मार्गे दोराया जइये छइये. तेथी अंते पिशाच रुप थवायछे.

आपणी त्रष्णानो नाश करवो एटले आपणा मनना विकार अने विषय सुखनी अपरमीत त्रष्णा उपर सत्ता बेसाडी तेने स्वाधिन करी, सदगुणनी इच्छा प्रबळ करवी. आपणी पोतानी इच्छा सर्व व्यापक इच्छानो साथे समीलन करवी एटले सदा परोपकार बुद्धिथी सत्यताथी वर्तवुं. अने आपणा सघळा कार्योमां मनुष्यप्राणी विषे भ्रातु भावथी वर्तवुं. सघळा प्राणीनुं मात्र सारु करवानी इच्छा राखवी एटलुज नही पण ते प्रमाणे कार्य सिद्ध करवाने

प्रयत्न करवुं. केटलाएक एवुं समजेछे. अने केछे जे, यांसुधी आपणे सत्यतार्थी चालिये छइये त्यांसुधी बीजा माणस गमे तेम कहे तेनी आपणे दरकार रा· खवानी अगत्य नथी. ए माणसनी मोटी भुलछे केम जे ज्यांसुधी उत्तम प्रकारना ज्ञानवडे प्रथम सत्य अने असत्य ओळखी शकातु नथी त्यांसुधी ते जे कार्यो करेछे. ते सत्यजछे, एम कहेवाय नही अने एवी रीते असत्यमां सत्यनो निश्चय कर्याथी सत्यताना नामे असत्य कर्मो थाय छे. अने तेथी परिणाम अति भ- यंकर थायछे. घणे प्रसंगे मनुष्यना समुहना सिद्धांत असत्य होय छे, अने घणे प्रसंगे धर्म संबंधी असत्य द्रढ गांठ वाळ्याथी जे वेहेमो उत्पन्न थायछे. तेने लीधे घणा मानसिक ज्ञानवाळानी सत्य असत्यनी परीक्षा करवानी इच्छा कुंठित थइ जायछे. अने ते अंधकारमांज फांफां मार्या करेछे. तेणे करी उत्तम मानसिक ज्ञानवाळो छता तेना ज्ञाननी उन्नति थइ शकती नथी. अने ते जे स्थितिमां होय तेज स्थितिमां मर्ण पर्यंत रेहेछे. माटे इच्छाशक्तीनी सत्य उन्नति थवानुं मुळ साधन निश्चयात्मक बुद्धिचैतन्यनुं सत्य ज्ञा- नजछे. ए ज्ञानना योगे सत्य परीक्षा करी सत्य नि- श्चय करी शकायछे. अने सत्य निश्चयथी इच्छाश- क्ति प्रबळ अने बळीष्ठ थायछे.

संवत १९४१ ना अषाडशुद १५ ने रविवार

———

अधिकार अने योग्यता.

गुप्त विद्या जाणवानी इच्छा राखनारा विद्यार्थिए, प्रथम सघळी स्वार्थनी तृष्णाथी विमुक्त थइ, पोतानुं अंतःकर्ण शुद्ध थया पछी, केवळ सत्यविद्यानुं अध्यन करवाने, अति आग्रहथी निश्चय कर्यो होय, तोज निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यनु ज्ञान प्राप्तथइ शके, जेथी स्व अनुभवना योगे सत्य कारण अने कार्य ए बेउ निर्मळ रीते तेने जणाइ शके.

निश्चात्मक बुद्धिचैतन्यनुं ज्ञान प्राप्त करवाने उपायो छे. तेमां पेहेलो उपाय अतिमंद अने दुर्घटछे जे प्रमाणे कोइ मनुष्य कोइ महा नदी जे ठेकाणे समुद्रने मळे, त्यांथी तेना प्रवाहमां उलटो ते नदीना मुळ पासे जवाने प्रयत्न करे, अने तेथी जेटलुं कष्ट सहन करवुं पडे छे ते प्रमाणे हालना विद्वानो प्रथम जे कार्यो द्रष्टोत्तपतिमां आवेछे तेनी परीक्षा करवानो अति भारी परीश्रम करी, ते उत्पन थयेलां कार्योनां कारणो सोधि काडवानी इच्छा राखे छे, अने बीजो उपाय निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञानना योगे सघळा द्रष्टकार्योनुं जे मुळ कारण ते जाणवामां प्रकृतीना जेटलां आवरणो छे, तेनो त्याग करवाथी, मुळ कारण जाणवाना नियमो अने कृतिओ सोधी काडी, तेनां कार्य अथवा परीणाम भणी लक्ष जाय छे. महान बुद्धिवान योगीयो हालना विद्वाननी पद्धतीने

लक्ष आपवानो प्रतिबंध करता नथी, परंतु ते प्रकाषित ज्ञानवाळा पोते सर्व ब्रह्मांडना मुळ मध्य बिंदुमां समिलन थइ, ते सर्व व्यापक अनंतने जोवानुं अधिक उपयोगी जाणे छे, अने तेणे करी उत्तम बुद्धि चैतन्यना सत्य ज्ञानना योगे, सर्वे वस्तुमां अंत्तरयामी थइ तेनुं सत्य ज्ञान मेळवे छे. एवी रीते स्थिति करवाने, अति दुर्घट यत्न अने आग्रह करवा पडे छे, एतो सत्य छे; अने एज कारणने लीधे,घणा विद्वानोने, पोतानी नितिनी वर्तणुक संपुर्ण करी निश्चयात्मकबुद्धि ज्ञाननी वृद्धि करवाने अति कठण लागे छे, माटे तेमने शारीक उपायो संपुर्ण करवानुं स्वल्प लागे छे, परंतु तेथी अकुंचित ज्ञान प्राप्त थइ शके छे.

इश्वरी सत्य चैतन्य ज्ञाननी साथे, समीलन थवा सारु मात्र कांइ अमुक समये इश्वर प्रारथना अथवा भक्ति करवी, अथवा स्वर्गादिक उत्तम स्थानना विचार करवो ए साधन नथी परंतु निरंतर पोताना निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यनी जे स्फुर्णा, ते सर्व व्यापिक शुद्ध चैतन्यनी साथे, ब्रह्माडादीकनी अलौकीक कृतीना विचारमां निमग्न थवाथी थइ शके छे; अने तेज महारुषी अने मुनीओये सत्य धारणा अने ध्यान कर्युं छे.

ए अधीक स्पष्ट रीते समजवा सारु, मनुष्य प्राणीना स्वभाव अने तेमनी वृति केवी रीतनी होयछे,

तेनो विचार करवानी अगत्य छे. जे मनुष्यना स्वभाव केवळ पशुनी पेठे तेनी विषय इंद्रीओने स्वाधीन थयेला नथी तेने जणाय छे जे, तेने बे प्रकारनी वृति अने त्रष्णा छे, तेमां एक प्रकारनी वृति अने त्रष्णा तेने संसारना मिथ्या अने क्षण भंगुर विषय भोग तरफ आग्रहथी खेंचे छे, अने बीजा प्रकारनी वृति अने तृष्णा तेने, बीजा संसारमां नहीं जणायला, परलोकना सुखनी प्राप्ति करवा तरफ खेंचे छे, तेथी तेने प्रकृतिना विषयभोगनी लालचनी कांइक विस्म्रति थाय छे; तेणे करी ते अधिक उत्तम सुखना मार्ग तरफ जवाना विचारमां निमग्न रहे छे तेथी तेने, सत्य अने सुंदर सुखनी कल्पनानो आनंद अने संतोष थाय छे एवी रीते बंने प्रकारनी मिश्र स्थितिना वर्ग साधारण मनुष्य प्राणीना होय छे. हवे जेने मात्र इंद्रीओनां सुख भोगववानुंज ज्ञान छे, ते केवळ स्वार्थि थइ, तेने सत्य असत्यनो विचार नहीं रहे तो स्वतःज संसार सुख भोगववानी त्रष्णा रेहेछे; तेणे करी तेनी मानसिक वृत्ति सदा अल्पज्ञानना विषयोमांज प्रवर्तेली रेहे छे; तेणे करी, आत्म ज्ञानना सत्य अने असत्यनो निष्पक्षपात रीते नीर्णय करवाने असमर्थ थाय छे. ते मनुष्य सिक्षाना भयथी अथवा अधिक लाभनी लालचने लीधे कदापी कांइ मर्यादामां रहे, तोपण जो कदापी तेनी त्रष्णा आश्या अने भय, कर्ता अधिक बळीष्ट थाय तो ते प्रमादी बे फी

करो अने घणे प्रसंगे घातकी पण थाय छे. तेवा मनुष्यना क्रोध, लोभ, अने अदेखाइ ए त्रणे अवगुणो अति बळीष्ट थाय छे, अने तेनो विवेक अने सत्य असत्यनो निर्णय करवाना विचार केवळ मंद थइ जायछे. तेथी घणे प्रसंगे अयोग भाषण करी पशु समान वर्ते छे. तेणे करी केटलाएक अल्प ज्ञानी मनुष्यो कोइ समये तेवा मनुष्यमां पिशाचनो प्रवेश थयो एम पण कहे छे.

हवे जेने निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यनुं ज्ञान होय छे, तेनुं मन तेना आत्माना उत्तम ज्ञानमां प्रवेश करे छे, तेथी ते न्युन अधीक आत्माना ज्ञान साथे समीलन थया विना रेहेतो नथी, अने तेवा मनुष्यने आगळ अभ्यास करी समाधीनी अवस्थामां जे, प्रप्रमाणे तेना आत्मानुं समलिनपणु उत्तम ज्ञाननी साथे थयुं होय, ते प्रमाणे तेनी कल्पना बळीष्ट थाय छे, तेणे करी जे ज्ञान तेने जाग्रत अवस्थामां होतु नथी तेवु उत्तम ज्ञान तेने समाधीनी अवस्थामां थाय छे. अने ते ज्ञान उत्तरोत्तर वृद्धिने पाम्याथी अलोकीक उत्तम ज्ञाननी वृद्धि थति जाय छे.

मनुष्य प्राणीनी पुनारावृतीनी स्थितिनो सांप्रत काळ एवो छे जे, जेमां मनुष्यनी विषय इंद्रीभोगनी त्रष्णानु मानासिक ज्ञान, अने निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यना ज्ञाननी उन्नति करवानी त्रष्णा, ए बेउं कांइक नियममां छे. एटले जेम केवळ पशुनी पेठे वि-

पय भोगनी त्रष्णाने स्वाधीन थइ जइ, बीजा उत्तम मानसिक ज्ञान तरफ लक्ष आपवुं छोडी देता नथी, तेम केवळ मानसिक उत्तम ज्ञान मेळवी, निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्य ज्ञाननी उन्नति करवामां दिर्घकाळ काहाडता नथी. एवी रीतना सांप्रत पुनरावृतिनी मध्यम स्थिति छे. एक समय एवो हतो के जेमां, घणा मनुष्य संसारनां सघळां सुख क्षण भंगुर, अने निरमाल्य समजी. तेमनी वृति सदोदित उत्तम ज्ञान मेळवी निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यना ज्ञाननी उन्नति करवामां काळ क्षेप करता हता, तेम एक समय एवो हतो के जेने विषे अल्पबुद्धिना, मनुष्य केवळ संसार सुख सत्य मानी ते शिवाय बीजु आगळ कांइज नथी एवुं समजी सदोदित विषय भोगनी त्रष्णामां अंध थइ तेमांज निमग्न रेहेता. माटे संसारना विषय भोगनीज त्रष्णाने केवळ स्वाधीन थवाथी, मानसिक ज्ञान अपुर्ण रेहेछे तेथी तेनी तर्क शक्ति संपुर्ण बळीष्ट पामी शक्ती नथी, माटे जो निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यना ज्ञाननी उन्नति तत्वज्ञानना योगे थइ, स्थुळ अने सुक्ष्म तत्वादीकना ध्यान अने धारणानो संपुर्ण अभ्यास कीधो होय तो अलोकीक ज्ञाननो प्रकाश थइ, तर्क शक्ती पण अती बळीष्ट थवाथी, अलोकीक चमत्कृति देखाय छे. अने तेथी अति महान, असंभावित जणायलां कार्योनी सवना सिद्ध करी शकाय छे. माटे पुनरावृतिनो एवो काळ समी-

प आणवाने विद्वान अने बुद्धिवान पुरुषोए यत्न करवानी अवश्य अगत्य छे आपणे उपर ध्यान करवानुं कह्युं, ते उपरथी एम नहीं समजवुं के, मुर्ख मनुष्यनी पेठे, कांइ पण विचार कर्या विना मन केवळ स्वस्थ पशु जेवुं राखवुं, पण जे बुद्धि चैतन्यनुं ज्ञान मेळवेलुं होय तेना विचार अभ्यासथी द्रढ करी राखवा. कदापी आपणे कोइ मुर्ति अथवा कोइ पण पदार्थ सामु निर्मळ वृति कर्या विना मात्र एकाग्रताथी जोया कर्याथी कांइज लाभ थतो नथी पण तेथी मनने आपणे केवळ कोरुं राखी बीजा अनेक तर्क अने विकार पण करवाने योग्य करीये छइये, ग्रह अने नक्षत्र आदीकना भ्रमण अने चलनना नियमो तेमज प्रकाश अने वीद्युत आदीक विद्याना मुख्य नियम, वळी जड अने चैतन्यादीक पदार्थोना संबंध, अने नीयम, ए आदीकजे अद्भुत विद्या सोधी काडी छे, ते मात्र एक जगाए एक वस्तु उपर एकाग्रताथी जोया कर्याथी थयुं नथी परंतु मानसिक ज्ञाननी उत्तम कल्पनाना योगे तेज विषय उपर एकाग्रताथी तेना कार्य अने कारणनुं संपुर्ण मनन कर्याथी, घणे काळे सत्यता जणाइ छे; माटे ध्यानना समये मनने केवळ कोरु राखवानुं नथी परंतु तत्वज्ञानथी मानसिक कल्पना अति चंचळ करी उत्तम स्थितिये पोचाडवानो अभ्यास राखवाथी, अंत्तरनी पोतानी स्थुळ, सुक्ष्म, कारण ने महा कारण ए चारे

पोतानी स्थितिनुं ध्यान, अथवा बाह्य ब्रह्मांडना तत्वादिकना ध्यानमां तलीनता थवाथी, मनमां बिजा विकारनो संचार थइ शकतो नथी, तेणे करी जे प्रमाणे अभ्यास अने द्रढता होय, ते प्रमाणे तेनां ध्याननी वस्तुनु तेने सत्य ज्ञान प्राप्त थाय छे.

एवी रीते निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यना ज्ञानथी जे उत्तम स्थिति थइ, समाधी थाय छे, ते दैविक अलोकीक चमतक्रति केहेवाय छे. ते शिवाय, गांजा भांग, विगेरे कोइ पण माध्य वस्तुथी अथवा हठ क्रियाथी जे एकस्थ स्थिति थाय छे, ते केवळ भिन्न छे, तेणे करी स्थुळ शरीरनी साथे जे सुक्ष्म शरीरनो संबंध छे, तेथी विरक्त करे छे; पण तेथी ते विरक्त थयेला सुक्ष्मने, अनेक विक्रियाओ नड्याथी, आकाशना चैतन्यनुं असंपुर्ण ज्ञान थायछे, अने घणे प्रसंगे असत्य अने दोष रुप ज्ञाननो आभाश पडे छे, केमजे तेने यथार्थ सत्य ज्ञान नथी, तेथी, सत्य असत्यनो निर्णय करवानी शक्ति नथी, ते बीजाने स्वाधीन रेहे छे. अने तेनो गुरु अथवा शिक्षक जे प्रमाणे तर्क उपर चडाववा इच्छे, ते प्रमाणे ते चडी शके छे; अने घणे प्रसंगे तेने स्वतः कांइज भान रेहेतुं नथी. परंतु जेणे निश्चयात्मक बुद्धिचैतन्य ज्ञाननी उन्नति करी नियम प्रमाणे वृद्धिने पामेलो छे, ते पोताथी द्रढ थयेली स्वइच्छाथी धारेली स्थितिमां रही शके छे, तेथी तेने आकाषना

चैतन्यना प्रकाशना योगे जे द्रष्टोत्पति आवे छे. तेनुं संपुर्ण ज्ञान तेने रेहेछे. अने तेनां त्यां, सत्य असत्य-नो निश्चय करी जे सत्य होय तेनुज ग्रहण करे छे.

सघळाना जाणवामां छे जे, ज्ञान प्राप्त करवा सारु अभ्यास करवानी अगत्य छे, अने अभ्यास करवा सारु आपणी ते समयनी स्थितिने, अनुकुळ आवे एवा योग्य उपायो अने साधनोनी योजना करवानी अगत्य छे. कदापी शुद्ध अने निर्मळ मनुष्य होय, अने ते जो अज्ञानी होय, अने तेने कांइ साधनाना योगे समाधी थाय अने ते समये तेने जे देखाय, ते तेनाथी यथार्थ समजी शकातुं नथी, तेणे करी ते कोइ समये घेलो थइ जाय छे. अने योग्य विद्या प्राप्त करनारो विद्वान आग्रही अने धीर्यतावाळो होय तै छतां, ज्यांहां सुधी तेनुं मन स्वार्थ अने अनेक प्रकारना वेहेम रुपी वादळथी ढंकाइ गयुं छे त्यां सुधी तेने संपुर्ण समाधी थइ शक्ती नथी ते माटे विद्वान अने भणेला विद्यार्थीये, मानसिक ज्ञान अने बुद्धि चैतन्य ज्ञान, ए बेउनी समान उन्नती करवी जोइए, अने तेनी साथे तेज प्रमाणमां स्वार्थनि त्रष्णा मंद थवी जोइये, प्राचीनकाळना गुप्त विद्याना केटलाएक विद्यार्थीओये उंची गणीत विद्या अने गायनविद्या विगरेनी अगत्य दर्शावेली जणाय छे, तेनुं कारण एजे, तेना योगे तेनुं मन एकाग्रताथी, तर्क करवामां स्थित थाय,

अने तेणे करी तेना जीवने ब्रह्मांडनी रचनाना दैविक नीयमोनुं यथार्थ ज्ञान समाधीना समये थइ शके. माटे आपणे सांप्रतकाळनी उपयुक्त विद्यानी पण योग्य विद्या प्राप्त करवाने घणी अगत्य जाणीये छइये. तेणे करी योग विद्यानी इच्छा राखनारा प्रथम विद्यार्थीने, उंचा प्रकारनी सत्यता जे के, हालना समयनी सघळी उपयुक्त विद्याने अजाणी छे ते प्राप्त थइ शके छे. परंतु मात्र एकला हालना समयनी उपयुक्त विद्यार्थी अति गुह्य अलौकीक सत्यतानुं ज्ञान प्राप्त थइ शकतुं नथी.

प्राचीनकाळना योगी एवुं केहेछे जे, सत्य ज्ञान प्राप्त करवानी इच्छा राखनारा विद्यार्थिये, प्रथम एम समजवुं जे, हुं केवळ अल्प ज्ञानी छुं, एम जाणी अभ्यास करवो. उपयुक्त विद्या जाणनारो जे विद्वान एवुं समजे छे जे हुं सघळुं संपुर्ण रीते जाणुं छुं ते अपुर्ण रेहेछे, अने अधिक उत्तम ज्ञान मेळववाने अशक्तीमान थाय छे. परंतु योगी अथवा महात्मा एवुं जाणे छे जे साधारण बुद्धिनो मनुष्य जे दीर्घकाळथी तेनी पुनारावृतिना जन्मोथी उन्नति पामतो आवेलो छे, ते छतां ते मात्र सत्य ज्ञानना अर्ध मार्गे आवेलो छे. अने ते तेनी सप्त-स्थितिमानी चोथी स्थितिये पोंचेलो छे, तेथी ते मनुष्यनी अंतनी स्थितिथी अजाण्यो छे. सांप्रतकाळनी विद्या मात्र मनुष्य प्राणीनी जे बे प्रथम स्थिति छे तेनाज विषे

अध्यन अने विचार करवानुं केहे छे. अने तेने बाकीनी उंची पांच स्थितिनुं अज्ञान छे. सांप्रत विद्या प्रकृतिनी मात्र चारज स्थिति जाण छे; अने योगीयोने तेनी सात स्थितिनुं ज्ञान छे. सांप्रत विद्याना चक्षु,मात्रथी द्रष्टोत्तपातिमां आवेला संसारना कार्योज जोइ शके छे, तेथी तेनी मर्यादा अकुंचित छे, तेणे करी तेना सघळा शोध अने परीक्षा ज्यांहां सुधी तेनां स्थुळ चक्षु जोइ शके त्यांज सुधी करी शकेछे परंतु गुप्त विद्या तथा आगळ जे स्थुळ चक्षुथी अद्रश्य छे, ते पण जोइ अने जाणी शके छे, योग विद्यानी सहायताथी जणाय छे जे, आ ब्रह्मांडमां मात्र एकलो मानसीक ज्ञानवाळो मनुष्य नथी, पण अवकाशमां बीजा अवकाश छे. तेज प्रमाणे प्रथ्वि जेवा अगणीत गोळाओ छे, अने ब्रह्मांडमां जे, आ पणे उपयुक्त विद्याना योगे जाणी शकीये छइये, तेना करतां बीजी अगणीत वस्तु आपणे जाणवानी रहेली छे; एवी रीते ज्ञान वृद्धिने पामता पामता गुप्त विद्याना योगे बुद्धि चैतन्यनुं अलोकीक ज्ञान प्राप्त थया पछी. सघळानुं मुळ कारण अनंत अने अवीनाशी शुद्ध चैतन्यनुं सत्य ज्ञान थाय छे, ए ज्ञान उपयुक्त विद्याथी थइ शकतुं नथी, माटे ते विषे हालना घणा विद्वान शोध करवानुं प्रयत्न छोडी, ते असत्य अने मिथ्या माने छे.

परंतु गुप्त विद्या जाणनारा महा समर्थ विद्वानो

उपर करेलुं सघळानुं मुळ कारण शुद्ध चैतन्य सत्य माने छे, एटलुंज नहीं पण श्रष्टीनां सघळां कार्यो अने तेनी सत्ता जाणे छे. एवी कोइ वस्तु नथी, जे तेमां ते चैतन्यनो आभाश नथी, माटे सघळी वस्तु ते रुप छे. कदापी आपणे ते चैतन्यनो आभाश प्रत्यक्ष जोइ शकता नथी, तोपण सघळी उत्पन थयेली वस्तुमां ते उत्तम बुद्धि चैतन्यना ज्ञानने योगे जणाइ शके छे. आपण जे वस्तु स्थुळ इद्रीओथी जोइए छइए ते जाते प्रथक वस्तु नथी, पण ते तेना मात्र गुणज छे, माटे योगीओ प्रक्रतीना परमणुनी कोइ पण आक्रतीनी सत्य स्थितिनी ना कहेछे, अने कहे छे जे, आक्रतीवाळी जे श्रष्टिनी वस्तुओ जणाय छे, ते अनित्य अने सदा बदलाती छे, अने तेनी जे उत्पति ते उत्पन करवानी कल्पनाज छे. एनी सत्यता हालना तत्वज्ञानीओये प्रथक रीते कहेली छे. ते केहेछे जे सघळा पदार्थो अने कल्पना अंते एकजछे. प्रथक नथी अने एज प्रमाणे आपणा महान रुषीओये, हजारो वर्षनी पुर्वे एवुं कह्युं छेजे, आंइ कांइज स्थित नथी, पण एक ब्रह्म अथवा शुद्ध चैतन्यज मात्र रेहेछे. अने सघळी वस्तु ते परमात्माना कार्यनुं परीणामछे. ते सघळुं तेमांथी प्रक्रती रुपे उत्पन थइ, तेनी महा अधभुत इच्छाशक्तीना योगे अखंडीत नियमोथी अनेक प्रकारनां रुपो उत्पन थयेलां छे.

ते माटे प्रबळ इच्छानी शक्ती अती अद्‌भुत सर्वोपरी छे. माटे जे ते चैतन्य शक्तीना संबंधथी वर्ते छे तेने ते शक्तीमांथी कांइ मळतुं जाय छे, अने ते शक्तिनो उपयोग श्रष्टिना नियमना सत्य आधार उपर रहेलो छे. परंतु ज्यारे मनुष्य प्राणी अने सघळी वस्तु महा अद्‌भुत परमात्मा चैतन्यना कार्यनुं परीणाम छे, त्यारे मनुष्यनुं निश्चयात्म चैतन्यज्ञानते मुळ चैतन्यनो आभाष छे; माटे ते जाते आत्मा चैतन्यज छे. मनुष्य प्राणीने सर्वे श्रष्टिनुं सत्य ज्ञान अने तेना नियमोनुं ज्ञान तेनी परीपुर्णताना आधार उपर छे. एटले हाल जे मनुष्य केहेवाय छे. ते अने तेनुं ज्ञान ए समजवुं नहीं, परंतु निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यनुं सत्य ज्ञान प्राप्त थया पछी जे परीपुर्ण मनुष्य थाय छे ते अवस्था छे. संपुर्ण। ज्ञान अभ्यास कर्या विना प्राप्त थइ शकतुं नथी, माटे संपुर्ण मनुष्यनो अभ्यास मेळववा सारु, पोताने संपुर्ण अने परीपुर्ण दशाने पोचवानी अगत्य छे. एवी संपुर्णता आ प्रथ्वि उपर एक जन्मे प्राप्त थइ शकती नथी, परंतु पुनरावृतीना घणा जन्ममां स्थुळ प्रक्रती अने शुद्ध चैतन्यना ज्ञानना युद्धमां जे स्थुळ अने सुक्ष्म प्रक्रातिनी त्रष्णा उपर जय मेळवे छे. एवो आग्रही मनुष्य संपुर्ण अवस्थाने प्राप्त थाय छे, माटे बुद्धिवान पुरुषनुं एज कर्तव्य छे. जे तेणे सदा सर्वदा अति आग्रहथी, उत्तम ज्ञान प्राप्त करी, सघळी त्र-

ष्णा उपर जय मेळववानो अभ्यास जारी राखवो तेथी अंते निश्चय परीपुर्णताने पामी शकाशे.

संवत् १९४१ श्रावण सुद ६ ने रवीवार.

योग विद्या.

योग अने विद्या ए बेउ प्रथक शब्द एकठा मळवाथी योगाविद्या ए संपुर्ण शब्द थयो छे. माटे ए बेउ शब्दना यथार्थ प्रथक अर्थ जाणवाथी, योग विद्याना विद्यार्थिने, ए अदभुत विद्याना ज्ञाननी उन्नती करवामां अधीक लाभ थशे. योग एटले संधी अथवा समीलनता अथवा एक वस्तुनुं बीजी वस्तु साथे एकत्रपणुं वीगरे थाय छे. अने विद्या शब्दनो अर्थ ज्ञान थाय छे ए ज्ञानना योगे आग्रही मनुष्य पोतानी मानसिक वृतिनी एकाग्रता करी, पोताने सर्व व्यापक शुद्ध चैतन्यनी साथे, समक्ष सानीध्यपणानी स्थितिमां लावी शके छे अने मात्र एज ज्ञानवडे; सत्य शोधक पंथीने अंतना सर्वोपरी कैवल्य मोक्षनी प्राप्ति थइ शके छे.

संपुर्ण अने महा अदभुत एवी जे योग विद्या ते युग युग प्रत्ये महा समर्थ अने शुभ इच्छावाळा महान रुषी, अने महात्माओये, प्रकाश करेली छे. ए विद्याना भिन्न भिन्न प्रकार घणा छे. ए आपणे पुर्वे जणावेलुं छे. कदापी ए विद्याना भिन्न भिन्न प्रकार अने रीतीओ दर्शावेली जणाय छे. परंतु सघळाना

अंतनुं तात्पर्य इच्छा शक्ती प्रबळ करवानुं जणायछे. योग विद्याना सघळा भिन्न भिन्न प्रकारमां राजयोगनी रीती अति उतकृष्ट अने विघ्न रहित छे. ए विद्यानो अति सुलभ हेतु मानासिक अने शारीरिक उन्नति करवी एज छे.

आपणे आपणा पुर्वे थइ गयेला वाख्यानोमां, मनुष्य प्राणीना स्थुळ सुक्ष्मादी शरीर अने तेना अंतर अने बाह्य अवयवो, तेनी उत्पति स्थिति अने तेनुं परीणाम, विगरे स्पष्ट अने संपुर्ण रीते दर्शावेलुं छे. एवुं स्पष्ट रीते आज लगी कोइ पण प्राकृत ग्रंथ मां जणावेलुं नथी. आज लगी योग विद्यानुं ज्ञान, घणाज थोडाने हतुं अने जेने छे तेमांथी घणा ए ज्ञान प्रगट करवाने केटलाएक कारणने लीधे आनाकानी करे छे. परंतु हालमां (थियोसोफी) ब्रह्म विद्यानी मंडळीना योगे उन्नतिं पामेला उत्तम ज्ञानी पुरुषोमां एनी चर्चा अधीक चाली छे. अने ए विद्यानी निष्पक्षपात रीते परीक्षा करवाथी एवुं जणायुं छे जे, ए महा अदभुत विद्यानी सत्यता साधारण बुद्धिना अपरीमित विषय भोगनी त्रष्णावाळा पुरुषोने जणाइ शके एम नथी ए विद्यानुं ज्ञान वेद, उपनीषद, अने गीता वीगरे ग्रंथोमां प्रसंगे प्रसंगे प्रगट करेलुं छे परंतु शुभ हेतुने लीधे जे मनुष्यनुं जेवुं ज्ञान उन्नतिने पामेलुं होय, तेवी रीते तेने समजाइ शके. एवी रीते योगविद्यानुं ज्ञान गुह्यार्थमां

प्रगट करेलुं छे, तेमां तेना केटलाएक अर्थ साधारण बुद्धिथी जोतां एक बीजाथी विरुद्ध पण जणाय एवा छे माटे तेनी यथार्थ सत्यता जाणवा सारु उन्नाति पामेला ज्ञाननी अवश्य अगत्य छे. साधारण मानसीक बुद्धिना मनुष्य अल्प ज्ञानने लीधे, अधिक विचार अने प्रयत्न नही करतां, योगविद्या कोइ अवतारी इश्वर गणायला पुरुषोनेज प्राप्त थइ शके एम समजी, पोताना मननुं समाधान करे छे. अने तेवा महा पुरुषनी प्रतीमा विगरेनुं पुजनअर्चन विगरे भक्ति करी संतोष पामे छे, अने तेथीज पोतानुं कल्याण समजे छे. परंतु सांप्रतकाळमां उपयुक्त विद्याना योगे मानसीक ज्ञाननो प्रकाश अधिक थतो जाय छे, माटे विवेकी सत्य शोधक मानसीक ज्ञाननी उन्नतिने पामेला सघळा मनुष्योये, अति आग्रहथी योगविद्या प्राप्त करवाने प्रयत्न कर्याथी, अधिक मोटो लाभ अवश्य थशे. ए विद्या प्राप्त कर्याथी आपणी इच्छा शक्ती बळीष्ट थइ ते उन्नतिने पामे छे. अने इच्छा शक्ती बळिष्ट अने तिव्र थयाथी, आ लोक अने परलोकमां अति उत्तम लाभ थवानुं साधन मळे छे एवुं आपणे निषपक्षपात रीते विचार करीशुं तो जणाया विना रहेशे नहीं. माटे आपणे अतिं आग्रहथी, ए विद्या प्राप्त करवानो प्रयत्न करी जय मेळव्या विना अल्पबुद्धी वाळानी पेठे समाधान पामी बेशी रहेवुं नहीं.

आपणे उपर दर्षाव्युं जे, योगविद्या एटले संधी अथवा एक वस्तुनुं बीजी वस्तु साथे समीलन अथवा एकत्रपणुं माटे योगविद्याथी कइ वस्तुनुं कोनी साथे एकत्रपणुं थइ शके छे ए जाणवानी आ प्रसंगे अगत्य छे. आपणे पुर्वे संवत् १९४१ना वैशाख शुद ५ ने रवीवारने दीवसे "मनुष्य प्राणीनुं कर्तव्य अने परीणाम" ए विषे वाख्यान कर्युं तेमां मनुष्यप्राणीनी सप्त प्रकारनी स्थिति अने पंचकोष अथवा आच्छादन अने स्थुळ, सुक्ष्म, अने कारण ए त्रण उपाधी वीगेरेनुं स्पष्ट रीते वर्णन करेलुं छे, तेमां जे मनोमय कोष छे. एटले जेमां आपणुं मानसीक ज्ञान रहेलुं छे, तेनुं विज्ञानमय कोष अथवा निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्य अने छेलुं ब्रह्म अथवा शुद्ध चैतन्य जे के बुद्धि चैतन्यमां हाल गुह्य आभाष रुपे छे एने विज्ञानमय कोषनी साथे समीलन अथवा एकत्रपणुं थवुं एज योग कहेवाय छे. अने तेम थवाथीज अंतनी जे अति उत्तम कैवल्य मोक्षनी स्थिति तेने प्राप्त थइ शकाय छे. माटे योग विद्यानी सहायताथी, आपणी नीची जे चार स्थिति तेने आपणी सत्तामां राखी शकीए एटलुंज नही, पण पांचमी जे मानसीक ज्ञाननी स्थितिनी नीची संसार सुख भोगववानी जे त्रष्णा जेणे करी ते आपणे पृथ्विना माइक सुख तरफ आकर्षण करे छे, तेने पण योगविद्याना साधनथी सत्तामां राखी शकाय छे. एटले आपणी

चार स्थिति अने पांचमी स्थितिनी निची त्रष्णना, रूपथी बंधायला सुक्ष्म शरीरना आच्छादन अथवा उपवस्त्रथी जे पांचमी उंची स्थिति ढंकायली होय छे तेने पोतानी इच्छा प्रमाणे राखी शकाय, अने काडी नखाय एवी स्थिति प्राप्त करवानी अगत्य छे अने तेथी अंते विज्ञानमय कोश अथवा बुद्धिचैतन्य अने शुद्ध चैतन्यनी स्थितिमां लय थवाय छे, एवी रीते ज्यारे पांचमी उत्तम स्थितिनी संधी छठी अने सातमी स्थितिनी साथे थाय छे, त्यारेज संपुर्ण योगनी स्थिति केहेवाय छे, अने त्यारेज मुक्त कहेवाय छे. अने तेवी स्थिति थयाथी निर्विकल्प समाधी थइ शके छे अने ते मायाना सघळा आवरणथी मुक्त थाय छे. माटे योग विद्यानो मुळ हेतु शारीरीक मानसीक, नीती अने निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्य ए सघळानी उन्नति करवी ए छे.

माटे एवी स्थिति प्राप्त करवाने योगविद्यानी इच्छा राखनारा प्रथम विद्यार्थीये, प्रथम पोतानी इच्छा शक्ती, आपणे पाछला वाख्यानमां कह्या प्रमाणे, अति बळीष्ट करवानी अवश्य अगत्य छे, ते शिवाय सघळां प्रयत्न निष्फळ जाय छे, माटे प्रबळ थयेली इच्छाशक्तीना योगे ते विद्यार्थीये सदा पोते अंतर शत्रु साथे युद्ध करी, बुद्धि चैतन्यनी पुनरावृति अने उन्नति करवी जोइये, एम करवामां अपरीमीत विषय भोगनी त्रष्णावाळो पोतानो विषयी

जीव शत्रु छे, माटे प्रथम अगणीत दुर्गुण अने घातकी कर्मनी त्रष्णानुं मुळ दहन करवानी अगत्य छे, एवी विकाररूप त्रष्णानो धीमे धीमे अती आग्रहथी जेम जेम इच्छाशक्ती प्रबळ थती जाय, तेम तेम तेनी सहायताथी, नाश करता जवुं अने फरी ते विकारी त्रष्णा उत्पन थवा देवी नही, ने जेथी आपणी स्थिरता अने समाधानी कदी चलायमान थाय नहीं अने एवीज घातकी दुष्ट त्रष्णाने, आपणा योगेश्वर श्रीक्रष्णे काळनिागनी उपमा आपी तेने नाथी एटले वस करी तेना उपर नृत्य कर्युं एटले ते त्रष्णाथी भय रहीत थइ, अति आनंदमय बीजा सघळा विषइ जनने देखाया, तेथी तेमने अती आश्र्चर्यपणु लाग्युं. एवी रीतनो गुह्यार्थ हालना समयना आचार्य अने तेमना भक्त नहीं समजतां तेनो बाह्य अर्थ सत्य काळीनाग समजी तेने श्रीक्रष्ण भगवाने वश कर्यो; एवुं समजे छे.

एवी रीते अकुंचीत बुद्धिना बाळकनी पेठे समजी घणा भाविक भोळाजनो समाधान पामे छे. माटे जेनुं ज्ञान उन्नतिने पामेलुंछे. अने जे निष्पक्षपात रीते सत्य असत्यनो निश्चय करी, जेने कैवल्य मोक्षनी इच्छाछे. एवा बुद्धिवान पुरुषोये सदा सावध रही, पोतानो अंतनो शुभ हेतु, पार पाडवासारु सदा सर्वदा अति आग्रहथी, पोतानी जे त्रीजी सुक्ष्म उपाधी तेना मोह पमाडनारा रुपोना कार्यो

भणी लक्ष राखी तेने अवळे मार्गे जवा देवी नहीं. तेम करवा सारु पोताना जे अंतर शत्रु काम, क्रोध, लोभ, मोह अने मद आदिने निरंतर वश करी, तेम ने पोतानी सत्तामां राखवा पण पोते तेनी सत्तामां जवुं नहीं. अने तेम करवानो अभ्यास अधीक थवाथी, तेनो संपुर्ण नाश थया पछी, निश्चात्मक बुद्धि चैतन्यनो प्रकाश अधीक थइ, ते परिपुर्णतानी दशाने पामशे. ते माटे उत्तरोतर इच्छाशक्ती प्रबळ करवानो अभ्यास नीरंतर राखी आपणी कामरुप आदीकनी सघळी त्रष्णा वश करवी. पण आपणे तेने वश थवुं नही. तेना उपर सदा द्रष्टि राखी निश्चमात्मक उत्तम बुद्धिथी, तेने शुभ मार्गमां प्रवर्तावानो अभ्यास राख्याथी धारेला कार्यनी निश्चय सीद्धि थया विना रेहेशे नहीं.

ए उपरथी एम नहीं समजवुं जे मात्र संसारनो उपरथी साग करी रंगीत वस्त्र अने योगी जेवा वेश कर्याथी, अथवा अरण्यमां जइ स्थुळ शरीरने अयोग्य कष्ट करी क्षुधा अने त्रष्णा पराणे मारी कष्ट शरीरे सहन कर्याथीज योग विद्या प्राप्त थइ शके परंतु, एटलुंतो ससछे के जेणे कामक्रोधादिक सर्वे अंतर शत्रुने जीतेलाछे, अने जेने अंतरमां सदोदीत वैराग्यज वर्सा करेछे, एटलुंज नही पण जे वीवेकी, अने जेने सस असस्यनो निर्णय करवा जेटलु ज्ञान प्राप्त थयुं होय एवी स्थितिनो पुरुष जो संसारनो

त्याग करी कोइ माहात्मा पासे एकांत स्थानमां जइ निवास करे तो तेने अल्प समयमां निश्चयात्मक बुद्धिचैतन्यनो प्रकाश थइ, तेनी इच्छा परीपुर्ण थाय. परंतु जे पुरुष अंतरमां विकारनो भरेलोछे. अने विषय भोगनी अंतरनी त्रष्णा वारंवार तेने स्वपनामां अथवा बीजा कोइ पण प्रसंगे उत्पन थया करे, तेवो मनुष्य जो संसारनो त्याग कोइ प्रसंगने लीधे अथवा एकाएक जुस्सो आव्याथी, करे तो तेथी लाभ थवाने बदले उलटु परीणाम विपित थइ, "अतो भ्रष्ट अने ततो भ्रष्ट" थायछे. एटले संसारना कार्यमांथी पण भ्रष्ट थायछे अने परलोकना उत्तम कार्यथी, पण भ्रष्ट थायछे. माटे उत्तम मानसीक ज्ञाननी उन्नतीने पामेला तत्व ज्ञानवाळा विवेकी पुरुषो, सद् ग्रंथद्वारा अने कोइ महान पुरुषना समागमथी, पोताना शरीरमां रहेला पंचकोशना आवर्ण अने सप्त प्रकारनी स्थिति वीगेरेनु यथार्थ ज्ञान प्राप्त करी निश्चयात्मक बुद्धिचैतन्य ज्ञाननी उन्नती करवानी जेनी उतकंठा छे, एवा पुरुष जो पोतानी शब्द, स्पर्श, रस, रुप, अने गंध ए पंच ब्राह्म अने पंच अंतर इद्रीयोने स्वाधीन राखी मन, बुद्धि अने हंकार ए तेर इद्रियोने संसारमां रही मर्यादाथी विषयभोग भोगवी नियममां राखी सदाकाळ स्वार्थना करता परमार्थना कार्यो करवाने जे अधिक तत्पर होय, अने जेने त्याग अने वैराग्य उपर अधीक प्रिती होयछे.

तेवा पुरुषो संसारना कार्यो करी तेमांथी अवकाश लावी प्रत्येक दिवसे तत्वज्ञान अने पोतानी स्थुळ, सुक्ष्म, कारण, अने महाकारण ए चारे स्थितिनो अभ्यास करवानी टेव राखेछे, तेना निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी उन्नति उत्तरोत्तर अधीक थती जायछे. अने ते जनक राजानी पेठे संसारना शुभ अने परोपकारनाज कार्यो करे, अने तेवा कार्योमां पण मनोवृत्ति आत्मा सनमुखज रहेछे. तेने योग एटले विज्ञानमय कोष आनंदमय कोष सहित, मनोमय कोषनी साथे संधी अथवा समीलन करवानो अभ्यास राख्याथी केटलेक समये ते यथार्थ योग थयो एटले ते योगनी कांइपण सिद्धिनी इच्छा नही राखे, तोपण ते तेनी आगळ सानीध्य रेहेछे. अने तेनेज अंते कैवल्य मोक्षनी पण प्राप्ती थायछे. माटे मानसीक उत्तम ज्ञानवाळा विवेकी पुरुषोये आ अमुल्य मनुष्यदेह अल्प संसारना सुख प्राप्त करवामां नहीं काहाडता अलोकीक उत्तम अने अवीनाशी अखंड सुखनी प्राप्ती करवाना शुभ हेतुथी राजयोगनो अभ्यास करवानो समय व्यर्थ जवा देवो नहीं. एनी कसोटी जोवानो समय अति समिप आवेलो छे. ए निश्चय समजवुं.

संवत् १९४१ श्रावण वद्य १२ रवीवार.

एकाग्रता.

योग अथवा आत्मानो परमात्मा साथे संपूर्ण

लय अथवा संधी करवानुं प्रथम मुख्य साधन एकाग्रताछे. परंतु जो कदापी एकग्रतानी शक्ती, वलण, अने तेथी थतुं परीणाम एनुं यथार्थ ज्ञान प्रथमथी योगविद्या प्राप्त करनारा विद्यार्थीने नहीं होय, अने कोइ प्रवीण गुरुनी सहायता नहीं होय, ते छतां पोते स्वता एकाग्रता करवा जाय तो परीणाम विप्रित अथवा लोकमां हांसीकारक थया वीना रेहेतुं नथी. माटे आ प्रसंगे एकाग्रता एटले शुं, अने तेथी केवा प्रकारना परीणामो थायछे, तेनी यथार्थ सुचनानी अगत्यछे.

मानसिकज्ञाननी एकाग्रता एटले अनेक प्रकारना मनना संकल्प, अने विकल्पनो नीरोध करी एटले ते प्रबळ इच्छा शक्तीना योगे उत्पन्न थवा नहीं देता, एकज विषय उपर लक्ष आपवुं तेने मानसिक एकाग्रता कहेछे. आपणा मननी स्वाभाविक स्थिति एवी होयछे जे, ते स्वाभाविक रीते इंद्रिओना विषय सुखनी कल्पनामांज तालिन रहेछे; ते विषयनी अपरीमित मर्यादा रहीत त्रष्णाने स्वाधिन थइ हजारो जातना भिन्नभिन्न पदार्थोनी प्राप्ती करवा भ्रमण करवाथी, ते मनुष्यनुं लक्ष स्थिर रेहेतुं नथी, तेणे करी एक धारेला कार्यनी परीपुर्णता इच्छा प्रमाणे थइ शक्ती नथी. अति ज्ञानी अने विद्वान पुरुषो अने साधारण अल्पज्ञानी एमां भेद एटलोजछे जे, उत्तमज्ञानी विद्वान पोतानी एकाग्रता एक धारेला विषय उपर स्थिर

अने अचलित राखी शकेछे. अने अल्पज्ञानी अने मुर्खनी एकाग्रता बाळकनी पेठे चळित अने भिन्नभिन्न विषयोमां भ्रमित होयछे. कोइ पण अति महत्वनी अने अति उपयोगी सत्यता सोधी काढवा सारु आपणी सघळी मानसिक शक्ती, ते एकज विषय तरफ अति आग्रहथी लगाडवी पडेछे. आपणे लक्ष पुर्वक विचार करीशुं तो एक अलोकीक सत्यता एवी जणाशे जे, आपणी मानसिक एकाग्रता जोइये तेवी घटीत बळीष्ट अने स्थाइक, कोइपण अगत्यना विषय उपर रहीतो, ते पोतानी स्थुळ इंद्रीओ उपर एवी चमत्कारी असर करेछे के, तेथी स्थुळशरीरनी चैर्या केवळ जुदा प्रकारनी बनावी देछे. जेने संस्कृत मां ब्राह्मरीक कर्म कहेछे. अने ए सत्यतानी हालना उत्तमज्ञानी पुष्टी एवी रीते करेछे जे, एक समये एकाएक कांइ भयंकर वस्तु कोइ नम्र मनना मनुष्यना जोवामां अथवा सांभळवामां आव्याथी तेनी भयंकर असर तेना मन उपर स्थाइक रही, तेना स्थुळ शरीरना अवयवोनी चरीया बदली नाखेछे. वळी आपणा सांभळवामांछे जे, भमरी, इयलने, पोताना गुप्त स्थानमां लइ जइ तेना उपर धीमे धीमे चटका मारे छे, तेथी ते इयल भयभित थइ, तेनुं लक्ष एकाग्रताथी ते भमरी तरफ संपुर्ण रीते रेहे छे, तेणे करी केटलोएक समय गया पछी ते इयळनुं पोतानुं रुप बदलाइ ते भमरी थइ जाय छे. ए केटलाएक वगर

अनुभवीने असत्य लागे एमां कांइ आश्चर्य नथी. एवीज रीते अनेक दृष्टांतो विद्वाननना जाणवामां छे जे, गर्भवंती स्त्रीने जो कंइ भयंकर असर थइ तो, ते तेना गर्भमां रहेला बाळक उपर ते असर प्रशव थया पछी जणायछे. ए उपरथी मनमां एकाग्रताथी स्थित थयेला विचारनी सत्ता अति बळीष्ट छे. माटे मननी वृति, एकाग्रताथी ज्ञानना योगे जेवी स्थित करवानो अभ्यास राखीये, तेवी रीते शुभ अने सत्य कार्यो बळीष्ट थइ लाभ पण तेज प्रमाणे उत्तम, मध्यम, अने कनिष्ट ए त्रण प्रकारना थइ शके छे.

एकाग्रता करवानो अभ्यास, थोडा समय सुधी आग्रहथी जारी राखवाथी, त्रण प्रकारना परीणाम उत्पन थाय छे. प्रथम स्थुळ शरीरने, अति आनंद उत्पन थाय छे. बीजो एकाग्रताना योगे जे वस्तु जोवामां आवे छे, तेना दर्शननो आनंद थाय छे. अने त्रीजो नीयम अने उत्तम नीतीनो आनंद थाय छे. कदापी स्थुळ शरीरने एकागताथी आनंद वर्ते अथवा नियम अने नीति उत्तम थयाथी आनंद वर्ते तेथी, एकाग्रतानुं अंतनुं सार्थक थयुं एम समजवुं नहीं, केमजे आपणा जोवामां आवे छे जे, केटलाएक भ्रमिष्ट थइ गयेलाने प्रथम तेवी रीते आनंद उत्पन थया पछी, ते पलटाइ शोक पण उत्पन थाय छे. माटे मननी स्थिरता अने चंचळताथी भ्रमिष्टपणुं ए बेउनी वच्चे यथार्थ नीयम सोधी का-

डवो अती कठण छे.

कोइ समये भ्रमिष्ट थयेला मनुष्यनी मानसीक कल्पनानी उन्नति थइ,ते महत्वना कार्यो करेछे,एनां थोडां द्रष्टांतो आ प्रसंगे पश्चिम देशना आग्रही विद्वानोना जे जाणवामां छे ते आध्याथी बुद्धिवान पुरुषोनो यथार्थ निश्चय थशे. टेसो नामना पुरुषे भ्रमिष्ट थयेली स्थितिना समये अति उत्तम, अने असर कारक कवीतानी रचना करी हती. लुक्रेटीसे एवीज स्थितिमां एक समये सुंदर काव्य रचेलुं छे. वळी भ्रमीत स्थानमां रहेला एक माणसे ऐकननो इतिहास सवीस्तर अने यथार्थ उत्तम रीते लख्योछे. एवी रीतनां घणां द्रष्टांतो छे. माटे मानसिक ज्ञाननी यथार्थ उन्नतिं थया विना केवळ हठयोगथी आसन प्राणायम वीगरे बाह्य क्रीया कोइ पण जातनी गांजा, भांग, विगरे माद्य वस्तुनुं पान करी एक विषय उपर एकाग्रता कर्याथी उपर कह्युं एवी रीते मानसिक कल्पनानी अल्प समय सुधी उन्नती थइ, ते समयमां कांइक आश्चर्यकारक कार्यो करी शके, अथवा कही शके, परंतु ते घणा समय सुधी स्थिर रही शकती नथी, आगळ तेने मानसिक व्याधी थायछे. तेथी क्रोधनी वृद्धि थायछे. अने सत्य असत्यना नीर्णय करवानी शक्ती अतीक्षिण थइ, केटलाएक भ्रमिष्ट पण थइ जायछे. माटे योगेश्वर जे शंकरस्वामी तेमणे उत्तम स्थितिये पोचवा सारु हठ

योगीने पण अवश्य राज योगनी अगत्य दर्शावेलीछे.

माटे संपूर्ण एकाग्रता थया पछी, पोतानी कल्पना स्वाधीन राखवी ए, उन्नति पामेला उत्तम ज्ञानीने अवश्य अगत्यछे. तेने सारु आपणी इच्छा शक्ती अति बळीष्ठ थयेली जोइये के जेथी एकाग्रताना समये मानसीक वृत्ति फेलाइ जइ, पोतानी सतानी बहार जाय ते समयमां ज्ञान रहीत बीजा अनेक तर्क पोतानी इच्छा रहीत नही थवाने, प्रबळ इच्छा शक्ती स्वाधीनमां राखी, सघळी कल्पनाना विचारनी सत्यता समजी शके; माटे एकाग्रताना समये स्वसत्तानी शक्ती अति प्रबळ थवी जोइये अने कोइपण जातना कुतर्कनो पोताना निर्मळ करेला अंतःकर्णमां प्रवेश थवा देवो नही. अने अंतर शुद्ध कर्या विना, अने कोइ पण जातना स्वार्थनी इच्छा राख्याथी, मानासिक साम्यावस्थानो भंग थइ परीणाम विप्रित थायछे. वळी पोतानी वृत्ती पोतानी सत्तामां नही राखी शकवाथी, अने सत्य असत्यनो नीर्णय नही करवाथी, कोइ पण धर्म संबंधी भ्रमणता, मत पंथ संबंधी वेहेमो. अने अल्पमती एवा परीणाम निष्पन थाय छे.

जे अल्पज्ञानीछे अने जे धर्म संबंधी सत्य, अने असत्यनो निर्णय कर्या पछी वर्तता नथी तेने वर्षनी प्रथक प्रथक रुतुमां देवाळयोमां भिन्न भिन्न प्रकारनी बाह्यरुपनी रचनाओ जोवाथी अने इंद्री उत्तेजक

शब्दादीक सांभळवाथी धर्म संबंधी अती उत्सा अने आनंद मात्र थायछे. पण संपुर्ण आत्मानी एकाग्रताथी जेवो अलोकीक लाभ थायछे. तेवो लाभ अल्पज्ञानीने कदापी थतो नथी.

माटे प्रबळ थयेली इच्छाशक्तीना योगे, पोतानी वृत्ति अने कल्पना उपर संपुर्ण सत्ता राखवाथी उत्तम प्रकारनी बुद्धि ज्ञानथी, धर्म संबंधी गंभीर अने सत्य मार्ग शोधी काडी मनोवृति यथार्थ नीयममां राखी शकेछे, एकाग्रता करवानो अभ्यास राखी पोताना अर्थनी परीपुर्ण सीद्धि करवा सारुं, वृत्तिओ उपर स्व सत्ता केवी रीते राखवी ए स्पष्ट रीते जाणवानी अगत्यछे. मात्र एकज जातना विकार उपर स्व सत्ता बेसाडवी, अथवा कोइएक जातना अघटित कर्म नही करवा मात्र आग्रह राखवाथी, परीपुर्णता थइ शकती नथी. परंतु मनोवृति उपर स्व सत्ता एटले आपणा मनना सघळा धिकार उपर, अने सघळी जातनी मानासिक, वाचिक, अने शारीरिक, ए त्रण प्रकारनी अशुभ कल्पना अने कर्म उपर, स्वसत्ता अति आग्रहथी बेसाडवानी अगत्यछे. आपणा विपइ जीवनी त्रणा उपर निरंतर अने अचलित लक्ष राखवानुं अति कठणछे खरु; जो कदापी आपणे एक क्षणपण आपणा जाग्रत पामेला न्याय अने बळीष्ट थयेली इच्छाशक्तीने तेना शुभ कार्यमांथी नरम पडवा दइये, अने जो कदापी एक

पण अशुभ कल्पनानो आपणा अंतःकर्णमां एकक्षण पण प्रवेश थवा देइये तो तेथी आगळ केवी जातनुं अशुभ परीणाम आपणने प्राप्त थशे. ते जाणी शकातु नथी. कदापी एक समये अशुभ कल्पना अल्प समय सुधी थवा दीधी तो ते पोतानु दुखरुप मुळ अंतःकर्णरुपी प्रथवीमां घालेछे. मनुश्यप्राणी पशु अने सर्पना स्वभावनो बनेलो होयछे. एवो कयो मनुश्य छे जे जेनुं अंतःकर्ण मलीन विकार, घातकी तुरंग, विपइ त्रष्णा, अने अयोग्य सघळी जातनी कल्पना, ए सघळामांथी, निरंतर वीरक्त रही एकक्षण पण एमांना कोइ पण विचार मनमां आवे नहीं; घणा मनुश्य मिथ्या पोताना स्थुळ शरीरनी पत्रांजी, अने अभीमानने लीधे एवुं कहेछे जे उपर कहेला विकारनी सत्तामां अमे रहेता नथी अने मननी अधम अवस्थामां अमे नथी, परंतु ए असत्यछे. आपणे अज्ञानने लीधे अभीमानरुपी अंधकारना आवृणथी अल्पकाळपण अमंगळ अने दुष्ट कल्पनानो प्रवेश थवा दइयेतो तेथी मनुश्यना शुभ गुणनी उन्नति थवामां मोटुं विघ्न करीये छइये.

आपणी संपुर्ण एकाग्रता करवामां विक्षेप, रसास्वाद, कशाय, अने लय ए चार जातना अति मोटा विघ्नो आवेछे. ते केवी रीते तेनो विचार करीये.

विक्षेप ए मननी एक प्रकारनी स्वाभाविक चलित स्थिति छे, जेथी ते मनुष्य प्राणीने पोतानी

धारेली स्थिरतामांथी चलित करी आवरण करेछे; अने मननी स्वाभाविक चलित वृत्ति एज मनुष्य प्राणीने बंधननुं एक कारणछे. आपणा शास्त्रमां एकाग्रता करवानो मुख्य प्रथम हेतु मननी चलित वृत्तिने स्थिर करवानोछे. आपणी चलित वृत्तिने एकज विषयमां स्थिर करवानुं प्रथम अति दुर्गट अने अशक्य लागे, परंतु जो आपणे आग्रहथी ते करवानो अभ्यास निरंतर राखीये तो, ते पछी शुलभ अने प्रियकर लागेछे. प्रथम विद्यारथीना लक्षमांछे जे,ज्यारे ते पोतानी मनोवृत्ति एकज विषयमां आग्रहथी स्थिर करवा प्रयत्न करेछे, त्यारे तेनुं मन तेने विस्म्रतिमां नाखी केटलीक वखत चलित थइ, अन्य विषयनी कल्पनामां दोरवी जायछे. जे विषयनी एकाग्रता करवानी छे. तेनुज मनन करी तेनुं तदाकार रूप पोतानी आगळ स्थिर करवाने प्रयत्न करवुं. ते स्थिर करेलु रूप जोता जोतामां झांखु थतु थतु अद्रश्य थवा माडेछे, एटले मन तरत बिलकुल वगर धारेला, अने वगर विचारना विषयोना तर्क करवा तरफ जतु रहेछे. ए प्रमाणे पोताना पुर्वेना विषयमांथी चलित थइ, आनंद अथवा भयना विषयोना तर्क करवा तरफ जतुं रहेछे. एटले जो आनंदना विषयना तर्क करवामां पड्युंतो, पेहेला प्रकारना एटले रसास्वादना विक्षेपमां पडेछे. अने जो भय अथवा दुखना तर्क करवामां पडयुतो बीजा प्रकारना विक्षेप जे

कषाय तेमां मन लुब्ध थाय छे. रसास्वादना विक्षे-
पना समये मननी वृत्ति आनंदनाज विचार करवामां
लुब्ध थायछे. अने ते प्रमाणे एक वखत मन तेवा
विचार करवामां लुब्ध थयुं, एटले पछी तेमांथी पाछु
मनने काडी पोताना पुर्वेना शुभ विचारमां लावी
स्थिर करवु अति कठण पडेछे. हवे त्रीजा प्रकारनो
विक्षेप कषाय छे, तेमां मननी सघळी वृत्ति भयंकर
अने केवळ दुख रुप विचार करवामां निमग्न थाय
छे, अने तेम थवाथी भयंकर विचारनी सत्ता एवी
तो भयंकर अने मृत्यु तुल्य थायछे, जे केटलेएक समये
घणा मायाळु अने उत्तम अंतःकर्णना मनुश्य केवळ
बदलाइ जायछे. हवे चोथा प्रकारनो विक्षेप लय
कहेवायछे. तेनी सत्तापण एकाग्रता करवामां विक्षेप
करवाने कांइ न्युन नथी. लय एटले मननी केवळ
कोरी एटले विचार रहीत अंधकार अवस्थाछे. अने
थोडा समय सुधी मनुष्य तेवी अवस्थामां रह्यो ए-
टले निद्रावस्थानी स्थितिने प्राप्त थायछे. एकाग्र-
ताना समये आ स्थिति अति भयंकर छे माटे तेवी
स्थितिमां नहीं जवाने सावध रहेवुं जोइये, केमजे
एवी स्थितिमां अति सुक्ष्म मलिन परमाणु अने प्राणी-
योने भ्रमण करवाने एवी स्थितिना मनुष्यप्राणीमां
प्रवेश करवानो समय मळेछे. आ सघळा उपरथी
प्रथम विद्यार्थिने एकाग्रताना समये सघळा विक्षेप-
मांथी रक्षा थवा सारु पोतानी अति प्रबळ इच्छा

शक्तीनी अवश्य अगत्य छे. माटे नित्य विद्यार्थीये पोताना मनने इच्छित शुभ विषयमांज एकाग्रता करवानो अभ्यास करवामां अने दोष रहित शुभ एकाग्रताना नित्य कर्म करवानी टेव राखवी अने तेथीज उत्तरोत्तर उन्नति थवानो संभवछे.

संवत् १९४१ भाद्रपद वद्य ११ रवीवार.

ध्यान.

ज्यारथी आपणा भरतखंडी आर्यदेशमां अती उपयोगी अने सर्व प्रकारना ज्ञाननी उन्नति करनारी जे तत्व विद्या अने आत्म अथवा ब्रह्म विद्या एनुं अध्यन अने श्रवण करवाभणी लक्ष न्युन थइ इंद्री उतेजक दांभिक विषयो भणी लक्ष गयाथी अनेक प्रकारना गाथा अने वार्तारुपी कथानुं अध्यन अने श्रवण करवा भणी केटलाएक भोळा भाविकजनोने प्रिति उत्पन्न थवा मांडी तेणे करी जेवी रीते वेद अने शास्त्रना विप्रित अने कल्पित अर्थ समजवा मांड्या, तेवी रीते ध्याननो अर्थ पण सांप्रतकाळना घणा मत पंथीओ विलक्षण करेछे. हालमां भोळा अने सत्यनी आस्तावाळा भाविक भक्तो थोडाघणा सघळा मत पंथमां छे; ते पोतपोताना इष्ट देवनी पुजा सेवा प्रितिये करी करे छे, अने तेमनी मुर्ति अथवा पट प्रतिमा पोताना सनमुख मुकी थोडोघणो समय एक वृत्तिथी तेना सनमुख जोया करे छे.

अने एक वृत्ति करवाने प्रयत्न करे छे. तेम नित्य थोडो समय करवाना नीयमरुपी एक कर्म कर्या करेछे. तेवी रीते करतां करतां घणोकाळ गया छतां, मननी एकाग्रता थइ, देखीतो कोइने अद्‌भुत लाभ थतो नथी ते छतां तेज कर्म सत्य जाणी ते मर्ण पर्यंत कर्याथी इष्टदेव कल्याण करशे एम समजेछे, ए केटले एक अंशे अल्पज्ञानीने कांइक शांती अने समाधान थवानुं साधन छे खरुं अने ते एक वृतिथी भावथी कर्याथी, कांइक विषयनी भ्रष्णा पण न्युन थइ संस्कारी थता थता केटलाएक जन्मांतरे सत्य ध्यान करवा भणी तेवा स्त्रिपुरुषोनुं लक्ष जइ कैवल्य मोक्षने मार्गे जइ शके. एमां तो संशय नथी केटलाएक हठ योगनी साधनावाळा एवुं समजेछे जे, कोइपण एक वस्तु तरफ, एक द्रष्टि राख्याथी, अथवा प्राणायामना समये नाकना, अग्रभाग तरफ स्थिर, द्रष्टि कर्याथी, केटलीएक योग, शक्ति प्राप्त थइ शकेछे. ए वात पण केटलेक अंशे सत्यछे खरी, परंतु तेम करवा सारुं प्रथम शरीर आते द्रढ बळीष्ट अने अति आग्रहथी सिद्ध करी प्रयत्न करे तो तेथी केटलोएक लाभ थाय, परंतु तेवी रीते जो बीजो साधारण शरीरना मध्य अथवा उतरता वयवाळो पुरुष कोइ समक्ष योगी शीवाय प्रयत्न करवा जाय तो, तेथी अनेक प्रकारना व्याधी थइ, शरीरनी क्षीणता थइ, परीणाम विप्रित निश्चय थाय. माटे अति प्राचिनकाळनां प-

हा विद्वान, तत्वज्ञानी, ब्रह्मनिष्ट, अने आत्म बुद्धि-वाळा महान पुरुषो ध्यान शब्दनो अर्थ केवी रीते समजता हता. अने ध्यान केवी रीते करता हता, अने तेथी परीणाम केवुं थतु ए वीगरेनी अल्प सुचना आ प्रसंगे कर्याथी निष्पक्षपाती बुद्धिवान अने विद्वान पुरुषोना समजवामां यथार्थ सत्यता निश्चय आवशे.

ध्यान शब्दनो अर्थ महान विद्वान ब्रह्मवेता अने आत्मज्ञानीओए करेलो छे जे सपूर्ण लक्षथी मन अने बुद्धिना कार्यो अथवा लक्षपूर्वक एक विषयनो अभ्यास अथवा तेनुं तदाकार मनन करवुं एनो स्पष्टार्थ एवोछे जे, कोइ मुख्य विषय उपर तदाकार सर्वकाळ लक्ष आपी, तेनीज कल्पना निरंतर कर्या करवी, ए ध्यान शब्दनो सत्य अर्थछे. माटे यथार्थ ते ध्यान शब्दनो अर्थ समजी, ते प्रमाणे बाळपणमांथी वर्तवानो, अभ्यास राख्याथी आ लोक अने परलोकना उत्तम साधननी प्राप्ति थइ शके छे. अने एज कारणने लीधे आपण अति प्राचीनकाळना पुर्वजोनी प्रापंचीक, समाजीक, राजकीय अने धर्मीक, अथवा बीजी रीते केता धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष, ए चारेनी अति उत्तम स्थिती, प्राप्त करी शकता हता. एवीज रीते निष्पक्षपाती परदेशी विद्वान पुरुषो पण वारंवार कह्या करेछे. ते आपणा जाणवामां छे. ए आपणे अल्प सुचना उपरथी सत्य ज-

णाशे. कोइपण संसार संबंधी कार्यो संपुर्ण रीते ते कार्य सिद्ध थता सुधी लक्ष आपवानो अभ्यास आग्रहथी राख्याथी उत्तमरीते ते कार्यनी सिद्धि थाय छे. तेवीज रीते धार्मिक कार्यमां पण द्रढ आग्रहथी, तेवा विषय उपर संपुर्ण एकाग्रता करी लक्ष आपवानो जेवो अभ्यास राख्यो होय, तेवो लाभ प्रत्यक्ष थायछे. माटे तेवी रीते कोइ विद्यार्थी ब्रह्मांडनी कृती, जीव, अने आत्मा, परमात्मा संबंधी विषयमां स्वार्थ रहित, तालिन थयाथी, ते पोता आगळनी कांइ वस्तु सामा अथवा आकाशना कोइ पदार्थ सामा एकाग्रताथी, जोतो होय एवी रीते बीजा बाह्मवृतिना मनुष्यने जणाय,ते उपरथी अर्वाचिनकाळना विद्वान आचार्य अने पंडीताए विषयनी अपरीमीत त्रष्णावाळा पण धर्म संबंधी भावनावाळा स्त्रि पुरुषोनी वृति कांइक स्थिर थवा सारु धातु, पाषाणादिकनी अथवा पटनी भद्र पुरुष अथवा पुर्षोत्तमनी प्रतिमा तरफ एकाग्रताथी जोवानी आज्ञा करेली जणायछे. एवो शुलभ मार्ग जणावेलो छतां संसारमां लुब्ध एवा पण भक्तमां गणाबला पुरुषोनुं एक क्षण पण लक्ष संकल्प विकल्प रहित थइ एकाग्रता थती नथी, तेणे करी ते कार्यो पोताना आयुष पर्यंत कर्या करे तोपण तेथी कांइपण लाभ पोताने थयेलो जणाय नही तो, पछी बीजाने तो जणायज क्यांथी. तेथी अतो भ्रष्ट अने ततो भ्रष्ट थायछे. एटले संसा-

रना कार्यमांथी तेटलो समय व्यर्थ गुमावेछे अने आत्मज्ञाननी पण लेशमात्र ऊन्नती थती नथी.

योगविद्यानी माप्ती करी कैवल्य मोक्षनी ईच्छा राखनारा मानसिक अने बुद्धिचैतन्यनी ऊन्नति पामेला विद्वान विद्यार्थीए, पोताने जे ज्ञान माप्त थयुं छे, ते उपरथी जे निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यनुं ज्ञान माप्त करी लेवानु छे, तेनुं ध्यान एटले लक्षपुर्वक आग्रहथी विचार करवानो निरंतर अभ्यास करी अनुभव मेळवता जइ उत्तेजन अधीक आपता जवुं. विद्यार्थिये द्रश्यनी परीक्षा करी, अद्रश्य सोधी काढवाने निरंतर अभ्यास करी अनुभव मेळवता जइ, ऊत्तेजन अधिक आपता जवुं विद्यार्थिए द्रश्यनी परीक्षा करी, अद्रश्य सोधी काडवाने नीरंतर मयत्न करता रेहेवुं. द्रश्य एटले आपणी पंच इंद्रीयोथी जे मगट संसार जणायछे ते, अने आ संसारमां उत्पन्न थयेली जे सघळी वस्तु आपणे जोइये छइये ते सघळु उत्पन थयेलुं कार्य छे. ए सघळानुं मुळ कारण, अद्रश्यलोकमां एटले आपणी स्थुळ पंच इंद्रीथी ग्राह्य नही थइ शके एवा अती सुक्ष्म अद्रश्य लोकोमां, सोधवाने मयत्न करवा सारु नीरंतर ते विषय उपर लक्ष आपवानो अभ्यास राखवो. गुप्त विद्या जाणवानो एक मार्ग उन्नति पामेला ज्ञानथी, मुळ कारण संबंधी अहोनिश नीरंतर विचार करवानो अभ्यास राख्याथी अलोकिक रीते सत्य ज्ञान, मेरणाथी माप्त

थइ थयुछे. प्रथम विद्यार्थिये प्रथम साधारण नीयम पाछळ कह्या प्रमाणे, द्रढ करी थोडा समय सुधी ते नीयमो द्रढ आग्रहथी सत्य जाणवाथी लाभ निश्चय थशे.

प्रथम विद्यार्थिये सघळा ब्रह्मांडना कार्यो उपरथी, पोताना स्थुळ सुक्ष्म आदीकनी परीक्षा करवानो अभ्यास राखवो. त्यारपछी जे पोताने स्थुळ आदीक द्रश्यछे ते उपरथी अद्रश्य जाणवाने पोताना बुद्धिचैतन्य ज्ञाननो उपयोग करवो. अने ते उपरथी जोता जवुं जे केटलो लाभ थायछे. आ नीयम प्रथम विद्यार्थीने ध्यानमां राखवानो छे. प्रथम विद्यार्थिये ए ध्याननो विषय बुद्धिज्ञानथी द्रढ करवो. अने एम कर्याथी एनी इच्छा पुर्ण थवानो संभव जणाशे. एवी रीते द्रढ आग्रहथी एकज स्थीति थइ एटले बीजुं पगलुं अंतरध्यान करवानुं भरवुं एटले पोतानी अंतरनी स्थिति जे बुद्धिचैतन्य तेने प्रबळ थयेली इच्छाशक्तिना योगे वीजा नीचला पांचे आवर्ण तोडी अनंत अने अविनाशीज सप्त प्रकार जे केवळ शुद्ध चैतन्य तेनी तरफ समीलन थवा आग्रहथी दीर्घ प्रयत्न करवुं. ए छेलो अने अंतनो मार्ग ग्रहण कर्यानी पुर्वे ते मार्गे जता बीजी जे पांच प्रकारनी स्थिति आवेछे. तेमां तदरुप नही थता पोतानुं जे उपर कहेलु छेलु नीशान जे केवळ शुद्ध चैतन्य तेनी साथे समीलन थवानो सिद्धांत

करी तेनी विस्म्रति थवा देवी नही. उची स्थिति प्राप्त थवानो आधार प्रथम पायरीना नियम यथार्थ समजवा उपरछे. तेने सारु उन्नति पामेला ज्ञाननी अगत्यछे. केमजे यथार्थ वस्तु जाण्या शीवाय मानवुं ते अशक्तपणुछे. अने पोतानामां अशक्तपणु जणायुं, एटले उचीस्थितिने पोचवाने पोते अशक्तिवान थाय छे. माटे पोतानी सत्य शक्तीने यथार्थ जाणी ज्ञाननी वस्तु सत्य मान्याथी शक्ती अधीक वळीष्ट थायछे. अने तेथी कार्यनी सिद्धि थइ शकेछे. माटे ज्ञान तेज शक्तीछे एवुं द्रढ निश्चय समजवुं.

यथार्थ ज्ञान प्राप्त थयुं एटले ध्याननी समये मनुष्यनो प्रक्रती साथे संबंध, श्रष्टिनी द्रश्य वस्तु अद्रश्य अने द्रष्टोतपती थता रुपो विगेरे क्रतियो, अने अद्रश्य शुद्ध चैतन्य ए सघळु अभ्यासे करी धीमे धीमे आग्रही विद्यार्थिने जणाववा मांडे छे. एवी रीते द्रढ आग्रहथी, थोडा समय सुधी प्रयत्न जारी राख्या पछी, विद्यार्थिने कीया एक विचार अथवा कल्पनानुं तेणे आग्रहथी ध्यान करवुं अने केवी रीते ते मार्गे जवाइ शकशे, एनी सत्यतानी प्रेरणा अलोकीक रीते तेने थशे, तेणे करी मनुष्यनी अंतर शक्ति केवी रीते प्रबळ करवी तेनो मार्ग जणातो जशे, आ सघळा उपरथी साधारण बुद्धिना विषयनी अपरीमित त्रणावाळाने, ए मार्ग दुर्गट अने असत्य जणाय एमां कांइ आश्चर्य नथी, परंतु बुद्धिवाळा

सत्य शोधकने नीषपक्षपात रीते विचार कर्याथी सत्य मार्ग जणाशे. उत्तम ज्ञानथी एवुं सिद्ध थयुं छे जे द्रश्य वस्तुनुं यथार्थ ज्ञान मेळववा सारु, पोतानी श्रष्टिनां स्वाभाविक नियमनी साथे समीलनता थवानी अगत्यछे. पोताने एकलो अने भिन्न नहीं समजता आ ब्रह्मांडमां सघळी शक्तीना मुळ तत्वनो पोते एक अंशछे. एम समजवानी अवश्य अगत्य छे. केमज अद्रश्य श्रष्टिमां पण, सघळी वस्तु प्रिति अथवा स्नेहाकर्षणनी अचलित नीयमनी सत्तामां रहेली छे. एक वीजाने परस्पर आकर्षण थयाज करेछे. माटे स्नेहाकर्षण अथवा स्नेह अने प्रिति एनो यथार्थ अर्थ समज्याथी कार्यनी सिद्धि थायछे.

हवे आ सघळा उपरथी एटलुं केहेवुं अगत्यनुछे. जे प्रथम विद्यार्थिये पुर्वे कह्या प्रमाणे गुप्त विद्याना सघळा नियमो यथार्थ जाणी पोताना मनना सघळा विकारनो द्रढ प्रबळ इच्छाशक्तीथी, नाश करी पछी उपर कह्या प्रमाणे ध्यान करवानो अभ्यास निरंतर राखवाथी कार्यनी सिद्धि निश्चय थशे, माटे उन्नति पामेला ज्ञानवाळा धर्म जीज्ञासु विद्यार्थिने गुप्त विद्यानु ज्ञान मेळववानी इच्छा होयतो, तेणे उपर कहेली रीतो सत्य अने लाभकारी जणायतो, तेमणे तेनो प्रत्यक्ष अनुभव करी जोवो अने उपर कह्या प्रमाणे ध्यान करवानो नियम द्रढ आग्रहथी राख्याथी समयानुसार केवी रीतनो फेरफार पोतामां थतो

जायछे, ते मात्र पोते अनुभव करी जोवानुं छे. ए मात्र अनुभवथीज जणायछे.

संवत् १९४१ आश्विन शुद्ध ४ रवीवार

शुभाशुभ ज्ञान.

प्रथवी उपरना सघळा धर्म अने मतपंथोनो मुळ आधार, अने पायो, एकज सत्य अने शुभ ज्ञाननोज छे. परंतु सांप्रतकाळना, मतपंथना अधीकारीओये, पोतपोताना मुळ धर्मनो शुभ हेतु अने तेमां रहेला एक सनातन धर्मना मुळतत्वो, तेनी निपपक्षपात रीते परीक्षा करवानो श्रम नहीं लेता, व्यवहारीक अल्प ज्ञानी अने भोळा लोकोनी रुढी, तेमनी मनोवृतिनुं वलण, तेमने प्रिय लागे एवी गाथा, अने इतीहास तेमां वळी केटलाएक पोताना असत्य अने दोषरुप विचारोनी मेळवणी करी मार्ग चलावता जणायछे. हालमां धर्माधीकारीओ जे बोध करेछे. तेनी सत्यतानो अनुभव पोते मेळवेलो होय नहीं तो, पोताना सेवकोने अनुभव मेळववानो बोध करेज क्यांथी, तेथी मुळ सर्वोपरी सनातन सत्य धर्मना गूढार्थ नहीं समजता, तेना अर्थ मन कल्पीत करी पोताना स्वार्थ साधवानी इच्छा थयाथी धर्म संबंधी सत्य ज्ञाननो लोप थइ मिथ्या दंभ अने ढोंगनी प्रवृति थयाथी स्वार्थनी वृधी थइ असत्यनी प्रवृत्ति थइ स्नेह अने मनुष्यप्राणीमां परस्पर भ्रातु भावनो लय थयोछे.

मुळ सनातन धर्ममां,महा अदभुत अने अलोकीक ज्ञान, अति प्राचीन काळना त्रीकाळज्ञानी एवा जे रुषी अने मुनीओये, शुभ हेतुने लीधे गुप्त राखेलु जणाय छे केमजे ते ज्ञान समजवाने योग्य थया वीना जो, सघळाने जणायतो परीणाम विपित थाय, माटे पुनरावृतिना अनेक जन्ममर्णनो संस्कार थया पछीजो ते गुह्य सत्य ज्ञान जाणवानी इच्छा थायतोज ते प्राप्त थाय. शिवाये गमे तेवो मानसिक उत्तमज्ञानी प्रापंचीक, सामाजीक, अने राजकीय ए त्रणे कार्योमां प्रविण होय तोपण तेने बुद्धिचैतन्यनु सत्य गुह्यार्थ ज्ञानप्राप्त करवानी इच्छा थाय नहीं,अने तेने ते समजी शकाय पण नहीं; माटे गमे तेवुं मानसिक उत्तम ज्ञान मेळवेलु होय तेथी उत्तम प्रकारनी नीती, अने स्वार्थ रहीत परमार्थ उपर प्रिति थइ सघळा मनुष्य विशे भ्रातु भाव मन पुर्वक गणवानी इच्छा थाय नहीं,माटे जो सनातन गुप्त विद्यानुं सत्यज्ञान तेवा मनुष्यने प्राप्त थइ कांइ, अदभुत शक्ती प्राप्त थइ तो, तेथी वीनाश निश्चय थाय, एनी सत्यताना थोडा द्रष्टांत आ प्रसंगे जणाव्याथी बुद्धिवान पुरुषोने निश्चय थशे.

युरोपखंडना हालना सुधरेला समयमां ते देशमां विद्वान वैद्यो अने वीजा तत्व ज्ञानीओये केटला एक नवा शोधो काडवासारु हजारो निरअपाधी पशु विगेरेनो संहार करेछे.ते उपरथी हाल इग्लंडमां ए घातकी

कामनी तपास करवा सारु "रोयल कमीशन" ठर्युं छे, तेमां राज्य पाठशाळाना वैद्य डेवीड फेररने एवो प्रश्न कर्यो जे तमे निरअपराधी पशुनो संहार शा माटे करोछो तेणे उत्तर दीधो जे "विद्यार्थिने अनुभवी ज्ञान प्राप्त करवा माटे अने शुलभताने सारु अमे ते कर्म करीये छइये." ते उपरथी प्रश्न कर्यो जे "तेम पशुने मारता तमने दया अने कमकमी आवे छे के नहीं." ते वैद्ये उत्तर आप्यो जे "वीलकुल दया आवती नथी केम जे एवा प्रयोग करवावाळाने दयानो विचार करवानी फुरसद होती नथी."वळी कमीशने प्रश्न पुछ्यो जे "एवी रीते तमनेज थाय छे. के सघळा वैद्योने एज प्रमाणे थायछे." उत्तर सघळा युरोपना वैद्यने एज प्रमाणे होयछे." एवुं मारा जाणवामांछे. ए विगेरे घणा प्रश्न कर्याछे.पण आ प्रसंगे अल्प सुचना मात्र करीछे, ए उपरथी स्पष्ट जणायछे एवा विद्वान मनुष्य प्राणीनुं अंतःकरण निर्दय अधीक थतुं गयुं अने तेने एकला मानसीक ज्ञाननी जेम जेम वृद्धि थती गइ तेम तेम आगळ मनुष्यप्राणीनो संहार केवी रीते करी पोतानो स्वार्थ करवो, ते उपर लक्ष जवा मांडयुं अने मनुष्यप्राणी उपर पोतानी सत्ता बेसाडी धन संपादन करवाना उद्योगमां हालना युरोपना सुधरेला अने विद्वान देशमां अनेक नवी नवी युक्तियो, नीकळती जायछे. दारुगोळा अने लडाइना आयुद्धमां चमत्कारी मा-

नसिकज्ञान दर्शावी "फलमीनेटस ओफ मरक्युरी" अने "नाइट्रोग्लेसराइन" विगेरे मनुष्यप्राणीनो अल्प श्रमथी नाश करवानी युक्ती, अने पदार्थो शोधी काडेलाछे. ते छता जो मनुष्यमां बुद्धिचैतन्यनुं सत्य ज्ञान होयतो, एवाज पदार्थोथी सत्य अने शुभ उपयोगपण थइ शके. परंतु जे मनुष्ये मात्र पोताना स्वार्थसारुज, ज्ञान प्राप्त करेलुंछे. ते पोतानो स्वाथ साधवा सारु दारुगोळाथी, अने अनेक प्रकारना विषवाळा पदार्थोना उपयोगथी मनुष्यनो संहार करेछे. एटलुंज नहीं पण केटलाएक तांत्रीक प्रयोग अने मलीन प्राणीनी साधना करी, पोतानी इच्छा शक्ती, अती प्रबळ करी पोतानी विषयवाळी सत्ता बीजा उपर घणे अंतरे मोकली अने पोतानुं सुक्ष्म शरीर प्रबळ इच्छा शक्तीथी बाहार काडी तेने घातकी कर्ममां प्रवर्तावी शकेछे. एवा घातकी मनुष्य आपणा देशमांछे ते घणाना जाणवामांछे. अने तेज प्रमाणे तेवा क्रुर मनुष्यो युरोप देशमांपण एक शोवर्षनी पुर्वे घणा हता ते आपणे ते देशना इतिहास उपरथी जणायछे. केमजे केटलीएक दाकण अने भुतना प्रवेशवाळा मनुष्यने ते समयमां क्रुर रीते मारी नाखता हता, ते छता घणा एवा लोको हता. हालमां तेने वेहेम जाणी ते उपर लक्ष आपता नथी पण परीक्षा कर्याथी हाल पण तेवा माणस जडी शकेछे.

एज प्रमाणे जो कदापी मानसीक ज्ञाननी य-

थार्थ उन्नति थया वगर, धर्म संबंधी अनीयमित व-
लण थवा मांडे तो तेथी पण आपणे पाछळ कह्या
प्रमाणे कल्पीत कथा अने पंच इंद्रीयोने प्रिय लागे
एवी परलोकनी वार्ता तेने सघळी सत्य मनाय छे.
अने तेने खानपानादिकनी प्रेम भक्ति अति प्रियक-
र लागवाथी, अति भावथी भक्ति कर्याथी, परलोक
अथवा देवलोकनी प्राप्ति थइ त्यां पोताना रामकृ-
ष्णादीक देव, पोतानी स्त्रि अने देवांगना तथा गो-
पी वीगरे सहीत पोताना इष्टदेव जे उत्तम सुख भो-
गवे छे त्यां पोते जइ तेनी सेवा करी पोताने पण ते-
वा सुखनी प्राप्ती थइ शके छे. अने एज कल्याण
अने मोक्ष मानेलो छे. वळी बीजा केटलाएक कांइ
अधीक मानसीक ज्ञानवाळा, संसार सुखनी अनि-
यमीत त्रष्णावाळा नही, पण सामान्य त्रष्णावाळा
कोइ पण अवतारी भद्र पुरुषनी निष्काम एटले वि-
षइ त्रष्णा रहीत, पण पोताने अति अल्प अने पांम्म
र समजी; प्रेम भक्ति अने तेमनी प्रतिमानी पुजा
सेवा करी. अंते मृत्यु थया पछी ते भद्र पुरुष ते दै-
व आकारे देवलोकमां रहेला होय, त्यां पोते पण
दैव आकार पामी तेनी पुजा सेवामां अखंड रेवानी
इच्छा राखे छे. अने तेनेज कैवल्य अथवा अंतनो
मोक्ष समजे छे. ए उपर कहेला बेउ प्रकारना भावि-
क भक्तो पुर्वे थइ गयेला महापुरुषोना चमत्कार अने
अलोकीक शक्ति जाणी तेज भगवान अथवा पर-

भ्रम अने परमात्मा समजी पोताना आत्मा अने जीवने असमर्थ अने अल्प समज्याथी अकुंचित ज्ञान रह्याथी पोतानी स्थुळ सुक्ष्म अने आत्मिक ए चार प्रकारनी स्थिति संबंधी ज्ञान मेळववाना मार्गथी अजाण्या रेहे छे. तेथी आ देहे कांइज अलोकीक बुद्धि चैतन्यना ज्ञाननो अनुभव लइ शकता नथी, तेणे करी, आपणे उपर कह्युं एवी रीते कल्पना कर्याथी मुआ पछी कोइ पण जातना सुक्ष्म आदीक देहथी वीरक्त थइ प्रक्रतीना आवृण रहित थइ शुद्ध चैतन्य थवाने बदले काल्पित धार्णाथी तेवा सुक्ष्म देहने अद्रश्यलोकमां धारणा करी, तेवाज लोकना तेवाज देवनी सानिध रहेवानी प्रबळ इछा शक्ती होय तो ते प्रमाणे त्यां रही शके परंतु प्रक्रतीना औशवाळुं गमे तेवुं सुक्ष्म शरीर होय तोपण तेनो नाश कोइ पण कल्पांतरे थवो जोइ, अने ज्यां सुधी कोइ पण जातना सुख भोगववानी त्रष्णा छे त्यां सुधी तेवा सुक्ष्म देहने प्राप्त थवुंज पडेछे, एवो अखंड स्वाभाविक नियम छे. माटे अकुंचित ज्ञानीने, सत्य कैवल्यमोक्षनी प्राप्ति थाति नथी. ए सघळा उपरथी स्पष्ट जणाय छे जे, एकला मानसिक ज्ञाननी उन्नति थयाथी, अथवा एकला धर्म संबंधी जोस्साथी उत्तम गतिनी प्राप्ति थइ, सर्वोपरी सुख प्राप्त थइ शकतुं नथी माटे मानासिक ज्ञान अने बुद्धि चैतन्यज्ञान ए बेउनी समान उन्नति थयाथी सत्य असत्यनो

निर्णय करवानी शक्ती आववाथी परीपुर्ण लाभ थइ शके छे. अने एवी रीते अती आग्रहथी मानसिक अने बुद्धिचैतन्य ए बेउनी समान उन्नति करवानो स्वार्थ रहित अभ्यास राख्याथी अंते योगीनी दश्याने पोच्या पछी, योगेश्वर अने महात्मानी स्थितिने पोचाय छे.

एवी रीते उपर कहेला बेउ ज्ञाननी यथार्थ उन्नति थइ एटले निषपक्षपाती शोधकने एवुं जणाय छे जे, सघळा मनुष्यनी आसपास निरंतर अति सुक्ष्म प्राणीना परमाणुओनो समोह भम्या करेछे, तेमां शुभ अने अशुभ ए बेउ प्राणीना सुक्ष्म परमाणुओ होय छे, तेमांथी जे मनुष्यनी जेवी सारी अथवा माठी कींवा शुभ अथवा अशुभ वृति, त्रष्णा, अने स्वाभाविक इच्छा होय, ते प्रमाणे उपला परमाणुओमांथी शुभ कींवा अशुभ परमाणुनुं आकर्षण मनुष्य प्राणीनी प्रबळ थयेली इच्छा शक्तिना प्रमाणमां थाय छे. अने ते प्रमाणे मनुष्यनी शुभ कींवा अशुभ वृतिनी उन्नति करे छे. अने सांप्रत मनुष्य प्राणीनी पुनरावृतिनी एवी स्थिति छे जे ते मनुष्य पोते ज्ञानद्वारा पोताना स्थुळ शरीरने उपर कहेला सुक्ष्म प्राणीनी अद्रश्य परमाणुनी अशुभ सत्ताथी पोताना ज्ञाननो सत्य उपयोग करे तो रक्षा करी शके.

मनुष्य प्राणीना स्थुळ शरीरना तात्विक परमाणु जेनुं ते शरीर बनेलुं छे. तेवा सघळा तात्विक प-

रमाणुओ, पोतानी आसपास अक्षय रहेला छे; अने मनुष्यनुं सुक्ष्म रुप पोतानी आसपासना सुक्ष्म परमाणुनां रुपो साथे मळतुं आव्याथी, तेने आकर्षण पण करी शके छे. कदापी आपणु स्थुळ शरीर सुद्रढ अने निरोगी होय तो ते एक द्रढ उपशरीर अथवा बखतर जेवुं होयछे. माटे जो आपणी इच्छाशक्तिनो, यथार्थ ज्ञानथी उपयोग करीए तो, ते सुद्रढ शरीरने पोतानी आसपास रहेली अद्रश्य मलीन परमाणुनी सत्ता कांइज थइ शक्ती नथी. तेवीज रीते जो आपणु शरीर अशक्त होय अने वगर संभाळथी पोताना सुक्ष्म प्राणवायुना परमाणुनो नकामो व्यय अथवा खर्च कोइ पण रीते कर्यो तो तेथी पोताना स्थुळ शरीरने बळ अने सत्ता रहित करी नांखीये छइए, तेणे करी तेवा अशक्त थयेला शरीर उपर पोतानी आसपास रहेला अद्रस्य प्राणीनी सत्ता अति प्रबळ थइ शके छे. एवी रीते मनुष्य प्राणीनी मानसिक शक्ति, उत्तरोत्तर न्युन थती जाय छे. तेथी पोताने अति पापी अने निर्बळ समज्याथी आ लोक अने परलोक बंने बगडे छे. एवी रीतनुं परीणाम, जे मनुष्य निति निश्चयात्मक बुद्धिचैतन्य ज्ञान अने सनातन धर्म रहित छतां, अलोकीक शक्ती अने प्राप्तिनी इच्छा राखे छे, तेनुं थायछे. माटे एवी रीतना मनुष्य प्राणीने, योग विद्यानुं ज्ञान आपी अलोकेक शक्ति मळयाथी, जेम नाना बाळक-

ने रमवा सारु आगपेटी अथवा दारुखानुं आप्याथी जेवुं विप्रित परीणाम, पोताने अने बीजाने थाय छे एवी रीतनुं थया विना रहेज नहीं. ए उपरथी स्पष्ट जणाय छे जे, हालना युरोपदेशना उत्तम मानसिक ज्ञानवाळा तत्वज्ञानी जे के, एवी रीतनी गुप्त विद्यानुं ज्ञान प्राप्त करवानी इच्छा राखेछे, तेने जो तेवी विद्या प्राप्त थइ अदभुत शक्ति प्राप्त थइ तो ते उपर कह्या प्रमाणे नाना बाळकनी पेठे सघळानो नाश करी पोतानो पण अंते नाश करे. केमजे ते उत्तम निति अने सनारतन धर्म रहित अने निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी उन्नति रहित छे, तेथी तेमनी केवळ परमार्थ रहित स्वार्थ उपर दृष्टि रहेली होय छे, तेथी परीणाम निश्चय विप्रित थाय, माटे आपणे पाछळ कह्या प्रमाणे उत्तम मानसिक ज्ञाननी साथे स्वार्थ रहित बुद्धि चैतन्य ज्ञाननी उन्नति थइ होय तोज शुभ परीणामनी आश्या राखवी.

मनोमय चक्रनी अति प्रबळ बे शक्तियो छे. एक कल्पना अने बीजी इच्छा शक्ति तेमांथी जे कल्पनानी शक्ति छे ते, पशु पक्षी अने तेने मळता जे उतरता अने अधम प्राणीयो छे. ते सघळाओनी इच्छाशक्ति उपर परीपुर्ण सत्ता चलावी ते कल्पना पोताने स्वाधीन इच्छाशक्तिने राखे छे. हवे जेना मानसिक ज्ञाननी यथायोग्य उन्नति थयेली होयछे, एवा उत्तम वर्गना प्राणीओ, पोतानी सघळी क-

ल्पनाओने पोताने स्वाधीन राखे छे. ए उपरथी डाह्यापण अथवा उत्तम ज्ञान, तेज कहेवाय के,जेना योगे, प्रापंचिक सामाजीक, राजकीय, अने धार्मिक ए चारेमां अति उत्तम, उपयोगी अने सलासंपवाळुं परीणाम इच्छाशक्ति, अने कल्पनानो उपयोग करवाथी निष्पन थाय. परंतु एवुं डाह्यापण अथवा उत्तम ज्ञान, मात्र शब्दथी मनुष्य प्राणीमां घाली शकातुं नथी, पण ते उत्तम ज्ञान, आपणे कोइ महा विद्वान अने उन्नति पामेला महापुरुषथी वारंवार मळेलुं होय, तेनुं श्रवण, मनन, अने निदिध्यास अति आग्रथी करवानो अभ्यास करी अने अति कष्ट सहन करी प्रत्यक्ष अनुभव मेळव्याथी, प्राप्त थइ शके छे.

मनुष्यनी उत्पती प्रसंगोपात छे. एनी इच्छाशक्ति ज्यां सुधी पोतानी कल्पनानी सत्तामां छे, त्यां सुधी ते इच्छा स्वतंत्र थइ शक्ती नथी, अने एनी शुभ कींवा अशुभ कल्पनानो आधार, एने जेवी त्रष्णा अने ज्ञान प्राप्त थयुं होय, तेनाज उपर रहे छे. माटे ज्यां सुधी मनुष्यनुं अकुंचित ज्ञानछे, त्यां सुधी तेने आवरण रुपी अंधकारनो पडदो छे. अने ए आवरण जेम जेम ज्ञान प्राप्त थतुं जाय छे तेम तेम न्युन थतुं जाय छे. अने पुनारावृतीना जन्मांतरोना संस्कार थया पछी, ज्यारे ज्ञाननी यथार्थ उन्नति थइ एटले, ते मनुष्यने शुभ अने अशुभ ज्ञा-

ननो निर्णय करवानी शक्ति आवे छे, अने तेम थ-याथी जो तेनी कल्पना निर्मळ अने दोष रहित थइ तो, पछी ते प्रबळ शक्तीवाळो थाय छे, अने तेथी अंते तेने महा अदभुत गुप्त ज्ञाननी इश्वरी प्रसादनी वक्षीस मळे छे तेवी स्थिति प्राप्त थइ एटले तेने पोताना स्थुळ शरीरनी रक्षा करवानी अगत्य रेहेती नथी, केमजे ते पोतानी स्वशक्तिथी पोतानुं रक्षण करी शके छे. अने पोताना मनना विकार अने मलीन त्रष्णारुपी सर्पने बुद्धि चैतन्यरुपी महाअदभुत शक्तिथी नाश करे छे. एवी रीतनी स्थिति प्रथ्वी उपरना मनुष्य प्राणीनी थइ, एटले मृत्यु जीताइ शकशे, अने सघळी प्रथ्वि उपर शुभ भ्रातु भावनी परोपकार बुद्धि प्रवर्तशे. तेथी शांतिनी निर्वाण अवस्था केटलाएक काळ सुधी प्राप्त थया पछी, पुनरावृतिना शुभ मनवांत्तर रुपी सूर्यनो उदय थइ नवी शुभ शृष्टि अथवा सतयुगनो प्रारभ थशे.

संवत १९४१ अश्विन शूद्ध ११ रवीवार.

विद्यार्थि अने शिष्य.

कोइ पण साधारण मानसकि ज्ञानवाळा पुरुष विचार करवानो श्रम लेशे तो तेने पण जणाशे के जे प्रमाणे विद्यार्थिना मानसिक ज्ञाननी, उन्नति थइ होय ते प्रमाणे जो ते विद्यार्थिने ज्ञान अने विद्यानो वोध मळे तो, तेना ज्ञाननी वृद्धि, अने उन्नति

थाय, अने एज अखंड सत्य नियम उपरथी प्रथ्वि उपरना सघळा देशमां विद्या अने ज्ञान आपवानी पधाति चाली छे. एटले प्रथम अल्प वयना बाळकने शब्द अने अंक विगरेनुं साधारण ज्ञान आपी, ते ग्रहण करवानी शक्ति आव्या पछी, लेखक, वाचक, अने अंकगणित, विगरे विद्यानो उपदेश शिक्षक करे छे. त्यार पछी बाळकनी वय, अधीक थइ शरीर बळिष्ट थया पछी, मननी कल्पना शक्ति अधिक बळिष्ट थवा मांडी एटले, आगळ मानसिकज्ञानवाळी, उपयुक्त विद्यानु अध्यन कराव्याथी, ते विद्यार्थि ग्रहण करी शके छे. तेवीज रीते जे प्रमाणे प्रथ्वि अने आकाशना द्रश्य पदार्थो, अने भिन्नभिन्न प्राणीयोनी रचना विगरेनुं, जेवी रीते उत्तम, मध्यम, अने कनिष्ट ज्ञान प्राप्त थाय छे, तेवीज रीतना मानसिक ज्ञाननी उत्तम, मध्यम, अने कनिष्ट रीतनी उन्नति थइ, ते प्रमाणे घणुं करी, लाभ थइ शके छे.एज प्रत्यक्ष अनुभव उपरथी स्पष्टरीते सिद्ध थइ शके छे जे, ब्रह्म अथवा आत्म विद्या अने योग विगरे जे. अद्रश्य अने गुप्त विद्या छे, तेनुं यथार्थ ज्ञान प्राप्त करवा सारु, प्रथम विद्यार्थिने, अधीकारी थवानी प्रथम मुख्य अगत्य छे. माटे आ प्रसंगे अधिकारी केवी रीते थवाय छे, ते विषे निपक्षपात रीते सुचना कर्याथी, ए मार्गे जवानी इच्छा राखनारा, आग्रही विद्यार्थिने अवश्य लाभ थशे.

हवे ब्रह्म अथवा आत्मविद्यां, अने योग विद्या विगरे जे अद्रश्य अने गुप्त विद्याछे, ते यथार्थ रीते प्राप्त करवा सारु योग्य रीते निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी उन्नति करवानी अवश्य अगत्य छे, केमजे आपणे पुर्वे वारंवार कह्युं छे जे एकला मानसिक ज्ञाननी परीपुर्ण उन्नति थइ द्रश्य एटले आ श्रष्टिना प्रापंचिक समाजीक, अने राजकीय, ए त्रणे कार्यो आति उत्तम रीते करी तेथी अतुल्य लाभनी प्राप्ति करी शके परंतु तेथी अद्रश्य एवी जे योगादिक गुप्त विद्या, अने आत्म ज्ञाननी प्राप्ति करी लइ, तेथी महा अदभुत अने अलोकीक कार्यो करी, सर्वोपरी उत्तम सुखनी प्राप्ति करी लेवानुं उत्तम धार्मिक कार्य थइ शकतुं नथी; अने कदापी भोगजोगे एकादा एवा पुरुषने गुप्त विद्यानुं ज्ञान कोइ महा पुरुषनी सहायताथी प्राप्त थइ ते कांइ अलोकिक कार्य करा शके तो, तेथी अंते परीणाम विप्रित थइ, पोतानो अने बिजानो विनाश निश्चय थाय, केमजे मात्र मानसीक ज्ञाननी उन्नतिवाळो, पुरुष जे कार्यो करे तेमां अंते गुप्त रीते पण केवळ स्वार्थ रहेलोज होय छे. अने मानसिक ज्ञान, आकाष अने वायुना सुक्ष्म परमाणुना संग्रहथी उत्पन थइ शके छे. माटे ते चलित छे, तेथी तेनुं परीणाम पण स्वाभाविक नियम प्रमाणे चलित अने क्षणभगुर थवुं जोइए. हवे जे निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञान छे, ते आकाष

अने तेजना सूक्ष्म परमाणुओना समिलनथी उत्पन्न थइ शके छे. माटे ते द्रढ अने अचळ छे, माटे तेथी जे परीणाम थाय ते. सर्वोपरी द्रढ अने अचळ थया विना रहेज नहीं, परंतु बुद्धिज्ञाननी, साथे मानसिक ज्ञाननी, पण उन्नति थवानी आति अवश्य अगत्य छे, तेनुं कारण आपणे पुर्वे दर्शावेलुं छे, तेथी आ समये ए विषे अधिक विचार करवानी अगत्य नथी.

ए सघळा कारण उपरथी जेवी रीते प्रथम यथार्थ रीते मानसिक ज्ञाननी उन्नति करवानी अगत्यछे, तेवी रीते धार्मिकज्ञाननी पण उन्नति प्रथमथी, करवानी अगत्यछे. प्रथम बाळकने पोताना स्वधर्म उपर आस्ता बाळपणथी रखावी देवदर्शन पुजा सेवा तीर्थ यात्रा विगेरे प्रितिथी अने निष्कामपणे कर्म करावबानो, अभ्यास राखवो त्यार पछी, स्थुळ शरीर वृधीने पामी मन द्रढ थवा मांडे, एटले उपर कहेला देवदर्शनादीक पुजा सेवाना, कर्मनी साथे उत्तम वेद शास्त्र अने पुराणादीकनी कथानुं श्रवण करवानो अभ्यास रखावी आगळ मनन अने निदिध्यास करवानो, अभ्यास रखाव्यो होय तोज, श्रवणना ज्ञानथी बुद्धिनी उन्नति थाय त्यार पछी अनेक प्रकारनी उपयुक्त विद्या प्राप्त करी, मानसिक ज्ञाननी उन्नति थइ परीपुर्ण प्रकाश थइ, सत्य अने असत्यनी निषपक्षपात रीते, परीक्षा करी, निश्चय शक्ति आवी

एटले, धार्मिक ज्ञानमां पण, सत्य असत्यनो निश्चय करी, मात्र एकला सत्यनुंज ग्रहण करता जवानो अभ्यास राखी अति आग्रहथी प्रथम काळना अचळ सत्य अने सनातन धर्मनी, मर्यादामां रहेवानो अभ्यास अवश्य राख्याथी, बुद्धिज्ञाननी उन्नति थवा मांडशे. एवी रीते निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी, उन्नति थया पछी ब्रह्म. अने गुप्त विद्या, प्राप्त करवानी इच्छा अति आग्रहथी थाय तो तेणे, अधिकारी अथवा शिष्य थवासारु पोतानी वृत्ति अने स्थिति करवाना योग्य साधन करवाभणी, अचल लक्षराखवुं.

मानसिक ज्ञाननी उन्नतिनी साथे निश्चयात्यक बुद्धि चैतन्यना परिपुर्ण ज्ञानवाळा महा समर्थ योगेश्वरनी महा अलोकीक सत्ता आ श्रष्टिनी सघळी सामान्य स्नेहाकर्षण आदीक गती अने शक्ति उपर छे ए सत्ता बीजी साधारण विद्यानी सत्तानी पेठे, सघळा मनुष्यने सामान्यपणे जणाइ शकती नथी, तेनुं कारण ए जे, ते समर्थ योगी पोते गुप्त रही, पोतानी अलोकिक विद्या, अने शक्ति साधारण मनुष्यना शुभ कार्य सारु गुप्त राखेछे, तेथी तेमना सामर्थनी कल्पना, गमे तेवी उन्नति पामेला मात्र एकला मानसिक ज्ञानवाळा पुरुषथी थइ शकतीनथी.

घणा साधारण मनुष्यने आश्चर्य लागे छे जे, एवा महा समर्थ योगेश्वर, मनुष्यना शुभ कार्यसारु तेमां रही पोते जाणेली गुप्त विद्यानी प्रवृति केम

करता नथी, एना कारणो आपणे पुर्वे दर्शावेलाछे, ते छतां आ प्रसंगे एटली सुचना आपवी अगत्यनीछे जे गमेतेवा उत्तम मानसिक ज्ञानवाळा पुरुषो यांत्रीक अथवा रसायणादिक, अद्‍भुत प्रयोग साधारण मजुरो अने अल्पज्ञानी हलका कारीगरोनी साथे मळी कर्ता नथी, केमजे जेवा हलका कारीगरो आखा दिवसनी महेनत करी अल्पलाभ मेळवी शके परंतु, उन्नति पामेला विद्वान एक घडी अथवा अल्प समयमां, तेथी अधिक अद्‍भुत अने लाभना कार्यो करी शके तेवीज रीते एकला मानसिक ज्ञाननी उन्नति पामेलो, एवो जे कोइ यांत्रिक अथवा रसायण प्रयोगवाळो पुरुष जे, आखा दिवसमां महाश्रम अने द्रव्यादिकनो खर्च करी जे, परीणाम मेळवे तेना कर्ता अल्प समयमां, महा समर्थ योगी पोताना अद्‍भुत ज्ञानथी, महा अद्‍भुत अने अलोकीक कार्यो करी शके छे. माटे एवा महा पुरुषने केवळ स्वार्थी एवा मात्र मानसिक ज्ञानवाळानी साथे, मळी कार्य करवानुं केहेवुं ए, तेमनो द्रोह कर्या जेवुंछे.

जेवी रीते विद्युत अने रसायण आदीक चमत्कारी विद्यानुं मुल्य अने उपयोग उन्नति पामेलो विद्वान यथार्थ रीते जाणी शकेछे, तेवीज रीते महा समर्थ योगेश्वरना अद्‍भुत कार्योनुं मुल्य अने अद्‍भुत उपयोगने मार्गे गयेला विद्यार्थीने ते जणाइ शके छे. हालना समयमां पण योगविद्याना अद्‍भुत कार्योनुं

कांइक ज्ञान ते विद्या जाणवानी इच्छा राखनारा केटलाएक आग्रही विद्यार्थी अने शिष्योनेछे. परंतु ए विद्याना गुह्य ज्ञाननो अभ्यास करवा सारु प्रथम विद्यार्थिनुं, केटलुएक निश्चयात्मक बुद्धिज्ञान उन्नतिने पामेलु जोइये, जेम यांत्रिक, रसायण, विगेरे कोइपण उपयुक्त विद्यानो अभ्यास करवा सारु, आगळथी साधारण विद्या मेळवी ज्ञाननी कांइक उन्नति थया पछी तेवी पाठशाळामां दाखल थवाय छे. तेज नियम ए अद्भुत विद्या सारुछे. माटे गुप्त विद्या प्राप्त करवा सारु, प्रथम अधिकारी थवानी मुख्य अगत्य छे.

गुप्त विद्याना विद्यार्थिये, अधिकारी थवानुं, प्रथम साधन महा योगेश्वर एवा जे श्रिमंत शंकरस्वामी तेमणे एवुं कहेलुछे जे, ते विद्यार्थिन सत्य अने असत्यना संपुर्ण द्रढ ज्ञाननी, अगत्यछे ए ज्ञान माहाविद्याना ज्ञानथी, यथार्थ प्राप्त थइ शकेछे. हवे जेवी रीते ए मुळ सत्य अने असत्यनुं परीपक्व ज्ञान थाय छे, तेवी रीतनी सिद्धिनी प्राप्ती वगर मागे एनी मेळे थइ शकेछे. माटे ए स्वाभाविकछे जे, प्रथम विद्यार्थि प्रश्न पुछे जे, मुळ सत्य अने असत्य शुछे. ए विषय अति मोटो छे, ते छता आ प्रसंगे अल्प सुचना कर्याथी, उन्नति पामेला ज्ञानीने, कांइ पण लाभ थइ शकशे. मुळ सत्य वस्तु एज समजवी के, जे वर्तमान, भुत, अने भविष्य आदिक काळथी, क्षीण अथवा

वृद्धि थइ शकती नथी तेमज बदलाइ शकती नथी अने जेनुं प्रथकर्ण अने विभाकर्ण कोइ काळे थइ शकतुं नथी, एवुं एकज मात्र केवळ शुद्ध चैतन्य अथवा परब्रह्मछे. ते शिवाय सघळा ब्रह्मांडमां सघळुं जे जणायछे, ते द्रश्य अने अद्रश्य क्षणभंगुर अने मायानु आव्रण मात्रछे, एवो प्रथम विद्यार्थिने बुद्धिथी निश्चय करवानी प्रथम अगत्यछे. माटे प्रथम विद्यार्थिये निरंतर ए ज्ञाननी द्रढता करवाना साधनो करवानो अभ्यास राखवो.

त्यार पछी बीजुं साधन एछे जे, उपर कहेलुं सत्य असत्यनुं ज्ञान बुद्धिथी जे, द्रढ करेलुं होय तेनी सत्ता सर्वकाळ मनना उपर द्रढ थवी जोइये, अने ते द्रढ थइ एटले, ते विद्यार्थिने पोतानी आसपासनी सघळी वस्तु, मिथ्या अने असत्यनो जे, सिद्धांत कर्यो छे, तेना बळथी, तेने मिथ्या पदार्थनी इच्छा कदापी उत्पन्न थाय नहीं. अने संसारमां पोते रही जे सदा शुभ अने परोपकारना कर्म करे तेना फळनी पण इच्छा आलोक अने परलोक ए बेउमांथी एकेमां राखे नहीं, तेथी तेने मिथ्या पदार्थ मळयाथी हर्ष अने तेनो नाश थयाथी शोकपण थाय नहीं, त्यारे तेनी बीजा प्रकारनी साधन दशाने मार्गे चाल्यो एम समजवुं.

हालना समयमां, सघळा मतपंथमांना जे कोइ भाविक अने एक निष्टाथी, भक्ति करनारा छे. ते मोटी चुक ए करेछे जे, शास्त्रमां जे पोताना मननी

वांसना, अथवा त्रष्णा टाळवाना वाक्यो कह्या छे, तेनो गुह्यार्थ समजी शकता नथी, तेओ अल्पज्ञानने लीधे एवुं समजेछे के, आत्मज्ञाननी उन्नति थइ मोक्षनुं साधन मात्र बाह्म त्रष्णाने अति आग्रहथी दाबी राख्याथी थइ शकेछे. परंतु तेमना लक्षमां आवतुं नथी, जे गमेतेवा आग्रहथी बाह्म साग अने वैराग्य राख्यो होय तेथी, मनना अंतर विकार अने त्रष्णानो नाश थइ अने विकार रहित थइ, उत्तम आत्म स्थिति थइ शकती नथी. एवी रीते महा समर्थ शंकरस्वामीये, भगवतगीतानी जे टीका करीछे, तेमां स्पष्ट कह्युं छे. आ उपरथी केटलाएक अज्ञानी मनुष्य एम समजेछे जे, ज्यारे आपणा मनना विकार बाह्म क्रियाथी, समी शकता नथी, माटे जेटली त्रष्णा उत्पन्न थाय ते, भोगव्याथी ते शांत पामे परंतु ए तेमनुं अज्ञानछे. केम जे मनुष्यने मानसिक ज्ञान अने विवेकछे, तेथी जो आपणा मनना मलीन विकार टाळवानी, आपणी इच्छा होय तो, ते शुभ इच्छा मनमां निरंतर राखी प्रसेक मलिन विकारोने विवेकथी ओळखवा अने द्रढ आग्रहथी वर्तवुं; ते छतां कोइ समये ते विकार मनमां प्रवेश करी विभित कार्य उत्पन्न करेतो, तेने ओळखी तेनो प्रतिबंध ततक्षण मनद्वारा प्रथम करी पछी बाह्म स्थुळ इंद्रीयोथी तेवी रीते वर्तवुं, एम करवानो अभ्यास अति आग्रहथी राख्याथी, मननो निश्चय द्रढ थइ, इच्छाशक्ति

प्रबळ थवाथी, मनना मलिन अने दुष्ट विकारनो नाश थइ शकशे. विषइ जीवने प्रत्येक क्षणे जे, विकार कल्पना, अने विचार अंतरमांथी उत्पन्न थाय छे, तेनो संबंध तेना पुर्व कर्मनी साथे घणोछे तेथी ते प्रमाणे वर्तवाथी, इच्छा स्वाभाविक रीते उत्पन्न करेछे. ते माटे मात्र बाह्य क्रियाथी, एवा स्वाभाविक पुर्व, जन्मना मानसिक विकार, टाळवाने प्रयत्न करवाथी, परीणाम उलटुं विप्रित थायछे. अंतरनी जे, स्वाभाविक त्रष्णा अने इच्छाछे तेने जो बाह्य क्रियाथी, प्रतिबंध कीधो तोपण ते अंतरमां माइक परमाणुओनो संग्रह करी, कल्पित श्रष्टि उत्पन्न करेछे, माटे पुर्व कर्मना बंधनमांथी मुक्त थवानुं एज साधन छे जे, संचित कर्म थइ जे परीपक्व थया एवा जे प्रारब्ध कर्मनो प्रवाह तेने, स्वाभाविक रीते जवानो कांइ मार्ग आपी, एटले स्त्रि अने संतान विगरेनो त्याग नहीं कर्ता, तेमां रही नितीये, वर्ति प्रारब्ध कर्म परीपुर्ण मेळववा परंतु तेने कोइ जातनो मात्र बाह्यथी त्याग अने वैराग्यनो, रंग आपवो नहीं.अने एज प्रमाणे गितामां श्रीकृष्ण भगवाने अर्जुनने पोतानो क्षत्री धर्मनो, त्याग करवानो प्रतिबंध कर्यो. एनुं कारण प्रत्यक्ष छे. एक निर्विकार सत्य अने शुद्ध ब्रह्म अथवा शुद्ध चैतन्य, शिवाय सघळु असत्य अने मिथ्याछे. माटे आपणे संसारमां जे जन्मथी जे असत्यनो संबंध थयोछे, ते आपणा स्त्रि पुत्रादी संबंधी,

तेने आपणे ते कर्म नितिथी करवाथी बंधायला छ-इये, ते कर्मनो मात्र बाह्य स्थुळ देहथी साग कर्याथी, ते असत्य कर्म आपणा अंतरमां सत्य ठरी तेवा कर्म करावे छे. एज सिद्धांत प्रमाणे, श्रिकृष्ण भगवाने अर्जुनने कह्युं जे, हे अर्जुन तु स्वार्थ रहित तारा पोताना क्षत्री धर्मनुं कर्म कर, अने ते जो केवळ परमार्थ अने स्वार्थ रहित हशे, तो तें तारा क्षत्री धर्मरूपी जे कर्म ते कर्म कर्याथी, तेनो अंत आव्यो एम समजवुं पछी ते आगळ वृद्धिने पामतु नथी ते माटे आपणे संसारमां रही जनकराजानी पेठे, सघळा व्यवहारीक कार्यो नितिये, पोतानो तेटलोज धर्म जाणी करवा, परंतु ते कार्यमां तदाकार मननी वृति थवा देवी नहीं, अने ते जे कार्यो कर्या होय तेना फळनो पण इच्छा करवी नहीं, पण स्वाभाविक रीते जे फळ प्राप्त थाय, अने जे नष्ट थाय, तेमां हर्ष अने शोक उत्पन थवा देवो नहीं; अने संसारमां जे स्वार्थरूपी बंधनछे, तेनो जेम बने तेम साग करता जवुं, अने परमार्थना कार्य करवाभणी अधिक लक्ष राखवुं. एवी रीते कर्याथी जेम कमळ निरंतर पाणीमां रहे छे, ते छता तेने पाणीनो स्पर्ष थतो नथी, तेवी रीते थवायछे. परंतु जे आपणे कार्य करीये, तेमां प्रथमथीज स्वार्थ राखी फळनी इच्छा राखीए तो मननी वृत्ती तेवी रीते पुनः पुनः करवानी थाय छे तेणे करी ते नवा उत्पन करेला कर्मनो नाश थवा

सारु पुनरपी जन्ममर्ण प्राप्त थायछे.

आ उपली सुचना उपरथी स्पष्ट जणायछ जे,गुप्तविद्या प्राप्तकरवासारु तेना विद्यार्थिने,ते कर्मअति आग्रहथी करवानी अगत्य जणाय छे अने ते पेहेला प्रकारना साधनथी वृद्धिने पामी शके छे. ते पेहेला प्रकारनुं साधन ए छे जे सघळी वस्तु द्रश्य अने भिन्न जणायछे. तेनी ऐक्यता पोतानी साथे केवी रीतनी छे, एनी सत्यतानुं, जेवी रीतनुं द्रढज्ञान होय, तेवी आगळ परीपुर्णता थती जाय छे, एटले मात्र सत्य एकज शुद्धचैतन्य अथवा परब्रह्म छे, एवुं बाहारथी मानी लीधाथी कार्यनी सिद्धि थइ शकती नथी परंतु ते प्रमाणे आपणाथी सघळा कार्योमां वर्त्ताय तोज, उपयोगनुं छे; एटले समभाव अने परोपकार बुद्धिथी पोते निरंतर वर्त्ता करे, अने पोतानी मनोवृत्ती निश्चयात्म बुद्धिचैतन्यनी उन्नति करवा भणी, राखवानो अभ्यास राखवाथी, आगळ उन्नति थती जशे, ते उन्नति थवाना बीजा साधन कीयां छे तेनो विचार आगळ प्रसंग आव्येथी करीशुं.

संवत १९४१ आश्विन वद्य २ रवीवार.

गुप्त विद्यानो प्रथम विद्यार्थि.

आपणे पाछळ कह्या प्रमाणे गुप्त विद्याना प्रथम विद्यार्थिने, बे प्रकारनी स्थिति द्रढ थइ, एटले सत्य अने असत्यनुं संपुर्ण ज्ञान, ए प्रथम स्थिति अने

बीजी स्थिति सत्य ज्ञाननी मन उपर द्रढसता, एटले कोइ पण कर्म करवा छतां, तेना फलनी इच्छा नही राखता, ते स्वाभाविक नियम प्रमाणे अथवा मात्र परोपकारना कार्य सारु, करवा भणी लक्ष राखी पोतानी निरंतर द्रढ द्रष्टि निर्विकार एक सत्य परमात्मा तरफज, रहे त्यारे समजवुं जे, बीजा प्रकारनी स्थिति द्रढ थइ; एवी रीते बेउ स्थिति द्रढ थयापछी त्रीजी स्थितिं द्रढ करवा प्रयत्न करवुं, तेने सारु छ प्रकारना गुणनी द्रढता, करवानी अगत्य छे. तेमां पहेला प्रकारनो गुण, सम कहेवायछे, एटले स्थुळ अने सुक्ष्म इंद्रियोना जे, आ लोक अने परलोक सुधीना सघळा मिथ्या अने नाशवंत सुखोनी, त्रष्णाथी विरक्त थइ, निरंतर तेना अवगुणनो, विचार करी मननी वृत्ति, स्थिर राखी एकाग्रताथी, आत्मस्वरुपमां, निमग्न रेहेवुं. एवी रीतनी स्थिति करवाने प्रथम अति कठण लागे खरु, परंतु तेनो अतिं आग्रहथी अभ्यास करवा मांड्यो, एटले तेमां प्रीति उत्पन थइ, आनंद वर्तवा मांडेछे; ते आनंद इंद्रीयोना विषय सुखना आनंद कर्ता, निर्मळ अने शुद्धछे, तेथी स्थुळ शरीर पण प्रफुलित रेहेछे. परंतु एकला बाह्य उपचार कर्याथी, परीणाम विप्रित थायछे. साधारण नियम एवोछे जे, आपणा सघळा विचार अथवा कल्पना, ते प्रत्येक तेना विषयनी साथे, संबंध राखे छे, तेथी आपणे भुत काळमां जे जे, कर्म कर्या

होय, तेनी स्फुर्णा आपणा, मनमां उत्पन्न थायछे, तेथी ते स्फुर्णाना रुपो मनमां उत्पन करी, जाणे आपणे तेवी क्रिया वर्तमान काळमां करीये छइये, एवो भास उत्पन करी, आपणा मननी स्थितिने विकार आपणे करीये छइये. माटे संपुर्ण समनो गुण प्राप्त थयो, एटले ते विषय संबंधथी, वृतिने तोडीने, तेने धारेले ठेकाणे, स्थिर करी शकायछे. तेणे करी कल्पना, निर्मळ अने विकार रहित थायछे; अने तेथी आगळ कार्यनी सिद्धि पण उत्तम रीतनी थायछे.

एवीज रीते स्थुळ शरीरनी पंच स्थुळ इंद्रियोने, नियममां राखी, तेना उपर प्रबळ इच्छाशक्तिथी, सत्ता राख्याथी, बीजा प्रकारनो जे गुण दम तेनी परीपुर्णता थायछे. माटे प्रथम विद्यार्थिये भक्ष भोजनादिक निर्गुण एटले विकार रहित, अने विषयने उत्तेजन करे नहीं, एवा भोजन करवानो अभ्यास राखवो.

महासमर्थ, एवा शंकरस्वामीये, प्रथम अधिकारी सारु, त्रीजो गुण उपरती कह्योछे. एटले बाह्य सघळा कार्यो कर्तो छतां सदा अंतर द्रष्टिनुं तदाकार पणु अने लक्ष एकज उपर केटली सत्य वस्तुमां रेहे छे, माटे बाह्य जे कांइ विकार आवे तेनुं, सत्य रीते निराकरण करी, समाधान पामी, आनंदमां रहे. अने कोइ पण जातना बाह्य कर्म, संबंधी कर्मकांड, अने क्रियाथी, निश्चयात्मक, बुद्धि चैतन्यना ज्ञाननी प्राप्तिनी त्रष्णा राखे नहीं. अने द्रढ इच्छाशक्ति प्रबळ

राखेतो, तेने कोइ जातना विकारनुं आवरण थइ शके नहीं.

चोथो गुण महा योगेश्वरे, तीतीक्षा कह्यो छे. एटले संसारमां गमे तेवा कष्ट, अने दुःख प्राप्त थया छतां कोइ रीते मनमां विक्षेप नहीं थतां ते सहन करे. अने कोइ पण जातनी सुख भोगववानी इच्छा, उत्पन थाय नहीं एटलुंज नहीं, परंतु पोताने कोइये कांइ व्यथा अथवा दुःख उत्पन कर्युं होय, तोपण तेनो बदलो लेवानी इच्छा उत्पन थाय नहीं, अने पोताने मायावी जीव समजे नही.एवी स्थिति थइ, एटले संपुर्ण तीतीक्षानो गुण प्राप्त थयो, एम समजवुं एवी रीतनी स्थिति थया पछी तेवो मनुष्य सदा आनंदमां रेहेछे, तेने कोइ प्रकारनी संभाळ राखवानी अगत्य रेहेती नथी, अने ते एकलो छतां, तेने एकांतथी कांइ दुःख थतुं नथी, पण आनंद वर्तेछे.

पांचमो गुण समाधान छे. एटले मानसीक ज्ञाननो, यथार्थ उपयोग करी, गुप्त विद्या प्राप्त करवानां साधन, अने गुरु, तेनी वेद्यातमां कह्या प्रमाणे, छ प्रकारे परीक्षा करी, ते सत्य अने निर्दोष जणाया पछी, ते गुरु अने शास्त्रमां द्रढ, आग्रहथी प्रतिति राखी, ते गुरुना बोध अने सत शास्त्रनुं, श्रवण अथवा अध्यन मनन अने निदिध्यास करी, निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्य ज्ञाननी द्रढता करी, परमात्माना ध्यानमां तलीन रेहेवुं. अने तेथी आनंद वर्ते. क-

दापी कोइ समये व्यवहारीक कार्य सारु, तेमां अल्प समय सुधी लक्ष राखवुं पडे तोपण, ते कार्यनी सत्ता तेना उपर ते कार्य थया पछी रहे नही, पण पाछो आत्म स्वरुपनी वृत्तिथी, परमानंद वर्ति सत्य समाधान पामे, पण अल्प ज्ञानीनी पेठे, परीक्षा कर्या विना धर्मना कार्यमां, समाधान पामे नही.

गुप्त विद्यानी इच्छा राखनारा. प्रथम विद्यार्थि अथवा अधिकारीने, पोताना साधननी सिद्धि करवा सारु महा समर्थ एवा योगेश्वर जे, शंकर स्वामी तेमणे छठो गुण श्रद्धा कह्यो छे, परंतु गुरु अने शास्त्रमां श्रद्धा राखवानी पुर्वे, आपणे उपर कह्या प्रमाणे छये, प्रकारे परीक्षा करी निश्चय थया पछी श्रद्धा राखवानी छे. केमजे मानसीक ज्ञानवाळो पुरुष, पोताना व्यवहारना कार्यमां, जेम तेम सघळा उपर श्रद्धा अथवा विश्वास राखतो नथी, परंतु प्रथम तेनी परीक्षा करी, एम जणाय जे, तेथी कांइ लाभ थशे तोज, ते विद्या अने माणसनो, विश्वास करेछे; माटे गुप्त विद्या जेवी जे, अति कठण विद्या तेमांतो प्रथम अवश्य परीक्षानी, अगत्य छे. एतो सत्य छे जे, सघळां मनुष्य प्राणीथी, सत्य गुह्यार्थ यथार्थ रीते, समान समजी शकातो नथी, केमजे सघळाने, मानसिक ज्ञाननी यथार्थ उन्नति, ते सत्यज्ञान समजवाने थयेली होती नथी, अने जेने तेवी शकती होय ते छतां तेने ते सत्य ज्ञाननी कीमत नथी

तेथी ते जाणवानो प्रयत्न करवानो श्रम लेतो नथी, तेणे करी असत्यना घणा परमाणुमांथी सत्यनां परमाणु, ओळखी शकातां नथी. जे केवळ सत्य वस्तु छे, तेनुं ज्ञान एकाएक समजी शकातुं नथी. पण ते जाणवानो, आग्रह राखतो, धीमे धीमे तेनी द्रढता मनमां थवा मांडे, माटे भगवतगीतामां श्रीकृष्ण भगवाने, स्पष्ट कह्युं छे जे, साधारण बुद्धिना माणसोनी, पुजा सेवा आदीक भक्तिमांथी, श्रद्धा काडी एकदम, अति कठण योगादीक गुप्त विद्या तरफ वलण कर्याथी, परीणाम विभ्रित थया विना रेहेज नहीं, कोइ पण साधारण बुद्धिनो माणस होय ते छतां तेने जो कोइ वातनी सत्यता असंभवित लागे तो तेनुं सोधन करवा भणी तेनुं लक्ष जतुं नथी. जेवी रीते अल्पज्ञानी गांजा, भांग, अफीण वीगरे माध्य वस्तुनं, सेवन कर्या पछी. जेम स्वप्नावस्तामां जेवी रीते मिथ्या तुरंग अने कल्पना उठे छे, ते सत्य जाणी, तेमां समाधान पामे छे तेवी रीते बीजा सावध मनुष्यने कदी पण थाय नहीं. जे केवळ सत्यता छे, ते निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यना ज्ञाननी उन्नति थया पछी, महा ज्ञानी पुरुषोने प्राप्त थाय छे. ते साधारण मानसीक ज्ञानवाळा, पुरुषने यथार्थ समजी शकाय नहीं, महा अनुभवी उत्तम ज्ञानीना सिद्धांत उपर विश्वास राख्याथी, ते प्रथम विद्यार्थिनो श्रम निष्फळ कदी जाय नहीं, परंतु निश्चय

कर्या विना अंध परंपराना मार्ग उपर विश्वास राख्याथी, ते साधकनी, उन्नति थइ शकती नथी. अने श्रम मिथ्या जाय छे. माटे अती प्राचीनकाळना, निषपक्षपाती, महा समर्थ विद्वानोए, मीमांसा विगरे ग्रंथमां, स्पष्ट आज्ञा करी छे जे, कोइ पण धर्म संबंधी शास्त्र तथा गुरुनी निपपक्षपात रीते, परीक्षा कर्या विना, श्रद्धा अने समाधान पामवुं नहीं. सत्यताने मार्गे यथार्थ रीते चाल्याथी, प्रत्यक्ष फळ इच्छा नहीं राखे, तोपण प्राप्त थवुंज जोइये. जेम जेम कार्य अने कारणनो अधीक विचार करवानो अभ्यास करे छे, तेम तेम तेने सत्य ज्ञाननी उन्नति अधीक थती जाय छे, अने ज्ञाननी सत्यता जणाइ, एटले सघळा तर्को समी जइ, पोते ज्ञानमय निर्विकल्प थाय छे. वळी शीष्य अथवा साधकने, गुप्त विद्यानुं ज्ञान, प्राप्त करवानी जे पोतानी शक्ति ते द्रढ करवानी मुख्य अगत्य छे; अने तेने एम निश्चय जणाय जे मने जे सत्य ज्ञाननो बोध कर्यो छे. ते हुं राखी, अने समजी शकीश, एवो द्रढ निश्चय थयाथी, ते ज्ञाननी उन्नति थवा मांडे छे. जे समये विद्यार्थि एवुं समजे छे जे, आ अति उंचुं विकट ज्ञान समजवाने, हुं अशक्य छुं, ते समये ते तेवोज, निर्माल्य थइ जाय छे. कोइ पण कार्य करवामां, पोतानुं असमर्थपणुं, पोताने जणायाथी ते कार्य कदापी देखीतुं साध्य करतु जणाय तोपण तेथी अंते तेनी शक्ती आती क्षिण

थाय छे. एक समये एम जणायुं जे, हुं धारेलुं कार्य करवाने असमर्थ छुं, तो पछी ते पोते असमर्थ निश्चय थायज. योगादिक तत्वज्ञाननी विद्या एमज, स्पष्ट कहे छे जे, आ संसारमां मनुष्या देह प्राप्त थयानुं सार्थक एज छे जे, पोते मानासिक अने निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्य ज्ञाननी, परीपुर्ण उन्नति करी लेवी जोइए. तेणे पोताना अंतर आत्मानुं सत्य ज्ञान प्राप्त करी लेवुं, एज मनुष्यनुं जन्मनुं कर्तव्य छे; तेम नहीं थाय अने अज्ञानथी देहने आत्मा समजे, अथवा प्रकृतिवाळो जीव पोताने समजे तो, एज मोटुं पाप योगश्वर अने आत्म ज्ञानीओये कह्युं छे.

ए शिवाय गुप्त विद्याना प्रथम विद्यार्थि, अथवा अधिकारीने, मुमुक्षत्वना गुणनी द्रढतानी अगत्य छे, मुमुक्षत्व, एटले माइक शरीरथी; विरक्त थइ,पोताना सत्य स्वरुपमां तलीन थवानी बळीए इच्छाथवी एवी स्थिति प्राप्त थवा सारु, उपर कहेला बीजा प्रकारनो जे गुण दम एटले हालनुं पोतानुं जे स्थुळ शरीर ते पोताना स्वार्थना सुख भोगववानुं स्थानछे एमजाणी त्रष्णा रहित वर्त्याथी, मुमुक्षु थवाय छे. अने उपर कहेला चोथा प्रकारनो गुण जे 'तीतीक्षा' ते परीपक्व थयाथी,एवी जातनी स्थितिनि परीपक्व इच्छा रेहे छे ते उपर कहेला त्रणे प्रकारनी स्थितिवाळा नेज, तेनी सत्यता यथार्थ जणाइ शके छे. अने तेने

तेवी अति उत्तम स्थितिमां सदा आनंद वर्ते छे. ए सघळुं स्पष्ट रीते एटलुंज समजवुं के, उपर कहेलो अधिकारी अथवा शिष्य तेणे सघळा ज्ञानवडे पोताना आत्मानो मुळ स्वभाव एटले व्यक्त प्रकृती रहित पोताना शुद्ध चैतन्यना ज्ञानमां सदाकाळ स्थित थयाथी, प्रकृतीनो बनेलो हुं नथी, अने माइक कोइ पण वस्तु मारी नथी. एवुं समजवाथी नाशवंत पदार्थ अने देह वीगरेनो स्वाभाविक रीते परीपुर्ण अभाव थाय छे.

हवे आपणे उपर कहेला परीपुर्ण ज्ञानमांथी, गुप्त विद्याना प्रथम विद्यार्थिने तेनो अभ्यास जारी राखवा सारु, ओछामां ओछु केटलुं ज्ञान अने केवी स्थितिनी अवश्य अगत्य छे एनो विचार करीये. कैवल्य मोक्षनी प्राप्तिनी इच्छा सारु छेलुं साधन जे पोताना आत्मानुं सत्य मुळ स्वरुप, तेनी द्रढता होय अने बीजुं साधन जे ‘दम’ एटले पोताना शुभ कर्मना फळनी पण इच्छा नही रहे, अने सद्गुरु अथवा महात्मामां श्रद्धा अने मुमुक्षत्वनी द्रढता होय तो, महा समर्थ योगेश्वरनी कृपाथी बीजो जन्म ते विद्यार्थिनो एवो थायजे, जेमां बीजी कोइ पण त्रष्णा नहीं रहेतां पोते योगी थइ शके. अने जो आपणे पाछळ कहेला सघळा गुणनी परीपुर्णता थाय तो; आ जन्मेज, योगी थइ शकाय. हवे ‘दम’ अने तीतीक्षा ए बेउ गुण शिवाय एकली श्रद्धा होय तो

ते जेम परजन्यनी वृष्टि क्षारवाळी जमीनमां थइ, अथवा अरण्यमां थवा जेवुं छे. योगी प्रथम विद्यार्थिने, पोताना शिष्य अथवा चेलाना वर्गमां दाखल करवा सारु, उपला गुणोनी अगत्य अवश्य दर्शावे छे तेवा शिष्योना बे वर्ग होय छे. तेमां जे शिष्यो उपर कहेला गुणोमांथी;चार प्रकारना गुणो एटले समदम, उपरती अने तितिक्षा, ए चारे गुणो संपुर्ण नहीं पण ते सघळा केटलेएक अंशे संपादन करेला होय तो तेमने; पहेला वर्गना शीष्यो गणेछे. अने तेमने आ जन्मे योग विद्यानुं यथार्थ ज्ञान आपी योगी करे छे. जे विद्यार्थीने ते उपर कहेला गुणोनी परीपुर्णतानथी; परंतु ते गुणो प्रमाणे वर्तवानो द्रढ निश्चय करी; गुरुना बोध प्रमाणे ते गुणो द्रढ करवाने प्रयत्न करे छे. ते बीजा प्रकारना शिष्य अथवा अधिकारी कहेवाय छे.

हवे जे उन्नति पामेला विद्वान अने ज्ञानी पुरुषो, गुप्त अथवा योग विद्या प्राप्त करवा सारु उपर कहेला नियम प्रमाणे वर्तता होय पण शिष्य अथवा अधिकारी थवानी इच्छा नहीं राखता ते विद्या अने बीजा तत्व ज्ञाननी अने आत्म ज्ञाननी विद्यानुं अध्यन करेछे, तेवा आग्रही पुरुषोने द्रढ आत्मज्ञान प्राप्त थयाथी, उपर कहेला सम, दम, उपरती, अने तितिक्षा ए चारे गुणो प्राप्त थइ शकेछे, अने तेनी असर तेना बीजा जन्ममां थया विना रहेती नथी,

पुर्व जन्मना निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यना ज्ञाननी सत्ता थयाथी, तेनो बीजो जन्म कोइ उत्तम महाज्ञानीने घेर थायछे अने त्यां तेनी वृत्ति आत्मज्ञान अने बुद्धि चैतन्य ज्ञाननी उन्नति करवा उपर रह्याथी, तेने उपर कहेला चार गुणो शिवाय बीजा सघळा उत्तम गुणनी द्रढता थइ परम उत्तम उन्नति थइ योगी थाय छे.

महा समर्थ योगेश्वरमांथी केटला एकनो एवो सिद्धांतछे जे उपयुक्त अने तत्व ज्ञान विगेरे साधनथी, मानसिक ज्ञाननी उत्तम प्रकारनी, उन्नतिनी साथे, निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी परीपुर्ण उन्नति करवाना साधनमां जे पुरुष श्रम अने प्रयत्न संसारना कार्यो करीने, पण करेछे ते पुरुष, अकुंचित ज्ञानवाळा, एक मार्गी कोइपण मतपंथनी सांप्रत रुढीना कर्म, ध्यान अने पुजा सेवाना, उपलक कर्म करनारा पुरुष कर्ता अतिघणो श्रेष्ठछे.

गुप्त अथवा योग विद्या विषे, आ प्रसंगे अल्प सुचना करवानी अगत्य एटलीछे जे, ए विद्या साधारण सघळा मनुष्यथी, गुप्त राखवानो हेतु, अति उत्तम छे. केम जे ए विद्या प्राप्त थइ, इच्छाशक्ती योग्य रीते, प्रबळ थयाथी, आपणी आसपास अने आपणा वातावर्णमां, जे अगणीत आकाशना अति सुक्ष्म, शुभ अने अशुभ परमाणुओछे. तेनो संग्रह करवानी शक्ती आवी, तेनो शुभ अने अशुभ उप-

योग मनुष्य प्राणी पोतानुं जेवुं शुभ अने अशुभ ज्ञान होयछे, ते प्रमाणे करेछे. तेमां संसारमां विषयासक्त दुर्गुणी मनुष्यो, घणा होयछे, तेथी तेमने ए विद्या प्राप्त थयाथी, अति नाशकारक हानी थाय छे. एनुं प्रत्यक्ष द्रष्टांत थोडा दिवस उपर फ्रान्सदेशना एक अधीकारी आगळ एक एवुं काम आव्युं जे, एक महादुष्ट विपइ पण मलिन विद्यामां कुशळ अने प्रबळ इच्छा शक्तीवाळा पुरुषे एक निरअपराधी ग्रहस्थनी, सद्गुणी स्त्री उपर,(मेसमेराइज)आकाशना मलीन विषारी परमाणुओनो पोताना अंतःकर्णमांथी, प्रबळ इच्छाशक्तीना योगे ते स्त्रीमां प्रवेश करी, पोतानुं दुष्ट कर्म करी लीधु, ए सघळु साक्षी पुरावा विगेरेथी, स्पष्ट रीते साबीत थयाथी, ते अधिकारीये ते दुष्ट मनुष्यने, मोटी शिक्षा अने कष्ट आपी, तेनी शक्ती कमी करी, तेनी इच्छा शक्ती क्षीण करवाना उपायो कर्या. एवा दुष्ट वसिकरण विद्यावाळा आपणा देशमां घणा छे. ए उपरथी स्पष्ट जणायछे जे, जो कदापी ए गुप्त विद्या, रसायण आदीक, बीजी उपयुक्त विद्यानी पेठे, अल्प श्रम अने शुलभथी, प्राप्त थइ शक्ती होततो, सांप्रतकाळनी, अपरमीत विपइ त्रणावाळा, स्त्री पुरुषो अत्यंत हानी करी शकत, केमजे ए विद्याना साधनवाळाने, कोइनो नाश अथवा भुंडु करवासारु, आयुद्ध कींवा विषारी स्थुळ पदार्थ, अथवा बीजा माणसनी सहा-

यतानी, कांइ अगत्य रेहेती नथी. ते घेर बेठा मात्र, पोतानी प्रबळ थयेली इच्छाशक्तीना योगे पोताना, धारेला शुभ कींवा अशुभ कार्योनी सिद्धि करी शके छे. माटे सुज्ञ अने धर्मजीज्ञासु पुरुषे, प्रथम उपर कह्या प्रमाणे षडगुण पोतानामां स्थीत करी, केवळ स्वार्थ रहीत परमार्थ करवानीज, इच्छा प्रबळ थया पछी, गुप्त अथवा योग विद्या प्राप्त करवाने प्रयत्नकरवु.

संवत् १९४१ आश्विनवद्य ९ रवीवार.

धारणा अथवा कल्पना.

गुप्त विद्याना विद्यार्थिना अध्ययनमां जे, प्रथम सामर्थ अथवा शक्ति दर्शावेली छे, ते धारणा अथवा कल्पनाछे. सघळा मनुष्य प्राणीयो, जे धारणा अने कल्पना करे छे, तेनुं तेने ज्ञानछे अने ते कल्पना अथवा विचारना जे रुपो उत्पन थायछे, तेनुंपण तेने ज्ञानछे. प्रत्येक मनुष्य प्राणीने, पोतपोतानी प्रथक प्रथक अंतर कल्पनानी श्रष्टि छे, जेमां तेना ते विचार अथवा कल्पना स्थिती करीने रहेलीछे, ते मानसिक श्रष्टिनो पोते स्वतंत्र राजाछे, अने ते श्रष्टिमां, रहेली सघळी वस्तुनो पोते कर्ता अने अधीपती छे. ते श्रष्टिमां पोते पोतानी प्रबळ इच्छाशक्तिथी, राज्य करे छे, अने तेवा प्रसंगमां जो बीजी अवचित अथवा वगर धारेली कल्पनानो प्रवेश थयोतो, ते अवचित कल्पनानो समुळ नाश करवो.

अथवा, तेने वृद्धि पामवा देवी, ए पोताने स्वाधिन रहेलुं छे. ते श्रष्टि बाह्मनी तद्रूप श्रष्टि जेवीज होय छे, अने बाह्म श्रष्टिनी पेठे अंतर श्रष्टि पण कोइ समये अंधकार अने कोइ समये प्रकाश पामेली जणाय छे. वळी ते अंतर श्रष्टिमां, रहेला प्राणिने तेनो अवकाश अने तेमां रहेली सघळी वस्तु, जे प्रमाणे आपणी बाह्म स्थुळ श्रष्टि आपणी इंद्रियाने सत्य जणायछे, तेज प्रमाणे छे. एटले तेनी जगा अथवा अवकाश कोइ कोइ ठेकाणे सांकडो अकुंचित,अने कोइ कोइ ठेकाणे विशाळ,अने अति मोटो लागेछे. तेमां जे प्रमाणे सुंदर अने प्रियकर जगा अने वस्तु होयछे, ते प्रमाणे भयंकर अने दुख उत्पन करे एवी जगा अने वस्तुओ पण होयछे. तेमां सुर्य चंद्रादीकना प्रकाश, वायु अने परजन्य, तेमज विद्युत, अने जेम सुंदर मोहकारक रुपो होयछे. तेम भयंकर अने अप्रिय रुपो पण होयछे.एवि कल्पित, मायावी श्रष्टिमां मानसिक ज्ञानवाळा मनुष्यने, जवानी सत्ता तेनी इच्छाने स्वाधीन होयछे. ते ठेकाणे पोताना स्थुळ देहना शत्रुनो तेने भय रहेतो नथी, ते प्रमाणे शारीरीक व्यथा त्यां जइ शकती नथी, अने संसार संबंधी अनेक प्रकारनी मोहजाळ त्यांथी, दुर रहेछे. परंतु ए सघळु छता अज्ञान अने वेहेमो त्यां पोतानी साथेज जायछे.

पृथ्वि उपरना केटलाएक अज्ञान देशमां एवा

बुद्धिहिन, अने मानसिक अति अल्प समजवाळा लोको होयछे जे, तेओ ज्यारे पोताना चक्षु हाथेवती बंध करे छे, अने तेओना कान बंध राखे छे, ते समये तेओनामां मनुष्यजीव छे के नहीं, तेनी पण तेने भ्रांति थायछे. तेओना, मानसिक चक्र कल्पना रहित कोरा होयछे. तेथी तेओनी अंतर श्रष्टिमां तेने आकर्षण करवा जेवी कांइ वस्तु होती नथी, परंतु उत्तम मानसिक ज्ञानवाळा कवी अने शील्पी कारीगरोना, मायावीजीव ज्यारे एकाग्रताथी, मनोमय चक्रना अंतर पडदामां स्थित थायछे, ते समये ते जीव सुंदर स्वरुपनी कल्पनानी, स्वप्नावस्थामां आनंद पामे छे, ते समये ते रुपोनी प्रसंसानी कल्पनामां, अथवा तेना मधुर रागमां, तलीन होयछे. तेथी तेवा मनुष्योने स्थुळ श्रष्टिना भाननी विस्म्रति थायछे. परंतु निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननी उन्नतिवाळा योगीयो जे के, पोतानी उन्नति करेली प्रबळ इच्छा शक्तिना योगे, जाणी जोइने कोइ शुभ हेतु माटे, जे कल्पनाथी रुपो, गमे ते समये पोतानी आसपास पोताने माटे उत्पन करे छे, ते पोताने द्रश्य अने तदरुप देखायछे एटलुज नहीं, पण तेज प्रबळ थयेली इच्छा शक्तिना प्रतापथी ते रुपो बीजाने पण द्रश्यमान देखाडी शकेछे. तांत्रिक विद्याना प्रयोग अने बीजा कारीगरीना केटलाएक कार्यो उत्पन थवानो संबंध कल्पनाना साधन साथे घणो मळतो होयछे.

ते बेउ कल्पनाना योगे, स्थुळ द्रश्य पदार्थने रुपो आपी शकेछे. पण ते भिन्न भिन्न प्रकारना भिन्नभिन्न कार्यो उत्पन करी शकेछे. जे, रुपघडो, कारीगर होयछे, तेणे पोतानी मानसिक कल्पनामां जे रुपनी परीपक्व धारणा अथवा कल्पना करी होय, तेवाज रुपो ते पाषण, धातु अने काष्ट विगेरे उपर कोत्री अने घडी शकेछे. पछी ते रुपोनी, बीजा उपर असर थवा सारु भिन्न भिन्न अगणीत देवो अने उत्तम प्रसिद्ध थइ गयेला पुरुषो अने स्त्रि विगेरेना नामो आपेछे. तेज प्रमाणे जादुगर, अने मलिन तांत्रिक विद्याना उपासको, पोताना मनोमय चक्रमां संपुर्ण एकाग्रताथी, कल्पनाना रुपनी आकृती बनावी ते, पोतानी प्रबळ इच्छा शक्तीना योगे, बीजा घणु करी निर्मळ मनवाळा, अने भोळा मनुष्यना मन उपर तेनी, तद्रुप छाप, अल्प श्रमथी पाडी शकेछे, एटलुंज नहीं परंतु, घणे प्रसंगे अंतरीक्षमां, अने बीजी जगा उपर ते रुपो पाडी तेमां प्रबळ इच्छाशक्तीना योगे, जोइये तेटला स्थुळ प्रकृतीना परमाणुओनो, संग्रह करी ते रुपो घट करी बीजा मनुष्योने स्थुळ चक्षु इंद्रि द्वारा देखाडी पण शकेछे, अने स्पर्श इंद्रिथी, ओळखावी पण शकेछे. ए उपरथी शुभ अने परोपकार बुद्धिवाळा, योगीयो केटलाएक कष्ट सहन करी, ध्यान धारणा अने इच्छाशक्ति विगेरेनी उन्नति करवाना साधन द्रढ करेला होय, ते अदभुत

कार्यो करी शके, एमां कांइ आश्चर्य नथी.

कोइना मननी गुह्य वात जाणी शकवी, अने पोताना विचारनी प्रेरणा बीजामां करी शकवी विगेरे जे साधारण कार्यो छे तेनी सत्यता हवे सेज समजी शकाशे. वेदांत अने योग शास्त्रना अमुल्य सत्य सिद्धांत उपरथी, महा समर्थज्ञानी यथार्थ रीते जाणी शकेछे जे, सर्व व्यापक शुद्ध चैतन्य जे, निश्चयात्मक बुद्धिमां रहेलुंछे, तेनी महा अद्भुत गती अथवा शक्ती, मनोमय चक्रमांथी, संस्कार पामी, प्रबळ इच्छाशक्तीना योगे, ते इच्छा करेले ठेकाणे जइ त्यां तेवुंज, कार्य उत्पन्न करेछे. ते प्रमाणे उत्पन्न करेला रुपो प्रबळ इच्छाशक्तीनी, मननी गतीथी, बीजा मनुष्यना मनोमय चक्रमां प्रवेश करी, तेनुं ज्ञान तेने निद्रावस्थामां करी शके, एटलुंज नहीं, पण जाग्रत अवस्थामां पण तेने ते ज्ञान करी शके छे. परंतु ते सामा मनुष्यनुं जो मन निर्मळ, अने ते रुपो लेवाने योग्य, घणा दीवसना संस्कारथी थयुं होय, अने ते रुपो प्रवेश करनारनी, जेवी प्रबळ इच्छाशक्तीथी, तेनी प्रेरणा थइ होय, ते प्रमाणे जांखा अने स्पष्ट रुपो थायछे; अने ते प्रेरेला ज्ञाननी स्म्रती पण तेज प्रमाणमां रहेछे. जे प्रमाणे कोइ बेहेरा माणसने, कांइ शब्द संभळाइ तेनुं ज्ञान थतु नथी, अने प्रेत उपर कांइ पण रुप पडी शकता नथी, ते प्रमाणे लेनार अने आपनार बेउना, ज्ञान-

नी उन्नति थइ, ते ग्रहण करवाने योग्य थयुं नथी, तो तेना उपर कार्यनी सिद्धि थवी अती कठणछे.

एवा महा अद्भुत कार्यो करवाना घणा भिन्न भिन्न साधनो छे. पण ते सघळी साधनाथी मनुष्य प्राणीमां जे, आत्मिक चैतन्यनी गती रहेलीछे, तेनुं चलन अने गती मंद अथवा न्युन थइ, पीडा विगेरे करेछे, तेज प्रमाणे तेथी ते आत्मिक चैतन्यनी गतीनी शुद्धि थइ, नीरोगी थइ अद्भुत कार्यो पण थइ शकेछे; माटे केवळ शुभ निश्चयने साधन करवानो उपाय, एजछे जे, जेम बने तेम निरंतर गमे तेवी विप्रित स्थिति प्राप्त थाय, तोपण पोताना मननी वृत्ति चलित थवा नहीं देता, आनंदमां रही मनने सदा सर्वदा निर्मळ, विकार रहीत, अने प्रफुलित राखता प्रथम शिखवानी अगत्यछे.

परंतु उपर कह्युं तेवी रीते निर्मळ विकार रहित मन अने अंतःकर्ण नहीं होय तो, जेम एक विशाळ मोहोटा तळावनुं पाणी गतीवाळुं, एटले हालतुं होय, तेमां जे प्रतिबंबो पडे ते स्वच्छ पडे नहीं, परंतु वांकाचुका अने प्रमाण रहित, ओळखाय नही एवा थइ जाय छे, तेम आपणी मानसिक अंतर श्रष्टिमां अस्थिर अने विकारवाळा मनमां निर्मळ बुद्धि चैतन्यना परमाणुओ, अनेक प्रकारना वहेम काम, क्रोध, लोभ, मोह अने मद आदीक दुर्गुणो अने अज्ञानना परमाणुओथी मिश्र थया होय तो,

तेवा मनोमय चक्रमां, आपणे सत्य रुपो पाडवाने अति आग्रहथी प्रयत्न करीये तोपण ते रुपो पडे नहीं, अने पडे तो वांकाचुका अने वगर ढंगना निरउपयोगी पडे. कोइ पण वस्तु अथवा विषयनी परीक्षा करी, तेनी सत्यतानो शोध काढवानो आधार मात्र आपणी कल्पनानी स्थिति, उपरज होय छे, कोइ पण पदार्थ अथवा विचार जे आपणे प्रिय अने अप्रिय लागेछे, तेनो आधार, पण आपणा मननु वलण, अने तेनी सत्यता, जेवी समजाइ होय, ते उपर रहेछे. जे प्रमाणे कामी पुरुष, अनेक प्रकारनां स्त्रिनां रुप रंग अने वस्त्र जोइ, तेनुं मन भ्रमित थइ जाय छे. अने लोभी मनुष्य कोइनुं द्रव्य, स्मृद्धि, संसारनुं सुख, अने श्रष्टिनी भिन्न भिन्न रचना जोइ, ते पोताने प्राप्त थवाना विचारथी भ्रमित थाय छे. तेमज स्वाद इंद्रिवाळो पुरुष, अनेक प्रकारनां भक्ष भोजनादिक जोइ, तेनुं मन भ्रमित थाय छे. ए प्रमाणे अल्प बुद्धिना, मनुष्यने जनी जेवी त्रष्णा प्रधानपणे वर्तती होय तेवुं तेवुं तेनुं अंतःकर्ण विहवळ थइ मन भ्रमित थाय छे. परंतु जेनुं ज्ञान सत्य असत्यनी परीक्षा करवा जोग उन्नतिने पामेलुंछे, अने जेनुं लक्ष तेज कार्य करवा उपर छे, एवा बुद्धिवाळा पुरुषो, उपर कहेली कल्पित श्रष्टिनी रचना जोवानो, तीरस्कार नहीं करतां, ते जोया पछी, तेनी उत्पत्ति, स्थिति, अने लय, अने तेथी थतां सुख अने

दुखनी निषपक्षपात रीते परीक्षा करी, तेमांथी सत्य ज्ञान सोधी काढी, पोतानुं मन अधिक निर्मळ अने विकार रहित करी शके छे.

पोतानी प्रबळ इच्छाशक्तिना योगे, अथवा बीजानी शक्तिना योगे विचारनां जे रुपो मनमां बंधाय छे. ते मनुष्यना स्थुळ शरीर उपर प्रबळ सत्ता करी शके छे. ते मनुष्यनी आकृति अने मुखवटो प्रथम थोडा समय सुधी बदली नाखे छे, अने जो कदापी तेज रुप, संबंधी विचारनुं मनन एकाग्रताथी कर्या कर्युं तो, ते मनुष्य सदा बेहेबाकळो, अने तेनुं रुप पण बदलायलुं सदा रेहे छे. प्रबळ कल्पनानी सत्ता एवी तो द्दढ होय छे के, तेथी घणे प्रसंगे, मनुष्यना केश. जोताजोतामां स्वेत करी नाखे छे, एटलुंज नहीं परंतु दुष्ट मनुष्यनी प्रबळ थएली कल्पनाथी, गर्भमां रहेला बाळकनो नाश थाय छे, अथवा तेना शरीर उपर कांइ चिन्ह पडी रहे छे; अने कोइ समये कोइ अवयवनो पण भंग थइ शके छे, एटलुं नहीं, पण एक आश्चर्य जेवी सत्ता एवी थइ शके छे जे, कोइ मध्यस्थ मनुष्य उपर अथवा तेवा जड बतावेला रूप उपर, प्रयोग करी जे हानी करे छे, तेज हानी धारेला मनुष्य उपर थइ शके छे. तेवीज रीते परोपकारी बुद्धिना शुभ इच्छकनी, प्रबळ सत्ताथी, अनेक प्रकारना व्याधीनुं निवारण थइ शके छे. अने शुभ अने निर्मळ रुपो अने

शुभ प्रेरणा करी शके छे. अने एज कल्पनानी शक्तिना नियम प्रमाणे, गर्भवाळी स्त्रीना बाळकनो रंग अने रूप तेनी मातुश्रीनी प्रबळ कल्पना प्रमाणे ज थइ शके छे. वळी एज प्रमाणे पशु पक्षी जे स्थानमां रहेतां होय, ते स्थानमां तेना गर्भ उपर ते स्थाननां झाड पान, अथवा बीजी वस्तुना रूप रंगनी सत्ता ते गर्भवाळा पशु पक्षी उपर थइ शकेछे. एनो प्रत्यक्ष अनुभव करवो होय तो, गर्भवाळी स्त्रिना बाळकनो अथवा पशुना रूप रंग बदलवानी इच्छा होयतो, तेवी स्त्रि अथवा पशुने तेवा स्थान अने समागममां राखी, तेना मन उपर तेवी सत्ता कर्याथी, रूप अने रंग तद्वत थइ शके छे. ए उपरथी स्पष्ट जणाय छे जे, मनुष्य विगरेनी कल्पनानी सत्ता, जे प्रमाणे प्रबळ थइ होय, ते प्रमाणमां बीजा सुक्ष्म परमाणु उपर सत्ता करी शके छे. माटे पछी ते परमाणुनो संग्रह थइ, जे रूप बंधाय छे, ते तेज प्रमाणे थाय छे. एज अखंड अद्भुत नियम उपरथी, महा दुष्ट अने चंडाळ मनुष्यना, दुर्गुणनी कल्पना उपरथी, दुर्गुणी अने घातकी मनुष्यनी वृद्धि कोइ देशमां थाय छे. तेटलुंज नहीं पण, तेवा मनुष्यना संगष्टणथी अने प्रबळ इच्छाथी, विषवाळी वनस्पाति अने मस्त पशु पक्षीनी कोइ देशमां वृद्धि आधिक थाय छे. अने एज प्रमाणे बुद्धिचैतन्य ज्ञाननी उन्नतिं पामेला, मनुष्यनी प्रबळ थयेली इच्छा शक्ति-

थी, उपर कहेली वीषवाळी वनस्पति, पशु पक्षी, अने दुर्गुणी मनुष्यनो लय थइ, सद्गुणी मनुष्य, अने पशु पक्षी आदिकनी वृद्धि थइ, सतयुगनो प्रारंभ थाय छे, एवी रीतनो सिद्धांत महा समर्थ योगेश्वरनो छे, ते हालनी उपयुक्त विद्याना कांइक जाणीता नीयमनी, साथे मळतो आवे एवो जणायछे. आपणे उपर कह्युं एवी रीते, शुभ अने अशुभ श्रष्टिनो प्रारंभ अने लय युगादिकना, प्रारंभ अने अंतमां थाय छे एवां आपणा शास्त्रनां प्रमाण छे, अने एज प्रमाणे सांप्रत श्रष्टिनो लय थइ नवी शुभ श्रष्टिना प्रारंभ मनवांतरना अंतमां थशे एवुं, भविष्य समर्थ योगेश्वरनुं छे.

आपणी नियमित, अथवा स्वाधीन स्थितिना समये, आपणी कल्पनाने आपणी इच्छा शक्ति, नियममां राखी शके छे; परंतु आपणी अनियमित अथवा असावध स्थितिना समये आपणी कल्पना बीजा कोइनी प्रबळ इच्छा शक्तिने स्वाधिन थइ जवानो भय रहे छे, स्वप्नावस्थावाळा मनुष्यने जे स्वप्नां आवे छे तेना कार्यो उपर तेनी इच्छा शक्तिनी सत्ता चाली शकती नथी; स्वप्नामां जे जे वस्तु ते जोय छे, ते तेने सत्यज छे, अने ते वस्तुना स्थुळ पणा विषे पण तेने ते समये संशय रहेतो नथी, परंतु ते समये तेने सघळा बाह्य स्थुळ पदार्थोनुं ज्ञान होतुं नथी, अने जाणे ते छेज नहीं. एम तेने भासे

छे. कदापी स्वप्नामां तेने खंदक देखाय; अने ते कुदी जवाने इच्छा करतो होय; एम जणाय पण तेम थतुं नथी; परंतु जाग्रत अवस्थामां तेने जे कांइ प्रेरणा होय; तेज तेने दोरवे छे. जे मनुष्यने पोतानी मेळे समाधी करी शकाती नथी; पण बीजो कोइ तेने समाधी करी शके छे, तो ते मनुष्य ते समाधी करावनारने एटलो स्वाधिन थइ गयेलो होय छे जे, तेने ते समये पोतानी चंचळ इच्छाशक्ति होतीनथी तेथी ते समाधी करावनारनी कल्पनाथीज, दोरायो जाय छे; ते समये तेनी बाह्य सघळी इंद्रिओना मार्ग बंध होय छे अने ते मात्र कल्पनानीज स्थितिमां रहेलो होय छे, अने तेवी स्थितिमां बीजा प्रकृतिना पदार्थो रेहेवानो अवकाश मळतो नथी, अने तेवी स्थितिमां तेवा पदार्थोनो प्रवेश करी शकातो नथी, तोपण तेने ते समये जे जणाय छे, ते केवळ सत्यज होय छे. कदापी समाधी करावनार तेने एक पाषाण मुकी मोटा डुंगरनी कल्पना करावे अथवा कोइ पण देवलोक आदी स्थाननी, अथवा भुत पीशाचनी द्रढ कल्पना करावे तो, तेज प्रमाणे ते समाधी करावेला मनुष्यने जे प्रमाणे ते सावध अवस्थामां होय ने सत्य जणाय तेम तेने सत्य जणाय छे. वळी ते मनुष्यने पाणी भरेलुं पात्र आपी समाधी करावनार, तेने भांग अथवा कोइ माध्य वस्तुनो निश्चय करावे, तो पण तेने ते सत्य जणाय एटलुंज

नहीं, पण ते पीधाथी तेने ते समये केफ आवे पण साध्य अवस्थामां तेम थाय नहीं. वळी समाधी करावनाराथी एटली सत्ता थइ शके छ जे, ते जो दुष्ट विचारथी ते पाणीने विषनो निश्चय करावी, तेने कहे जे आतो तें विष पिधुं, तो तेथी ते स्वाधिन थयेला मनुष्यने महा व्यथा थाय छे, अने कोइ समये मृत्यु पण थाय छे. जो कोइ महा समर्थ समाधी करावनार होय तो, ते जागृत अवस्थामां रहेला मनुष्यना मनोमय चक्रमां पोतानी अति प्रबळ थयेली इच्छा शक्तिना योगे, जेवा रुपोनी कल्पना पोते करी होय, तेनो प्रवेश करी, ते प्रमाणे ते मनुष्यने ते सत्य जणाइ, तेने सुख अथवा दुख प्राप्त थयेलुं जणाय. ए उपरथी कल्पनाना विचारना परीणाम, जाणे अथवा अजाणे थया विना रेहेताज नथी, अने एज कारणने लीधे, केटलाएक मनुष्य उपर स्नेह अने प्रिति उत्पन्न थइ, तेनी वृद्धि थायछे. अने केटलाएक मनुष्य उपर द्वेष उत्पन्न थइ, शत्रुतानी वृद्धि थाय छे; अने तेज प्रमाणे पशु पक्षीमां पण करी शकाय छे, तेणे करी झेरी सर्पो, डंस करी शकता नथी, अने वाघ अने सिंह आदीक भयंकर पशुथी कांइ उपद्रव नहीं थतां ते मित्र थायछे.

कल्पनाथी उत्पन थयेला अद्रश्य कार्यो अने तेना स्थुळ श्रष्ठि उपर तात्विक आभाषो ए सघळु तेना नीयम प्रमाणे थोडु घणुं स्थाइक रहे छे. तेमां

जे उत्तम अने निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्य संबंधी कल्पना छे, ते अधिक समय सुधी स्थाइक रहेछे. वळी एटलुं तो सघळाना जाणवामां छे के, जे स्थानमां पुर्वे आपणे रहेता होइये, अने ते स्थाननो त्याग कर्या पछी, त्यां जे लाभकारक अने आनंद उत्पन करनारी बाबतो थइ होय, तेनुं स्मरण वगर प्रयत्ने सेहेज थइ आवे छे, अने जे दुःखकारक अने अप्रिय बीना थइ होय, ते भुली जवाय छे. परंतु जो कदापी ते अप्रिय बीना उत्पन थतां समये, आपणा मनमां ते अति भेदाइ गयेली होय तो, तेनो जल्दी नाष नहीं थतां, ते पाछी उपस्थित थाय छे, केमजे एक एवुं कार्य कर्युं होय के, जेथी अकस्मात भय उत्पन थाय, अथवा तेनी प्रबळ सत्ता आपणी कल्पना उपर थयेली होय तो, तेनो स्थाइक आभाष आपणा आ देह पर्यंत रहेछे एटलुंज नहीं, पण त्यार पछी थोडा समय सुधी रही शके छे. जे विचार अथवा कल्पना आपणे अभ्यास करी आपणा मनमां स्थापेली होय, तेनो समुळ नाष करवो अति कठण पडेछे. कदापी कोइ मनुष्ये बाळपणथी गरुड पुराण विगरेमां कहेली यमपुरी विगरेनी वात सघळी तेना बाह्य रुप प्रमाणे सत्य जाणी द्रढ निश्चय कर्यो होय तो तेवा मनुष्यने मृत्यु थया पछी, तेना सुक्ष्म देहवडे ते सघळी यमपुरीनी वात सत्य जणाइ, ते प्रमाणे अत्यंत कष्ट पण थाय छे. कदापी कोइ

मनुष्यने तेना स्थुळ देहनी अति भारी त्रष्णा मर्ण पर्यंत होय, अने तेनो ते देह मृत्यु पाम्या पछी,ते अव्यवस्थित पडेलो होय तो, ते मृत्यु पामेलो मायावी जीव, तेमां प्रवेश करवानो दीर्घ प्रयत्न कर्याथी, ते देहने वळगेछे, अने तेनो आश्रय मागेछे; परंतु ते निरउपयोगी मृत्यु देहमां अति अधिक कष्ट थइ, त्यांथी पाछा नीकळवुं पडे छे, अने लींग देह धारण करी त्रष्णाने लीधे पोषण सारु, कोइ जीवता प्राणीमां प्रवेश करेछे, तेज पिशाच कहेवाय छे तेने अति कष्ट पडेछे एवा प्रकार, जे ठेकाणे अने जेना सामाजीक नयिम मृत पामेला शरीरने दाटवाना अथवा एमने एम राखवाना होय छे, त्यां घणा थाय छे. ते माटे मात्र ब्रह्म विद्यानुं अने बुद्धि चैतन्यनुं सत्य ज्ञान मेळवी त्रष्णा रहित थवुं अने मृत्यु थया पछी, स्थुळ देहने अग्निदाह करवानी अवश्य अगत्य छे. अने ए सिद्धांत हाल अमेरीका अने युरोपदेशना केटलाएक निपपक्षपाति सत्य शोधक सत्य मानी, ते प्रमाणे वर्तवानो प्रयत्न पण करे छे.

अथवा कदापी कोइ अल्प मतीवाळा अथवा धर्म भोळा मनुष्यने, तेना धर्माधिकारीये प्रथमथी एवो द्रढ निश्चय करावेलो होय जे, पोतानी चालती धर्मनी रुढीमां आस्ता राखी पुजा सेवा आदीक भक्तिभावे अथवा अभावे पण करी होय, अने कदापी कांइ जाणे अजाणे नानां मोटां पाप थइ गयां होय,

अने दान धर्म आदीक कर्म कर्या होय तो,मृत्युथया पछी तेने दान धर्मनुं पुन्य साह्य करी, अने भक्तिथी परलोकमां उत्तम सुखनी प्राप्ति थशे. अथवा हाल जेम विश्वासी धर्म वाळा धर्माधिकारी कोइ प्राणघात करेला माणसने फांसी चडाव्या अगाउ तेने एवो द्रढ निश्चय करे जे, तारु चित इश्वरना पुत्र इशामां राख्याथी तारा सर्व पापनुं ते निवारण करी, ते तारु कल्याण करशे. एवी रीतना द्रढ निश्चयवाळो मनुष्य मृत्यु पाम्या पछी,तेने ततक्षणतेना पुर्वेना अधम कर्मनुं फळ प्राप्त थाय नहीं एतो खरु, परंतु तेणे नवा निश्चय करेला कर्मनुं द्रढ निश्चयनु संचित कर्म थइ ते सुक्ष्मदेहथी, भोगव्या जेवुं जणाय अने तेथी, अल्प समसुधी तेने आनंद रेहे परंतु तेथी तेना पुर्वे करेला दुष्ट कर्म भोगववाना काळमां उलटी वृद्धि थायछे. केमजे शुभ कींवा अशुभ जे, कर्म कर्यां होय ते भोगव्या शिवाय तेनुं निवारण थइ शकेज नहीं,ए एक अखंड सत्यन्यायनो नियमछे.

पुर्वे आपणे इच्छा शक्ती प्रबळ करवानी अगत्य विगेरे, विषय उपर यथार्थ वाख्यान करेलुंछे, तेज प्रमाणे आपणी शुभ अने नियमित कल्पनानी उन्नति करी, तेने बळीष्ट करवानी पण तेटलीज अगत्य छे. केमजे प्रबळ थयेली इच्छाशक्तिथी, आपणी कल्पनाओ अधिक बळीष्ट, अने उन्नतिने पामेछे; अने ए बेउ यथार्थ रीते उन्नत्ति पामी बळीष्ट थयां

एटले, महा अद्भुत परोपकार विगेरेना कार्यो निर्विघ्नपणे थइ शकेछे.

वळी एटलुं लक्षमां राखवानुं अगत्यनुं छे जे, ज्यारे आपणी इच्छा संशययुक्त होय, एटले आ करुं के ते करुं, एनो द्रढ निश्चय पोताथीज थइ शकतो नहीं होय त्यारे, आपणी कल्पनाओ निर्बळ अने क्षणीक होयछे. एटले मन एवी स्थितिनुं थायछे जे, बीजाना विचारनो जे, मनमां प्रवेश थायछे तेनी सत्य अथवा असत्यतानो निर्णय करवानी शक्ति रेहेती नथी, एटलुंज नहीं, पण तेवी स्थितिमां मन उपर कल्पनाना भिन्न भिन्न रुपोनी छाया पडे छे, ते सघळानो संग्रह थायछे, पण तेमांथी सत्यनो निर्णय करी तेटलाज शुभ कल्पनाना रुपोनो संग्रह करी, बीजा मलीन कल्पनाना रुपो काढी शकाता नथी.

हवे आ प्रसंगे एक अगत्यनी सुचना करवानी एछे जे, आपणी आ संसारमां जे स्थितिछे, ते स्वप्नावतजछे. परंतु निद्रावस्थामां जे, स्वप्ना आवे छे, तेथी ए जाग्रत अवस्थाना स्वप्नामां एटलोज भेदछे के, आपणा स्थुळ शरीरनी जाग्रत अवस्थामां जे, आपणे कल्पनाओ अने कार्यो करी शकीए छइए, ते उपर आपणी इच्छाशक्तिनो, तेनी प्रबळताना प्रमाणमां उपयोग करी शकाय छे, तेथी सत्यनुं ग्रहण अने असत्यनो त्याग करी शकीए छइए, अने तेटली जेनी शक्ति नथी, ते पुरुष अथवा स्त्रि पशु

समान निद्रावस्थामांज छे. एम समजवुं. परंतु मानसिक ज्ञाननी उन्नति पामेला विद्वान पुरुषोपण स्वप्रावस्थामां अने मृत्यु थया पछीनी अवस्थामां, मायावी लिंग शरीरवाळा जीवनी कल्पना, अने तेना कार्यो उपर पोतानी इच्छाशक्तिनुं बळ चलावी शकता नथी, एज कारणने सारु मानसिक ज्ञाननी उन्नतिने पामेला सघळा पुरुषोने, अवश्य अगत्यनुं एछे जे, निरंतर निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी, उन्नति करवानो अभ्यास जारी राखी, सत्य अने सनातन धर्मनी मर्यादामां अचळ रही, परोपकारना स्वार्थ रहित कार्यो पोतानी शक्ति प्रमाणे, करवा उपर लक्ष राखी, स्वार्थ करवा भणी जेम बने तेम न्युन लक्ष राखी सघळा जीव प्राणी उपर दया अने नम्रता राखी सघळा मनुष्य प्राणी विषे, निरंतर भ्रातुभावनी कल्पना करवानो नियम अने अभ्यास राखी, उपयुक्त कार्योनी साथे अति गुह्य अने सर्वोत्तम, एवी जे ब्रह्म अथवा आत्मविद्या, अने सत्य आत्मदर्शन करावनारी एवी जे राजयोगनी विद्या ए सघळानुं त्रणा रहीत एटले मात्र कैवल्य मोक्षनीज इच्छाना हेतुथी श्रवण, मनन अने निदिध्यास निरंतर कर्या करवो. अने एनेज महा समर्थ योगेश्वरोये, अंतना अचल अने अमुल्य परीणामनुं साधन कहेलुंछे.

संवत १९४२ कार्तिकशुद्ध ८ रवीवार

श्रद्धा अने निर्णय.

सर्व मनुष्य प्राणीमां गुप्त रीते गुप्त अथवा योग विद्याना बिज रहेलाज होयछे, परंतु ते सघळा साधारण मनुष्य प्राणीमां प्रगट दृष्टोत्पतिमां आवे एवा होता नथी, केमजे संसारना विषयादीक प्रक्रतिना परमाणुओनो संग्रह बाळपणथी अधिक करेलो होय छे, तेथी गुप्त विद्याना बिज उपर आछादन अथवा आवरण चडेलु होयछे, ए कारण माटे जे आग्रही सत्य शोधकनी इच्छा, गुप्त विद्यानी उन्नति करवानी होय, तेणे अनुक्रम प्रमाणे ते विद्यानो अभ्यास, तेनुं ज्ञान, अने तेनो प्रत्यक्ष अनुभव ए त्रणे, करवानी अवश्य अगत्यछे; त्याथी जे आग्रहथी अभ्यास कर्याथी, आगळ तेना सत्यार्थ समजी शकाय छे, ते शिवाय इच्छा प्रमाणे परीणाम थइ, सत्य गुह्यार्थ समजवो अशक्यछे. कदापी सत्य ज्ञान होय परंतु ते ज्ञाननो धारेला कार्यमां उपयोग करवानो प्रत्यक्ष अनुभव कर्यो नही होयतो,तो ते ज्ञान केवळ निरउपयोगी थायछे. माटे सत्य ज्ञानथी ते कार्य करवाभणी लक्ष राखी वारंवार पोताना अनुभवनी द्रढता करीए तो तेथी, इच्छा शक्तिनी उन्नति थइ, अखंड उत्तम शक्तिनी प्राप्ति थइ शकेछे.

आपणे कोइ पण कार्य करवानी जे शक्ति तेना मुळ संशय, अने भय ए बे शत्रु छे. अने ते शक्तिनो

साह्यभुत मित्र, आपणे पाछळ कहेली सत्य श्रद्धाछे. आपणे प्रत्येक दिवसे आपणा अवयवोने हाल चाल करी जे गती आपीए छइए, तेनुं मुळ कारण आपणो मुळ निश्चय अने ते कार्य करवानी श्रद्धा एज छे. आपणे घणे प्रसंगे अनुभव उपरथी जणाय छे जे, आपणी इच्छाशक्ति संशयथी निर्बळ थयाथी, ते कार्य थइ शकतु नथी, अने आपणा अवयवो पण सिथळ थइ जायछे. तेज प्रमाणे जो उत्तम ज्ञानना योगे सत्यताथी आपणी इच्छा शक्ति सत्य श्रद्धाथी प्रबळ करी होयतो, अति महा विकट कार्यनी सिद्धि थइ. आगळ महा अदभुत कार्यो करी शकाय छे, ए आपणे अनुभव उपरथी सत्य जणायछे, कोइ बोध करनार उपदेशक अथवा भाषण कर्ता अथवा कोइ अनुभवी अने विद्वान वैद्य छतां, तेने पोतानी शक्तिनो पोतानेज, निश्चय होय नहीं तो, तेनाथी घणी भुलो थइ, तेना शुभ कार्यमां अतिघणा विघ्न आवी त निरउपयोगी थइ पडशे. केटले एक प्रसंगे केवळ अज्ञानी मनुष्य छता मात्र जोश्याना आवेशमां आवी, पोतानी शक्ति उपर श्रद्धा राखी, युद्ध विगेरेना कार्यमां याहोम करी पडेछे. तो तेने जय प्राप्त थइ, कार्यनी सिद्धि थइ शकेछे खरी, परंतु सघळा कार्यमां एवी रीते शुभ परीणाम थाय नहीं, ए उपरथी एम स्पष्ट सिद्ध थइ शकेछे के, बीजा मनुष्यमां अति आग्रहथी सत्य श्रद्धानो प्रवेश कर्याथी, शुभ कार्यनी

सिद्धि अल्प समयमां थवानो संभवछे.

ते माटे सत्य ज्ञान प्राप्त थया पछी, सत्य सद्धानी प्रबळता थइ नहीं होय, अने प्रत्यक्ष अनुभवना कार्यो करवानो अभ्यास नहीं होय तो, सत्य परीणाम थवानो संभव छेज नहीं एम समजवुं. घणे प्रसंगे अल्प ज्ञानी अने भोळा मनुष्यो, एवी श्रद्धा द्रढ निश्चयथी राखेछे जे, हुं जे कर्म अथवा क्रिया करुछुं, तेथी कोइ देवनी मारा उपर कृपा थइ उत्तम लोकनी प्राप्ति थइ त्यां उत्तमसुख भोगवीश, ए प्रमाणे एकज सखो निश्चय कर्याथी तेनी कल्पना प्रमाणे तेवी स्थिति तेनी श्रद्धाना प्रमाणमां दीर्घ अथवा अल्प काळ शुद्धि थइ शकेछे, एवीज रीते कोइ वाचाळ अने आग्रही पुरुष कोइ भोळा अने संशइ पुरुष अथवा स्त्रिने, पिशाच अथवा भुतनी कल्पना द्रढ करावी, श्रद्धा करावे तो तेने मिथ्या कल्पनाथी, पिशाचना आभाष देखाय अने तेवी स्थिति अधिक रही तो, मलिन अने पिशाच प्राणीना सुक्ष्म परमाणुओनो, तेमां संग्रह थइ, ते अल्प बुद्धिना मध्यस्थ द्वारा, भिन्न भिन्न वर्तणुक दर्शावे छे. ए माटे सत्य ज्ञान प्राप्त थया पछी. सत्य श्रद्धा राखी, शुभ कर्म करी, निरंतर आनंदमां रही आपणे पाछळ कह्या प्रमाणे सत्य अने निर्दोष उपासना कर्याथी सत्य श्रद्धा बळिष्ट थाय छे, अने सत्य श्रद्धा बळिष्ट थयाथी, उपयोगी अने सत्य कल्पना अने धारणा प्रफुलित थइ, पोते आनंदमय

थइ गयाथी, पोताना व्याधी विगेरेनो पण नाश करी शकेछे, एटलुंज नहीं, पण बीजाना पण व्याधीं काढी शके छे; अने पोताना दुखो ते समये समुळ नाश पामी परम आनंद वर्ते छे.

घणुं करी जे मनुष्यने भय अतिशे रेहेछे, अने सदा प्रेतादिकना विचार कर्या करे छे. तेनामांज तेनो प्रवेष विगरे थइ शके छे, संशय अने भय ए बेउ नर्कनां द्वार छे, ए बेउ अति प्रबल्य थयाथी, सर्वस्व जीवनो पण नाश थाय छे, अने एथी उलटु आपणे जे सत्यज्ञान प्राप्त थयुं होय, तेनी सत्य श्रद्धा राख्याथी, इच्छा शक्ति अति बळिष्ट करेछे. ए प्रमाणे गितामां श्रिकृष्ण भगवाने अरजुनने कह्युंछे जे, "संशयात्मा विनश्यति" एटले संशयथी जीवात्मानो नाश थायछे. ए सिवाय; आपणा शुभ कार्यनी सिद्धि करवामां विघ्न करता, बे मोटा शत्रु विस्म्रति अने अलक्षणा छे. आपणे जो, जीवात्माने निरंतर पोताना शुभ कार्य करवाने प्रयत्न करी, बळिष्ट नहीं करीये तो, तेनी इच्छा परीपुर्ण नहीं थवाथी ते निर्माल्म थतो जाय छे. ते माटे शुभ कल्पना अने शुभ इच्छा शक्तिथी, योग्य कार्य करवानो निरंतर अभ्यास राखवानी, अवश्य अगत्यछे. ए प्रमाणे जेम जेम शुभ विचार अने कल्पनानी, उन्नति करता जइये तेम तेम वेद अने पुराणादीकमां जे गुह्यार्थ समजवाथी भिन्न भिन्न क्रियाने समये जे आकृतियो

उत्पन्न थायछे, ते सघळानो सत्य भावार्थ समजी शकायछे एटलुंज नहीं, पण आगळ अभ्यासे करी, प्रणवादीकाना, गुह्यार्थ समजी गुप्त शब्दनी पण स्फु- र्णा थयाथी, महा योगेश्वरना समागमनो मार्ग जणाइ शकेछे.

ओंकारादी प्रणव अथवा बीजा गुप्त अक्षर अने शब्दनी जे निशानी छे, तेनो सत्य गुह्यार्थ समजाया विना ते सघळुं निरउपयोगी छे. माटे ते समजवाने अवश्य दिर्घप्रयत्न अने अभ्यास करी, तेनो सत्यार्थ द्रढ कर्याथी, इच्छा पण प्रबळ थायछे. ते माटे जे गुप्त अने योग विद्यामां प्रविण छे, तेमने जो वेद अने शास्त्रमां जे भुमितिनी पंचकोन अने षडकोणादीक आकृति अने लीटी अथवा एक बिंदु जोवामां आ- वे तो, तेमां रहेला सघळा सत्यार्थ ते यथार्थ रीते समजी शके केटलाएक संशइ, वेहेमी अने अल्पज्ञा- नी, पंचकोन अने षडकोनादीक आकृतिओनो कोइ पण प्रसंगे, अथवा साधारण उपयोग कर्याथी, भुत पिशाचादिकथी, रक्षा थइ शके छे. एवुं समजे छे. पण उन्नति पामेला निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञानवाळा, तेना सत्य गुह्यार्थ समजवाथी, तेमने उत्तम ज्ञाननी प्राप्ति थइ, ते महा समर्थ थइ शके छे.

केटली एक क्रियाना समये मंडळ विगरे पुरी वेदोक्त आकृतिओ काडे छे, तेमां जे पंचकोन आ- कृति काडवानो संप्रदाय छे, तेना गुह्यार्थनी सुचना

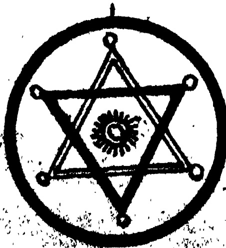
आ प्रसंगे बुद्धिवान पुरुषोने करवानी अगत्यछे. माटे ते आकृति सदा लक्षमां राखवानी अगत्य छे. तेथी ते नीचे प्रमाणे जणांवेली छे. आ आकृतिनो मुळ



गुह्यार्थ एछे जे, ए मनुष्यनी वैराट श्रष्टि अने स्वभाविक नियमित गति दर्शावेछे. ए आकृतिमांना नीचला चार त्रिकोण ते तात्विक गति अने तेनो परस्पर, अने अंतरभुत संबंध दर्शावेछे, अने एज त्रिकोणथी तेना स्थुळ अने सुक्ष्म शरीरना भय अने विघ्नो दर्शावेछे. अने वळी मनुष्यनी बाह्य अने अंतर इंद्रियोनी त्रष्णाथी, तेने स्वाधीन थयलोछे ते दर्शावेछे. परंतु ए चारे त्रिकोणनुं छेदन करी जे उपर एक त्रिकोण छे, ते मनुष्यनुं डाहापण अने निश्चयात्मक बुद्धिज्ञान दर्शावेछे. जेणे करी प्रबळ इच्छाशक्तिथी, इंद्रियोनी त्रष्णाथी उत्पन्न थयेला सघळा विकारो ते उत्तम बुद्धिज्ञाननी सत्ताथी, पोते शुभ कार्यो करे अने इंद्रि पासेथी शुभ कार्यो करावे, तेणे करी सघळा निचला विकार उपर परीपुर्ण सत्ता बेसाडी, श्रष्टिनी सामान्य गति उपर पण सत्ता बेसाडी शकेछे. आपणे ए पंचकोणनी आकृति यथार्थ काहाडवी, अने तेमां कोइ जातनो अवकाश अथवा जगा खाली रेहेवा देवी नहीं, एटले आपणे निरंतर सावध रही, आपणा मनना सघळा विकार अने त्रष्णा आपणे

स्वाधिन राखवा जोइए. जो कदापी आपणे असावधपणाथी,एक त्रणा अथवा विकारनो अंतःकणमां प्रवेश थवा दीधो तो, आपणा मननी साम्यावस्थानो भंग ततक्षण थइ जशे. परंतु कदापी जो निचला त्रिकोणना सघळा तत्वोनो संग्रह करी, तेने उत्तम अथवा उचा तत्वमां आणी, तेने निश्चयात्मक बुद्धिनी सत्तामां राखीये तो, बरोबर साम्यावस्था थइ, अलोकीक अने अद्‌भुत शक्ति प्राप्त थइ अंते कैवल्य मोक्षनी प्राप्ति थाय छे, त्यार पछी ते त्रीकोणोनो वरतुळ अने समांत्तर बीजु चोखुण थाय छे. एटले संपुर्ण परीपुर्णता थइ अंतनुं परीणाम साध्य थइ शकेछे. एवि रीतनुं अद्‌भुत ज्ञान, अक्षय रही अपात्रने नही समजवा सारु पुर्वेना महा समर्थ रुषीओये, ए अखंड सुचना ए पंचकोणद्वारा अधीकारीने आपी छि.

वळी वेदीक कर्म करवा सारु, जे मंडळ काडवामां आवे छे. तेमां जे आकृतीओ काडेछे.तेमांनी एक अति उपयोगी अने गुप्त अर्थवाळी षडकोणनी वरतुळ वेष्टित, आकृति निचे प्रमाणे होय छे गुप्त विद्याना जाणनारा जे आ आकृतीनो गुह्यार्थ समजे छे, ते पुनरावृति अने समष्टिना



नियमथी यथार्थ जाणीतो होय छे. एटले मुळ प्र-
कृती अथवा केवळ शुद्ध चैतन्यनुं व्यक्त प्रकृतिमां
व्यष्टिकर्ण थवानो, नियम तथा व्यक्त प्रकृति अथ-
वा तात्विक परमाणुनुं अंते शुद्ध चैतन्य अथवा ब्र-
ह्ममां समावर्तन थवानां सत्य नियमनी, ते विद्यार्थि
न सम्प्रति ते आकृति जोवाथी आवे छे ते अखंड
मनवांत्तरमां दीवस अने रात्रि जाणे छे. ते षडको-
णना छये बींदु जोइ अने जाणी शकेछे. परंतु सातमुं
बिंदु जे मध्यमांछे ते तेनाथी जोइ शकातुं नथी. एज
बींज रुप शुद्ध चैतन्य ब्रह्मरुपी महा प्रकाशवान सू-
र्यमांथी, सघळी गतिओनी स्फुणा थइ,जे वर्तुळ था-
य छे. तेनो छेडो अने अंत नथी, अने तेमांथी अ-
नंत कोटी ब्रह्मांडनी उत्पति अने नियमनी उत्पति
थइ छे. अने अंते लय पण एज शुद्ध चैतन्य ब्रह्म-
रुपी बींदुमां थाय छे. मात्र ए आकृतिमां आ स-
घळुं उत्तम गुह्य ज्ञान रहेलुं छे. ते यथार्थ समजवाने
ए आकृतिथी सहायता मळे छे, परंतु ए आकृ
तिनो गुह्य भावार्थ समजी तेनो यथार्थ उपयोग
कर्या शिवाय मात्र एकली आकृतिथी कांइज
लाभ थइ शकतो नथी. ज्यांसुधी आपणा धारेला
विचारने कार्य करवामां प्रेरेला नथी, त्यां सुधी ते
धारेला विचार निरउपयोगीछे. प्रबळ इच्छानी प्रेर-
णा करवी, ए कार्य कर्या बरोबर छे. कार्य करनारी
इच्छा जो डाहापण अने सत्य निश्चयात्मक बुद्धिथी

वर्तेतो, गुह्य ज्ञाननी स्फुर्णा थइ, अलौकिक शक्तिथी, उत्पातिनुं तेज कारण पोते थायछे. शब्दछे ते विचार अने कल्पनानुं द्रश्य रूपछे. अने ते शब्दने, संपुर्ण करवा सारू कल्पना अथवा विचारने संपुर्ण करवा जोइए. आपणा सांप्रतकाळनी विद्यानी सत्ता एवीछे जे, शब्दोनो उपयोग घणु करी पोताना सत्य विचार गुह्य अथवा गुप्त राखी, असत्य अने मिथ्या असर ते शब्दोथी बीजाने करवानो प्रयत्न करे छे. अने ज्यारे ते शब्द अंतरमांथी मिथ्या अने असत्य छे, तो तेथी जे कार्य अथवा परीणाम थाय, तेपण मिथ्या अने असत्यज होय. माटे तेना शब्द डाहापण विनाना थायछे. अने कार्य असत्य थायछे. आपणी कल्पनाने संपुर्ण सत्यतामां वर्ताव्याथी, योगविद्याना मार्गे जवाइ शकेछे. अने दुष्ट असत्य कल्पना राखी, बीजाने शब्दोथी असत्यमां सत्यनी द्रढता करवी, एज तांत्रिक अथवा मलिन भुत भैरवादीकनी साधनानो मुळ पायोछे. एमां सघळा प्रकारनी ठगबाजी असत्यता अने बीजानी हानी करी, पोतानो स्वार्थ करी लेवो, अने बीजाने अवळे मार्ग चलाववाने प्रयत्न करवुं, ए सघळा आति मलिन कार्योछे. एवा कार्यो सांप्रतकाळना घणुं करी केटलाएक मतपंथना धर्माधिकारीओ पोताना आश्रित भोळा लोकोने, परलोकमां उत्तम सुखनी प्राप्तिनी मिथ्या लालच देखाडी पोते द्रव्यादिकनो लाभ करी लेछे. अने तेना

सेवको प्रापंचि, सामाजीक, अने राज्याकिय ए त्रणे कार्योमां समयनी संधि जोइ, मिथ्या भाषण, असत्यमां सत्यनो भाष दर्शावी, पोतानो स्वार्थ करी लेछे. अने पोतानी दुष्ट कल्पनाने शांत पमाडवाने प्रयत्न करेछे. एवा मनुष्यने जेम जेम मानासिकज्ञान अधिक प्राप्त थायछे,तेम तेम विश्वासी, अने भोळा लोकोने ते सत्यतानो डोळ देखाडी, तेनो नाश अधिक करवाने प्रवर्तेछे. अने तेमनो केवळ पोताना स्वार्थ करवाभणीज लक्ष होयछे. एवी सांप्रत स्थितिछे. एमांथीज मलिन उपासनानी उत्पति थायछे. ए परापुर्वेनो नियमछे.

जे प्रमाणे शुभ अने सत्यतानी शक्ति वृद्धि पामी शकेछे. तेज प्रमाणे अशुभ अने असत्यतानी शक्ति वृद्धि पामी शकेछे. शुभ अथवा अशुभ ए बेउमांथी, कोइने पोतानी मेळे वृद्धि अने क्षिण थवानी शक्ति नथी; वळी ए बेउनो परस्पर संबंधछे, तेथी असत्यमांथी, सत्य शोधी काडवुं अति कठण पडेछे. माटे प्रथम विद्यार्थिने प्रथम मेळववानी एज अगत्यनी शक्तिछे जे, सत्य अने असत्यनो यथार्थ निर्णय करी शकाय. जो प्रथम साम्यावस्थानी योग्य व्यवस्था करी नहीं होय तो तेथी कार्यनी यथार्थ सिद्धि थइ शके नहीं. जेम प्रिति, अने अप्रिती ए बेउ समान राखी तेनी व्यवस्था नहीं करी तो, तेनांथी परीणाम अलक्ष अथवा बेदरकारपणु थायछे.

ज्यारे आपणे प्रत्येक विषय अने वस्तुनो यथार्थ सत्य निर्णय करी, तेना लाभ अथवा हानीनुं यथार्थ ज्ञान प्राप्त थायछे त्यारे आपणे सत्य गुप्त विद्या अने योग विद्यानी सत्य शक्ति आववा मांडेछे. जो आपणे कांइ यांत्रिक अथवा रसायण प्रयोग करवो होय तो, आपणे श्रष्टिना ते विषे साधारण नियमथी प्रथम जाणीता थवानी अगत्यछे. तेज प्रमाणे कोइ माणसने पोतानी सत्तामां राखवो होयतो, त्यारी पेठे तेनी साथे ऐक्यता करी, तेना स्वभावथी जाणीता थवुं, अने पोताना सर्वोपरी उत्तम विचारनी, तेनी कल्पनाना विचार साथे ऐक्यता कर्या छतां, पोते उत्तम मानसिक अने निश्चयात्मक बुद्धिज्ञानथी, तेनाथी वरीष्ट रहेवुं अने कोइ पण चैतन्य उपर, सत्ता बेसाडवा सारु तेना चालता विचारना विषयमां पोते प्रवेश करी सनातन धर्मनी मर्यादाथी, नितिये वरीष्टता प्राप्त करी होय तो, तमे तेनुं आकर्षण करी तमारी मनोवृत्ति प्रमाणे तेने वर्तावी शकशो.

एटलु साधारण लक्षमां राखवानुंछे जे, मात्र उन्नति पामेला ज्ञाननी साम्यावस्थाथी, सत्य असत्यनो यथार्थ निर्णय करी शकायछे. अने तेथी सत्य अने तेनी निरंतर विरक्त थती आकृतीना भेद समजी शकायछे. अने एवा प्रकारना मननी स्थितिवाळाथीज, श्रष्टिनी स्वाभाविक गुह्य वात जाणी शकाय छे. अने तेनीज आगळ अभ्यासे करी अंतर चक्षुनो

प्रकाश थायछे. अने तेने अंतर ध्याननी क्रियाथी, अद्भुत शक्तिओ प्राप्त थवा मांडेछे. एवी स्थिति थवा मांडी, एटले ते मनुष्यने योगी कह्योछे तेने योगी शोधवानी अगत्य रहेती नथी. पछी योगीनीज इच्छा तेने मळवानी थशे, अने ते तेने अगत्यनो बोध आपशे.

जे मनुष्य उचा पाहाडना शिखर उपरछे, तेने निर्मळ स्वच्छ हवामां जवा सारु बीजा माणसनी अगत्य रहेती नथी, केम जे निर्मळ अने स्वच्छ हवा स्वाभाविक रीते, तेनी आसपास रहेली होयछे. उत्तम ज्ञानीना ज्ञानने कोइ जातनी जगा अथवा, अवकाशनी अगत्य नथी. तेनुं अंतःकरण संस्कारने पामी उत्तम स्वच्छ ज्ञान लेवाने योग्य थयुं होयछे. तेने ते ज्ञान प्राप्त थवाना मार्ग दैविक प्रेरणाथी मळी आवे छे. सत्य ज्ञान मेळववानी उत्कंठा ते मार्गे जवानो, अभ्यास कर्याथी थायछे. अने परीपुर्ण उत्कंठा थइ एटले दैविक प्रेरणा थायछे. अंतर ज्ञाननो एटलोज अर्थछे जे, उन्नति पामेली ज्ञानशक्तिना योगे, सत्य असत्यनो यथार्थ निर्णय करी, तेने शंका रहित सत्यता जणाइ शकेछे, अने तेज सर्वोपरी उत्तम ज्ञानी छे. अने एवुं ज्ञान पुर्वजन्मना अभ्यासे करी प्राप्त थयेलुं होयछे. अने सांप्रत द्रढ आग्रहथी प्रयत्न कर्याथी पण ते प्राप्त थइ शकेछे. एवा ज्ञानना योगे जो आपणे स्वार्थ रहित, निषपक्षपात रीते, परीक्षा करीये तो आपणी सत्यता अधिक द्रढ अने बळिष्ठ

थायछे. तेवी स्थिति थया पछी, अंतर ज्ञानना योगे आपणा निचला विकार, इंद्रियोना क्षणभंगुर मानी लीधेला सुख, अने मात्र पोतानो स्वार्थ ए सघळा उपरथी लक्ष न्युन थतु जायछे. ते माटे आपणा अंतर ज्ञानमांथी, जे समये समये स्फुर्णा उत्पन्न थायछे, तेना उपर जो लक्ष नहीं राखीएतो, आपणो जीवाआत्मा आपणी आसपास निरंतर रहेला आवरणथी ढंकाइ जाय, पछी अंते शुभ उत्तम ज्ञाननी प्रेरणा अने स्फुरणानो समुळ नाश थइ जायछे.

हवे अंतनी अगत्यनी सुचना एटलीज, आपवानी छे जे, गुप्त अथवा योगविद्याना विद्यार्थिना अभ्यास सारु, एक एक जन्मनो एक एक वर्ग होयछे. एक जन्ममां जे कांइ अभ्यास कर्यो होय, ते जेम वर्गमांथी, थोडा समये रजा मळ्याथी तेनी घणी खरी विस्म्रति थायछे. ते प्रमाणे थायछे खरु, परंतु जे एक समे शिख्या होइये, तेनुं थोडु पण ज्ञान रह्याथी ते फरी शिखवा मांड्याथी ते, अल्प श्रमे प्राप्त थइ शकेछे. एज नियम मनुष्यप्राणीना भिन्न भिन्न ज्ञाननोछे. अने तेवाज संस्कार प्रमाणे, शुभ अने अशुभ कार्यो, करवा भणी स्वाभाविक रीते न्युन अने अधिक वलण थाय छे. आपणे जे करेला प्रयत्न ते कदापी निष्फळ जता नथी, केमजे एक स्वाभाविक नियम एवो छे जे, प्रत्येक कार्य तेना योग्य परीणाम कर्या विना रहेतुं नथी. एज कारण माटे कोइ जा-

तना अशुभ कर्मनुं प्रायश्चित कर्याथी, अथवा कोइ महा पुरुषनी क्षमाथी, ते परीणाममां फेरफार थइ शकतो नथी, केमजे ए एक स्वाभाविक अचळ सत्य निमज छे, तेथी शुभ अने अशुभ कीधेला कार्योनुं योग्य परीणाम एक सत्य न्याय प्रमाणे थया विना रेहेतुं नथी. परंतु जेने स्वस्वार्थ बीलकुल नथी, अने कांइ कार्य करवाथी, जेने कोइ पण जातना लाभनी इच्छा नथी, अने तेणे दुष्ट कर्मो पण कर्यां नथी तेथी तेनी शिक्षानो तेने भय नथी. ते स्वछंद रीते सत्यताथी नीरंतर वर्ते छे तेथी अंतर ज्ञानथी पोते ते सत्य नीयमनी साथे, समीलन थइ. ते रूप थइ, ते नीयमनी साथे साम्यावस्था थयाथी, तेने वगर इच्छाए अद्भुत शक्ति प्राप्त थाछे.

संवत १९४२ कार्तिक वद्य ३० रवीवार.

सत्यासत्य.

आपणी आसपास सघळी श्रष्टिमां, अनंत प्रकारना जे भिन्न भिन्न रुपो आपणे द्रष्टिये पडेछे, तेना भिन्न भिन्न रसायण प्रयोग, गुरुत्व पणु, अने यांत्रिक विगरे रचनामां, अनेक प्रकारनी भिन्नता जणायछे तोपण ते सघळी वस्तु जेनी बनेलीछे, ते तात्विक वस्तुमां भेद नथी, ते तो सघळी समान अने एकज छे. आपणे ते मुळ वस्तु जोइ शकता नथी, ते भिन्न भिन्न वस्तुओना भिन्न भिन्न गुणो, अने

भिन्न भिन्न रुपोने लीधे, आपणे ते सघळाने आपणी इंद्रियोनी सहायताथी, ओळखी ते सघळाने प्रथक प्रथक नाम आपीए छइए. प्रथम जेम आपणे एक वृक्ष जोयुं, ते उपरथी ते वस्तु वृक्षज छे, एवी सिद्धता प्रथमथी होती नथी, जो आपणे जन्म पर्यंत वृक्ष जोयुं नहीं होत तो, आपणेथी कही शकाय नहीं, जे ते वृक्ष छे; परंतु प्रथम तेवी वस्तु आपणे घणी जोइ छे, अने तेनुं नाम आपणी आस पासना सघळा मनुष्यो वृक्ष कहे छे, ते उपरथी आपणा अंतःकर्णमां ते वृक्षज छे, एवो निश्चय थयेलो छे. भिन्न भिन्न रुपो समजवा सारु गमे तेवां भिन्नभिन्न नामो आपणे आपीये, परंतु ते जाते एकज वस्तु थइ अने ते वस्तु कदापी पोतानुं रुप बदले, तो पण ते वस्तुनो मुळ पदार्थ तेज रहे छे, जे प्रमाणे पाणी अतिशे सितने लीधे बंधाइ बरफ थाय, अथवा अतिशे उष्णताने लिधे पाणीनी वराळ थइ, अंतरीक्षमां रहे, तोपण तेनो मुळ पदार्थ बदलातो नथी, ते तो एकज छे; तेना गुणो बदलायाथी, रुपो जतां रही द्रष्टिथी देखाय नहीं, तो पण ते कल्पनामां रही शकेछे. प्रकृतिनी जे वस्तु ते तो आपणी कल्पना अथवा विचारनुं रुप छे. तेने आपणे गमे ते नाम आपी शकीये, तोपण ते मुळ वस्तु निरंतर अंतरपटमां गुह्यज रहे छे. कदापी कोइ महतत्वना प्रयोगथी, ते वस्तु पोतानुं रुप बदल्या शिवाय आ-

पणी एकादी इंद्रीद्वारा देखाइ शके, तो पण जे मुळ वस्तु छे ते तो अद्रश्य अने कल्पितज छे. ए सिद्धांत द्रष्टांतथी स्पष्ट समजाइ शकशे, आपणे एक लाकडी जोइये तो ते उपरथी आपणे जणाशे जे, ते लाकडानी बनेली छे. पण तेथी ते लाकडु जाते लाकडी नथी, आपणे जे जोइ ते लाकडी जोइ नथी, पण तेना गुणो जोया छे. एटले तेनो रंग, रूप अने महत्व वीगरे जोयुं छे, अने हाथमां लीधाथी, वजन लागे छे, अने ठोक्याथी तेनो नाद संभळाय छे, ए सघळा गुणो कदापी अद्रश्य थाय, तो पण ते लाकडी वस्तु रहे छे. केमजे ते कल्पनामां रहेली छे. ए आधिक स्पष्ट करवा सारु आपणे एम धारीये जे, ते लाकडीने बाळी तेनी राख करी नाखीये एटले ते पदार्थ अने रूप बदलाइ गयुं, तेथी ते स्थुळ स्थितिमां ते लाकडी रही नही, तोपण लाकडीनो जे विचार द्रढ थयो हतो ते गयो नथी, माटे अगर. जो ते लाकडीनुं रूप नथी, तोपण ते लाकडी कल्पनामां तदरूप रहेलीछे. हवे आपणे जो ते रूप बीजी वस्तुने कल्पनाना योगे बीजा गुणो आपवानी यथार्थ शक्ति होय, अने ते गुणोनो नवी उत्पन थयेली कल्पनाने, प्रक्रतीना परमाणुनुं वेष्टण करी शकीये, तो ते कल्पनानी लाकडीने बदलेज आपणेजे इच्छा राखीये, ते वस्तु उत्पन करी शकीये. ए कल्पनामां करवुं तो स्वल्प छे. परंतु ते स्थुळ स्थिति-

मां करवा सारु महा योगेश्वरनी शक्तिनी अगत्य छे आपणे मानसिक वृत्तिनी सहायताथी प्रत्येक दिवसे आपणी इच्छाशक्तिना योगे, आपणी जेवी तृष्णा होय, ते प्रमाणे कार्योना विचार, ते प्राप्त थवानी इच्छा, अने मनोवृत्ति ए सघळुं बदल्या करीये छइये अने तेना स्थुळ श्रष्टिमां भिन्न भिन्न सुक्ष्म प्राणीयो पण जाणे अजाणे उत्पन्न करीये छइये; एनी सत्यता आपणे पुर्वे यथार्थ रीते वर्णवेली छे.

सत्य रीते मनुष्य कोइये जोयो नथी, आपणे ते मनुष्यना गुणो मात्र जोइये छइये, मनुष्य जाते पोते पोताने जोइ शकतो नथी, ते जे कहे छे, ते पोताना शरीर, जीव, अने चैतन्य आत्मा विषे कहेछे, आ त्रणेनुं समीलन थइ जे उत्पन थयुं छे, तेने आपणे मनुष्य धारीये छइये, अने एज तेनी प्रकृति अथवा स्वभाव उत्पन करेछे परंतु एक सत्य जेके, मुळ शुद्ध अनादी चैतन्यना समिलनवाळी कल्पना छे. ते रूप विनानी कल्पनाछे.जेना गुण अने रूपनो विचार थइ शकेज नहीं एवीछे,ते अरुप कल्पना छतां भिन्नभिन्न पणे व्यक्त प्रकृतीनी श्रष्टिमां प्रवेश करे छे. तेमांथी नवो जीव उत्पन थइ तेने नवुं ज्ञान अने नवो अनुभव मळे छे, तेथी अनेक प्रकारना सुख दुखरूपी फेरफारनो अनुभव करी मृत्युना अकुंचित मार्गमांथी पुनर्पि जन्म प्राप्त थाय छे. एवी रीते अनेक जन्म मर्णना संस्कार पाम्या पछी तेना प्रथम

रूपो थतां बंध थइ, नवां नवां रूपो अने गुणो प्राप्त थया छतां,मुक्त शुद्ध अने अखंड मात्रा एकज रहेछे.

सारे ते सत्य अने शुद्ध वस्तु केइ छे? ते आपणे उपर कह्युं ते मुळ शुद्ध अने अनादी चैतन्यज छे ते प्रकृतिना भिन्न भिन्न संबंधमां आव्याथी भिन्न भिन्न गुण, अने रूप देखाय छे. एनी सत्यता, आपणा अंतःकरणमां ज्यारे तेना सत्यस्थित पणानी स्फुर्णा थाय छे. सारेज थइ शके छे. परंतु साधारण नीयम प्रमाणे आ श्रष्टिमां आपणी आसपास प्रत्येक क्षणे जे संस्कार थाय छे, तेना योगे समये समये भिन्ना भिन्न कल्पनामां रूपो उत्पन थइ,आपणा अंतःकर्णनी सत्यतामां फेरफार थया करे छे आपणे निरंतर एक स्थिति सारी लागती नथी, तेमां फेरफारनी इच्छा रहे छे. एकज स्थितिमां रह्याथी दुःख थाय छे कदापी एवी रीते बने जे बे अथवा अधिक मनुष्य पुर्वेना समान संस्कारथी जन्मा पछी समान अने एकज स्थितिमां निरंतर रहा. समान अने एकज विद्या प्राप्त करी समानज पोतपोतामां एक बिजानो संग होय ते सघळाने समान विचार स्थित थाय, अने सघळानी सत्यता पण एकज थाय. अने ते सघळा भिन्न भिन्न छतां जाणे एकज होय एम थइ शके छे.

गर्भे तेवा रूपमां जन्म प्राप्त थाय, तो पण ते जन्म संबंध पुर्वक छे. शुभ अने अशुभ ए बेउ कार्या

कारण संबंध पुर्वक छे, सत्य नथी, केमजे एकने जे शुभ जणाय तेज बीजाने अशुभ जणाय छे, तेमज सत्य पण कार्या कारण संबंध पुर्वक छे. केमजे एक रीते जे सत्य जणायछे;ते बीजी रीते असत्य भासे छे घणे प्रसंगे सत्य असत्यनो निर्णय करवा सारुआपणी इंद्रियो उपर आधार राखी शकातो नथी, आपण चक्षु इंद्रिथी, प्रातःकाळे पुर्वमां सुर्य उदय थइ, ते गति करतो करतो संध्याकाळे, पश्चिममांअस्त थतो जणायछे, परंतु हालना समये साधारण विद्वानना जाणवामांछे जे, ए जे जणायछे ते मिथ्याछे. ए प्रथविना फरवाथी, एम जणायछे. जेम साधारण बुद्धिनो बाळक जाणेछे जे,आगगाडीमां अथवा नावमां बेठा पछी, वृक्ष अने घर विगेरे चालता जणाय छे, ते मिथ्या भ्रांति मात्र छे. एवी रीतना अनेक द्रष्टांतो उपरथी, स्पष्ट जणायछे जे, आपणाथी आपणी इंद्रियो उपर निरंतर सत्यतानो आधार राखी शकातो नथी. वळी एक अद्भुत सत्यता एछे जे; आपणी आसपास उत्तम प्रकारना प्रकाशनो समोह निरंतर रहेलो होय छे, ते आपणे द्रष्टोतपति नहीं आवता,ते अंधकार रुप जणायछे, केम जे आपणा शरीरनी सघळी स्नायुओ, ते सुक्ष्म अलोकिक प्रकाश ग्रहण करी प्रत्याघात थवाने योग्य उन्नतिने पामेली नथी.

दर्पणमां परावर्तन पामेलुं रुप, मंद ज्ञानवाळा पुरुषने जेम सत्य स्वरुप जणायछे, तेज प्रमाणे पराव-

र्तन पामेला शद्वो घणे प्रसंगे, मनुष्यना शब्द गणाय छे. वळी आपणी कल्पना अथवा विचारना, अति सुक्ष्म परमाणुओ, अजाणपणामां तात्विक गतिनी साथे सम्मीलन थइ, जे शब्द अथवा नाद संभळाय छे, ते घणे प्रसंगे भुत अने पीशाचना नाद गण-वामां आवे छे, ए सघळा जागृत अवस्थाना स्वप्नाज समजवा.

जो आपणे रुपवाळी श्रष्टि तरफथी, विचार काढी संबंध पुर्वक अवकाश अथवा जगा, अने समय एनी कल्पना अथवा विचार ए विषे जोयाथी, तेनी स-त्यता जाणवाने आपणे उपर प्रमाणेज कठण पडशे. जे प्रमाणे आपणे समजवानी रीत जाणता होइये, अने जे प्रमाणे निर्णय करी शकीये, ते प्रमाणे तेना गुणो आपणे फेरफार थता जणायछे. जे प्रमाणे म-गत्रु अथवा अति सुक्ष्म जंतु, तेने पाणीनुं एक टीपु समुद्र जेवडुं जणायछे, अने वृक्षना एक पात्रा उपरना सुक्ष्म कीडाने ते पात्रु पृथवी जेवडु जणायछे; वळी जे प्रमाणे निंद्रावस्थामां, आपणे सघळी श्रष्टि संको-चाइ एक सोपारी जेवी जणायछे, अथवा विशाळ थइ, हालनी श्रष्टि कर्ता हजारगणी मोटी जणायछे; पण जाग्या पछी एवो अदभुत अंतर जणातो नथी. नाना बाळकने अवकाश अथवा जगाना महत्वनी खबर नथी तेथी, ते पोताना हाथवडे चंद्रने पकडवा जायछे, वळी जे मनुष्य अंध जन्मनो होय पछी,

ते कोइ उपचारथी देखतो थाय, तेनाथी जगाना अंतरो बराबर कही शकाय नहिं आपणी कल्पना प्रथवीना एक भाग उपरथी, बीजा भाग उपर, जे त्वराथी क्षणवारमां जायछे. तेने ते बेउनी वचे आवेला अंतरनी, खबर पडती नथी. अवकाश अथवा जगानी आपणे जे कल्पना थइ शकेछे, तेनो आधार आपणी स्म्रति अने अनुभव जे आपणे आपणी सांप्रत अवस्थामां मेळवेलो होय, तेना उपरछे. जो आपणे बीजा प्रकारनो संग थयाथी, आपणी जुदी स्थिति थाय तो, आपणो अनुभव अने आपणी कल्पना अथवा विचार केवळ जुदाज प्रकारना थाय. ए सघळामां आत्मिक अथवा चैतन्यनी उन्नतिनी कल्पना सर्वोत्तमछे. जेनी अंतनी अवस्थामां कोइ प्रकारनो संबंध पुर्वक अवकाश अथवा जगा रेहेती नथी, मात्र बीजरुपमांज स्थित थायछे, ते छतां गुह्य रीते तेमां प्रक्रतिनो समावेश रहेलो होयछे

एवीज रीते समयनो विचार, अथवा कल्पना ते पण मात्र कार्या कारण संबंध पुर्वक छे. समय जाते कांइ वस्तु नथी, पण आपणे तेनुं जे माप जाणीये छइये, अने तेनो संबंध ज्यांसुधी कल्पनानी साथे रहेलो होय छे, त्यांसुधीज तेछे. मनुष्यप्राणीनुं मन एक क्षणमां अति अल्पकाळनी कल्पनाओ घणी करी शकेछे. ते जो एकज कल्पना एक कलाकसुधी पोहोचेतो, आपणो समय घणो थोडो जणाशे. वळी कांई

मनुष्य कालाग्रहमां अथवा केदखानामां पड्यो होय, अने त्यां कांइज काम करवानुं नहीं होय तो, तेनो समय अतिशे दीर्घ लागेछे, अने जे मनुष्यने अतिशे काम करवानुं छे, तेने समय अति अल्प लागेछे. निद्रावस्थामां समय जे जायछे, तेनी आपणे कांइज स्म्राति रेहेती नथी, परंतु जेने निद्रा आवती नथी, तेने समय अतिघणो मोहोटो लागेछे, अने तेमां जो कांइ व्याधी थयो होय तो, तेनुं दुःख पण अधीक लागेछे. स्वप्नावस्थाना अल्प समयमां, आपणे जे अनुभव उपरथी, कल्पनाओना घाट चालेछे, ते सघळा घाटनी यथार्थ संपुर्ण व्यवस्था, जाग्रत अवस्थामां, करवाने घणा वर्ष लागेछे. अने आपणी अज्ञान अथवा अजाण अवस्थामां, जाणे समयछेज नही, एम लागेछे. कदापी कोइ मनुष्यने, बोलतां बोलतां मस्तक उपर एकाएक कांइ व्यथा थयाथी, ते बेसुध थइ जाय, अने कांइ उपचारथी, तेने पाछी स्म्राति आव्या पछी, जे प्रथम बोलता तेने बाकी रह्युं होय, ते पुरु करी शकेछे. सुक्ष्म शरीरवाळो जीव ज्यारे स्वर्ग अथवा बीजा लोकमां जायछे, ते समये तेने कांइ नवी कल्पना अथवा विचार जाणी शकातो नथी, अने तेने समयनी कांइज, स्म्राति रहेती नथी, तेणे पुर्व अवस्थामां जे जे, इंद्रीयोद्वारा विचारो मेळवेला होय, ते पाछा उपस्थित थइ, तेने जे प्रमाणे स्वप्नामां जोयेली वस्तु सत्य जणाय छे,

ते प्रमाणे ते सुक्ष्न प्राणीने सत्य जणायछे. एवी रीते तेना पुर्वना कर्मथी, जे कल्पनाओ उत्पन्न थइ, तेना वेग अथवा गतिनुं बळ, ज्यांसुधी पोचे, त्यांसुधी, तेने ते प्रमाणे थया करेछे. जे मनुष्य संपुर्ण रीते, अद्रश्य अवस्थामां छे. तेने ते समयनी द्रश्य श्रष्टि- मांथी कांइज जणाइ शकतु नथी. कदापी मनुष्य अद्रश्य अवस्थामां थोडोघणो होय, अने थोडो जा- ग्रतमां असंपुर्ण निद्रामां होय, तेने थोडी जाग्रतनी स्म्रति मनोमय चक्रमां रह्याथी, तेनी कल्पना अम- लाइ, अथवा गुंचवाया जेवुं स्वप्नामां देखायछे, तेज प्रमाणे स्थुळ शरीरनो त्याग कर्या पछी, थोडा समय सुधी, थोडु द्रश्य अने थोडु अद्रश्यनु भान रही, जेम आपणे अर्धा जाग्रतमां अने अर्धा निद्रावस्थामां हो- इये, ते समये जे द्रष्टोत्पत्तिमां आवे छे. तदवत ते स्थिति छे.

सघळी वस्तु, जेने आपणे सत्य अने असत्य अ- थवा स्वप्ना तुल्य कहीये छइये, तेनो आधार आपणी वुद्धि अने ज्ञान उपर रहेलोछे. सत्य अने असत्य ए बेउ शब्द मात्र कार्याकारण संबंधवाळा छे. जे आ- पणे एक अवस्था अथवा स्थितिमां सत्य जणायछे, तेज बीजी स्थितिमां, असत्य अथवा स्वप्ना तुल्यछे. जो कदापी आपणी कल्पना, अति बळने पामी, एवो अपुर्व द्रढ निश्चय होय जे, आपणे कोइ महा- पुरुष अथवा देवने जोइए छइए, तो ते आपणे तद

रुप सत्य भासेछे.अने बीजा जे,तेवी स्थितिमां नथी, तेने असत्य भासेछे. जो कदापी बळीष्ट कल्पनाना द्रढ निश्चयथी, अरण्यमां देवलोक अथवा गांधर्वलोकनी,कल्पना करी अचल स्थिति प्राप्त थइ तो, तेज प्रमाणे द्रश्य तेवा लोक जणाइ, त्यांनी सघळी वस्तु सत्य भासेछे. कदापी कोइ घेला मनुष्यने, बळीष्ट कल्पनाथी, द्रढ निश्चय थयो होय जे, हुंतो महासमर्थ राजाछु, तो तेने साचा राजाने जे कष्ट सहन करवा पडेछे, ते पेला घेला मनुष्यने प्राप्त नहीं थता, ते मात्र राजाना सुखनो संपुर्ण अनुभव मेळवे छे. तेज प्रमाणे जेणे भुतपिशाचथी भयभीत थइ,तेनो द्रढ निश्चय कर्यो होय, तो तेने ते सत्य जणाय छे. ए सघळुं छतां घेला मनुष्यनी, जोश्यानी कल्पना अने कोइ पण साधनथी, जे द्रढ निश्चय कर्यो होय,तेमां घणो अंतरछे. घेलामनुष्यनी कल्पना मात्र चलित प्रवेशवाळी होयछे, ते जे जुवे छे. तेनो सत्य असत्यनो, निर्णय करवानी, तेनी शक्ति नथी, तेथी तेनी ज्ञान इंद्रि अवळे मार्गे जइ, मिथ्या तुरंगो जोस्साने लीधे करेछे. परंतु निश्चयात्मक बुद्धिज्ञानवाळो पुरुष, जे पोतानी चंचळ उत्पन्न करनारी शक्तिनो यथार्थ उपयोग करी, पोते प्रथम शुं, उत्पन्न करवानुं छे, तेनी यथार्थ धारणा करी, पछी जे उत्पन्न करे छे; ते अधिक स्थाइ, अने सत्य भासेछे. एज सिद्धांत उपरथी, जोता आपणे स्पष्ट जणायछे जे, आपणे

आपणी इंद्रियोद्वारा आपणी आसपासनी द्रश्य पदार्थोनी, द्रढता अथवा छाप आपणा उपर पडेछे, ते क्षणभंगुर अने स्वप्नावतछे. परंतु जे मनुष्य निश्चयात्म बुद्धिज्ञानना योगे पोतानी बाळिष्ट पामेली कल्पना शक्तिथी, जे उत्पन्न करेछे, ते निश्चय अधिक सत्य अने स्थाइक छे. माटे ज्यांसुधी मनुष्यप्राणी पोतानी इंद्रियोथी उत्पन्न थयली, मिथ्या अने स्वप्नावत वस्तुने सत्य मानेछे, त्यांसुधी ते मनुष्य संपुर्ण बुद्धिवान नथी.

प्रक्रतीना परमाणु अने रुपो, तेमज अवकाश अने समय जे, आपणे जाणीये छइये, ते सघळानुं अस्तीत्वपणुं आपणा मानासिक ज्ञानना संबंध उपर छे. जेनुं कांइज जाणवामां नथी ते छतां कांइ रुपछे, एवुं केहेवुं ए मात्र अर्थ विनानो शब्दछे. अने प्रक्राति, अने अवकाश जेवी वस्तु अति सुक्ष्म जणाइ नहीं शके, एवी स्थितीनी वस्तु कांइ नथी, एम आपणने लागे छे. ज्यारे कोइ महातत्वज्ञानी विद्वान, जणाइ शके नहीं एवी वस्तु विषे कहे, त्यारे ते कहेवानो भावार्थ, तेनो एवो होय छे जे, आपणी सांप्रत स्थितिमां, ते वस्तु जणाइ शके नहीं एवी छे. परंतु आपणे साधारण बुद्धिथी एम लागे छे के, जे मनुष्य तेवी अती गुह्य वस्तु जाणी शके, एवी स्थितिने कहेतो तेने कांइ अजाण्युं रहे नहीं, तो पण चैतन्यनो भिन्न भिन्न प्रकार मात्र मानीसक ज्ञानथी जणाइ शकतो नथी, ते जाणवाने माटे, निश्चयात्मक बुद्धि

चैतन्यना ज्ञाननी संपुर्णतानी अगत्य छे. यथार्थ सत्य समजवा सारु निश्चयात्मक बुद्धिज्ञान, ज्ञाता, अथवा जाणनार अने ज्ञेय एटले जणायली वस्तु, ए त्रणे साधननी अवश्य अगत्य छे. जो ए त्रणे बीलकुल अंधकार अथवा अज्ञान अवस्थामां होय तो, ते समजाय नहीं, अने अंते तेथी कांइज परीणाम निष्पन थाय नहीं. जे बाह्य इंद्रीयोथी जणाइ शके नहीं, एवुं जे गुप्त ज्ञान, तेज संपुर्णता छे. ते संपुर्णता प्राप्त करवा सारु, माणसे पोते संपुर्ण थवुं जोइये. असंपुर्ण अथवा अल्पज्ञानी जे होय तेनाथी ते गुह्य जाणी शकातुं नथी, ते तो गुह्यना पडेला आभासनेज जोइ शके छे. अवेजे गुप्त अति गुह्यछे, ते संबंध विनानुं, अने गुण रहित छे. अने तेज अद्रश्य श्रष्टि अने ब्रह्मांडनुं मुळ कारण छे. जो कदापी आपणे ए सघळी द्रश्य श्रष्टिमां डाह्यपण न्याय, नियम, समता अने ऐक्यता जणाय तो, आपणेथी निर्णय करी शकाय जे, ते मुळ गुह्य बीज कार्य रुपमां सघळुं रहेलुंज छे. अने ते मात्र एकज, होवुं जोइए. अने ते एकनाज भिन्न भिन्न प्रकार छे, अर्थात जे जे द्रश्य जणाय छे. ते मात्र तेना देखावनी भिन्नता छे.

उपर कहेलुं अति गुह्य अने गुप्त सर्वनुं बीजरुप, तेने मानसिक ज्ञानथी, जाणवाने प्रयत्न करवुं, ते जेम कोइ गुण विनानी वस्तुनुं निराकरण करवाने

व्यर्थ प्रयत्न करीये, तेना जेवुंछे कोइ वस्तुनुं निराकरण करवुं, एटले तेना गुणोनुं वर्णन करवुं, अने जे वस्तुने कोइ पण जातना गुण नथी, तो तेने विषे कांइज धारी शकाय नहीं, अने वर्णन करी शकाय नहीं, ते छतां तेनुं वर्णन करवा सारु कांइ माइक गुणनी ते वस्तुमां कल्पना करवी पडे छे. अने ज्यारे माइक गुण तेनामां धारीयेतो, तेवस्तु परीपुर्ण कही शकाय नहीं अने तेनी बीजी वस्तुनी पेठे कार्या कारण संबंध-वाळी नियमित वस्तु थइ जाय. माटे सर्वना कारण बीज रुप, परब्रह्म विषे स्वभाव अथवा गुणनी कल्पना करवी ए व्यर्थछे. हवे जे द्रश्य स्वभाव, अने गुण जणाय छे, तेमां मात्र ते मुळ बीजनो आभाश अथवा तीरो भाव छे. जे सघळा स्वभाव अने गुणो छे ते अंते मुळ बीजमांज आवीरभावथी, लय पामे छे. परमात्मानां स्थाइत्व विषे, ना, कहेवी ते द्रश्य जेछे तेनी ना कहेवा जेवुं छे, केमजे सघळी स्थाइक वस्तु आपणे उपर कह्या प्रमाणे, ते परमात्मानो तीरोभाव अथवा आभाश छे. परमात्मा मात्र निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञानथीज सत्य रीते जाणी शकायछे. मानासिक ज्ञानथी तेनुं सत्य ज्ञान प्राप्त थइ शकतुं नथी, माटे जे उत्तम मानासिक ज्ञानवाळा तार्किकज्ञानी अने भाविक भोळा, मत पंथवाळा जे, इश्वर अथवा परब्रह्म विषे जे, वाद विवाद अने तंटो करे छे. ते मिथ्या छे प्रत्येक मनुष्य विषे, अंत्तरयामी परमात्मा

छे माटे ते मात्र आभासज छे. परंतु जे प्रमाणे बाह्य प्रकृतिना संबंधथी, प्रत्येक मनुष्यना भाव अने वलण भिन्न भिन्न छे, ते प्रमाणे ते सघळाना इश्वर संबंधी विचार, अने कल्पना भिन्न भिन्न छे. माटे सघळा मनुष्ये पोतपोतानी कल्पनाना इश्वर ठरावेला छे. आपणे इश्वर केहेवानो भावार्थ ए छे जे, तेमां नीरंतर उत्पन करवानी चंचळ शक्ति रहेली छे जे के आ श्रष्टिमां पुरुष रुपे देखाडे छे.

सघळा ब्रह्मांडनी उत्पति, ते चंचळ चैतन्य अथवा पुरुष, अने स्फुर्णाथी उत्पन थएली व्यक्त प्रकृति, जेमां संग्रह करवाना गुणछे. माटे ते स्त्रिरुप पण केहेवाय छे. ए बेउना समीलन अने कार्या कारण संबंधीथी, थइ छे माटे ब्रह्मांड रुप जे, एक वैराट तेनो वरीष्ट अथवा चंचळ ते पुरुष दर्शावे छे. अने कनिष्ट अथवा निचलो ग्राह्य ते प्रकृति अथवा स्त्रि दर्शावे छे अने एज नियम प्रमाणे, यथावत उत्पति थया करे छे. ए पुरुष अने प्रकृतिमां आगळ अनंत भेदो थया करे छे. पण ए बेउना प्रथक भेदनुं विवेचन थवुं अशक्य छे. परंतु ए सघळा भेदोमां ते चंचळ चैतन्यनी शक्ति, अने ग्राहक प्रकृतीनो स्थिर शक्ति द्रश्य अने अद्रश्य श्रष्टिमां रहेली छे. एज कारण माटे ए सघळा भेदोनी जे सघळी द्रश्य वस्तुओ ते एक बीज रुप मुळ कारणथी भीन्न छे, एवुं जे भासे छे. तेज मायानुं आछ्टण अने अज्ञान छे.

जे मनुष्य इश्वर नथी एवुं माने छे, तेना मनथी इश्वर छेज नहीं, अने तेनी स्थितिपणा विषे आग्रह करवो व्यर्थ छे. अने जे मनुष्यने इश्वर छे एम लागे छे. तेना मनथी इश्वर छेज, तेने इश्वर नथी एम कहेवुं व्यर्थ छे. जे केवळ तार्किकज्ञानीछे, तेने जेनुं स्थाइपणु नथी, तेने विषे तेनाथी समजाइ शकातुं नथी, परंतु जेने सत्य धर्मना वेगथी इश्वर सत्य जाणी, ते चैतन्य इंद्रिथी जोय छे, पछी ते गमे ते मत पंथना वाडामां होय, अने अंते सर्व व्यापक परमात्माने गमे ते नामथी कहेतां होय, तेने कोइ गमे तेवा मानसिक ज्ञानथी, ते असत्य छे एम समजाववा प्रयत्न करे तो, ते व्यर्थ छे. केमजे जे वस्तु तेने सत्य अने नीरंतर स्थाइ जणाइ छे. तेने इश्वर नथी, एम कहेवाथी तेने तुं नथी एम कह्या जेवुं छे.

अगणीत जुदा जुदा मतपंथना जे देवो अने इश्वर जे मनुष्य निर्माण करेछे. ते पोतपोतानी जेवी कल्पना अने जेवुं उन्नतिने पामेलुं ज्ञान होय, ते प्रमाणे करे छे. प्रत्येक मनुष्यनी वृत्ति, अने मनना वेगने लीधे, पोत पोताना इश्वर सत्य मानेला छे. तेज प्रमाणे जुदा जुदा मतपंथना आग्रही पुरुषोना, मानसिक पुनरावृत्तिना परीणामनुं कार्य, पोतपोताना प्रथक प्रथक संप्रदाय अथवा मार्गनी उत्पत्ति छे. ते सघळाने पोतपोताना मतथी, तेज सत्य इश्वर अने तेज सत्य मार्ग छे, केमजे ते पोतपोतानी वृत्ति अने

ज्ञानने अनुकुळ आवे एवा छे. परंतु जेम जेम नि-
श्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननी वृद्धि थती जाय छे, तेम
तेम तेना इश्वर संबंधी विचार संपुर्ण थतां जाय छे.
एज प्रमाणे ज्यारे सघळा मनुष्य प्राणीनुं निश्चया
त्मक बुद्धि ज्ञान, परीपुर्णताने पामशे. त्यारे तेमने
सघळाने एकज संपुर्ण सत्य परमात्मानुं ज्ञान समान
थइ शकशे, केमजे ते सघळाने, सर्वोपरी चैतन्य ज्ञा-
ननी परीक्षा सत्य कल्पनाथी निषपक्षपात रीते क-
रवानी शक्ति आव्याथी, एकज सत्यता समजाइ
शकशे. ते सत्यता, सत्य विद्या अने सत्य धर्मथीं कोइ
पण रीते विरुध थइ शके नहीं एवी छे. माटे तेज
सत्य ज्ञान अने सर्वोपरी डाहापण छे.

संवत १९४२ मार्गशिर्ष शुद्ध ७ रवीवार.

आकर्षक अने ज्योति प्रकाश.

सांप्रतकाळमां मानसिक अने निश्चयात्म बुद्धिज्ञान
ए बेउनी यथायोग्य समान उन्नति थयाथी, अती
अद्भुत सत्यता जाणी शकायछे. अति प्राचीनका-
ळमां आर्यवर्तमां यज्ञ यागादी अने होम विगेरे वै-
दिक कर्ममां अश्वथ नामना पवित्र गणायला वृक्षनी
सुकी डाळीयोनी अवश्य अगत्य दर्शावेलीछे. परंतु
ते वृक्षनी डाळी कोइ पण लोहना शस्त्रथी कापवानो
प्रतिबंध करेलोछे. ते वृक्ष सुकाइ गया पछी, तेनी
डाळी सुकाइ जइ, एनी मेळे खरी पड्या पछी ते

एकठी करी तेनो होम विगेरे कार्यमां उपयोग करवानी आज्ञाछे. एवीज रीते आपणा देशमां तुळशी विगेरे केटलाएक वृक्षो पवित्र गणी ते पोताना घर आगळ अक्षय राखी पोते स्नान विगेरे करी पवित्र थया पछी, तेनी पासे जइ पुजा विगेरे करवानो संप्रदाय हालपण थोडो घणो चालेछे. केटलाएक वृक्षना मुळीयानो उपयोग कर्याथी, विषवाळा जंतुओ विगेरेना डंशनी व्यथानुं निवारण थायछे. ए शीवाय बीजा केटलाक व्याधीनुं आनो उपयोग कर्याथी निवारण थायछे. ए विषे आपणे पुर्वे थइ गयला वाख्यानमां विस्तार करेलोछे. वळी एवुं पण जाणवामांछे जे, केटलाएक वृक्षो अंतरीक्षमां जे मलीन प्राणीना परमाणुओ होय छे तेनुं आकर्षण करी तेनो संग्रह करी ते वृक्ष उपर आण्याथी कोइ समये आकृतियो पण उत्पन्न थइ शकेछे. ए सघळानुं कारण निषपक्षपात रीते परीक्षा करवाथी, विद्वानोने एवुं जणायुंछे जे, भिन्न भिन्न वृक्षमां, चैतन्यप्राणीनी पेठे, भिन्न भिन्न प्रक्रतिना अंतरीक्षना अने पोतानी आसपासना परमाणुओने आकर्षण करवानी शक्ति होय छे.

हालना भणेला अने विद्वान पुरुषोने एनी सत्यतानो निश्चय थवा सारु, सांप्रतकाळना पाश्चिम देशना आग्रही अने सत्य शोधकोये, जे निष्पक्षपात रीते परीक्षा करी निश्चय करेलोछे, तेमांथी कांइक

सुचना आ प्रसंगे आपत्रानी अगत्य छे.

थोडा दीवस उपर, बेरन रीकनबेक नामना विद्वान पुरुषे, परीक्षा कर्याथी तेने एवुं जणायुं जे, सघळी जातनी वनस्पतिमां, आकाश अथवा अति सुक्ष्म प्रकृतीना परमाणुओ भिन्न भिन्न रहेला होय छे. ते लोह अने बीजा पदार्थोथी आकर्षण पामी शके छे. तेमांथी निर्विकार शुभ परमाणुओनो श्वासोश्वासथी संग्रह थाय तो, मनुष्यने ज्ञान प्राप्त करवाना मार्गे जवानी, वृति थाय छे. तेम केटलाएक व्याधीनुं पण निवारण थइ शके, अने कदापी जे वृक्षमां विकारवाळा अने मलीन सुक्ष्म प्रकृतीना परमाणु, रहेला होय, तेनुं मनुष्य प्राणी श्वासोश्वासथी आकर्षण करे तो, तेथी बुद्धि भ्रष्ट थाय, अने व्याधी वीगेरे उत्पन थाय, अथवा व्याधीनी वृद्धि थाय छे.

पश्चिम देशना, एक आग्रही सत्य शोधके एवो शोध कर्यो छे जे, " मारगोसा " नामना वृक्षना पाननो उपयोग, सर्पडंस अथवा विछुना डंस उपर कर्याथी ते घणे प्रसंगे तेनुं विष चुशी ले छे. वळी तेज पात्रानो उपयोग, जे स्थानमां बाळकनो जन्म थयो होय, त्यां अथवा, ज्यां सीतळा आवेलां बाळक होय, तेवा स्थानना आगला बारणानी बारशाखे, अथवा नीचा छापरानी पांखे ते पात्रां बांध्याथी, ते पात्रां विषारी परमाणुओनुं आकर्षण

करी ले छे, माटे समये समये ते पात्रां बदली नवा बांधवानी अगत्य दर्षावेली छे; अने जुनां पात्रां जे ठेकाणे लोकोनो जवा आववानो प्रसंग नहीं होय, एवे एकांत स्थाने नाखवानुं दर्शावेलुं छे.

वळी केटलाएक वृक्षमां लोह चुंबक जेवी, आकर्षण शक्ति रहेली छे एनी सत्यता विषे एक जर्मनी देशना "आनी, सायंटीफीक" नामना पत्रमां एक "एम लुइसफीगुइयर" नामना सत्य शोधके एवी सुचना करीछे के, एक विद्युत आकर्षकनुं नवुं वृक्ष जणायुं छे, जेने "फीटोलेकाइलेकट्रीक" नाम आपेलुं छे. ए वृक्षने विद्युत लोहचुंबक आकर्षक शक्ति छे. ए वृक्षनी डाळीजो आपणे हाथेवती भांगीये तो तेथी जे प्रमाणे विद्युतयंत्रनी, चकरडीने हाथ लगाडवाथी हडसेलो लागे छे तेज प्रमाणे हाथने हडसेलो लागे छे, वळी एक नानो होकायंत्र ए वृक्षथी वीसफुटने अंतरे मुक्याथी तेने असर थाय छे. अने ते होकायंत्रनी सळी ते वृक्षनी पासे आण्याथी तेमां गती उत्पन थइ, ते वेगथी फरवा मांडेछे. अने ते वृक्षथी, जेम जेम ते होकायंत्रनी सळी हागी खसेडीये, तो तेमां गती मंद थती थती पछी ते स्थिर थइ जाय छे. ए वृक्षनी तीक्षण सत्ता बपोर पछी बे वागतां होय छे. पछी ते क्षीण थतां थतां रात्रीये, केवळ मंद थइ जाय छे. जे समये गडगडाट अने तोफान थाय छे, ते समये ए वृक्षनी ए अदभुत श-

क्ति वृद्धि पामे छे, अने परजन्य अथवा वरसाद आवतो होय, ते समये ते वृक्ष करमाइ गया जेवुं देखाय छे; वळी ए वृक्ष उपर अथवा एनी पासे कोइ पण पक्षी अने कीट आवी शकता नथी, अने जे जगाये ते वृक्ष उगे छे, ते जगानी जमीनमां कोइ पण प्रकारनी लोह अने निकल आदीक आकर्षक वस्तु नथी, ए उपरथी स्पष्ट जणाय छे के, ते वृक्षमांज विद्युत आकर्षक गुण रहेलो छे. ए उपरथी आ समाचार आपनार ग्रहस्थ एवुं कहे छे के, जे लोको हींदुना सघळा नीयम असत्य अने संशइ गणे छे, ते लोकोने आ अति अगत्यनी सुचना छे. हालना केटलाएक अर्ध विद्वान अने अभिमानी, आकाशना आकर्षक अने गतिवाळा अति शुक्ष परमाणुओनो समोह वृक्षादीकमां नथी, एवुं माननाराओये, मिथ्या अभिमाननो त्याग करी, अति प्राचीन काळना हिंदुओये वृक्ष, पशु पक्षि अने मनुष्य विगरेमां जे, अति अदभुत आकर्षणना सुक्ष्म परमाणुनी सत्ता विषे, जे सुचना आपेली छे, तेनो शोध निष्पक्षपात रीते करशे तो अति मोटो लाभ थशे. एवुं उपलो समाचार आपनार विद्वान ग्रहस्थ कहे छे.

वळी ए विद्वान एवुं कहेछे जे, ब्राझीलनी उंची जमीनमां विद्युत आकर्षकना छोडवाओ घणा छे. एवुं डी, एशीयरना लेखी पत्र उपरथी जणायछे.

हवे "अमेरीका खंडना फ्रेनोलोजीकलजर-

नल" उपरथी ज्योतीप्रकाश विषे जे, सुचना मळी छे. ते आप्रसंगे जणाववानी अगत्य छे. ते पत्र कर्ता एवुं कहे छे जे, "टस्करोर नामना गामथी आसरे बार माइल उपर, केटलाएक पाणींना झरा पासे. एक गुच्छादार अदभुत वृक्ष छे, ते छ अथवा सात फुट उंचुं छे, अने तेनुं नीचलुं थड माणसनी मुठीथी त्रण घणुं जाडुं छे, तेने अगणित डाळी अने उपडाळीयो छे. अने ते कांइक बारबेरी नामना वृक्षने मळतुं आवे छे. ते वृक्षमां अद्भुतपणुं ए छे जे, प्रत्येक वर्षनी केटलीएक रुतुमां तेनां पात्रां एवां तो ज्योतीरूप प्रकाशमान थाय छे जे, गमे तेवी अंधारी रात्रीमां ते वृक्ष एक मइल कर्ता पण अधिक अंत्तरथी, जणाइ आवेछे; अने ते वृक्षनी पासे जो आपणे उभा रहीये तो, गमे तेवा झीणा अक्षर होय तो पण ते वंचाइ शकाय. तेनां पात्रां केलीफोरनीयामां तुरुवेट्री नामनुं वृक्ष थाय छे, तेनां पात्रां जेवा होय छे. तेना उपर प्रकाशना परमाणुओ, चोटेला जेवा जणायछे, कदापी आपणे, आपणो हाथ ते पात्रां उपर घसीये तो, ते प्रकाश आपणा हाथ उपर थोडा समय सुधी जणाय छे. अने ते पात्रा उपरथी जतो रहे छे.

हवे उपर कहेला सघला सत्य समाचार उपरथी निष्पक्षपाती अने सत्य शोधक विद्वान अने बुद्धिवान पुरुषोने, निश्चय थशे जे, ज्यारे वृक्ष आदीकमां

आकर्षक गुणो रहेला छे, तो मनुष्य प्राणीमां होय तेमां कांइ आश्चर्य नथी. परंतु ते सघळा मनुष्य प्राणीमां समान द्रष्टोतपतिमां आवता नथी, तेनुं कारण मुख्यत्वे करी एछे जे, सघळानी समान प्रबळ इच्छा शक्ति होती नथी, अने तेमने संसारनो सुख, दुख, हर्ष अने शोक आदीक आवरणो घणा होयछे तेथी ते अदभुत आकर्षक गुण गुप्त अने गुह्य रहेलो होय छे. परंतु जे, मनुष्य पुरुष प्रयत्न करी, अति आग्रहथी मायाना आवरणथी विरक्त रहेवाने प्रयत्न करे छे, तेना आकर्षक अदभुत गुणो प्रगटथइ, तेनाथी अलोकीक कार्यो थइ शके छे.

घणुं करी साधारण सघळा हींदुओना जाणवामां छे जे, कोइ महात्मायोगी अथवा कोइ अवतारी भद्र पुरुषनी, पटनी मुर्तिओना मुखारविंदनी आसपास एक गोळ चक्र करे छे, ते चक्र तेज अथवा प्रकाश दर्षावेछे, एटले जे महा समर्थ योगेश्वर अने अवतारी भद्र पुरुषो होय छे, ते पोतानी योग साधनाथी, पोतानी सघळी इंद्रियोना विकार उपर निरंतर सत्ता राखी शके छे, तेथी तेमने उपर कह्या प्रमाणे हर्ष षोकादीक कोइ पण रीतनुं मायानुं आवरण थइ शकतुं नथी, अने तेमनी इच्छा शक्ति अति बळिष्ट करेली होय छे, तेना योगे, पोतानी इच्छा प्रमाणे पोताना अंत्तरमांथी, अने आसपासथी तेज अथवा प्रकाशना अति सुक्ष्म ज्योतीरुप, आ-

काषना परमाणुओनो संग्रह, पोतानी प्रबळ थयेली इच्छा शक्तिना योगे करी शके छे. अने ते प्रकाष अथवा ज्योती, आपणे उपर कहेला वृक्ष उपर द्रष्टोत्तपति स्वभाविक गुणने लीधे आवे छे. तेवी रीते महा पुरुष पोतानी प्रबळ इच्छा शक्तिना प्रतापथी, ज्योती अथवा तेजनो प्रकाश दर्शावि शके छे.

आ उपरथी अंतनी सुचना एटलीज आपवानी छे जे, ज्योतीरुप आकाषना अति सुक्ष्म परमाणुओनुं आकर्षण करी, एकत्र करवानी शक्ति सघळा मनुष्यना चैतन्य आत्मामां रहेली होय छे. परंतु ते संस्कार अने पुरुष प्रयत्नेथीज, साध्य थइ शके छे. माटे मुख्यत्वे करी उन्नति पामेला ज्ञानी पुरुषो जो कोइ पण प्रकारना स्वार्थ रहित आग्रहथी प्रयत्न करशे तो तेना प्रयत्नना प्रमाणमां लाभ अवश्य थइ शकशे.

संवत १९४२ मार्गशिर्ष वद्य ६ रवीवार.

चैतन्याकर्षक विद्या.

आपणा पाछला व्याख्यानमां आकर्षक विद्या विषे साधारण विचार आपणे करी गया छइये, हवे आ प्रसंगे चैतन्याकर्षक विद्यानुं ज्ञान, भारत भुमीमां उपनीषदना समयमां केवी रीतनुं हतुं, ए विषे विचार करीये.

हालना समयमां आपणी भारत भुमीना, युवा-

वस्थावाळा, घणा विद्वानोनो, एवो दृढ सिद्धांत छेजे चैतन्याकर्षक अथवा प्राण शक्ति जेनुं पश्चिम देशना विद्वानो " एनीमलमेगनेटीझम " अथवा " मेस्मिरीझम कहे छे" ए विद्यानो प्रथम शोध युरोप अने अमेरीका देशना आग्रही विद्वानोए काढेलो छे एनी पुष्टिमां एवां दृष्टांतो आपे छे जे, हालना समयमां महा विद्वान " बेरन रीकनबेक " एवुं कहे छे जे, चैतन्य आकर्षक नामनो प्रवाही पदार्थ मनुष्य अने पशु पक्षीमां गुप्त रीते रहेलो छे एटलुंज नहीं, पण वृक्ष अने छोडवामां पण रहेलो होय छे जेने ते विद्वाने " ओड अथवा ओडाइल अथवा ओरा "नाम आपेलुं छे. अने तेज आकर्षक वस्तुने क्रुक नामनो विद्वान फिजीकफोर्स " कहे छे. एवि रीते ए अलोकिक जणायली महा अद्भुत गतीना आशरे त्रीस कर्ता अधिक नवां नामो हालना युरोप अने अमेरीका देशना विद्वानोये आपेलां छे. ए उपरथी आपणा आर्यदेशना हालना नवी केळवणीनी सत्तावाळा घणा विद्वानो एवुं कहे छे जे, सघळी अदभुत विद्यानो प्रथम शोध युरोप अने अमेरीका देशना आग्रही विद्वानोयेज काढेलो छे. एवो सिद्धांत अल्प बुद्धिने लीधे कांइ पण निष्पक्षपात रीते परीक्षा कर्या विनानो छे; केमजे हालना समयमां आपणा भारत भुमीना महा विद्वान अने आग्रही सत्य शोधक पद्मनाभाचार्य नामे बंधु एवुं कहे छेजे, उपर कहे-

ली अद्भुत गतिने पश्चिमदेशना विद्वान "ओरा" कहे छे, तेनुं प्रथम मुळ अति प्राचिन संस्कृतमां छे, जेने "ओजा" अथवा "ओषा" कहे छे, ए उपरथी एम जणाय छे जे ए विद्या प्रथम आपणा देशमां हती. उपर कहेलो "ओजास" शब्द संकृत मुळ ओज एटले जीववुं अथवा चैतन्य प्राणनी उष्णतानो शरीरमां प्रवेश अथवा पसवरवुं अर्थात एने महाजन एटले महा समर्थ तपश्वि ऋषीओनी अद्भुत प्राण शक्ति कहेवाय छे. "तप" ए शब्द ओजा अने तेज विगरे शब्दोनी साथे मळतो छे, एनो स्पष्टार्थ उपलो विद्वान एवो करे छे, के योग साधनवाळा महा योगेश्वरो अने प्रतापी अवतारी महा पुरुषोनी, आसपास जे तेज अथवा आकर्षक गतीना परमाणुओ होय छे, तेने तप केहेवाय छे. अने तेज उपरथी मुळ तपश्वि शब्द नीकळ्यो छे. ए जे प्रमाणे महापुरुषनी आवरण रहीत स्थिति अने चैतन्यनी एकाग्रता होय ते प्रमाणे उपर कहेला तेज अने आकर्षक परमाणुओनी वृद्धि महात्मा पोतामां करी शके छे.

वळी उपर कहेलो सत्य शोधक विद्वान एवुं कहेछे जे, आपणा महाभारत अने रामायण वीगरे शास्त्रमां, महा प्रतापवान विश्वामित्र, वषिष्ट अने ध्रुव वीगरे योगीयोये पोतानो प्रताप, अने भस्म करे एवा तेज अथवा अग्निनी शक्ति इंद्र विगरे देवोने

पण जणावेली छे. तेथी देवो पण निर्मानी थइ, म-
हा समर्थ ऋषीओने आधीन रेहेता. हवे आपणो
मुळ विषय चालु करीये. आपणे उपर कहेलो, ओ·
षा ए शब्द उष उपरथी नीकळ्यो छे उष एटले द·
ग्ध करवुं बाळवुं अथवा उष्णता आपवी वीगरे था-
यछे, ए उपरथी ओषधी अथवा औषधी शब्द नी·
कळ्यो छे. केमजे औषधीमां प्राण रक्षक उष्णता र-
हेली होय छे. ए कारणने लीधे व्याधीना निवार
ण करवाना गुणो नाना प्रकारनी वनस्पतीमां रहेला
छे. घणुं करीने साधारण आर्यबंधुना जाणवामांछे
के, जे समये रावणे पोताना महा प्रतापवाळा बाण-
थी लक्ष्मणने, मुर्छावस्था प्राप्त करी, ते समये महा
बळवान हनुमाने, मेरु पर्वत उपरथी, प्राण रक्षक
अथवा सजीवन औषधी लावीने, लक्ष्मणनी नाषी
कामां, तेना उपचार कर्याथी, तेने उष्णता प्राप्तथइ,
सावध थइ पुर्ववत बळ, क्षणवारमां प्राप्त थयुं. एवा
महा अदभुत वनस्पतीना गुणो अति प्राचीन का-
ळना मनुष्यो आपणी भारत भुमीमां जाणता हता;
अने एवीज रीते महा समर्थ अने नीरोगी, एकाग्रता
वाळा महा पुरुषो पोताना शुद्ध अने उष्णता वाळा
प्राण शक्तिना परमाणुओमांथी, थोडा परमाणुओ-
नो प्रवेश परोपकार बुद्धिथी, कोइ व्याधीवाळा म-
नुष्यमां करी शकता हता, ए विषे आपणे पुर्वेना व्या-
ख्यानमां यथार्थ वर्णन करेलुं छे, तेथी आ प्रसंगे

अधिक कहेवानी अगत्य नथी. एज नीयम उपरथी हालना पश्चिम देशना केटलाएक विद्वानो "मेस्मेरीजमना" साधनथी अशक्त थयेला मनुष्यमां पोतानी तात्वीक उष्णताना प्राणशक्तिना परमाणुओनो प्रवेश करी, तेना शरीरनी साम्यावस्था करे छे. वळी उपर कहेली अदभुत ओषा शक्ति अने गुण आपणे जे, अन्न अने भोजन आदीक करीये छइये, तेमां पण छे ए वीषे तैत्रीय उपनीषद्‌मां आनंद वल्लीना बीजा अनुवाकमां एवुं कह्युं छे के:—

अन्नाद्वैप्रजाःप्रजायन्तेयाःकाश्चपृथिविश्रिताः ।
अथौअन्नेनैवजीवन्तिअथैनदपियन्त्यतः ।
अन्नंहिभुतानांज्येष्टंतस्मातुसर्वौषधमुच्यते ॥

एटले प्रथवी उपरना सघळा प्राणीयोना प्राणनी उत्पति अन्नमांथी थएली छे, माटे अन्नमयकोष कहेवाय छे. अने वळी प्राणी उत्पन थया पछी, आधार पण अन्ननोज छे, एटले अनथीज प्राणनी रक्षा थइ शके छे, अने अन्ते ते सघळाना प्राणनो पाछो समावेश अन्नमांज करे छे, केमजे सघळा प्राणीओमां अन्न अति प्राचिन शक्ति छे; एज उपरथी औषधी प्राणनी रक्षा करनारी वस्तु छे, केमजे तेमां उष्णता उत्पन करवानी शक्ति रहेली छे, अथवा जे चैतन्य प्राण रक्षक उष्णताना अथवा तेज ते सघळा जीवन प्राणीओनी अने वृक्षादीक छोडवा विगरेमां प्रसार पामी रहेलुं छे.

आ उपरथी निष्पक्षपाती सत्य शोधकोनो द्रढ निश्चय थशे जे, "ओज अने ओष" ए बेउ शब्दो हिंदुना अति प्राचीन ग्रंथमां आवे छे, ते सत्यताथी एवुं दर्शावे छे जे, सघळा पशुपक्षी अने वनस्पती आदीमां, एक प्राणरक्षक महा अदभुत चैतन्याकर्षक प्रवाही पदार्थ रहेलो छे. तेनेज सांप्रतकाळना उपर कह्या प्रमाणे "बेरन रीकन बेक अने बीजा महा आग्रही सत्य शोधको "ओरा अथवा एनीमल मेगनेटीजम" कहे छे. माटे आपणा भरत खंडी आर्यदेशना महा प्रतापी पुरुषोने, ए विद्यानुं संपुर्ण ज्ञान हजारो वर्षनी पुर्वे हतुं. एना काळनुं यथार्थ निर्माण हजी सुधी कोइ पण विद्वानथी थइ शक्युं नथी. परंतु ते ज्ञाननी सत्यता, सांप्रतकाळना उन्नति पामेला पश्चिम देशना महा आग्रही सत्य शोधकोये, प्रसिद्ध करवा मांडी छे ए तेमनी सत्य विद्याने अति महत्वनुं भुषण छे. वळी हालनो महा विद्वान तीन्डोल नामे ग्रहस्थ एम कहे छे जे, प्रक्रति अथवा (मेटर) नां प्रत्येक परमाणुमां गुप्त रीते, सघळी आकृती अने प्राणनी उत्पतीना गुणो रहेला छे ए सिद्धांत आपणा वेद अने उपनीषद आदी प्राचिन ग्रंथोमां, घणा प्राचिनकाळथी सिद्ध थयेला छे. अने तेनीज पुनरावृत्ति हालना आग्रही विद्वानोये करवा मांडी छे. माटे आपणी भारत भुमीना मुख्यत्वेकरी. मानसीक ज्ञाननी उन्नति पामेला विद्वा

नोये, मिथ्या अहंपदनो त्याग करी, अने संसारना क्षणभंगुर सुख प्राप्त करवामांज अंध थइ, निमग्न नहीं थता, केवळ परमार्थ बुद्धिथी, निषपक्षपात रीते आपणा देशनी अमुल्य विद्यानो शोध करी, पुनरपी आपणी स्थितिने श्रेष्ट करवानो प्रयत्न करशेतो स्वार्थ अने परमार्थ ए बेउ कार्यनी सिद्धि योग्य रीते थइ शकवानो संभवछे. तेम नहीं थाथतो अज्ञानरुपी अंधकारमां भारतभुमी डुबी जइ, सरवश्व नाश थवानो समय आवशे. माटे हालनो स्थिर समय व्यर्थ जवा देवो नहीं, एज उगता विद्वानोने भुषणछे. हवे आपणे प्राणशक्ति विषे अधिक विचार आगळ करीशुं.

संवत १९४२ मार्गशिर्ष वद्य १३ रवीवार.

प्राणशक्ति अने मुल प्रकृति.

आपणे पाछला व्याख्यानमां, ज्योती प्रकाश तेज अने चैतन्याकर्षक विगेरे विषयो उपर व्याख्यान कर्युंछे. तेमां ज्योती प्रकाश अने तेज ए अति सुक्ष्म वस्तु छता एना कीरणोमां प्रकृतिना अति सुक्ष्म परमाणुओ रहेलाछे. माटे ते कार्य रुप व्यक्त प्रकृति कहेवायछे. माटे एना अति सुक्ष्म परमाणुओनुं संयोग कर्ण थयाथी गति अने शक्ति उत्पन्न थइ शके छे. पण एनुं कारणरुप, कोइ पण अणु परमाणु रहित अरुप अने अखंड आविनाशीछे तेने सांख्य मतवाळा मुळ प्रकृति कहेछे. अने वेद्यांत सिद्धांति

केवळ शुद्ध चैतन्य केहेछे. ए बंने वस्तुतःएकज छे. मात्र शब्द भेदज छे, ए विषे आपणे पुर्वे निराकरण करेलुंछे,माटे आ प्रसंगे अधिक बोलवानी अगत्यनथी.

हवे आपणे आजनो मुख्य विषय जे,प्राणशक्ति अथवा प्राणाग्नि ए विषे विचार करीये, आपणे उपर कह्युं जे, प्रकाश अथवा तेजना, अति सुक्ष्म परमाणुओना संग्रह थवाथी, प्राणशक्ति उत्पन्न थइ शकेछे. पण ते केवी रीते उत्पन्न थइ शकेछे, तेनो विचार करीये. तेज ए अग्निनुं बीजु नाम केहेवाय छे. केम जे अग्नि एज प्रकाश अने उष्णता आपनार मुळ वस्तु छे. रघवेदमां कह्युंछे जे, गमे तेटला भिन्न भिन्न अग्नि कहेवाता होय, पण ते सघळी एक अविनाशी अग्निनी शाखाओछे. अग्नि मुख्य त्रण विभागे ओळखायछे. तेमां प्रथम सुचि,बीजो पवमान अने त्रीजो पावक सुचि एटले जे सुर्यथी अग्नि उत्पन्न थाय ते पवमान अथवा निरमथन एटले घ्रषण अथवा बे पदार्थ घसवाथी जे अग्नि उत्पन्न थायते अने त्रिजो अग्निजे पावक अथवा विद्युत,जेकेआकाषिक तत्वअग्नि छे आपणेउपरकहेला त्रण्ये अग्निनुं मुळ वेदमां जे एक केवळ शुद्ध चैतन्य अथवा नाद ब्रह्म केहेछे तेजछे. वळी उपर कहेला त्रण प्रकारना अग्नि बीजा घणा विभागथी, ओळखायछे तेमां सुर्याग्नि अथवा सुर्यनो जे अग्नि ते, तेना जे प्रमाणे कीरणोना भिन्न भिन्न रंग अने स्वभाव देखायछे, ते प्रमाणे तेना भिन्न

भिन्न नामोछे. तेज प्रमाणे प्रथ्विनो अग्नि जे के, घ-
यणथी उत्पन्न थइ शकेछे. तेना जेवा भिन्न भिन्न
उपयोग थायछे ते प्रमाणे ते घणा भिन्न भिन्न ना-
मोथी, ओळखायछे. जेमके यज्ञयागादिक करवाना
अग्निने वानक अग्नि कहेछे. अने घरमां उपयोग क-
रवाना अग्निने ग्रहपत्य आग्नि क.हेछे. एवी रीते अ-
ग्निना अगाणत भिन्न भिन्न नामो आपेलाछे. एवीज
रीते अंतरीक्ष अथवा आकाषना अग्नि पण भिन्न
भिन्न नामथी ओळखायछे. एमां भेद जे प्रमाणे म-
नुष्य प्राणीना उपर बाह्य अने अंतर ते अग्निनी
सत्ता चालेछे, ते प्रमाणे, थायछे. जेमके आपणा
पोषणना पदार्थो जे पेटामां छे. तेने पाचन करनारो
अग्नि जठराग्नि नामे ओळखायछे. वळी रघवेदमां
एवुं कह्युंछे के जे वायुरुप अग्नि मनुष्य प्राणीमां र-
हेलोछे, तेने वैश्वानर कहेछे. वैश्वानर ए शब्द विश्व
अने नर ए बेउ शब्दथी, थयेलोछे. तेमां विश्व एटले
सर्व, अने नर एटले मनुष्य ए उपरथी आकाषिक
तत्व जे के सघळा मनुष्य प्राणीमां रहेलुंछे तेने वैश्वा
नर कहेछे. एज प्रमाणे भगवत गिताना अध्याय १५
ना श्लोक १४ मां एवुं कह्युंछे जे एज वैश्वानर अग्निथी
प्राणशक्ति उत्पन्न थइ शकेछे. अने तेज विद्युत अग्नि
रूपे मनुष्य प्राणीमां रहेलोछे. तेना कार्यो अति अ-
लोकिक अने अद्‌भुत छे. एने विषे रघवेदमां एवुं
कह्युंछे जे, वैश्वानर मनुष्य प्राणीना पेटमां दुंटीनी

आसपासना भागमां एक स्थंभरुपे तेनुं रक्षण करेछे. जे प्रमाणे घरनु रक्षण स्थंभ करेछे ते प्रमाणे मनुष्य प्राणीनुं रक्षण वैश्वानर अग्नि करेछे. वळी मैत्रि उपनिषदमां एवुं कहेलुं छे जे, मनुष्य प्राणीना पेटमां दुंटीनी आसपास जे गुप्त वर्तुळाकार, अग्नि जे तेना सघळा शरीरनुं रक्षण कर्ताछे, तेने मुळाधार कहेछे. अने वैश्वानर अग्निनो जे वर्तुळ, तेने अग्नि मंडळ पण कहेछे. अने तेज अग्नि आपणा श्वासोश्वासथी, निरंतर प्रदीप्त रहेछे. ए प्रमाणे बीजा घणा योग विद्याना ग्रंथोमां कहेलुंछे.

आ प्रसंगे एटलुं कहेवानी अगत्यछे जे, विद्युत अथवा आकाषिक अग्नि जे के, मनुष्य प्राणीमां वैश्वानर अग्निथी ओळखायछे, ते सर्व मनुष्यनी प्राण रक्षक वस्तुछे. अने वळी तेज सघळा ब्रह्मांडनी आधारभुत वस्तुछे, एवुं रघवेदमां कह्युंछे. ते एवी रीते के जे वस्तु बाह्य सघळी श्रष्टिमांछे, तेज विद्युतरुपे, चैतन्याकर्षक रुपे, प्रकाशरुपे, अने उष्णतारुप रहेली छे.जेना सांप्रतकाळना पश्चिम देशना तत्वज्ञानी विद्वानोये "इलेकट्रिसिटी मेग्नेटीजम," लाईट अने "हिट" विगेरे नामो आपेलाछे.अने जे जीवंत मनुष्य प्राणीमां प्राण रक्षक वस्तु रहेलीछे. तेने पश्चिमदेशना विद्वान "एनीमल मेगनेटिजम" पण केहेछे. केमजे ते मनुष्य प्राणीनी प्राणरक्षक शक्ति अने आत्मिक चैतन्यनो औंसछे. जे के सघळी श्रष्टिनी विद्युत शक्तिनो अ-

ભુત સમષ્ટિ ગુણ તે મનુષ્ય પ્રાણીમાં વ્યષ્ટિ રૂપે રહેલો છે એટલુંજ નહીં, પણ મનુષ્ય પ્રાણી પોતાની ઇચ્છા શક્તિના યોગે, જે જ્ઞાનના પરમાણુઓનો સમયે સમયે બીજામાં પ્રવેશ કરી શકેછે, તે તાત્વિક જ્ઞાનના પરમાણુનો ભરપુર રીતે સંગ્રહ કરી શકેછે. એવા વૈશ્વાનર અથવા પ્રાણ અગ્નિના મહા અદ્‌ભુત ગુણો પશ્ચિમદેશના આગ્રહી તત્વવેત્તાઓને સાંપ્રતકાળમાં જણાવવા માંડ્યાછે.

એ મહા અદ્‌ભુત પ્રતાપવાન બાહ્ય અગ્નિને વિદ્યુત કહેછે. અને મનુષ્ય પ્રાણીમાં રહેલા અગ્નિને વૈશ્વાનર કેહેછે વળી એ અગ્નિ, મનુષ્ય પ્રાણીમાં રહેલોછે. માટે એને શારીરીક અગ્નિપણ કેહેછે. ઉપર કહ્યા પ્રમાણે એને પ્રાણશક્તિ પણ કેહેછે, તેજ શક્તિ મનુષ્યની ઇચ્છાથી ઉત્પન્ન થઇ, મનુષ્યના અવયવમાં બળ ઉત્પન્ન કરી તેના કાર્યો કરવાને શક્તિવાન કરે છે. મૈત્રિ ઉપનિષદમાં એવું કહ્યુંછે જે, ઇચ્છાશક્તિ શારિરિક અગ્નિને પ્રદિપ્ત કરેછે, વળી એવું પણ કહ્યુંછે જે, તે અગ્નિ મનુષ્યમાં રહેળા મરુત અથવા વાયુને પ્રદિપ્ત કરવાથી, તે વાયુ અંતઃકર્ણમાં પ્રવેશ કરી, નાદવિગેરે ઉત્પન્ન કરેછે. એ અગ્નિ અથવા પ્રાણશક્તિને, આપણે તેજ કહીયે છઇયે. અને એજ તેજને જ્યોતીપ્રકાશ, ઉષ્ણતા, શક્તિ, અને જોસ્સો વિગેરે અનેક નામો આપેલાછે. એ સઘળાને હાલના પશ્ચિમદેશના આગ્રહી વિદ્વાનો “ઔરા” એટલે અતી સુક્ષ્મ અને અદ્રશ્ય

तेजना परमाणुओ जे वायु रुपे मनुष्य प्राणीमां श्वासथी आकर्षण करी शकायछे, अने प्रश्वासथी बहार काडी शकायछे ते एछे एवो निश्चय करेलोछे. वळी ए विषे पश्चिमदेशना केटलाएक निष्पक्षपाती सत्य शोधक अने विद्वानो एवुं केहेछे जे, उपर कहेली महा अद्भुत प्राणरक्षक वस्तुनी शक्ति एवीछे जे, तेणे करी मनुष्य प्राणीनी आरोग्यतानी रक्षा थइ, चैतन्य शक्तिनी पण वृद्धि थायछे. अने ते महा अद्भुत शक्ति, आर्यदेशमां अति प्राचिनकाळना परोपकार बुद्धिना रुषी अने मुनीओमां संपुर्ण रीते प्रगट करवानी हती, तेना योगे ते समर्थ पुरुषो बीजाना मननी कल्पना जाणवानी इच्छा राखे तो, ते जाणी शकता हता एटलुज नहीं, पण पोतानी कल्पनानो प्रवेश बीजामां पण करी शकता हता, वळी ते अद्भुत आकाषिक प्राणशक्तिनो उपयोग व्याधीना निवारणसारु करता हता ए शिवाय बीजा अनेक महा अद्भुत परोपकारना कार्यो करता हता. वळी महा समर्थ विश्वामित्र रुषीए, अलोकिक अने अद्भुत प्राणशक्तिने ब्रह्मतेज कहेलुछे, केमजे सर्वे बीजी शक्तिथी ए महाअद्भुत वरीष्ट शक्तिछे. एज कारणने लीधे "ब्रह्मतेज वृद्धि अस्तु" एटले ब्रह्मतेजनी वृद्धि थाओ, एवुं केहेवानो संप्रदाय प्राचिनकाळमां घणो हतो, अने हालपण दक्षिण विगेरे देशमां ए प्रमाणे केहेवानो संप्रदाय मात्र चालेछे. पण तेनो यथार्थ निर्दोष अर्थ समजता

नथी. उपर कहेली प्राणशक्तिना अति सुक्ष्म परमाणुओमां, नाद अने भिन्न भिन्न रंगो रहेला छे ए विषे एक परोपकारी योगीए हेवुं कह्युंछे जे, प्राणशक्ति अथवा आकाशना अति सुक्ष्म परमाणुओ, तमाराथी केम समजाइ शकशे. "ते अर्थ चेतननी गती अथवा शक्तिने तमारी सत्तामां राखवी. अने तेनो संबंध आपणी साथे शब्दभाषाथी थइ शकतो नथी, पण नाद अने भिन्न भिन्न रंगोथी ए बेउना वक्रिभवनथी, अंतरमां थइ शकेछे. केमजे ते चैतनना प्रकार, नाद, प्रकाश अने रंग एथी मुख्यत्वे करी जणाइ आवेछे. एवा प्राणीनी स्थिति विषे, कांइ पण ज्ञान तमने नथी."

आ उपरथी आपणे निश्चय समजवुं जे तेज अथवा शारीरीक अग्नि अथवा प्राणशक्ति अने तेनुं आकाशना सुक्ष्म परमाणु रुपे नीकळवुं, ए सघळु कांइ कल्पना रुप अने कल्पित वार्ता नथी पण सत्य छे. ए अति प्राचिनकाळनी सिद्ध थयेली सत्यताछे. एने विषे महासमर्थ अने आग्रही पश्चिमदेशनो विद्वान प्रोफेसरविलियम्स एवुं कहे छे जे आ तेज अथवा प्राणशक्ति (मेग्नेटीजम) अति प्राचिनकाळमां प्रसिद्धपणे जणातु हतु, अने तेनो उपयोगपण घणो थतो हतो, ए कांइ आजकालनी विद्या नथी, ए अति प्राचिनकाळनी विद्याछे; अने ए विद्यानी सत्यता घणाकाळनी परीक्षाथी सिद्ध थयेलीछे. एज

प्रमाणे आपणा पण जाणवामां ए अति प्राचिनकाळनी गुप्त विद्याछे, अने ए विद्यानी पुर्वे काइ पण बीजी प्राचिन विद्या नोती. माटे तेज अथवा प्राण शक्ति प्राचिनकाळनी औषध अने वैद्यनी मुख्य कुंचीछे. अने ए धर्मनो पण मुख्य स्थंभछे. एटले मुळ धर्म प्रवर्तकनी ए अद्भुत शक्ति छे. वळी सांप्रतकाळमां अल्पज्ञानी अने मिथ्या अभीमानी पुरुषोने एनी सत्यता केटलाएक महासमर्थ निष्पक्षपाती तत्वज्ञानीओए सिद्ध करी, आपेलीछे. तेमांथी केटला एक द्रष्टांतो आ प्रसंगे दर्षाव्याथी, हालना आपणा देशना पश्चिमदेशनी केलवणीनी सत्तावाळा, विद्वान अने भणेला पुरुषोने निश्चय थशे. एवा पुरुषोये मिथ्याअभिमाननो त्याग करी, उपर कहेला प्रोफेसरविलीयम्सना ग्रंथ लक्षपुर्वक वांचवा, ते शीवाय केमीस्टिना प्रोफेसर अने एडीनबर्गनी युनीवरसीटीना प्रोफेसरे अंग्रेजी भाषामां "बेरनरीकनबेकना ग्रंथनु भाषांत्तर करेलुछे ते वांचवानी अवश्य अगत्य छे. वळी "न्युयोर्कना एडवीनडी रेबेटी" नामना विद्वाने प्रकाशा अने रंग ए विषयो उपर जे ग्रंथ रचेलोछे. ते पण अती उत्तमछे. ए शिवाय हालमां लंडनशहेरनी आग्रही अने अनुभवी "चेन्डोस लीघहंट नामनी विद्वान स्त्रिये ए अद्भुत महाविद्या अने जेने ओरगेनीक मेगनेटीजम कहेछे ते विषे पोताना अति उपयोगी ग्रंथमां जे छुटक छुटक सुचना आपेलीछे, ते वांच्याथी

द्रढ निश्चय थशे. ए सघळा विद्वानोये स्वअनुभव कर्या पछी पोताना ग्रंथो प्रसिद्ध कर्याछे.

उपर कहेला पश्चिमदेशना विद्वानोये, तेज, प्राणशक्ति, आकाशना अति सुक्ष्म परमाणु, विद्युत आकर्षक, विश्वानर विगेरे जे शारीरक अग्नि विषे आपणा अति प्राचिन वेद अने योगादीक ग्रंथमां वर्णन करेलुंछे, तेना नामो पोतानी भाषामां पण भिन्न भिन्न आपेलाछे. तेमांथी मुख्य नामो आ प्रसंगे कहेवाथी यथार्थ निश्चय थशे. ए अदभुत तेजने "ओडाइल अथवा ओड, ओडीकफोर्स" कहेछे.वळी एने मेगनेटिकओरा पण केहेछे. ए शिवाय बीजा पण घणा नवा नामो आपेलाछे. तेमां एवुं कहेलुंछे जे, प्राणशक्ति अथवा (ओरा) जे के मनुष्यप्राणीना मनोमय चक्रमां, अने स्नायु विगेरेमां पसरेलीछे, ते स्वभाविकपणे विद्युत जेवी छे, तोपण जे विद्युत आपणने बाह्म जणाय छे, तेथी कांइ अधिक चमत्कारी वस्तु तेमां रहेलीछे, माटे ए वस्तु ओळखवाने बिजो सारो शब्द नहीं जड्यो माटे, पश्चिमदेशना विद्वानोये एने "एनीमलमेगनेटीजम" अथवा "एनीमलइलेकट्रीसिटी" नाम आपेलुं छे. ए आकाशनी विद्युतथी, एटली भिन्नछे के, एमां चैतन्यना परमाणुओ रहेलाछे.ते आकाशनी विद्युतमां नथी. कदापी पाणीमां आकाशनी विद्युतना परमाणु लीधातो,तेथी एकज परीणाम निप्पन थायछे. परंतु प्राणशक्ति

अथवा "एनीमलइलेकट्रिसिटीनो पाणीमां प्रवेश क-
र्याथी, ते पाणीमां प्रवेश करनार एकाग्रतावाळा
आग्रही पुरुषनी इच्छा प्रमाणे अनेक व्याधीना नि-
वारण करवानो गुण आवेछे. वळी प्राणशक्ति अथवा
वैश्वानर अग्नि जेने पश्चिमदेशना विद्वान मेगनेटिक
ओरापण कहेछे. तेनी अदभुत शक्ति अने गुण विषे
आ प्रसंगे अनुभवी मिसहंटनो सिद्धांत जणाव्याथी,
बुद्धिवान पुरुषोने थोडोघणो पण लाभ थशे. ए
विद्वान एवुं केहेछे जे अति द्रढ एकाग्रताथी, कल्पना
करवाथी वैश्वानर अग्नि प्रज्वलित थायछे. अने ते
घणु करी चक्षु इंद्रिद्वारा, हाथनी आंगळीद्वारा, अं-
गुष्टद्वारा अने केषनाछेडाद्वारा नीकळेछे. ए वस्तु
एटली सुक्ष्मछे जे ते द्रष्टोतपतीमां आवे एवी नथी,
ते अभ्यासे करी मनुष्यप्राणीनी इच्छाशक्तिने स्वा-
धिन थइ शके छे. अने गमे ते धारेली दीशामां मो-
कली शकायछे. केटला अंतरसुधी ते मोकली शकाय
एनो निश्चय हजीसुधी कोइथी थइ शक्यो नथी.
एनी साथे मोकलनारनी जेवी इच्छा होय ते प्रमाणे
ते जइ शकेछे. अने संस्कारी मनुष्य गमे तेटले अंतरे
होय तोपण तेने जेम पासे होवाथी, अदभुत असर
थायछे. तेवीज असर थइ शकेछे. एनेज, "एनीमल
मेगनेटिजम" केहेछे. ए वैश्वानर अग्निनो उपयोग
मनुष्यप्राणीना मनना विकार, नीति, अने स्थुळ
शरीरना व्याधिनुं निवारण करवा विगेरेना शुभ

कार्यमां, आवी शकेछे. ते शिवाय ए निर्मळ निद्रा आणी शकेछे. स्थुळ शरीरनुं भान रहित कर्याथी दुःख लागी शकतु नथी. बुद्धिचैतन्यनी उन्नतिपण ए करी शके छे. वली ए वनस्पति, फळ, फुल अने पशु-पक्षीआदी सर्वने धारेली सत्ता करी शकेछे.

ए उपरथी, एम नहीं समजवुं के, वैश्वानर अग्नि तेज, अथवा प्राणशक्ति, मात्र मनुष्यप्राणीमांजछे. ते सघळी चैतन्य अने जड वस्तुमांछे एटलुंज नहीं, पण सघळी जाणीती वस्तु, पदार्थो, अने तत्वादीकमां पण गुप्तपणे रहेलीछे.

एवी रीते तेज अथवा प्राणशक्ति सर्व व्यापिक छे. एवुं सिद्ध थयुं, हवे एटलुं निश्चय समजवुं के, ए अदभुत शक्ति अथवा तेज, निरंतर गुप्तपणे दबाइ रहेछे. श्रष्टिना अचलित नियम प्रमाणे ए अदभुत तेज, पोताना अगत्यना कार्यो निरंतर अचळ रीते कर्या करेछे. तेनी अदभुत सत्ता स्थुळ शरीरनी, बाह्य अने अंतर ए बेउमां थया करेछे. कदापी मनुष्यप्राणीनी इच्छाशक्ति, ए तेजने पोतानी सत्तामां राखी नहीं शकेतो, ते सघळी दिशामां गमे ते ठेकाणे वगर उपयोगे नीकळी जायछे. अने तेना अति सुक्ष्म परमाणु होवाने लीधे, ते घणु करी सघळा मनुष्यप्राणीने द्रष्टोतपतिमां आवी शकती नथी. ए तेज अथवा प्राणशक्तिना, केवा सुक्ष्म परमाणुओ होयछे. एनो निश्चय हालना पश्चिमदेशना आग्रही

विद्वान प्रोफेसर टोमसडीके करेलोछे, तेनी सुचना कर्याथी विद्वान अने बुद्धिवान पुरुषोने यथार्थ निश्चय थशे.

"अनेक प्रकारना प्रवाहीमां एवा परमाणुना अति सुक्ष्म तंतुओ होयछे, के ते मात्र बिन्दुओ, जेवा जणायछे. अने ज्यारे ते सुक्ष्म दर्शक यंत्रद्वारा जोवामां आवेछे. त्यारे, जे होयछे तेना करता हजारोघणा मोहोटा जोवामां आवेछे. तेमांना केटलाएक सुक्ष्म तंतुओ, एवा होयछे जे, ते सुक्ष्म तंतुओ दसलक्ष एकत्र करीयेतो, ते एक रेतीना रजकण करता मोटा थइ शकता नथी, एवा अति सुक्ष्म छता, तेने मोटा प्राणीओनी पेठे आश्चर्य रीते बनेली इंद्रियो अने अवयवो होयछे. तेओने प्राण अने स्वाभाविक गति होयछे. तेने प्रेरणाशक्ति होयछे. ते आश्चर्य लागे एवा वेग अने चंचळताथी, हालता चालता जणायछे. वळी तेमां आश्चर्य जेवुं एछे जे, ते अति सुक्ष्म प्राणी पोतानी इच्छा प्रमाणे धारेला कार्योमां प्रवर्तेछे. ते भक्ष अने पान करता जणायछे, तेथी तेने पाचन करवानी इंद्रियो पण होयछे. तेओने केटली एक शारीरिक शक्ति पण होयछे. ए उपरथी उपलो विद्वान निश्चयथी कहेछे जे, ते सुक्ष्म प्राणीने अंतःकर्ण, धोरीनस, स्नायुओ अने पोषण करनार गतिवाळी प्रवाहि वस्तु, अने बीजी सघळी वस्तुओ संपुर्ण रीते होयछे. ज्यारे ए प्रमाणेछे. तो तेनी केवी

सुक्ष्म इंद्रियो हशे एनो विचार करवो अति कठणछे, ते छता आग्रहि विद्वान दाकतर रींके एवो निश्चय कर्योंछे जे, उपर कहेला एक सुक्ष्म तंतुनुं कद $\frac{२७}{१००००००००००००००००००००}$ अथवा आसरे ८००००००० घनइंच कर्ता ओछु थायछे. एटले एक घनइंच करवाने आशरे उपर कहेला ८००००००० जीणा तंतुओ एकत्र करवा जोइये. ज्यारे एटला ते तंतुओ सुक्ष्मछे त्यारे ते तंतुओना रक्तमां जे अति सुक्ष्म वर्तुळाकार प्राणी तर्या करेछे. ते केटला सुक्ष्म हशे एनो विचार हालनी गणीत विद्यार्थी थइ शके एम नथी. त्यारे तेना प्रत्येक परमाणुओनो तो विचार थइ शकेज नहीं.

प्रोफेसर गोडिने गणीत विद्या उपरथी, एवुं सिद्ध कर्युंछे जे, एक टांकलीना माथा जेवडा कदनो तंतु थवासारु८००००००००००००००००००००००००० परमाणुओनो संग्रह थवो जोइये. अने ज्यारे एक शेकनमां, दशलक्ष परमाणुओनो संग्रह थइ शके, त्यारे उपरलो एक तंतु संपुर्ण थवाने, आशरे२५०००००००० वर्ष जोइये. परंतु एना कर्तांपण आकाशना तात्विक परमाणु अति सुक्ष्म छे. तेनुं गणीत कोइपण मनुष्य प्राणीनी जाणीती विद्यार्थी थइ शके एम नथी.

उपर कहेला वैश्वानर अग्नि अथवा आकाशना, परमाणुओ अति सुक्ष्मछे तेथी ते पदार्थोमांथी निकळता अने आवता जणाता नथी, तोपण सघळा जड

अने चैतन्य पदार्थोना स्वाभाविक नियम प्रमाणे, ते अति सुक्ष्म परमाणुओ निरंतर जता आवता रेहे छे. जेम एक स्वाभाविक निर्यम प्रमाणे, प्रकृतिना परमाणुओना संयोगकर्णथी, पदार्थो बनेलाछे, तेम बीजा नियम प्रमाणे सघळा पदार्थोना प्रथःकर्णना नियम प्रमाणे प्रकृतिना परमाणुओ पदार्थोमांथी विरक्त थइ पोतानी मुळ स्थितिमां रेहेछे. प्रत्येक कल्पने अंते, अथवा ब्रह्मानो ज्यारे एक दीवस थाय त्यारे, नैमितिक प्रलय थायछे, ते समये सघळा महा भुतवाळा पदार्थोनुं प्रथःकर्ण थइ, पदार्थो नाश पामेला जणायछे, पण ते पदार्थोमांना गुणोनो नाश थतो नथी. परंतु महाप्रलय अथवा, प्रकृति प्रलय जे ब्रह्माना सोवर्षे अथवा महाकल्पना अंते थायछे, ते समये सघळा पदार्थो अने तेना अंतरगुण अने सघळी श्रष्टिनुं प्रथःकर्ण थइ संकोचाइ ते सघलु तेनी मुळ प्रकृति अथवा एक बीजरुप शुद्ध केवळ चैतन्यमां लिन थायछे. उपर कहेला बेउ प्रलय शिवाय त्रीजो नित्य प्रलय कहेवायछे. ते सदा सर्वदा निरंतर, एक क्षणनापण अवकाश वगर, महाभुतवाळा पदार्थोनी वृद्धि अने नाशना अगणित रुपांत्तरो थया करेछे. ए विषे श्रीभागवतपुराणना द्वादसस्कंधना पांचमा अध्यामां एवुं कह्युंछे जे, नित्य प्रलयना योगे प्राणीओनी भिन्न भिन्न स्थिति, निरंतर बदलाती जायछे, केमजे समयना अचळ प्रवाहथी प्राणीओनो लय थइ

जुना जइ नवी श्रृष्टि उत्पन थया करेछे. आ श्रष्टिमां अ-चळ अने अक्षय कांइज राहि शकतु नथी. कांइपण फेरफार एक आंखनी पलकवारमां पण थया करेछे. एनी सत्यता आपणा जाणवामां आवती नथी, एनुं एक कारण ते फेरफार अति सुक्ष्मछे, अने बीजु कारण ते थवाना स्वाभाविक नियमनुं आपणे अज्ञानछे अथवा ते नियम उपर आपणु लक्ष नथी एजछे.

ए सघळु महाविद्यानी सहायताथी सत्य ठरेलुंछे, माटे निश्चय थइ शकेछे जे, आपणा स्थुळ शरीरमां ए प्रमाणे निरंतर फेरफार थया करेछे एटलुंज नहीं, पण आपणा सुक्ष्म शरीरनी मांहेथी जे आकाशना परमाणुओ निकळेछे तेमां पण तेज प्रमाणे फेरफार थया करेछे. ए कारणने लीधे आपणी आसपास जे अति सुक्ष्म वातावर्णछे, तेमां आपणा स्थुळ अने सुक्ष्म शरीरमांथी जे, आकाश अने तेजना परमाणु निकळेछे, ते पसरे छे, पछी ते प्राणशक्ति बीजा परमाणुओना संग्रहथी, तेने योग्य रूप अने रंगनुं धारण करेछे अने बीजा पदार्थोनी पेठे गंध अने नाद उत्पन्न करी शकेछे. अने तेने ज्यारे मनुष्यप्राणीनी इच्छाशक्तिना योगे गति मळेछे, त्यारे ते एवा रूप अने रंग धारण करेछे के, जेथी ते मनुष्यना यथार्थ अने योग्य कर्म अने गुण जणाइ आवेछे. पछी ते कर्म अने गुणो गमे तेवा गुह्य अने गुप्त राखेला होय, तोपण ते प्रगट थइ आवेछे. तेनी अंत-

रमां धारेली कल्पना प्रगट करी आपेछे. एवीज रीते ते प्राणशक्ति अथवा आकाशना परमाणुओद्वारा आपणा अंतरना विचारनो प्रवेश गमे तेटले अंतरे बीजु मनुष्य होय, तोपण तेमां अभ्यासथी करी शकाय छे. ए शिवाय ए प्राणशक्ति अदभुत तेज, शरीर अने जीवात्मा ए बेउना संयोगकर्णनु ततक्षण परीणाम छे. ए तेज स्थुळ शरीरनो त्याग कर्या पछी, पण जीवात्माने सुक्ष्म शरीरमां चोटी रहेछे. अने तेना सघळा पुनरावृतीना जन्ममां रेहेछे. अने एज आकाशना परमाणुओ कारण शरीर रुपे तेना अगणित जन्मना कर्मोनुं मुख्य तत्व छे.

संवत् १९४२ पोषशुद्ध ५ रवीवार.

कर्मनुं मुळ कारण.

आपणे संवत् १९४१ ना वैशाख शुद्ध १२ ने दिवसे जे व्याख्यान कर्युं तेमां शुभाशुभ कर्म विषे विचार करेलोछे. परंतु कर्म उत्पन्न थवाना मुळ कारण अने तेनी उत्पाति विगेरेनो विचार कर्यो नथी तेथी आ प्रसंगे ए विषे घटित सुचना आपवानी मुख्य अगत्य छे.

आ सभाना सघळा श्रोताजनना लक्षमां हशे जे, आपणे गया व्याख्यानमां प्राणशक्ति अने मुळ प्रकृति अथवा शुद्ध चैतन्य ए विषयमां स्पष्ट रीते सिद्ध करी दर्शावेलुंछे जे, प्राणशक्ति अथवा शारीरिक अग्नि

जेने, वैश्वानर अग्नि केहेछे. अथवा तेज पण केहेछे ए अति सुक्ष्म वस्तु, जे मनुष्यप्राणीना सुक्ष्म शरीरमां प्रवेश करी रहेलीछे, तेना योगे ते पोताना स्थुळ शरीरनी आसपास जे जे, पदार्थो अने मनुष्यना शब्द स्पर्ष, रस, रुप, अने गंध विगेरे जे पंच विषय छेतेनो संस्कार निरंतर थया करेछे तेथी तेना परमाणुओनुं आकर्षण पोतानी स्थुळ अने सुक्ष्म इंन्द्रिनी क्रियाथी जे श्वासोश्वास उत्पन थाय छे तेथी सदासर्वदा थया करेछे,तेथी घणाकाळना अभ्यासथी तेनी तद्रुप छाप सुक्ष्म शरीरमां चोंटी रेहे छे. अने तेज पुनर्पि जन्ममर्णनुं कार्य थायछे. ए सघळु स्पष्ट रीते समजवा सारु, आ प्रसंगे अगत्यनी सुचना करवी जोइये.

आपणे अगाउना व्याख्यानमां दर्शावेलुं छे जे, केवळ शुद्ध चैतन्य एकज मात्र अनादी अने सर्वेनुं मुळ कारण रुप बीज छे. तेनुं कारण बीजु कांइ नथी. हवे ए मुळ कारणरुप बीजमांथी जे प्रथम महाभुतनी तन मात्रनी स्फुर्णा थइ ते मुळ शुद्धचैतन्यनुं प्रथम कार्य केहेवायु; परंतु तेमांथी महाभुत हिरण्यगर्भरुप उत्पन्न थया, माटे ते कार्य उपला महाभुतनुं कारण थयुं. एवी रीते कारण अने कार्यथी अनंत कोटी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति थया पछी,वनस्पति, किट, अने पशुपाक्षि आदीक प्राणी अने जीवनी उत्पत्ति थइ, ते जे कार्यो करेछे, ते मात्र कारण अने

कार्यनाज अखंड नियमथी कर्या करेछे. परंतु ज्यारथी, मनुष्यप्राणी आदिकमां मन, बुद्धि, चित्त, हंकार अने इच्छाशक्ति विगेरे आपणे पुर्वे दर्शाव्या प्रमाणे पंचमहाभुतना सुक्ष्म परमाणुओना संयोगकर्णथी, उत्पन्न थया अने ज्यारथी मनुष्यप्राणीओ पोतानी इच्छाशक्तिथी कार्यो करवा लाग्या त्यारथी कर्म नामनी संज्ञा पडी, एटले कर्म केहेवा लाग्या. ए उपरथी, बुद्धिवान पुरुषोने, स्पष्ट जणाशे जे, मनुष्यप्राणीना, प्रथम जन्म केवळ निर्दोष अने विकार रहित निर्मळ होवाज जोइये. पछी जेम जेम श्रष्टिनी वृद्धि थइ, तेमां अनेक प्रकारना पंचइन्द्रि आदिकने प्रिय लागे एवा पदार्थो अने प्राणिनी वृद्धि थती गइ, तेम तेम आपणे पाछला व्याख्यानमां कह्या प्रमाणे ते सघळामां रहेली प्राणशक्ति अथवा वैश्वानर अग्निना, परस्पर श्वासथी अधिक संग्रह थवा माड्यो, तेणे करी मनुष्यप्राणी विगेरेनी, वृत्ति अने इच्छा अनेक प्रकारना भिन्न भिन्न कार्यो करवानी थइ. तेथी कर्म पास अथवा बंधन थवा माड्या. ते मनुष्य प्राणीने केवी रीते थायछे. तेनी अल्पसुचना कर्याथी, धर्मजीज्ञासु पुरुषोने ते समजाइ शकशे.

सर्वे धर्मजीज्ञासु पुरुषोने, प्रथम लक्षमां राखवानुं ए छे जे मनुष्य प्राणी जे, सघळा कार्यो अथवा कामो करेछे ते सघळानुं मुळ प्रथम कारण, त्रणा अथवा वृत्ति छे. अने कोइ पण कार्य उत्पन्न

थवाना कारणोमां, मुख्य कारण इच्छा छे. अने इच्छाशक्ति उत्पन्न थवाथी, प्रथम मनुष्यना अंतःकर्णमां विकार उत्पन्न थइ, शरीर अग्नि अथवा वैश्वानर अग्निने उत्तेजन करे छे. तेथी ते तेज अथवा प्राणशक्ति जेने, पश्चिमदेशना आग्रहि विद्वान "ओरा" केहेछे ते मनुश्यना शरीरनी रेषा अने स्नायु विगेरेमां प्रवेश कर्याथी, सघळा स्थुळ अवयवो पोतपोताना धारेला कार्यो करेछे; परंतु एमां मुख्य अगत्यनुं लक्षमां राखवानुं एछे जे, उपर कहेली प्राणशक्ति अथवा वैश्वानर अग्निनी, एटली प्रबळ सत्ता थायछे जे,ते एक समये पोतानी इच्छाथी प्रदिप्त थइ एटले, ते धारेला कार्यो स्थुळ इंन्द्रिओथी कर्या पछी, पण शांत पामती नथी, पण ते धुम्र अथवा धुवाडा रुपे द्रष्टोत्तपतिमां नाहि आवे एवी रीते स्थुळ शरिरमांथी, बाहेर निकळेछे, जेमां गुप्त रीते नाद, रंग, अने गंध रहेला होयछे; ते पछी अवकाषना वातावर्णमां समिलन थइ, पोतानी आसपासना सघळा जड, अने चैतन्यमां ते प्राणशक्तिमां रहेला इच्छाना अति सुक्ष्म परमाणुओनी, न्युन अथवा अधिक सत्ता करेछे. पछी ते आघात अने प्रत्यायातना अखंड नियम प्रमाणे पाछी,ते मनुश्यमां प्रवेश करी जे प्रमाणे प्रथम उत्पन्न थयेली इच्छा शुभ अथवा अशुभ होय, ते प्रमाणे ते मनुश्यने कर्म करावेछे. ए विषे एक परोपकारी समर्थ योगीये जे,

अल्प सुचना आपीछे. ते आ प्रसंगे जणाव्याथी, आग्रहि धर्मजिज्ञासु पुरुषोने कांइपण लाभ थइ शकशे.

" मनुष्य प्राणीनी प्रत्येक कल्पना, अथवा विचार जे के, एक समये अंतरमांथी उत्पन थया, ते पोताना अंतरमांथी प्राणाग्नि अथवा प्राण शक्तिना, इच्छावाळा परमाणुओनो संग्रह करी, बळिष्ट पाम्याथी, ते चंचळ मन शक्तिथी, उत्पन थयेला अल्पज्ञानी प्राणीयोनी, स्थिति अने लय जे प्रमाणे तेने उत्पन करनार मनुष्यनी, प्रबळ थयेली इच्छा शक्ति होय, तेज प्रमाणे थइ शके छे एटले शुभ कल्पना अथवा विचार करवाथी, चंचळ शुभ अने परोपकारना कार्योनी शक्ति उत्पन थइ शके छे, अने अशुभ अथवा मलिन कल्पना करवाथी, अशुभ अने घातकी शक्ति प्रबळ थइ शके छे. ए उपरथी स्पष्ट सिद्ध थइ शके छे जे मनुष्य प्राणी नीरंतर अवकाषमां, पोतानी कल्पनानी सुक्ष्म श्रष्टि उत्पन करे छे, एटले जे प्रमाणे पोतानी त्रष्णा,वृति अने मनना विकार होय ते प्रमाणे अति सुक्ष्म प्राणी उत्पन थइ शके छे. ए अति सुक्ष्म प्राण शक्तिनो वेग, अने सत्ता; कोइ संस्कारी अथवा मन अने शरीरनी क्षिण शक्तिवाळा मनुष्य उपर अल्प श्रमे अधिक थइ शके छे. ए शक्तिनी न्युन अने अधिक सता जे प्रमाणे ते शक्ति उत्पन करनारनी बळिष्ट इच्छा शक्तिथी प्रेरणा थइ होय, ते प्रमाणे थइ श-

के छे. अने एनेज आपणा शास्त्रमां कर्म कहे छे."
ए सिद्धांतनी पुष्टि सांप्रतकाळना पाश्चिम देशना नि-ष्पक्षपाती, अने आग्रहि तत्वज्ञानी पुरुषोये करेलीछे ते आपणे पुर्वे थइ गयेला व्याख्यानमां दर्षावेलुंछे, तेथी ए विषे आ प्रसंगे अधिक बोलवानी अगत्य नथी. परंतु आ प्रसंगे ए विषे साधारण न्यायथी, केवी रीते सिद्ध थाय छे. एनो विचार करीये.

आपणे मनुष्य प्राणीना मुळ कर्मनो, निष्पक्षात रीते विचार करवाथी, एवुं जणाय छे जे, मनुष्य-नी स्वभाविक वलणनीज शक्ति, ते मनुष्य प्राणीने बाह्य अने अंत्तर चंचलता उत्पन करी, गती अने अने आग्रह उत्पन करे छे, तेनुं मुख्य साधन त्रष्णा छे. ए त्रष्णा बे प्रकारनी होय छे,. एकतो सघळा प्र-कारनी अंध त्रष्णा, अने बीजा प्रकारनी विवेक, अने ज्ञानयुक्त, अर्थात सघळा प्रकारनी प्रेरणा जे के मनुष्यने कर्म करवाने आग्रह करे छे ते छे ए उ-परथी जोतां कर्मनुं मुळ कारण. त्रष्णा छे. अने जे कर्म अथवा कार्य छे ते, मनुष्य प्राणीनी बाह्य अने अंत्तर कल्पना जे के, अंत्तरमां धारी शकाय, अने बाह्यथी शब्दादीकथी, उच्चारण करी शकाय, तेने बळ अने उद्योग आपे छे.

कोइ पण कार्य अथवा कर्म करवाने, जे अग-त्यनां साधनो छे, तेमां मुख्य साधन इच्छाशक्ति छे. कार्य निर्माण करवानुं साधन इच्छाशक्ति छे, माटे

अति अल्प बाळक अथवा संपुर्ण घेलो मनुष्य जेना मां इच्छा शक्ति उत्पन थइ नथी तेनामां नवा कर्म उत्पन थवानुं कारण मुळमाज नथी, माटे एज सत्य न्याय उपरथी , स्पष्ट जणाय छेजे, मनुष्य प्राणीने मानसिक ज्ञान उत्पन थया पछी, कोइ पण कार्य अथवा कर्म करवानी इच्छा उत्पन थया पछीज,तेनो ते कर्ता पोते थाय छे. वळी कदापी इच्छा उत्पन थया पछी, ते प्रमाणे काया अने वाचाथी, वर्तेतो तेना जे पुर्व जन्म अने आ जन्मना शुभ अथवा अशुभ कार्यो. ते अधिक, बळवान थाय छे. अने कदापी मात्र इच्छाज उत्पन थाय, अने काया अने वाचाथी ते प्रमाणे वर्ते नही, तो तेनाथी बाह्य शुभ अथवा अशुभ कार्य थइ शकता नथी. आ सिद्धांतमां नितिवान पुरुषो अने जे मात्र नायथी विचार करनारा छे, तेमां घणो भेद छे. केवळ न्याइ मनुष्य एम कहे छे जे, दुगुर्णना कर्म कर्या ·शिवाय, मात्र मानसिक अथवा कल्पनाना दुर्गुणथी ते दुर्गुणी थइ शिक्षाने पात्र थतो नथी. अने जे नितिवान पुरुषछे ते मानासिक अथवा काल्पित दुर्गुण अने कार्मिक दुगुर्ण ए बेउनो प्रथक प्रथक विचार करेछे, अने ए बेउनो साथे पण विचार करे छे, एम छतां न्याइ मनुष दुर्गुणना कार्य करवानुं जे, मनथी प्रयत्न करवुं, तेनो विचार करे छे. माटे प्रयत्न ए मात्र इच्छाथी, कांइक अधिक छे. माटे कर्म करवानो सं-

बंध मानसिक प्रयत्न करवानी साथे घणो छे. एटले कांइ दुष्ट कर्म करवामां अचानक विघ्न आव्याथी, तेनी इच्छा उपरांत धारेलुं कार्य थइ नही शक्युं होय तो ते प्रयत्न कर्युं कहेवाय छे. माटे ते सिक्षाने पात्र गणाय छे, ए उपरथी स्पष्ट जणाय छे जे, प्रयत्न पण एक जातनुं नानु कर्म छे, जे के बीजुं मोटुं कर्म संपुर्ण रीते करवाने ते साह्यभुत छे. एवी रीते छतां केवळ न्याइ एवो नाय करे छे के, जो दापी कर्म थयुं ते छतां ते करनारनी दुर्गुणि इच्छा नही होय तो, ते पुर्ण अप्राधि केवातो नथी, अने ते न्याइ तेनी अंतरनी इच्छानी सयता तेना बाह्य कर्म उपरथी, निर्माण करे छे, अने ते उपरथी अप्राधी अथवा निर अप्राधी ठरावे छे, तेथी घणो प्रसंग सत्य नाय थइ शकतो नथी, केमजे घणं प्रसंगे एवुं बने छे के, घणा मानसिक ज्ञानवाळा अप्राधि पोतानो अप्राध, द्रष्टोत्पातिमां आवे नहीं, एवी बाह्य वर्तणुक दर्शावे छे, एटलुंज नही, पण तेनो संशय पण उत्पन थइ नहीं शके, तेने सारु अनेक प्रकारनी युक्ति अने बाह्य देखाव काया अने वाणीथी, दर्शावे छे तेथी घणे प्रसंगे महा चंचळ अने विद्वान न्यायाधिशथी, पण सत्य नाय थइ शकतो नथी. आपणे अनुभव उपरथी स्पष्ट जणाय छे के, जेम जेम मात्र एकला मानसिक ज्ञाननी उन्नति मनुष्य

प्राणीमां अधिक बळीष्ट थती जाय छे तेम तेम ते, पोताना प्रापंचीक. समाजीक, अने राजकीय कार्यो मां घणी युक्तिथी, छळ अने भेद करे छे एटलुं नही पण घणाखरा धार्मिक कार्यमां पण तेज प्रमाणे वर्ते छे अने घणे प्रसंगे तेवा मनुष्यो बाह्यथी प्रमाणिक अने सत्यतावाळा गणाय छे, माटे ज्यां सुधी उत्तम मानसि ज्ञाननी साथे आत्मिक बुद्धि ज्ञाननी उन्नति थइ नथी, त्यां सुधी स्वार्थ रहीत केवळ सत्यताथी, चाली निर्दोष परोपकारना कार्यो थइ शकतां नथी, माटे जे ठेकाणे प्रसिद्ध न्याय आत्मिक विषयथी भिन्नछे, ते ठेकाणे न्याय करनार अधिकारीने, समयनी मर्यादा अने नाय करवाना अकुंचित साधननी हदमां रहेवुं पडेछे, ते माटे न्यायाधिसने सत्यता शोधी काडवा सारु हद वगरनो समय अने पोतानी तिक्षण मानसिक शक्तिनो निर्माण करता अधिक खर्च करी शकातु नथी, परंतु आत्मविद्या अने उन्नति पामेला आत्मज्ञानना साधनने, उपर कही तेवी मर्यादा नथी, ते सघळा कर्म अथवा कार्यो गमे तेवा अल्प अथवा महत्वना होय, अने गमे तेवा गुप्त अने बीजरूपे होय, तोपण तेनी यथार्थ सत्यता गुप्त विद्याना योगे तेने जणाइ शकेछे. एवा महापुरुषो अति प्राचिनकाळमां आर्यदेशमां घणा हता. अने ते समये ते देशना राजा एवा परोपकारी महापुरुषोनी साक्षताथी सत्य न्याय करी शकता हता.

ते माटे कर्मना नायनं अगत्यनुं साधन एछे जे, आपणे मनुष्यप्राणीना अंतःकर्णनो, एकाग्रताथी विचार करी तेना बाह्य अने अंतर ए बेउ कार्योथी, तेनी इच्छा केवा प्रकारनीछे, ते जाणवाना साधनोनो, अभ्यास राखवानी मुख्य अगत्यछे. इच्छाशक्तिनी सत्ता मनुष्यप्राणीना शरीरमां सर्व व्यापकछे, एटले स्नायुयोनी सत्ता जे के, मनोमय चक्रमांथी, निकळी चक्षुनी स्नायु, कर्णनी स्नायु, अने वाकविगेरे सघळी स्नायुमां प्रवेश करी सघळा शरीरमां ते सत्ता बेसाडी शके छे. पछी ए इच्छाशक्ति बळीष्ट थइ एटले, वैश्वानर अग्नि अथवा प्राणाग्नि जेके, मनोमय चक्र अने स्नायु विगेरेमां प्रसरेलोछे, ते मनुष्यप्राणीना, सघळा शरिरमां विद्युतना वेगथी, ततक्षण पसरी सघळी स्नायुओमां गती उत्पन्न करेछे, त्यार पछी सुक्ष्म स्नायु जे के, मुख्य धोरी नसना संबंधथी सघळा शरीरमां ते प्राणाग्नि मोकली शके छे, तेथी उपली स्नायुयो संकोचाइ जायछे. अने पछी उपर कहेली, इच्छाशक्ति प्रमाणे, घटित अवयवोने, गति आपी पोतानुं धारेलुं कार्य अथवा कर्म करावे छे, एटले वैश्वानर अथवा प्राणाग्नि इच्छाना योगे चलित थइ, बाहार नीकळवाथी, बाह्य अने अंतरना कार्यो करी शकायछे. वळी एटलु अवश्य लक्षमां राखवानुं छे जे, आपणी बाह्य क्रियाथी, आपणी शरीरनी यांत्रिक क्रियाओ थायछे. एटलुज नहीं, परंतु आ-

पणी सघळी स्नायुनी क्रियाथी, ते प्राणाग्नि अथवा ते वियुत सत्ता उत्पन्न करीने शरीरनी मांहे रहेला सघळा रसने रसायण प्रयोगना फेरफार करावेछे. तेणे करी, मनशक्तिद्वारा आपणी शक्तिमां,पण घणो फेरफार थायछे. केमजे, जे सघळी कल्पना अथवा विचार, जे उत्पन्न थायछे, ते आपणा मननी, आत्मिक स्थिति, रसायण स्थिति अने वियुत, अथवा प्राणाग्निनी स्थिति, ए सघळी स्थितिओनो फेरफार करी नाखेछे एटलुंज नहीं, पण आपणा सघळा शरीरनी चरीया, बदली नाखेछे. तेमां जेवी बळिष्ट कल्पना होय, ते प्रमाणे फेरफार पण बळिष्ट थायछे. ते माटे मननो आग्रही प्रयत्न अने प्रबळ थयेली इच्छाशक्तिनो वेग, ए बेउ अगत्यनी निति विगेरेनी असर करी तेनी सत्ता बीजाना मन उपर करी शकेछे. जो कदापी कर्म अथवा कार्य प्रसिद्ध होय, एटले जेम आपणे शब्द उच्चारण करीये, अथवा आपणो हाथ उचो करीये, तो उपर कहेला वैश्वानर अग्निनुं कार्य यांत्रिक कहेवाय,परंतु ते कार्य अथवा कर्म मानसिक अथवा गुप्त होय, अने आपणे मात्र कल्पना अथवा विचार उत्पन्न करी शकीये तो तेनी असर वियुत अथवा प्राणाग्निनी कहेवायछे. अने एज कारणने लीधे यांत्रि कार्य अथवा कर्मनुं परिणाम, बीजा गुप्त कार्यना,परीणाम कर्ता अधिक प्रसिद्ध थायछे. परंतु ए बंने कार्यमां परीणाम उत्पन

कर्नातो वैश्वानर अग्नि अथवा प्राणाग्निछे. ए उपरथी विद्वान अने मानसिक ज्ञाननी, उन्नतीने पामेला पुरुषोने द्रढ निश्चय थशे जे, आपणे पाछला व्याख्यानमां सघळा मनुष्य प्राणीमां गुप्त महाशक्ति जे प्राणाग्नि, अथवा वैश्वानर अग्निछे एवुं सिद्ध कर्युंछे, ते असत्य अने कल्पित नथी, परंतु हालनी पश्चिमदेशनी महाअद्‌भुत विद्यार्थी पण निष्पक्षपाती विद्वानोये एनी सत्यता सिद्ध करेलीछे.

संवत् १९४२ पोष शुद्ध १२ रवीवार

कर्मनो नियम (नाय)

जे लोकमा मनुष्यप्राणी पोतानी कल्पना अने इच्छानो उपयोग करी शकेछे, ते लोकमां कर्म उत्पन्न थायछे. अने कर्मनो अचालित अने सत्य नियम एवोछे के, जेवा कर्म करे, तेवा फळ भोगववाज पडे. जे प्रमाणे सत्ताधारी अधिकारी, अथवा पुर्ण सत्तावाळो राजा, कोइ समये एक तरफी असत्य न्याय करेछे, ते प्रमाणे मनुष्यप्राणीनां कर्म फळनो अन्याय अने असत्य रीते एक तरफी न्याय परलोकमां कोइपण समर्थ इश्वरी सत्ताथी थइ शकतो नथी. पण जो सत्य कर्म करतो, तेथी योग्य लाभ थाय अने असत्य कर्म कर्याथी योग्य शिक्षा स्वाभाविक रिते, अचालित सत्य न्यायथी मोडीवेहेली थया विना रेहेती नथी. ए शुभ अथवा अशुभ कर्म उत्पन करनार, पोतानी

कल्पना अथवा विचार छे. ज्यारे कर्ता, अने भोक्ता, पोते जाते मनुष्यप्राणी छे, त्यारे तेने सत्य असत्यनो यथार्थ निर्णय करवानी स्वतंत्र इच्छाशक्ति होवी जोइये. अने ते प्रमाणे सघळा मनुष्यप्राणीने आ पृथ्वि उपर स्वतंत्र इच्छाशक्तिछे. माटेज सत्यन्याय प्रमाणे एक रीते जे पोतेज कर्ता, अने भोक्ताछे. ए उपरथी स्पष्ट जणायछे के, जेमां उपर कहेली, स्वतंत्र इच्छाशक्ति नथी, एवा जड पदार्थो अने वनस्पति, आदिकमां कर्मनो नियम नथी. परंतु तेमां जे कार्यों थायछे, ते कारण अने कार्यना अचालित नियम प्रमाणे थया करेछे, एटले जेवुं स्वाभाविक कारण होय, तेज प्रमाणे कार्य उत्पन्न थइ शके. मनुष्यप्राणीना जन्मनुं कारण, पुर्वजन्ममां पोतानी स्वतंत्र इच्छाना योगे, जाणे अथवा अजाणे, जे कर्मो कर्या होय तेनुं, परीणाम छे. ए अचालित सत्य न्यायमां कोइ पण दीवसे फेरफार थइ शकतो नथी. ए उपरथी स्पष्ट रीते सिद्ध थइ शकेछे के, अति कनिष्ट प्रकृतिनी पंक्ति, जेमां त्रष्णा अथवा इच्छा उत्पन्न थइ कांइ पण ज्ञाननो उदय थयो नथी, पण अज्ञानथी, मात्र पोतपोताना कार्यो, आकर्षणथी करी शकेछे, तेने कर्म नथी, पण कारण अने कार्यनो संबंधछे. अने जे अति उत्तम चैतन्यनी पंक्ति अथवा दशाने पामेलाछे, तेमां त्रष्णा अने इच्छा छता, तेने स्वाधिन थइ, स्वार्थनी इच्छा उत्पन्न कदी थती नथी,

अने तेने शुभ अने अशुभपणानुं भानपण नथी, तेने सघळुज शुभछे. ते उत्तम कर्म केहेवायछे. अने तेने कर्तव्य बाकी कांइ नथी.

शुभ अने अशुभ ए कार्य कारण संबंधना योगे छे. ए उपरथी एकने जे शुभ थाय ते बीजाने अशुभ थइ शकेछे. केवळ शुभतो, मात्र प्रकृतिना कार्य सहित एक शुद्ध चैतन्यमांज रहेलुंछे. जे प्रमाणे अंधकार शिवाय प्रकाशनुं ज्ञान थइ शकतु नथी, ते प्रमाणे अशुभना अनुभव थया शिवाय शुभनी योग्यता यथार्थ जाणी शकाती नथी. आपणे जे कार्य कर्युं ते शुभ अथवा अशुभछे ए जाणवा सारु, ते कार्यनी स्थुळ, अने सुक्ष्ममां निति अने प्रकृतिना कार्योमां, अने ज्ञान अने बुद्धिचैतन्यना कार्योमां, असर थवानुं यथार्थ निराकरण करवानी अवश्य अगत्यछे. ते उपरथी जेटला शुभ परीणाम थया होय ते एक बाजुए राखवा अने अशुभ जे परीणाम उत्पन थया होय ते, बीजी बाजुए राखी तेनी यथा न्यायथी तुलना कर्याथी, स्पष्ट जणाइ आवशे के, आपणे जे कर्म कर्युंछे, तेमां अधिक शुभछे के अशुभछे.

कांइ पण कार्य अथवा कर्म करवा सारु मुख्य त्रण साधनोछे. प्रथम हेतु, वर्तणुक, अने कर्म एछे. तेमां हेतु एटले त्रष्णा अथवा प्रेरणा, ए कार्य करवाने अगाउ उत्पन्न थइ शकेछे. अने ज्यारे ते त्रष्णाने धारेला कार्यमां प्रेरी एटले, ते त्रष्णा जाते कार्य थइ

जायछे. अने ज्यारे ते कार्य बन्यु एटले तेनी परीपु-
र्णता थइ. हवे जे वर्तणुकछे, तेतो पोतानी इच्छा-
शक्तिने, धारेला कार्यमां कामे लगाडवी एजछे.माटे
तेमां जाते कांइ गुण अथवा अवगुण रहेलो नथी; ते
माटे कर्मना नायमां हेतु, अने कार्य, ए बेउ आवी
शकेछे. ए बेउ पोतपोतानी भिन्न भिन्न असर स्थुळ
अने सुक्ष्म अवस्थामां करेछे, ते छता ते बेउनो केट-
लोएक परस्पर संबंधपण रहेलो होयछे. जे गतीओ
प्रकृति अथवा चैतन्यना लोकमां जणायछे, ते पुर्वे
प्रकृति अथवा चैतन्य लोकमां जे उत्पन्न थयेली हती,
तेनुंज परीणामछे, एटले हेतु अथवा त्रणार्थी स्थुळ
प्रकृतिना लोकमां उत्पन्न थएली जे गति, ते यांत्रिक
एटले अवयवनुं परीणाम छे ते स्थुळ प्रकृतिना लो-
कमांज उत्पन्न करेछे. परंतु यांत्रिक अथवा अवय-
वोनुं जे परीणाम, ते मानसिक विकार, ज्ञाननी क्रिया,
नितिनुं वलण, अने आत्मिक उत्तम विचारो, ए
सघळुं उत्पन्न करी शकेछे. ते सघळुं फरीने प्रकृतिनी
श्रष्टि अथवा लोकमां पण उत्पन्न करी शकेछे. हवे
जे सुक्ष्म लोक संबंधी मानसिकप्रेरणा अथवा वलण
छे,ते सुक्ष्म लोकमां कार्य करेछे खरुं, परंतु मानसिक
प्रेरणाथी जे, स्थुळ प्रकृतिना कार्यो करावे छे, त
स्थुळ परीणाम उत्पन करेछे, पछी ते फरी उत्तम
लोकमां पण असर करी शकेछे; परंतु कदापी मा-
नसिक प्रेरणा ज्ञाननी मर्यादामां रही कार्यो करे,

तो तेनी प्रथम असर ज्ञानना लोकमां थाय, अने जो ते प्रेरणा, नीति अथवा आत्मिक सत्तामां रही तो, प्रथम अति उत्तम लोकमां उत्तम असर थइ शकेछे.

कोइ पण कार्य कर्या शिवाय, मात्र एकला मनना हेतु, अथवा त्रणाथी, स्थुळ श्रष्टिमां कांइ कार्य थइ शकतु नथी, परंतु ते त्रणाथी जे, मनमां विकार थायछे, तेनाथी केटलाएक अगत्यना फेरफार स्थुळ शरीरमां थइ शकेछे. जेम एकाएक अपरीमित अति भय पामवाथी, घणे समये शरीरना मांहेला रक्तना फरवानी गती बंध पडी जइ, मस्तकनुं रक्त एकाएक निचु उतरी पडवाथी, मृत्यु प्राप्त थायछे. वळी तिरस्कार, प्रिति, वैरभाव अदेखाइ, स्पर्धा, मलिन इच्छा अने अपरमित विपइ त्रणा ए सघळी अंतर वस्तु पोतानी थोडीघणी नीशानी स्थुळ शरीर उपर राखी शकेछे. ए उपरथी स्पष्ट जणायछे जे, स्थुळ शरीर उपर सत्ता करनारु मनछे, माटे मनुष्यप्राणीनी, थोडीघणी वर्तणुक अने चाल चलगतनी सत्यता, तेना चेहेरा अथवा शरीरना अवयवोनी चर्या उपरथी जणाइ शकेछे; हवे जो हेतु अपरीमित त्रणाथी, उत्पन्न थयो होय तो, तेनी असर बळीष्ट थइ ते घणा समय सुधी रही शकेछे; एटले केटलाएक अविचारी मनुष्य क्षणीक कारणने लीधे एकाएक अंध प्रेरणाथी, क्रोधना आवेशमां आवी कोइनो घात करेछे, परंतु केटलोएक समय गया पछी, ते अंध

प्रेरणानी गती मंद पड्या पछी, तेने अति पश्चात प थायछे; परंतु जो कदापी कोइ पण कार्य यथास्थित विचार करी, बुद्धिज्ञानथी सत्य निर्णय कर्या पछी, कर्युं होय तो, तेथी घणु करी पश्चाताप पामवानो संभव होतो नथी. तेमां ज्यारे कोइ वगर धारेलु नवु कारण उत्पन थाय त्यारेज पश्चाताप थइ शके. हवे एटलु लक्षमां राखवुं अगत्यनंछे, जे धारेला हेतुने कदापी कार्यमां प्रेर्यो नही होय, तोपण तेथी मनमां ते हेतुनी त्रणाना परमाणुओनो संग्रह थवाथी, ते घणा समय सुधी स्थाइ रही शकेछे. तेनो नाश थतो नथी, तो विवेक अने द्रढ बुद्धिज्ञाननो उपयोग करे तो, तेने पोताना मुळ हेतुमांथी वाळीने, बीजा शुभ जणायला हेतुमां प्रवर्तावि शकाय. हवे हेतु वगरना जे स्वभाविक रीते कामो थायछे, तेमां प्रतिष्ठा अने अप्रतिष्ठा ए वेउमांनुं कांइ होतु नथी, अने एवा कामो कर्मना नियमथी थता नथी, परंतु ते मात्र कारणथी उत्पन थपुं जे, कार्य तेनाज नियमथी थायछे. तोपण एवा स्वाभाविक रीते अथवा वगर इच्छाथी थता जे कामोना परीणाम, तेथी जे नवु कारण उत्पन थायछे, तेनी असर, जे प्रमाणे हेतु अने इच्छाथी, कार्यो अथवा कामो थाय, अने तेनाथी जे परीणाम थइ, ते करनारने असर थाय तेज प्रमाणे थायछे. जेमके कोइ मनुष्यने एकाएक पडवाथी, अथवा अकस्मात हाथपग भागे अथवा

बीजी कांइ व्यथा थायतो, तेथी जे अंते दुखनुं परीणाम उत्पन थायछे. ते कोइ पण हेतथी, अथवा कोइनी इच्छाथी थयेली व्यथाना जेवुंज दुख उ-त्पन करे छे.

वळी हेतु पण शुभ अने अशुभ एवा वेप्रकारना होयछे. अथवा एक रीते शुभ हेतु अने बीजी रीते अशुभ हेतु, ए प्रमाणे पण होयछे. जेम आपणे शुभ इच्छाथी, कोइना प्राणनी रक्षा करीये. तो, ते शुभ हेतु केहेवाय, अने कोइ पण प्राणीने, विना कारण पीडा करीये तो, जेनी रक्षा करी, तेने विषे शुभ हेतु अने सारी इच्छा केहेवाय, परंतु तेज कार्यमां जे पशुनो वध कर्यो, तेमां अशुभ हेतु अने भुडी इच्छा केहेवाय.

शुभ काम करवाने हेतु पण शुभ होवो जोइये. कदापी आपणो हेतुतो, अति शुभ होय परंतु ते हेतुने पारपाडवा सारु प्रयत्न करवामां न्युनता होय तो, तेथी संपुर्ण शुभ कार्य थइ शकतु नथी. वळी आपणाथी जो, अनायासे कोइनुं भलु थइ गयुं होय तो, तेथी आपणे अल्प संतोष थायछे. केमजे ते भलु करवामां आपणो मुळ शुभ हेतु नोतो कोइपण कार्य शुभ छे के नही एनो निश्चय करवासारु मात्र ते कार्य करवानो हेतु प्रतिष्ठित होवो जोइये एटलुज नहीं, परंतु ते कार्यनुं परीणाम अंते शुभ उत्पन्न थवुं जोइये. जेम कोइ भिक्षुक अथवा भीखारीने, आपणे

कांइ द्रव्य अथवा अन्न तेना मात्र पोषण थवाना हेतुथी आपीये, तो आपणो हेतु परीपुर्ण शुभ खरो, परंतु तेनुं कार्य शुभ कींवा अशुभ एनो आधार ते द्रव्य अथवा अन्ननो जेवो उपयोग ते करे तेना उपर छे, एटले आपणु जे द्रव्य गयुं तेथी आपणे एक द्रव्य संबंधी हानी थइ, अने तेमां जो ते भिखारी ते द्रव्यनी कांइ माध्य वस्तु पीये अथवा कांइ अयोग्य विषय भोगमां तेनो उपयोग करेतो, तेथी आपणु अंतःकर्ण दुखाय, अने वळी आपणे जो सत्य न्याइ होइये तो एम लागे जे, आपणे भीखारीने द्रव्य विगेरे आपती वखत, जोइये तेवो योग्य विचार कीधो नहीं, तेणे करी आपणे कीधेलु सघळु कार्य, अशुभ थयुं. अने कदापी ते भीखारीये, आपणे आपेला द्रव्यनो उपयोग आपणा शुभ हेतु प्रमाणे, पोताना शरीरपोषणसारु कीधो होय तो, अगर जो आपणे तेथी द्रव्यनीतो कांइक न्युनता थइ, परंतु ते कार्य संपुर्ण रीते शुभ थयाथी आपणा मनमां अति संतोष थशे.

कदापी आपणे एम जाण्युं जे, आपणा आपेला द्रव्यनो उपयोग ते भीखारी अशुभ करवानोछे ते छता जो आपणे तेने द्रव्य आपीये तो, आपणो हेतु अने परीणाम बेउ अशुभज होय, एमांतो कांइ संशय नहीं, परंतु कदापी आपणे आपेला द्रव्यनो आपणे अशुभ उपयोग धार्या छता, ते भीखारी तेनो शुभ

उपयोग करे तो, आपणे अशुभ हेतुथी शुभ कार्य कर्युं केहेवाय, अने तेथी कदापी व्यवहारमां बाह्यार्थी लाभ अथवा प्रतिष्ठा मळे, तोपण तेथी नितीना नियम प्रमाणे आपणे ते शुभ कर्म कर्युं एम कदी थाय नहीं. अने आपणु कांपण शुभ फळनुं बंधाय नहीं.

जे कार्योमां हेतु अति उत्तम अने शुभ होय, पण वर्तणुक अति अशुभ होय तो, ते कार्योथी जे मानसिक कर्म बंधाय, ते तो शुभ बंधाय परंतु तेनी अशुभ वर्तणुकनी जे असर, ते अति मोटी थाय छे. जेमके पुर्वे आग्रही अने नितीवान राजपुतो यवन आदीकनी साथे. युद्ध कर्ता कर्ता पोतानो पराजय थवानो संभव जणायाथी, पोतानी स्त्रि कुटुंब वीगरे शत्रुना हाथमां गयाथी, तेमनी लाज अने निति रेहेशे नही, एवा निश्चय उपरथी, ते स्त्रि विगरे कुटुंबनो पोताने हाथे वध करी, अने पोताना मेहेलने अग्नि शळगावी, पोते पण याहोम करी, प्राण अर्पण करता हता वळी पश्चिमदेशना हालना सुधरेला देशोमां पण एवि रीतनी वर्तणुक थाय छे ते, आपणा जाणवामां छे. अमेरीकाना उत्तर अने दक्षिण देशना लोकोमां जे परस्पर युद्ध थयुं हतुं ते मात्र गुलामनो धंधो बंध करवा सारु चाल्युं हतुं, अने तेमां हजारो लोकोनो, संहार थयो हतो. एवा सघळां कार्योमां नितिना नियम प्रमाणे जोतां ए शुभ कार्य छे पछी मानासिक ज्ञानथी जोतां, ते अ-

शुभ लागे अने तेथी घणा लोको नींदे पण खरा. परंतु एवा शुभ हेतुथी, माणसनो संहार कराव्यो, ए क्रियमाणनुं संचित, थइ प्रारब्ध बीजा अशुभ हेतुनी, अशुभ वर्तणुकनी पेठे प्रगट थइ अल्प समयमां ते प्रथम भोगवातुं नथी, पण प्रथम तेना शुभ हेतुनुं फळ आ संसारमां प्रथम भोगव्या पछी, कदाची बीजा जन्ममां करेला कर्मोनुं प्रारब्ध थइ ते भोगवाय.

हवे जे कार्योमां हेतु अशुभ होय, अने वर्तणुक देखीती सारी अने शुभ होय तो तेथी तेना अजाणपणामां, तेनुं प्रारब्ध अशुभ बंधातु जाय, अने तेवा मनुष्यो भोळा अने विश्वासु लोकने, पोताना स्वार्थ सारु घणी रीते फसावे छे, ते छतां अपरीमित स्वार्थने लीधे पोताना दोष पोते मानसिक ज्ञानवाळा छतां तेने जाणता नथी अने पोताना अशुभ हेतुनुं प्रारब्ध बंधातां सुधी, तेना पुर्वेना शुभ कर्मनुं शुभ फळ भोगवे छे.तेथी उलटो अधिक अंधकारमां पडे छे ए सघळु छतां जे पुरुषनो हेतु अने वर्तणुक बेउ अशुभ अने मलीन होय, तेना करतां उपलो मनुष्य श्रेष्ट छे. केमजे ते पोताना स्वार्थनी इच्छा सारु कांइक अयोग्य कर्म करे छे, तेथी जन्मांतरमां ते भोगव्या पछी, ते थोडा समयमां सुधरी शके छे, परंतु अशुभ हेतु, अने अशुभ वर्तणुकवाळो, पोताना आ जन्म पर्यंत निरंतर निंदित अने दुष्ट कर्मो कर्याथी बीजा जन्ममां पण तेवां कर्म करवानी वृति थवाथी

अति दिर्घकाळ सुधी जन्म मर्ण भोगव्या करे छे.

जे कार्योमां हेतु अने वर्तणुक, ए बंने सदा शुभज होय तो. ते मनुष्य जे कार्यो करे, ते स्वार्थ रहित केवळ परमार्थनाज होय छे. ते नीरंतर मनुष्य प्राणीना शारीरीक, अने मानसिक, दुखनुं नीवारण करवामां पोतानी शक्ति प्रमाणे तन, मन, अने धननो खर्च करवामां विचार करतो नथी, तेमां पण जे दिर्घद्रष्टिवाळा अने महाज्ञानी पुरुषो छे. ते आ श्रष्टिना सर्वे सुखो पोताना अनुभवथी, तुच्छ अने निमाल्य जाणे छे. माटे तेवा प्रतापि पुरुषो, निरंतर केवळ शुभ हेतुथी, मनुष्य प्राणीना बुद्धि चैतन्यनो प्रकाश थयाथी, महा अद्भुत लाभ थइ अंते कैवल मोक्षनी प्राप्तिनो मार्ग देखाडवामां प्रयत्न करे छे. ए सघळा विकार रहित निर्लोभि मनुष्यनां कर्म केवी रीतनां बंधाय छे एनो विचार बुद्धिवान पुरुष करशे तो, तेने आपोआप जणाइ आवशे, माटे आ प्रसंगे ए विषे अधिक बोलवानी अगत्य नथी.

हवे अंतनी सुचना एटली आपवानी छे के, आ उपरथी विद्वान अने भणेला पुरुषोने तो जणाशे जे आपणा जन्मना कर्मो अति उंची गणीतविद्या जेवा छे माटे जे मनुष्य मानसीक ज्ञाननी उन्नति थयापछी पोताना कर्मो उपर लक्ष राखी तेनो हिसाब राखी ते प्रमाणे वर्ते छे तेने अति उतम लाभ थाय छे. ए उपरथी तेने जणाइ आवे छे जे, मारे केवी रीत-

नां कर्मो करवां के जेनुं परीणाम आ लोकमां अने परलोकमां अति उत्तम अने निर्दोष थाय. अने एवो मनुष्य स्थुळ देहनो त्याग कर्या पछी, उत्तम लाभ मेळवी शके छे. अने जे मनुष्य, पोताना कर्मोना हिसाब उपर लक्ष नहीं राखतां बेदरकारीथी वर्तेछे. तेने अंते पश्चाताप थइ, तेने बेदरकारीनुं अशुभ फळ भोगववुं पडे छे. अने वळी पोताना जन्मना कर्मोनो हिसाब जोइ जे, मनुष्य सदा सर्वदा सावध रही योग्य शुभ कर्म करवाने प्रवर्ते छे, ते उत्तरोत्तर वृद्धिने पामतो पामतो अंते माया अथवा प्रक्रातिना बंधनथी मुक्त थइ कैवल्य मोक्षने पामे छे. ए उपरथी सघळा विद्वान अने उन्नति पामेला ज्ञानी पुरुषोने स्पष्ट जणाशे के, बुद्धि ज्ञाननी उन्नति थवानुं मुख्य साधन स्वाभाविक श्रष्टिना नियमथी, जाणीता थवुं ए छे. अने ए बिजी गणीतविद्या करतां अति कठण गणित विद्या छे. माटे ए मेळववाने अति आग्रहथी प्रयत्न करीए तोज एनी प्राप्ती थइ शके.

संवत १९४२ माघ शुद्ध १० रवीवार.

विवेक.

योग्य अने अयोग्यनो यथार्थ न्याय करवानी जे शक्ति तेने विवेक केहेछे, ते विशे आपणा देशना प्रतापी महा ज्ञानी अने महात्माओए एवुं कह्युं छे जे, ज्यां सुधी. मनुष्य प्राणी विवेक हीन छे,

एटले पोते पोतानी मेळे सत्य असत्यनो यथार्थ नि-र्णय करी शकतो नथी, त्यां सुधी ते अति उत्तम जे आत्म ज्ञान, ते प्राप्त करवाने योग्य पात्र थयो नथी. वळी आपणे दीर्घ द्रष्टिथी विचार करीशुं तो, जणा शे जे, संसारमां जे अति उत्तम कार्यो थइ शकेछे, ते पण विवेकना योगेज, थइ शके छे; विवेक हिन पुरुष अल्प बुद्धिना, अधम केहेवाय छे. माटे सघ-ळा मानसिक ज्ञानवाळा मनुष्यने पण विवेकनी स घळां कार्योमां, अवश्य अगत्य छे.

हवे जे मनुष्यने पोताना सत्य स्वरुपनुं, यथार्थ ज्ञान छे. ते उत्तम विवेकी पुरुष केहेवाय छे. माटे अविवेकी पुरुष अज्ञानी, अने बुद्धिहिन केहेवायछे; जेम कोइ मनुष्य पासे अतुल्य द्रव्य होय, ते छतां तेनुं तेने ज्ञान होय नही, अने विवेक हिन होयतो तेनाथी ते द्रव्यनो परमार्थना कार्योमां घटित सत्य उपयोग थाय नहीं, अने पोतानाथी पण तेनो उप-भोग यथार्थ रीते थइ शके नहीं अने ज्यां सुधी म-नुष्य कोइ पण कार्य यथार्थ रीते करवामां लक्ष ल-गाडतो नथी, त्यां सुधी तेने तेना शुभ किंवा अशु भ परीणामनुं अज्ञान छे. वळी ज्यां सुधी मनुष्ये पो-ते कांइ वस्तु जोवा अने जाणवाने प्रयत्न करेलो न-थी, त्यां सुधी तेना मनथी ते वस्तु जाणे छेज नहीं, एम लागे छे, तेवो मनुष्य घणा मनुष्यना समुहमां छतां जाणे पोते एकलोज होय, एम समजी सदो-

दित दुखीयो रेहे छे. तेज प्रमाणे अज्ञान अथवा आवरणना योगे, पोतानी आसपास अजवाळु अथवा प्रकाश होय, ते छतां ते जाणी शकतो नथी, एवीज रीते पोतानामां अति अलोकिक महा अद्भुत शक्तिवाळो अंतर आत्मा छतां तेने अविवेकी पुरुष जाणी शकतो नथी,वळी पोतानामां बळ अने शक्ति छतां, अज्ञान अने अविवेकने लीधे, ते यथार्थ रीते ते जाणी, तेनो योग्य उपयोग करी शकतो नथी. यथार्थ वस्तु जाणवी, एटले तेने मात्र स्थुळ चक्षुथी जोवी एटलुंज नहीं, वस्तु मात्र चक्षुथी जोवी एटले ते समये ते वस्तुनुं स्वप्नु आव्या जेवुं थाय छे; परंतु वस्तु जाणवी, एटले विवेकथी ज्ञान द्वार यथार्थ रीते, तेनुं सत्य ज्ञान मेळववुं, एज नियम प्रमाणे आपणु आयुश आ संसारमां मात्र स्वप्नावतज छे, अने घणा अविवेकी मनुष्य मर्ण पर्यंत ए स्वपनामांथी जागी विवेकथी सत्य वस्तु सोधवाने प्रयत्न करता नथी.

मृत्यु ए शब्दथी, विवेकी ज्ञानी पुरुष नाश समजता नथी, पण स्थुळ देहनुं रुपांत्तर थइ ज्ञान अथवा जाणपणामां केटलोएक फेरफार थाय छे. जे प्रमाणे जाग्रत अवस्थामां, अल्प अने मंद फेरफार थाय छे ते प्रमाणे उपर कहेला स्थुळ देहनुं, रुपांतर थया पछी जे फेरफार थाय छे, ते पण अति सुक्ष्म अने मंद थाय छे, अथवा संस्कार बळीष्ट होय तो, जे

प्रमाणे आपणे निद्रावस्थाना समये, स्वपनामांथी एकाएक जागृत थइये छइये, ते प्रमाणे स्थुळ देहनो त्याग कर्या पछी, एक दम सुक्ष्म देह प्राप्त थइ, ते लोकनुं भान ततक्षण थाय छे.

जाग्रत अवस्थामां, जे आपणे ज्ञान अने भान रेहे छे, तेना कर्ता स्वप्ना अवस्थामां ज्ञान अने भान भिन्न अने जुदा प्रकारनुं होय छे. तेज प्रमाणे स्वप्ना वस्थामां जे ज्ञान रेहे छे, तेना करतां सुसुप्ति अवस्थानुं ज्ञान केवळ भिन्न होय छे. जे मनुष संपुर्ण सुसुप्ति अवस्थामां छे, ते कांइ मर्ण पामेलो नथी, परंतु ते समये ते मनुष आत्मावस्थामां केवळ लीन थइ जाय छे, अने ते अवस्थानुं ज्ञान, जाग्रत थया पछी, तेने रेहतुं नथी. घणे प्रसंगे मनुष्य ज्यारे समाधीनी अवस्थामां होय छे, ते समये तेने आ लोकनी विस्म्रति थइ, परलोकनुं ज्ञान उत्पन्न थाय छे. अने ते समये, अधिक डापण अने ज्ञान प्राप्त थाय छे; परंतु ज्यारे ते समाधीमांथी जाग्रत थइ आ लोक तरफ तेनुं संपुर्ण लक्ष लाग्युं, एटले समाधीनी स्थितिमां तेणे जे कांइ कर्युं होय अथवा कह्युं होय तेनी तेने कांइज स्म्रती रेहेती नथी. सुसुप्ति अवस्थामां जीवात्मानी अति उत्तम शक्ति, पोताना इश्वरी अंतर आत्मानी साथे, समिलन थाय छे. अने जे मनुष समाधीनी स्थितिमांछे, ते उत्तम लोकना उत्तम ज्ञानने प्राप्त करे छे; ते समये तेने आ लोकनी कां-

इज, स्म्रति रेहेती नथी. आ अति महत्वना विषयनी सत्यतानी पुष्टि सांप्रतकाळना पश्चिम देशना आग्रही तत्वज्ञानी विद्वान केवी रीते करे छे, तेनो कांईक विचार आ प्रसंगे करीये. " केटलाएक आग्रही तत्वज्ञानी वैद्य एवुं केहे छे जे, कोइ समये कांइ उपचार करवा सारु, मनुष्यने विषारी तेजाब सुंघाड्याथी तेनी इंद्रियोनी सुद्धि जइ बेभान थाय छे, तोपण तेनी आसपासनुं तेने अंदरनुं भान रेहेछे. कोइ समये तेनुं ज्ञान सुक्ष्म देहमां प्राप्त थाय छे, ते समये तेनो सुक्ष्म देह विरक्त थइ तेना स्थुळ देहने जे छेदनादीक क्रिया थाय छे, ते जाणी अने जोइ शके छे. वळी मनुष्य प्राणी जाग्रत अवस्थामां, पोताना विकार अथवा दुर्गुण गुप्त राखी शके छे. पण कांइ विषारी वस्तुनो उपयोग कर्याथी, पोताना ज्ञान उपर सत्ता राखी सकाती नथी, तेथी घणे प्रसंगे ते ते मनुष्यने जेवी चाल अने दुर्गुण विगरे होय ते यथार्थ रीते, ते अवस्थामां जणाइ आवे छे "

आपणा निस्प्रही, अने केवळ सद्गुणी राजयोगीयो एवुं केहे छे जे, सघळा मनुश्य प्राणीना जीवात्मामां अंत्तरात्मा अथवा सुत्रात्मामां अति प्रबळ अलोकीक शक्ति रहेली छे, परंतु ज्यां सुधी यथार्थ विवेक उत्पन थइ, सत्य ज्ञान प्राप्त थयुं नथी, त्यां सुधी तेनो उपयोग तेनाथी थइ शकतो नथी, जेम कोइ मनुष्यनुं द्रव्य गुप्तपणे पोताना घरमांज रहेलुं

होय, पण तेनुं ज्ञान ज्यां सुधी तेने नथी, त्यां सुधी ते द्रव्यनो उपभोग ते मनुश्यथी थइ शकतो नथी. जेम जेम मनुष्य प्राणी पोतानुं सत्य स्वरुप ओळखवाने प्रयत्न करी विवेकी थाय छे, तेम तेम तेने अद्भुत ज्ञान प्राप्त थतुं जाय छे, अने जेने पोताना सत्य स्वरुपनुं जेटलुं अज्ञानछे, तेटलुं तेने आवरण नडे छे अने भ्रमित थतो जाय छे. जे मनुष्य पोताना सत्य स्वरुपने यथार्थ रीते जाणे छे अने जेने पोतानी आसपासनी सघळी वस्तुओना नियमादिकनुं यथार्थ ज्ञान छे, तेज योगी केहेवाय छे. आत्म ज्ञान प्राप्त करी पोतानी जे अलोकीक शक्ति तेनुं ज्ञान प्राप्त करवुं अति कठण छे, अने ते ज्ञान प्राप्त थयुं एटले परीपुर्ण थयो.

विवेक रहित जे अल्पज्ञान, ते केवळ इन्द्रियोनुं ज ज्ञान समजवुं, एवा ज्ञानना योगे मनुष्य प्राणी बीजा पशुओनी पेठे सारीरिक सुख अने दुखनो अनुभव लेछे. तेणे करी सघळी विषइ इन्द्रियो चंचळ थाय छे, अने ते स्थुळ शरीरवडे, भोग भोगवी अथवा कष्ट सहन करी, आनंद अथवा खेद पामे छे जे मनुष्य संपुर्ण रीते इन्द्रियोना विषयमांज, तल्लिन थयो होय, ते मात्र तेवाज विषयनी उन्नति करवामां पोतानो काळ क्षेप करेछे, ते शीवाय बीजुं तेने कांइज ज्ञान होतु नथी, तेथी ते विषे कोइ बीजो सत्यज्ञानी बोध करे तोपण ते मिथ्या अने

असत्य समजे माटे एवो विवेक हिन पुरुष पशु तुल्य छे, केमजे जे प्रमाणे पशु पक्षीने हार, निन्द्रा अने मीथुननुज ज्ञान छे, तेथी ते तेवाज साधनो मेळववा सदोदित प्रयत्न करेछे, ते प्रमाणे उपर कहेलो विषइ पुरुप वर्ते छे. ते माटे मानसिक ज्ञाननी उन्नति पामेला, अने संसारना कार्यमां विवेकी एवा पुरुष छतां, तेमने उपर कह्या प्रमाणे मात्र पंच इन्द्रियोना विषय सुख भोगववानुज ज्ञान होय छे, अने तेवा मनुष्य अल्प सुखथी, सुख माने छे अने तेवा अल्प दुखथी, पोताने दुखीओ माने छे, ए जोइ संपुर्ण विवेकी पुरुषने, आश्चर्य लागे छे; केमजे एवा संपुर्ण विवेकी अने ज्ञानी पुरुष अल्प सुखथी पोताने, सुखीया मानता नथी, अने अल्प दुखथी पोताने दुखीया मानता नथी, अने आत्मज्ञान मेळववा सारु कोइ समये स्थुळ शरीरे पोते दुख मान्या शिवाय महा कष्ट पण सहन करे छे.

कदापी कोइ विवेकी पुरुष, पोताना शरीरना गमे ते भाग उपरथी, अथवा गमे तेवा सुंदर बाह्य पदार्थ उपरथी, पोतानी प्रबळ इच्छा शक्तिना योगे, वृति कहाडी आत्मज्ञानमां निमग्न रेहेतो, तेने ते शरीरना भागने पिडा थयाथी, अथवा बाह्यना सुंदर पदार्थ जोवाथी दुःख अथवा आनंद थतो नथी, केमजे तेने तेनुं भानज नथी. बीजा केटलाएक अविवेकीने पण पोतानी वृति संपुर्ण एकाग्रताथी, बी-

जा मनुष्यमां अथवा पदार्थमां राख्याथी, ते मनुष्य अथवा पदार्थने, जे कांइ विकार थाय, तेनुं ज्ञान थोडुं घणुं ते माणसने थइ शके छे. एवी रीते. एका ग्रतावाळा मनुष्यना पोते तेवा मनुष्यना सुखथी सुखीयो, अने तेवा दुखथी पोते दुखीयो थाय छे. एवीज रीते कोइ समये अति स्नेहथी, पक्षी पोताना बच्याना एकाएक मरणथी, पोते मरण पामेछे, अने मनुष्य पण अपरीमित स्नेह अने त्रष्णाना योगे दुखी थइ, घणे प्रसंगे मृत्यु पण पामेछे, केमजे धारेलो पदार्थ अथवा मनुष्य पोता थकी भिन्न समज्या नथी, पण तेने पोतानुंज स्वरुप समज्याथी, तेने सूख दुख थयाथी पोताने सुख दुख थाय छे.

हवे मनुष प्राणीनुं मृत्यु थाय छे एम कह्युं तो, ए उपरथी एम समजवानुं छे जे, ते मनुष्यना शब्द स्पर्ष, रस, रुप, अने गंध ए पंच इन्द्रियोनुं ज्ञान जे के तेना स्थुळ शरीरमां प्रवर्तेलुंछे. तेनुं आकर्षण थइ ते ज्ञान संकोचाइ, मात्र ते मनुश्यना प्राणमय कोषमां स्थित थाय छे, तेथी ते निरउपयोगी थयेला स्थुळ शरीरनो त्याग करी, अनमयकोशमां भिन्न स्थितिमां रहे छे, त्यां तेने पंच अंत्तर इन्द्रियो द्वारा-ज्ञान उत्पन थइ, जे प्रमाणे स्थुळ शरीरमां रही पंच विषयो सत्य जणाता हता, तेज प्रमाणे तेने प्राणमय कोषमां सघळा विषय अने ज्ञान सत्य जणाय छे, परंतु एनो प्रकार एवो छे जे, केटलाएक मनुश्य स्थु

देह त्याग कर्या पछी, ततक्षण तेनुं सघळुं ज्ञान प्राणमय कोशमां द्रढ थइ जे अपरीमित त्रष्णा तेने स्थुळ शरीरमां प्रबळ हति, ते सघळी त्रष्णानो उपभोग प्राणमय कोषवडे करे छे. अने केटलाएक मनुषनुं मृत्यु थया पछी, तेनुं पंच इन्द्रियोनुं ज्ञान थोडा समय सुधी शुन्य थइ जइ, ते प्राणमय कोषमां रही ते अल्प समय सुधी निन्द्रावस्था जेवी स्थितिमां रेहेछे. परंतु अंते थोडा समय पछी, तेनी स्थुळ इंन्द्रियोनुं सघळुं ज्ञान चंचळ थइ, ते सुक्ष्म शरीरना योगे पुर्वेना सघळा विकारो, अने कल्पनानो अनुभव करेछे. ते अनुभव जे प्रमाणे तेनी पुर्वेनी बळिष्ट इच्छाशक्ति होय, ते प्रमाणे स्पष्ट अने झांखो जणायछे. जो पुर्वे अति आग्रहथी बळिष्ट इच्छाशक्ति करी होयतो, ते सुक्ष्म अथवा लिंग देहथी, स्पष्ट अनुभव करेछे एटलुंज नहीं, परंतु तेणे जे स्थुळ शरीरमां कार्यो कर्या होय, तेनुं पण ज्ञान तेने सुक्ष्म अवस्थामां कांइक रही शकेछे. अथवा निर्बळ इच्छा शक्तिवाळा, मनुष्य, जे प्रमाणे कोइ संपुर्ण निद्रावस्थामां होय, तेमांथी कांइ कारणने लीधे एकाएक झबकीने अकस्मात जागे, ते समये तेनी आसपासना पदार्थोनुं ज्ञान तेने जेवुं असंपुर्ण रेहेछे तदवत निर्बळ इच्छाशक्तिवाळा मनुष्य सुक्ष्म देहमां अनुभव लेछे.

एवा निर्बळ इच्छाशक्तिवाळा, अल्प ज्ञानी सुक्ष्म शरीरना प्राणीओने, कोइ अति प्रबळ इच्छाशक्ति

वाळो स्थुळ देहमां रही आवाहन अथवा आकर्षण करेतो, ते मनुष्यनी इच्छाशक्तिथी प्राणवायुना सुक्ष्म परमाणुओनुं समिलन थवाथी, ते सुक्ष्मप्राणीना पंचविषयनुं हलकु ज्ञान प्रबळ थइ, ते प्रमाणे तेमांज निमग्न रेहेछे तेणे करी तेना शुद्ध चैतन्यना उत्तम ज्ञाननी अधिक विस्म्रती थती जायछे.

जे प्रमाणे स्थुळ शरीर अने तेनी प्राणशक्ति क्षिण थवाथी ते स्थुळ शरीर निरउपयोगी थइ, तेनुं प्रथःकर्ण थइ जायछे, ते प्रमाणे सुक्ष्म शरीर अने तेनी प्राणशक्ति क्षिण थवाथी तेनुं पण स्वाभाविक रीते, प्रथःकर्ण थइ तेना परमाणुओ पोतपोताना तत्वमां मळी जायछे. तेम थया पछी पण मनोमय कोष रहेछे, तेमां निति, ज्ञान, अने आत्म विगेरेनुं जे ज्ञान पुर्वे मेळवेलु होय, तेना केटलोएक परमाणुओ रेहेछे तेथी ते देवलोकमां निवास करी त्यां, ते उत्तम ज्ञाननो संपुर्ण अनुभव कर्या पछी, केटले एक काळे ते भोगववानी वृति ज्यारे क्षिण थायछे, त्यारे, ते केवळ निर्मळ थयेलो प्राणि पुनःमृत्युलोकमां आवी, अधिक ज्ञान मेळवी उत्तम स्थिति प्राप्तकरेछे.

जेम स्थुळ शरीरमां स्वप्न उत्पन्न थायछे, तेम सुक्ष्म शरीरमां स्वप्न उत्पन्न थायछे. ते सुक्ष्म शरीरनी स्वप्नावस्थामां जो, यथार्थ बळीष्ट ज्ञान नहीं होय तो, ते घणे प्रसंगे स्थुळ शरीरने, जाग्रत अवस्थामां जइ नहीं शके, एवी जगाये लइ जायछे, तेथी त्यां

कोइक समये अतिं कष्ट सहन करी. महाव्यथा पण थाय छे.

जो कदापी मनुष्यप्राणीनुं बुद्धिज्ञान यथार्थ रीते बळीष्ट पाम्युं होय तो तेने जणाशे जे तेनी स्थुळ अवस्थामां जे स्थिति थायछे तेना कर्ता ते सुक्ष्म अवस्थामां भिन्न होयछे, एटले जेम स्थुळ शरीरवाळा मनुष्यने स्वप्नानी सघळी वस्तु जे स्वप्नावत अने मिथ्या जणायछे,तेम सुक्ष्म शरीरवाळाने ते सघळी स्वप्नानी वस्तु सत्य जणायछे. एवीज रीते मृत्यु पाम्या पछी स्थुळ शरीरनी जे सत्य जणायेली वस्तु ते सुक्ष्म शरीरमां मिथ्या अने स्वप्ना तुल्य जणाय छे. अने एज प्रमाणे सुक्ष्म शरीरनी सत्य जणायेली वस्तु ते स्थुळ शरीर प्राप्त थया पछी ते स्वप्नावत अने असत्य भासेछे.

साधारण समाधीना समये मनुष्यने जे अंतर ज्ञान थायछे ते सदा संपुर्ण अने सत्य होतु नथी समाधी करावेला माणसना ज्ञान उपर, समाधी करावनार मनुष्यना ज्ञाननी, थोडीघणी सत्ता बेसेछे. कोइ समये समाधी थयेलो मनुष्य पोतानी गयेली जगा अथवा पदार्थनुं वर्णन करेछे, ते सत्य पडेछे. परंतु ते जगा अथवा पदार्थनुं सपुर्ण ज्ञान समाधी करावनारने होवुं जोइये, एम छतां पण कोइ समये समाधी पामेलो मनुष्य, समाधी करावनारनी सत्तानी बाहेर जइ, पोते स्वतंत्रपणे पण वर्तेछे. जेम

जाग्रत अवस्थावाळो मनुष्य स्थुळ देहथी, संपुर्ण ज्ञानयुक्त होय अथवा भ्रमिष्ट, अथवा केवळ अज्ञानी होयछे, तेज प्रमाणे सुक्ष्म शरीरवाळो, ज्ञानी, अज्ञानी, अथवा भ्रमिष्ट थायछे. मनुष्यना सुक्ष्म शरीरने घणे प्रसंगे, निन्द्रामां अथवा समाधीना समये कोइ पण जगाए अथवा कोइ पण मनुष्य, अथवा वस्तु तरफ आकर्षण थायछे. अने त्यां पोते जायछे, तोपण तेनी आसपासनी वस्तुने यथार्थ रीते ओळखी शकतो नथी वळी घणे प्रसंगे एवुं थायछे जे, मृत्यु समये सुक्ष्म शरीर स्थुळ देहनो त्याग कर्या पछी, अल्प ज्ञानावस्था तथा पुर्वेनी त्रष्णा प्रमाणे ते वस्तु अथवा मनुष्य तरफ खेचायछे, ते समये कोइ बळीष्ट इच्छा-शक्तिवाळो, बीजो मनुष्य एकाग्रताथी, तेने आकर्षण करे तो, उपर कहेला सुक्ष्म शरीरवाळा प्राणीनुं अ-ल्पज्ञान, बळीष्ट पामी ते मध्यस्थ द्वारा यथार्थ प्रश्नोना उत्तरो आपी शकेछे, ते पिशाच प्रवेश केहेवायछे.

जो आपणे स्थुळ शरीरमां छता अति आग्रहथी एक चित्ते, कोइ पण जगा अथवा मनुष्यनुं, एका-ग्रताथी, ध्यान करीये, तो अति उत्तम बुद्धिनी कल्पना त्यां जायछे, अने तद्रूप ते द्रष्टिथी जोयेपण छे. ते समये जो आपणा सुक्ष्म बुद्धिज्ञाननी यथा योग्य, उन्नति थइ होय तो आपणु सुक्ष्म शरीर आ-पणी प्रबळ थयेली इच्छा शक्तिना योगे ते आपणी कल्पनानी साथे जइ, ते जगा अथवा मनुष्यने, जाणी

अने जोइ शकेछे. ते अवस्थामां आपणे जे जोयुं अथवा जाण्युं होय, तेनुं ज्ञान जाग्रत अवस्थामां कोइने रही शकेछे, अने कोइने रही शकतु नथी. परंतु आपणु जो पंचविषयासक्तवाळु सुक्ष्म शरीर बंधायेलुं होयतो, ते स्थुळ शरीरने चोटी रहेछे. केम जे तेनी साथे तेने पोतानी धारेली कल्पना करता, अधिक प्रीति होयछे, माटे ते सुक्ष्म शरीर ते कल्पनानी साथे जइ शकतु नथी, तेथी मात्र एकला मननी कल्पनानाज मिथ्या अर्थ विनाना तुरंगो थायछे.

सुक्ष्म शरीरने बाहार काडी धारेली जगाये जवानो आज अति गुह्य मार्गछे, एवि स्थिति करवानो अभ्यास बाळपणथी होय तो, कार्यनी सिद्धि अल्प श्रमे थइ शके, अथवा केटलाएक मनुष्यनी संस्कारना योगे, स्वाभाविक स्थितिज एवी होयछे, अथवा व्याधी थवाथी अशक्तपणाने लीधे एवी स्थिति थइ गइ होय जे, स्थुळ शरीरमांथी, सुक्ष्म शरीर जाणे अथवा अजाणे बाहार नीकळी शके, अने जाणे अथवा अजाणे पोताना प्राणाग्नि अथवा वैश्वानर अग्निनी सहायताथी अथवा बीजाना प्राण अग्निना परमाणुथी कोइ पण जगाये अथवा माणस पासे जइ शके, अने कोइ प्रसंगे ते सुक्ष्म शरीरनी साथे, बीजा स्थुळ परमाणुओनुं संयोग कर्ण थइ, त घट अथवा स्थुळ थइ, बीजाने स्थुळ इंद्रिथी जोइ अने जाणीशकाय.

जेने उत्तम प्रकारनुं मानसिक ज्ञानछे, अने ते

जो निरंतर उत्तम ज्ञान मेळववानी इच्छा राखेतो, तेनुं ज्ञान उत्तरोत्तर वृद्धिने पामी, अंते सत्य अने सर्वोत्तम बुद्धिज्ञाननी प्राप्ति करी,तेमांज सदा निमग्न रेहेछे. जेनुं लक्ष आत्मज्ञानमां तलिन थयुं छे, ते मनुष्यनी आसपास सुछे, अने सु थायछे, तेनी तेने कांइज खबर रेहेती नथी, ते पोताना आत्मज्ञानमां निमग्न रेहेछे; तेने इंन्द्रियोना विषयोनुं भान रेहेतु नथी, कदापी तेनुं स्थुळ शरीर एक जगाएछे, तो पण तेनी कल्पना निरंतर उत्तम प्रकारना विचारमां रेहेछे. जे प्रमाणे नितिना सत्य ज्ञाननी उन्नति थइ होय, ते प्रमाणे मनुष्यने सत्य असत्यनो यथार्थ निर्णय करवानी शक्ति आवेछे,पछी तेनी एवी स्थिती थायछे जे, जो ते कदापी एकलो होय अथवा विषइ लोकना समुहमां होय, तोपण तेने कांइ माठी असर नहीं थतां, ते बीजा उपर पोतानी कांइक सत्ता बेसाडी शकेछे.

हवे जे अल्प ज्ञानी अने संस्कार वगरनो पुरुष छे, तेनी मनोवृति, सदासर्वदा पोतानी आसपास जे इंन्द्रियोना पंचविषयोछे, तेनी तरफ आकर्षण पाम्याथी, तेत्रा परमाणुओनो संग्रह कर्याथी, ते संसारना विषय सुख प्राप्त करवामांज तन अने मनथी, प्रयत्न कर्या करेछे. एवी रीते विषय सुखमां तदरूप थयेलो मनुष्य संसारना देखीता विषयसुख शिवाय, बीजु सघळु असत्य माननारो, मृत्यु पाम्या पछी,

विषय सुखनी अपरीमित आसक्ति अथवा त्रृष्णाने लीधे, दीर्घकाळसुधी सुक्ष्म देहथी, कल्पित' श्रष्टिमां भ्रमण कर्या करेछे. ते माटे जे मनुश्यने उत्तम बुद्धि ज्ञाननी उन्नति करवानी इच्छा होय,तेणे इंन्द्रियोना पंचविषयना विचारमां निरंतर निमग्न रेहेवुं नहीं, परंतु पोतानी अंतरमां द्रष्टि करी, आत्म स्वरुपनी जे, अंतरमांथी प्रेरणा थाय, तेमांज एकाग्रताथी,लक्ष आपवानो अभ्यास करवाथी, वृद्धिने पमाय छे. तेना प्रकार घणाछे, परंतु ते सघळानो मुळ हेतु, इंन्द्रियोना विषय तरफथी मनोवृति काडी, आपणे पुर्वे कह्या जे पंचकोष अथवा सप्त प्रकारनी स्थिति, तेनो विचार करी आत्मस्वरुपमां निमग्न रेहेवुं.

जे प्रमाणे कोइ महाज्ञानी, उत्तम प्रकारना ज्ञाननी, चर्चा करतो होय, अने ते ठेकाणे बीजा माणस होय, परंतु तेना उपर यथार्थ लक्ष आपे नहीं, तो ते उत्तम ज्ञाननी बीजा माणसने कांइज असर थाय नहीं, तेज प्रमाणे कोइ उत्तम संस्कारीने, तेना अंतरमांथी शुभ प्रेरणा थया छतां, तेना उपर लक्ष आपे नहीं तो, पछी तेने शुभ प्रेरणा अंतरमांथी, उत्पन थती बंध थइ जाय,अने तेनो श्रम व्यर्थजाय.

अति उत्तम बुद्धिचैतन्य ज्ञान मेळववानुं कठण एछे जे, पोतानी विषय इंन्द्रिओनी जे, अपरीमित त्रृष्णा, ते तरफथी मनोवृति संकोचन करी, बुद्धिज्ञानना अति उत्तम विषयो तरफ वाळवी, ए मात्र

पुनरावृत्तिना संस्कारथीज थइ शकेछे; परंतु ते संस्कार वेहेलो अथवा मोडो थवानो आधार, आपणा पुरुष प्रयत्न उपर रहेलोछे. एवी रीते अति आग्रहथी, प्रयत्न करता करता, केवळ सत्य ज्ञान प्राप्त थइ, सर्वोत्तम स्थिति प्राप्त थइ, एटले पोताने कांइ पृथक जीव अथवा वस्तु समजतो नथी, परंतु ते सघळु प्रकृति अथवा मायानुं कार्य समजी, पोते सर्व व्यापिक केवळ शुद्ध चैतन्यज छे; अने एज अंतनी सर्वोत्तम स्थिति छे. ए प्रमाणे संसारमां रह्यो छतां, जे मनुष्य एवी रीते समजे छे. ते उत्तम ज्ञानी, उत्तम, विवेकी, अने महान पुरुष जाणवो.

संवत् १९४२ माघवद्य ३ रवीवार

आत्मज्ञाननी उन्नतिनुं मुख्य साधन.

सघळा बुद्धिवान पुरुषोना जाणवामांछे जे, आपणी श्रष्टिमां सघळा प्राणीओ करता, मनुश्यप्राणीमां विशेष ज्ञानछे, तेना योगे तेनुं लक्ष उत्तम सुख प्राप्त करवा तरफ लागेछे. तेमां जेम जेम तेना ज्ञाननी उन्नति थइ, तेने सुख प्राप्त थता जायछे, तेम तेम ते भोगवेला सुख अल्प जणाइ, तेमां आनंद अल्प जणातो जायछे, तेथी तेने अधिक सुख प्राप्त करवानी इच्छा उत्पन्न थवाथी, पोतानी आसपास जणायला अधिक उत्तम सुख प्राप्त करवा उत्तरोत्तर अधिक प्रयत्न करतो जायछे, एवो साधारण स्वभाविक

नियमछे, परंतु जे मनुश्यने पुर्व जन्मनो संस्कार थयो होय तो, तेने बाळपणमां बाळचेष्टा करवामां असाधारण प्रिती थाय नही, अने जेम जेम तेनुं ज्ञान वृद्धिने पामे, तेम तेम तेने पोतानी आसपासना जे संसारना सुख होय, ते अल्प अने क्षणभंगुर जणाता जाय;तेणे करी तेनी मनोवृत्ति निरंतर आत्मज्ञाननी उन्नति थवाथी जे लाभ थाय, तेज अति उत्तम समजी तेवा साधन मेळववा प्रयत्न करे छे. कदापी प्रथवी उपरना जुदा जुदा मत पंथनी रुढी अने मार्गमां केटलीएक भिन्नता होयछे. परंतु आत्मज्ञाननी उन्नतिनुं, मुख्य अचलित साधन सघळा मतपंथ अने धर्ममां, अति प्राचिनकाळथी ते आज लगी, एकजछे; ते ए छे जे इंन्द्रियोना विषयोने विवेकथी नियममां राखी, तेना उपर सम, दम, तितिक्षा, उपरती श्रद्धा अने समाधान विगरे अधिक उत्तम गुणोनी सत्ता बेसाडवी एजछे. तेणे करी मनुष्य आत्मज्ञाननी, उन्नति करी शकेछे. ए ज्ञाननी प्रथम प्रेरणा सघळा मनवांत्तर, अने युगमां सर्वज्ञ अने सर्व शक्तिवान, देवो अने योगेश्वरथी थयेलीछे.

सत्य योगी अथवा आत्मज्ञाननी उत्तम उन्नति पामेला पुरुषो, कोइनी मात्र एकली कृपाथी थइ शकता नथी,परंतु कृपानी साथे स्वतःपुरुष प्रयत्नथी थइ शकायछे; ते जन्मांतरना संस्कारथी अनेक प्रकारना कष्ट सहन कर्या पछी थइ शकायछे.

कष्ट अथवा दुःख उत्पन थवानुं मुख्य कारण जे चलित अने क्षणभंगुर सुख अथवा कोइपण वस्तु छे तेम छतां ते सुख अने वस्तु प्राप्त करवामां निरंतर अपरीमित त्रष्णा, अने लक्ष राखवुं एजछे. तेमां आपणे अक्षय लक्ष राखीये छइये एटलुज नही, परंतु ते सुख जाणे अचलित होय, एम जाणी ते प्राप्त करवामां दीर्घ प्रयत्न निरंतर कर्या करीये छइये तेवुं सुख प्राप्त थयुं एटले, आपणे तेमां लुब्ध थइ, आनंद पामीये छइये, पण ते आनंदमां अकस्मात विघ्न पडवाथी, ते सुखनो लय थायछे; अने ते सुखनो क्षय थयो एटले कष्ट अने दुःख प्राप्त थायछे.

कष्ट अथवा दुःखनो विचार उत्पन थयो एटले आनंदमय कोष अथवा वेष्टण जे, जीवात्मा उपरछे ते छेदाइ जइ, तेनी साथे जे कष्ट प्राप्त थाय छे, ते एकलु शारीरिक नही पण मानसिक ज्ञाननुं कष्ट उत्पन थायछे; तेणे करी आपणी सघळी स्थिति अव्यवास्थित थइ जायछे.

ते एवी रीते थायछे जे, आपणा जन्ममां जे कष्टो आवेछे. तेमां प्रत्येक कष्ट समये, आपणे एवुं लागेछे जे, ते कष्ट अति कठण अने सहन थइ शके नही एवुं छे, ए विषे विचार कर्याथी, आपणे एवुं जणायछे के, जे प्रमाणे बाळकना सघळा अवयवो एक पछी एक एटले प्रथम, माथु, पछी हाथ, अने पग ए रीते जुदा जुदा समये वृद्धिने पामता नथी,

पण ते सघळा एकज समये एकज समान नीयम प्रमाणे वृद्धिने पामेछे, ते प्रमाणे मनुष्यना सदगुण अने दुर्गुण ए बेउनी उन्नति थवानो नियमछे. मनुष्यनुं स्वाभाविक वलण एवुं होयछे जे, मात्र एकज विषयभोगना कार्यो तरफ लक्ष आपी, सदगुणनी वृद्धि करवा तरफ अलक्ष थयाथी, तेमांथी, अनेक प्रकारना महाकष्टो उत्पन थइ, केवळ निर्माल्य थइ जवाय छे.

अपरीमित चिंतानुं परीणाम दुखछे. साधारण मनुष्यो कांइ पण प्राप्त करवा सारु,पोतानी योग्यता करता अधिक प्रयत्न करेछे, ते साधारण रीतनी स्थितिमां राहि संतोष मानता नथी, अने समयने योग्य जेटलु प्रयत्न करवुं घटे तेटलु करी, तेमां संतोष मानता नथी; ते विषय सुख प्राप्त करवाने अघात प्रयत्न करे छे, तेणे करी तेनी त्रष्णा अति प्रबळ थवाथी, नवा कर्म उत्पन थइ, ते बीजा जन्ममां भोगववा पडेछे.

दुख उत्पन्न थवानो अंकुर अपरीमित त्रष्णा, अने कोइ पण कार्य अथवा साधन करवामां फळनी इच्छा राखवी एज छे. जो कदापी अजाणपणामां एवी इच्छा रेहेछे तोपण तेणे करी तेना घणा दीवसना प्रयत्न घणी वार निश्फळ जायछे. अने सघळा कार्यमां फळनी इच्छा प्रधानपणे, रेहेछे, तेथी चिंता उत्पन करवानो मार्ग पोताने हाथे करी लेछे, अने

चिंता उत्पन्न थइ, एटले तेनी साथे अनेक प्रकारना संशय, भय, अने निर्माल्यपणु प्राप्त थायछे.

आत्म ज्ञाननी उन्नति करवानी इच्छा राखनारो मनुश्य पाछळ कह्या प्रमाणे संपुर्ण विवेकी अने उत्तम मानसिक ज्ञाननी स्थितिवाळो थवो जोइये, अने जे प्रमाणे तेनुं सत्य आत्मज्ञान उन्नतिने पामतुं जाय छे, ते प्रमाणे तेने अलोकिक अने अद्‌भुत शक्ति प्राप्त थती जाय छे. अने तेज प्रमाणे आपणा जोवामां आवे छे जे, आ श्रष्टिमां जन्मांत्तरना संस्कारथी, जेवी तेना मानसिक ज्ञाननी उन्नति थइ होय, ते प्रमाणे तेने लाभ मळी शकवानो संभव छे. जेम बुद्धिहिन अल्प ज्ञानो नीरंतर दासत्वपणुं करी पोतानुं पोषण करे छे, अने उत्तम मानसिक ज्ञानीयो अने दिर्घ द्रष्टा द्रव्यादिकना लाभ मेळवी परीपुर्ण सत्ता भोगवी शके छे. तेवीज रीते वारंवार आपणा सांभळवामां आव्या प्रमाणे, योगीओ अति उत्तम आत्म ज्ञानना बळने योगे, सर्वोपरी महा अद्‌भुत शक्ति प्राप्त करी शके छे. अने ते प्राप्त करवानुं मुख्य साधन अति आग्रहथी पुरुष प्रयत्न करी, संपुर्ण आत्मज्ञान मेळववुं एज छे.

घणा मनुष्यना धारवामां एवुं छे जे, योगी थवाने कांइ अति उत्तम आत्म ज्ञाननी उन्नति थवानी अगत्य नथी, परंतु साधारण कोइ गुरु द्वारा हठयोगना आसन प्राणायाम विगरे क्रीयाओ साध्य

कर्याथी, धिमे धिमे अलौकिक शक्ति आवती जाय छे. अने साधना करी अधिक शारीरिक कष्ट सहन कर्याथी, उत्तम योगीनी स्थितिने पोचाय छे एवो असत्य निश्चय करी एवुं समजे छे जे, योगी थवा सारु, अति अद्भुत अने अलौकिक शक्ति, मेळववानी, अवश्य अगत्य छे अने तेवी अद्भुत शक्ति बीजाने देखाडवी,एज योगीनुं प्रयोजनछे. एम समजेछे.

जे मनुष्य पोताना स्वार्थ सारु तेवी अद्भुत शक्तिनी इच्छा राखे छे, ते मनुष्यनो जे महा समर्थ अने स्वार्थ रहित परोपकारी योगीयो छे, ते धिक्कार करे छे. परंतु जे सत्य योगीछे ते अद्भुत शक्तिने पोताना आत्मज्ञाननी उन्नति थवानुं साधन समजेछे.परंतु जे मनुष्य अलौकिक शक्ति प्राप्त थवाना हेतुथी,आत्मज्ञाननी उन्नती करवा प्रयत्न करे छे, अने तेमां पोतानी कांइ न्युनताने लीधे तेनो श्रम व्यर्थ गयो एवुं तेने जणाय, एटले ते मार्गेथी पडी जइ "अतो भ्रष्ट अने ततो भ्रष्ट" थाय छे. माटे विवेकी पुरुषोये आत्मज्ञान केवळ सत्यता जाणवा सारुज मेळववानो हेतु राखी, मनुष्य प्राणीमां परस्पर भ्रातु भाव राखी पोते निर्दोष रीते वर्ति अति प्राचीन काळना रुषि अने मुनीयोना सत्य सिद्धांत प्रमाणे वर्तवानो आग्रह राखवो.

ते माटे अंतनी सूचना करवानी एटलीज छेजे, कोइ पण हठयोगी ज्ञान शिवाय मात्र हठयोगनी क्रीयाना साधनथी, अद्भुत शक्ति मेळववानो सेलो

मार्ग दर्शावे तो, तेमां अति घणां विघ्नो छे, केमजे शारीरीक बळ उपरांत हठ क्रीया करवाथी, अनेक नवा व्याधी उत्पन थइ, परीणाम विपरित थाय, अने कदापी तेवी क्रियाथी, कांइक अलौकिक शक्ति आवेली जणाय तो, ते आवेली प्रेरणानी गतिक्षिण थाय अने स्थुळ शरीरनी स्नायु विगरे अशक्त थाय अथवा बीजा कारणने लीधे, सिथळ थइ जाय तो, जे अल्प शक्ति प्राप्त थइ होय, तेनो पण नाश थवानो संभव छे. परंतु उत्तम आत्म ज्ञान प्राप्त थया पछी, जे अदभुत शक्ति वगर इच्छाये प्राप्त थइ होय ते स्थुळ इन्द्रियो विगरे सघळी स्नायु सिथळ थाय तो पण, आत्म बळथी, जे अदभुत शक्ति प्राप्त थइ होय, तेनो कदी नाश थतो नथी पण ते अक्षयरेहेछे.

संवत १९४२ फालगु शुद ८ रवीवार.

वैश्वानर अग्निना वर्ण (रंग)

आपणे पुर्वे वैश्वानर अग्नि अथवा चैतन्याकर्षक विद्या विशे, साधारण व्याख्यान करेलुं छे. हवे आ प्रसंगे वैश्वानर अग्निना केवा वर्ण अथवा रंगो होय छे, अने ते मनुष्य प्राणीमांथी, नीकळ्याथी, तेना गुण अने कर्म केवी रीते दर्षावे छे, तेनुं संक्षेपमां वर्णन कर्याथी, आग्रही अने बुद्धि ज्ञानवाळा गुप्त विद्याना विद्यार्थिने, लाभ थया विना रेहेशे नही.

कोइ पण जातनुं रुप अथवा आकृती, ते प्रकृती

अथवा परमाणुनो मुख्य गुण छे, अति सुक्ष्म एवा जे तत्वना परमाणु, जेनो अति सुक्ष्म साधारण पदार्थ बनेलो छे, तेमां पण लंबाइ पोळाइ अने जाडाइ रहेली छे. वळी न्याय शास्त्रना कर्ता महा समर्थ कणाद मुनी, तेमणे एवुं कह्युं छे जे, सघळा पदार्थनो साधारण गुण वजन छे, अने पदार्थ चार रीते ओळखाइ आवे छे, गुरु अने लघु अने लांबु अने टुंकु; तेमां जे अति लघु अने अति टुंकु एटले तेनाथी बीजुं कांइ पण लघु अने टुंकु थइ शंके नहीं, ते "अनादी" केहेवाय छे, अने जे अति मोटुं अथवा विशाळ के जेनो छेडो नहीं, अने जे अनंत केवाय छे, ते पण "अनादी" छे ए बेउनी वचे जे कांइ होय, ते सघळी रीते उतरतुं अने आदी अंतवाळु केहेवाय छे, माटे ते अनादी नथी. जे अनंत अने अनादी छे, ते आपणी आदि अने अंतवाळी इंद्रीयोथी जाणी शकवाने अशक्य छे.

हवे घणुकरी, सघळा पदार्थो जेने रुप छे, तेने वर्ण अथवा रंग पण छे. वर्ण अथवा रंग पदार्थथी, भिन्न थइ भिन्न वस्तु रही शक्ती नथी, परंतु जे तत्वोनो पदार्थ बनेलो छे, ते तत्वोमां जे प्रकाष रहेलो छे, तेना कीरणोने परावर्तन पमाडनारो ते स्वतानो गुण छे. कणाद मुनी एवुं केहे छे जे, रंग ए चक्षु इंद्रीओने जणावनारो एक अवस्यनो गुण छे, अने ते मुख्य तत्वे करी प्रथ्वि, जळ, अने प्रकाशमां स-

मान रीते रहेलो छे; अने ते घणुकरी प्रकाशनो वि-शेष गुण छे; अने ते निरंतर तत्वना मुळ परमाणु-ओमां रहेलो छे, पण ते पदार्थमां रहेलो नथी.

एवा आ श्रष्टिना अचळ नियम उपरथी, स्पष्ट जणाय छे जे, वर्ण अथवा रंग सघळी श्रष्टिमां सघळा पदार्थो निर्जीव, अने सजीव छे तेमां रहेलो छे, केम जे सघळा पदार्थोमां उपर कहेला, त्रणे तत्वो आवेला छे. आपणी प्रथ्वी लीलारंगना आच्छादनथी ढंकायेली छे, तेमां वळी ते नाना प्रकारना फुलो अने फळोथी सुशोभित थइ रहेली छे, तेज प्रमाणे अग्नि अने जळ ए बेउने पण, पोतपोताना वर्ण रहेलाछे. श्रष्टिमां इन्द्रिओवाळा प्राणीने सारु, रंग एक अवश्यनी वस्तु छे. जो कदापी श्रष्टिमां रंग होतज नही, अथवा मात्र एकज रंग होततो आपणेथी, भिन्न भिन्न पदार्थो ओळखी शकात नही. ए उपरथी श्रष्टिना अलोकिक नियम प्रमाणे, सघळा पदार्थो एवा बनेला छे के, रंग अने प्रकाशना भिन्न भिन्न कीरणोमांथी, एक अथवा वधारे किरणोने, ते परावर्तन पमाडी शकेछे, तेवीज रीते चक्षु इन्द्रिओपण एवा अदभुत नियमवाळी बनेलीछे, भिन्न भिन्न जातना रंगो भिन्न भिन्न रीते, परावर्तन पामी चक्षुने, भिन्न भिन्न असर करी शकेछे, तेनुं यथार्थ रीते निराकरण करवाथी, प्राणीओने द्रश्य वस्तुनो लाभ आपी आनंद पमाडेछे; परंतु एटलु लक्षमां

राखवुं जे, सघळा पदार्थो सघळाज रंगने परावर्तन पमाडी शकता नथी, अने जे परावर्तन पमाडेछे, ते पण समान प्रमाणमां पमाडता नथी. जेम एक पदार्थ एवोछे जे, ते सघळा रंगना कीरणोनुं आकर्षण करी लीलारंगने परावर्तन पमाडेछे, तेथी ते पदार्थ लीलो जणायछे, तेवीज रीते बीजो पदार्थ लालरंग शिवाय बीजा रंमनुं आकर्षण करी, लालरंग परावर्तन पमाडे छे, तेथी ते पदार्थ रक्तवर्णनो देखायछे. एवीज रीते भिन्न भिन्न रंगना पदार्थो, जणाववानो नियम छे. कोइ समे एवुं पण थायछे के,जे पदार्थमां द्रष्टोतपती जे रंगो आवेछे, ते रंगो ते पदार्थना पोताना होता नथी, पण बीजा पदार्थोमांथी लीधेला होयछे. ए विषे केटलाएक विद्वानो एवुं धारेछे के, आपणी चक्षु इंन्द्रिना मध्य भागनो जे, काळोवर्तुळाकार गोळोछे, तेणे करी आकाश निलु अथवा भुरा रंगनुं देखायछे, केमजे काळो अने भुरो रंग घणो मळतो आवेछे, ए विषे पश्चिमदेशना विद्वान एवुं केछे जे, हवाना परमाणुओनी साथे, अवकाशमां रहेली भीनासना परमाणुओनुं, समीलन थवाथी, नीला अथवा भुरा रंगना परमाणुओ परावर्तन पामेछे, तेथी आकाष भुरा रंगनुं देखायछे. वळी केटलाएक एम पण केहे छे जे, प्रथ्वि उपरथी जे रंगो वातावर्णमां परावर्तन पामेछे, तेमां निलो रंग अति घणो वक्रीभवन थायछे, तेथी क्षिण ते गतीने पामवाथी, ते चक्षु

इंन्द्रिने पाछो परावर्तन पमाडेछे, तेथी आकाशनो रंग भुरो जणायछे. तेज प्रमाणे समुद्र अने महासागरना जळना रंगो भिन्न भिन्न जणायछे, तेनुं मुख्य कारण पाणीनी नीचेनी जमीन जेवी होय, तेवा समुद्रना रंग देखायछे; एटले काळो, पीळो, अने लीलो वीगेरे समुद्रना जुदा जुदा रंगो देखायछे, पण समुद्रनो मुळ रंग नीलो अथवा भुरो होयछे.

ए उपरथी स्पष्ट जणायछे जे, वर्ण अथवा रंगो जे, सघळा पदार्थो अने शरीरमां जणायछे, ते ते पदार्थ अथवा शरीरनी सुंदरता अने उपयोग दर्शावे छे, ते माटे एमां मुख्य बे गुणो रहेलाछे, एकतो वर्णवाळा पदार्थो चक्षु इंन्द्रिने जे असर करेछे, तेना विकारथी, मनमां जे कल्पनाओ उत्पन थायछे. ते दर्शावेछे, अने बीजो गुण ए रहेलोछे जे, ते रंगवाळा पदार्थनो स्वाभाविक गुण दर्शावेछे, जेथी मनमां एक जातनी कल्पना उत्पन करेछे, ए बेउ वर्ण अथवा रंग विशे, आपणे यथार्थ लक्ष आपवानी अगत्यछे. एकतो आपणी श्रष्टिनो सर्व व्यापक जे, सुर्य तेनो सुंदर प्रकाश, वर्षाकाळने विशे चडी आवता वादळानो भयंकर रंग, अने सुर्य उदय समयनो अने अस्त समयनो सोनेरी, अने पीतवर्णनो रंग ए सघळानो विचार कर्याथी, सानंदाश्चर्य थायछे. अने वर्णना योगे, पदार्थोना गुण अने रुप जे जणाइ आवेछे, ते श्रष्टिना अदभुत नियमनी श्रेष्टताछे. ते

सघळा विद्वान अने बुद्धिवान पुरुषोने जाणवानी, अने तेनो यथार्थ उपयोगँ करवानी, अवस्य अगत्य छे, तेणे यथार्थ रीते जाण्याथी स्वतःना गुण अने वर्तणुकनो शुभ उपयोग कर्याथी, अंतना सर्वोत्तम परीणामनी प्राप्ती थइ, शकेछे. माटे आ प्रसंगे वर्ण विशे आपणे कांइक विशेष विचार करीये.

आ विषय अति गुह्य, अने महत्वनोछे, तेथी आ प्रसंगे यथार्थ वर्णन थवुं अशक्य छे, तोपण ए विशेनी मुळ सुचना उपरथी, बुद्धिवान अने आग्रही पुरुषोनी इच्छा ए विशे अधीक ज्ञान मेळववानी हशे तो, तेमणे ए विषयना केटलाएक उपनीषद् अने बीजा गुप्त विद्याना ग्रंथोनुं,अवलोकन कर्याथी विशेष लाभ थया विना रेहेशे नही.

सघळा कारणोनुं मुळ कारण जे वेदांतमां तत् कह्युं छे ते छे. ए अविद्या रहितछे. नित्य छे. तेने आद् अने अंत नथी. ते छे, अने नथी, एटले ते द्रश्य अने अद्रश्य बेउछे. पुरुष सुक्तमां जे पुरुष कह्यो ते तेजछे. तेज एक अनादी ब्रह्मछे. तेज बीजरुप प्रक्रति सहीत अव्यक्तछे. तेमांथीज व्यक्त प्रक्रतीनी स्फूर्णा थइ, सर्व ब्रह्मांडादीकनी उत्पती थइ छे. अने तेमांज लय थइ तेजे मात्र एक अखंड अने अविनाशी परब्रह्म परमात्मा आदी अने अंतमांछे.

एज परब्रह्म परमात्माने, रघवेद अने चांडोग उपनीषद्मां, सर्व प्रकाषोनो प्रकाष कह्याछे.ते प्रकाष

धुम्र अथवा धुमाडा विनानो कह्योछे. ते ज्योतिछे. वळी तेनेज, रघवेद, ब्रिहदारण्य उपनीषदमां अथर्वेवेदमां, मंडुक उपनीषदमां, अने मैत्रीय उपनीषद विगेरे ग्रंथोमां, हेमांग हिरण्यमय, रुक्म वर्ण, अने सोवर्णमय एटले सुनेरी पीळावर्णनो हिरण्यगर्भना समये पण कह्यो छे. वळी तेनेज तैत्रिउपनीषदमां सोवर्णज्योती कह्योछे. वळी भ्रगुवलीना दसमा अध्यायना छठा मंत्रमां गौरवर्ण कह्यो छे. ए श्वेतपीत वर्ण मुळ प्रथम रंगछे, अने ए विषे महात्मा अने योगेश्वरोने यथार्थ सत्य ज्ञानछे.

वळी अव्यक्त उपनीषदना छठा कांडमां,आगळ पुरुष अने प्रक्रतीनो, श्याम अने रक्त वर्ण कहेलो छे. एटले आगळ श्वेतपीत वर्णमांथी नीलो अने रक्त वर्ण व्यक्त प्रक्रतीनो प्रसार थया पछी थयोछे, माटे ते बेउ रंगो थयाछे. हवे उपर कह्यो एवो जे, पित अथवा पिळो, वर्ण निलो अथवा भुरो अने रक्त ए रंगो कांइ कल्पीत नथी, परंतु ते सघळा पदार्थोना मुळ गुण दर्शावनारा सत्य वर्णोछे.

एटले पीळो रंग प्रकाशनुं मुळ स्थान जे, "ज्योतीमयम" कहेवायछे, तेज पुरुषनुं अति अलोकीक सामर्थ अने तेज दर्शावेछे. अने निलो वर्ण प्रिय लागे एवो मुळ विद्युत प्रकाशछे. ते पुरुषना गंभिर अने उत्तम गुणो दर्शावनारछे. अने रक्त वर्ण जे उष्णता क्रोध अने बीजा मनना विकारो दर्शावेछे,

ते प्रकृतीनो मुळ गुण दर्शावेछे. अने ते जन्म प्राप्त थयेला जीवोमां द्रष्टि पडेछे.

ए उपरथी आपणे स्पष्ट जणायछे जे, पीळो, नीलो, अने रक्त ए वर्ण प्रथमछे, अने एमांथी बीजा सघळा वर्ण अथवा रंगनी उत्पति थयेली जणायछे.

श्वेत अने काळो रंग, ए स्वच्छता, अस्वच्छता सद्गुण अने दुर्गुण ए दर्शावेछे; पण ए उपरथी एम नहीं समजवुं जे, ए मुळ वर्णोछे, ते बीजा रंगना परमाणुओना,प्रमाणमां मिश्र थयाथी उत्पन थायछे. सघळा वर्णमां श्वेत अति प्रकाशमान वर्णछे, अने एज सद्गुणो दर्शावेछे. अने काळा रंग दुर्गुणो दर्शावेछे. ए बेउ एक बीजाथी विरुद्ध वर्णोछे. हवे जे रक्त वर्ण छे, ते उपर कहेला गुणोना मध्य गुण दर्शावेछे, एटले सद्गुण अने दुर्गुण ए बेउनुं मिश्रपणु ए वर्ण दर्शावेछे, माटे ए त्रणे वर्णने मैत्रिक उपनीषदना प्रथम अध्यायमां, सित, असित, अने रक्त एवा नामो आपेला छे, ते उपरथी मनुष्यनी कृति अने वर्तणुक तेना गुणोने लीधे, ए वर्णो दर्शावे छे,

कृति अने वर्तणुकना गुणो दर्शावनारा मुख्य रजोगुण, सत्वगुण,अने तमो गुण एवा त्रण भेदोछे. एवुं ध्यान बिंदु उपनीषदना प्रथम अध्यायमां कह्युं छे. अने भगवत गिताना चउदमा अध्यायना छठा श्लोकमां पण एज प्रमाणे कह्युं छे. ए गुणो पुरुष

अने प्रकृतिना, संयोगथी उत्पन थायछे. ए विशे श्वेतसपत्र उपनीषदना चोथा अध्यायना पांचमा श्लोकमां, अने सांडील्य उपनीपदना बीजा अध्यायमां एवुं कह्युंछे जे, प्रकृतिना रजो, सत्व अने तमो गुणने लोहिता, शुक्ल, अने कृष्मवर्ण कह्योछे. तेज उपरथी विष्णुपुराणना पांचमा अध्यायना १७ मा श्लोकमां अने कुर्मपुराण अने मारकंड्य विगेरे पुराणोमां मुळ पुरुष जे, ब्रह्म तेनी शक्ति त्रीगुण जे ब्रह्मा, विष्णु अनी रुद्र कह्याछे. तेजछे अने तेनेज अनिरुद्ध प्रद्युमन अने शंकरशण एज शास्त्रोमां कह्या छे. अने तेनाज रक्त, श्वेत अने श्याम, वर्ण ध्यान बिंदु उपनीषदमां कह्याछे.

आपणे उपर कह्युं जे, पुरुष अने प्रकृती ए बेउना संयोग थवाथी, सघळा कार्यो थायछे, ए उपरथी कदापी एवी शंका उत्पन थायछे जे, पुरुषतो केवळ निर्मळ अने शुद्ध छे. अने प्रकृति अंधकाररुप छे, त्यारे पुरुष प्रकृतीमां केम आवे तेनुं एम समजवुं जे, पुरुष अने प्रकृतीनो संबंध कांइ यांत्रीक नथी जे, तेमां आवी शके, परंतु जे प्रमाणे कोइ पण जातनो वास अथवा गंध मनुष्यना मनमां असर करेछे, तेवी रीते पुरुष मात्र पोतानी सत्ता अथवा शक्ति प्रकृती उपर कर्याथी, विकार मात्र उत्पन थायछे. तेना नाना प्रकारना रुप, गुण, अने वर्ण द्रष्टांतपतिमांआवेछे

हवे विष्णुपुराणमां जे देवनुं रुप श्वेत अने तेने

आच्छादन निळावर्णनुं कह्युंछे, ते बळराम समजवा, परंतु जे बळराम तेज रुद्रनुं रुप छे, एवुं क्रश्ण उपनीशदमां कह्युं छे, केमजे बळराम ते शेषनो अवतार कह्यो छे, अने शेष तेज, शंकरशण, अने शंकरशणने काळ अथवा काळनाथ कह्या छे; अने काळनाथ तेज रुद्र छे. माटे भिन्न भिन्न कार्य परत्वे, भिन्नभिन्न वर्णो उत्पन थाय छे. अने वर्ण उपरथी, भिन्न भिन्न प्रक्रती जाणी शकाय छे.

आपणे जे सघळुं उपर कह्युं ते उपरथी, पीळो, नीळो, अने रक्त ए त्रण मुख्य प्रथम वर्ण छे, अने श्वेत, क्रष्ण अने रक्त ए त्रण पदार्थो अथवा मनुष्यना गुण अने क्रती दर्शाववामां मुख्य वर्णो छे. एज नियम प्रमाणे जेम सघळारुप ब्रह्मांड वैराटमांछे,तेज प्रमाणे मनुष्यनुं पिंड ब्रह्मांड रुप वैराट कहेवाय छे. हवे वर्णनो जे मुख्य गुण ते मात्र प्रकाशनीज सहायताथी जणाइ शके छे, अने प्रकाशनुं मुळ सूर्य छे. जे प्रमाणे सुर्य अवकाशमां, चंद्र अने तारा विगरेने प्रकाषमान करी, सघळा विश्वने प्रकाष आपी अंधकारनो नाष करे छे, तेज प्रमाणे मनुष्य प्राणीना हृदय कमळमां रहेलो जे, महा प्रतापवान चैतन्य रुपी सुर्य, ते अज्ञानरुपी अंधकारनो नाष करी, सघळा शरीरमां अति उत्तम प्रकाष करे छे, एवुं रघवेदना प्रथम भागमां कह्युं छे. वळी एम पण कह्युंछे जे, जे मनुष्य प्राणीना हृदय कमलमां, शुद्ध चैत-

ન્ય રહેલું છે, તેજ આકાશના સુર્યમાં રહેલું છે. સુર્ય જે કમળ કહેવાય છે તે તેની આસપાસનું અતિ સુક્ષ્મ વાતવર્ણ, જેને "આકાશ" કહે છે તેજ છે પછી તે કમળ અથવા આકાષ, મનુષ્ય પ્રાણીના હૃદયમાં હોય અથવા સઘળા વિશ્વમાં વ્યાપી રહ્યું હોય તે બેઉ એકજ છે, અને તે કમળની પાંખડીને ચાર દીશા અને તેના ચાર ખુણા છે માટે અષ્ટદળ કમળ કેહેવાય છે. એવું મૈત્રી ઉપનીષદમાં કહેલું છે.

હવે નિરુક્તમાં એવું કહ્યું છે કે, જે પ્રમાણે આપણા સુર્યનું મુખ્ય કારણ જે શુશુમ્ણા કહેવાય છે, તે ચંદ્રને, પ્રકાશ આપવામાં અતિ ઘણો ઉપયોગીછે. તે પ્રમાણે મનુષ્ય પ્રાણીમાં જે પ્રતાપવાન મુખ્ય કીરણ રહ્યા છે, તે પણ શુશુમણા કહેવાય છે, તેના ઉપર જો યથાર્થ, લક્ષ આપ્યું હોય તો, તે કીરણ જીવાત્માને, પ્રકાષમાન અને મહા પ્રબળ શક્તિવાન કરી, તેને અનાદીના માર્ગે લઇ જાય છે, એવું યોગ શીખા ઉપનીષદ અને દર્શન ઉપનીષદમાં કહ્યું છે. હવે એ પ્રતાપી કીર્ણની જે, શુશુમ્ણાનાડી, તે વિશ્વાનર નાડી પણ કહેવાય છે. તે મુળાધારથી નીકળી, દુંટી આગળ ચક્રાકાર થાય છે, તે વીણાનંદ માંથી જઇ, બ્રહ્મરંધ્ર અથવા, શરીરના અગ્ર ભાગમાં પોંચેછે. ત્યાંથી તે નાડી આનંદકારી એવો સુંદર નીળો પ્રકાશ આપે છે, તે સઘળા મહા યોગીયો જોઇ શકેછે, એવું મંડળ બ્રહ્માંડ ઉપનીષ્દના, પ્રથમ ભાગમાં અને

सांडील उपनीषद्‌मां कह्युं छे, ते जे प्रमाणे आपणो सूर्य संसारना सुख सारु तेनो नीळो प्रकाष आपेछे सुर्यनो मुळ रंग नीलो छे, पण तेमांथी बीजा सात रंगना कीरणो, जेम विश्वमां व्याप्त करे छे. तेम आपणा शरीरनी नाडीयोमांथी, जे कीरणो नीकळे छे, ते आपणी आसपास जे जे, अति सुक्ष्म वाताव-र्ण अथवा आकाष छे, तेमां व्याप्त करे छे. ए बेउ जातना कीरणोने मैत्री उपनीषद्‌मां रश्मी केहे छे. बाहारना सुर्यने जे जे वर्ण अने तेना गुणो छे तेज प्रमाणे आपणा अंत्तरमां गुप्त सुर्यने छे. तेनी समा नता, चांडोग्य उपनीषद्‌मां जे दर्शावी छे. ते आ प्रसंगे जणाव्याथी अधिक लाभ थशे. हृदयनी ना-डीयोमां आकाषना निला प्रवाही परमाणुओ छे अने वळी ते नाडीयोमां, कृष्ण, पीळा, अने रक्त आकाषना प्रवाही सुक्ष्म परमाणुओमां पण रहेलाछे, अने तेज प्रमाणे सुर्यमां पण निळा, श्वेत, श्याम, पीळा अने रक्त आकाशना परमाणुओ रहेलां छे, ते मनुष्य प्राणीओनी नाडीमांथी, प्रवेश करी स-घळा शरीरमां व्याप्त थाय छे. एवुं चांडोग्य उप-नीषद्‌मां पण कह्युं छे.

हवे आपणे मनुष्य प्राणीमां उपर कहेला स-घळा रंगो भिन्न भिन्न स्थितिमां जे देखाइ शके छे, ते उपरथी तेना गुणो केवी रीते जाणी शकाय, ए-विषे विचार करवानी अगत्य छे, परंतु आ प्रसंगे

तेनुं विवेचन करवाने अवकाश नथी, माटे तेनुं बी-
जा प्रसंगे वर्णन करीशुं.

संवत १९४२ फालगुन वद्य २ रवीवार.

वैश्वानर अग्निना वर्ण उपरथी गुण दोषनुं ज्ञान.

मनुष्य प्राणीओ पंच महाभुतना बनेला छे, ते
पंच महाभुतने वर्ण अथवा रंग छे. पृथ्वि अने जळ
ए बेउने जे वर्ण छे. ते सघळाना जाणवामां छे, वळी
मंडुक अने प्रश्न उपनीषद् विगरे अति प्राचिन ग्रं-
थोमां अग्निनी ज्वाळामां जे, सप्त प्रकारना भिन्नभि-
न्न वर्णो जणाय छे, तेनु यथार्थ वर्णन करेलुंछे. हवे
मनुष्य प्राणीमां जे, अंतरवायुं छे, ते पांच प्रकारना
छे; ते प्रत्येक प्रकारना वायुने वर्णछे. तेमांज "प्राण
वायु जे हृदयने विषे रहेलो छे, अने जेनी गति उ
र्ध्व छे, तेनो वर्ण रक्त छे; "अपानवायु जे के उरु
विषे रह्यो छे, अने जेनी गती नीचे उतरवानी छे;
तेनो वर्ण ईन्द्रगुप्त एटले श्वेत रक्त होय छे, "व्या-
नवायु" जे के सघळा शरीरमां व्यापक वायु छे,
एटले भ्रमण करनारो वायु छे. तेनो वर्ण (अर्चि)
अथवा प्रकाषितछे; उदानवायु जे गळामां रहेलो
छे, अने ते मनुष्य प्राणीना भक्ष अने पानने निरं-
तर नीचे राखवाना उपयोगमां आवेछे, तेनो वर्ण
(अपेन्द्र) श्वेतछे अने समानवायु जे के, पेटना

मध्य भागमां रहेलो छे. अने जे आपणे भक्ष अने पान करीये छइये, तेनो रस थया पछी तेना बाकी रहेला कुचा अथवा मळने मळद्वारमां लइ जइ तेने काडी नाखवाना उपयोगमां आवेछे. अने निर्मळ पोषण करनारा रसने शरीरना सघळा भागमां लइ जायछे, माटे समान वायु कहेवायछे, तेनो वर्ण (गोक्षिरधवळ) अथवा दुध जेवो श्वेत छे. ए प्रमाणे मैत्री अने प्रश्न विगेरे उपनीषदमां कहेलु छे. वळी मंडळ ब्राह्मणना प्रथम अध्यायमां आकाशने 'व्योम पंचक एटले पांच प्रकारना कह्याछे. तेमां १ आकाष २ परआकाष, ३ महाकाष, ४ सुर्याकाष, अने पांचमो पर्माकाष. ए सघळा अति सूक्ष्मवायु अथवा आकाषने भिन्न भिन्न वर्ण अथवा रंगो उत्पन्न थतां अंते वर्णन थइ नहीं शके एवो निर्मळ अने झळकाटवाळो प्रकाष थाय छे.

आ उपरथी बुद्धिवान पुरुषोने स्पष्ट जणाशे जे, मनुष्य प्राणीना शरीरनी आसपास, अने अंतर भागमां वर्णो केवी रीते रहेला छे, तेमां मुख्यत्वेकरी अंत्तर भागमां हृदय, अने नाडीओ विशे अधिक विचार करवो अगत्यनोछे. कठ उपनीषदमां मनुष्यना देहमां मुख्य नाडीयो १०१ कहेलीछे, आ नाडीयोमांनी प्रत्येक नाडीना एकसो विभाग थयेला छे; मुख्य नाडीनी सघळी मळी ७२००० शाखाओ छे, अने तेनी मांहे, चलन करनारो वायु फरे

छे, एवुं प्रश्न अने ब्रिहत अरण्यका उपनीषद्मां कह्युं छे. अने ते शाखाओ उपर कहेला वर्णोमां डुबी रहेली छे. एवुं चांडोग्य उपनीषद्मां कह्युं छे. हृदयनी नाडीने हितानाडी केहेछे, ते हृदयमांथी नीकळी; सघळा शरीरमां फरीवळे छे. ते सुक्ष्म केशना एक हजारमा भाग जेवी सुक्ष्म छे. ते शाखाओमां प्रवाही रस भरायलो होय छे, अने तेना वर्ण श्वेत, श्याम, अथवा नीळो, पीळो अने रक्त ए प्रमाणे होयछे, एवुं कनिष्टकी उपनीषद्मां कह्युंछे. अने ब्रिहत अरण्यका उपनीषद्मां उपला रंगोनी साथे लीलो वर्ण पण कहेलोछे, अने टिकाकारग्रंथमां एवुं केहेछे जे, अन्न ज्यारे पाचन थायछे अने वायुनो भाग विशेष होयछे सारे तेनो वर्ण निलो होय छे, अने ज्यारे पीतनो भाग विशेष होयछे, सारे पीळो वर्ण थायछे. कफनो विशेष भाग होयछे, सारे श्वेत वर्ण थायछे, तेमां ज्यारे पीतनो भाग न्युन होय छे, सारे लीलो बर्ण देखायछे. अने ज्यारे सघळा समानपणे वर्तता होय, सारे रक्त वर्ण थायछे. आ प्रमाणे जे पात्रोमांथी, उपर कहेली वस्तु जायछे, ते पात्रोपण तेत्राज वर्णना थायछे. अने उपर कहेला पंच पात्रोमां, सुक्ष्म शरीर रहेलुंछे; अने मैत्री उपनीषद्मां एवुं कहेलुंछे जे, संसारीक उत्तम अने कनीष्ट स्थितिना जे गुणो, तेना विचारनी सत्तानो आधार सुक्ष्म शरीर उपर रहेलोछे.

हवे हृदयने, अष्टदलपद्म अथवा आठ पांखडीनुं कमळ केहेछे. ए आठ पांखडीने आठदीशा समजवी तेमां १ पांखडी जे पुर्व दीशायेछे, तेनो रंग श्वेतछे. २ पांखडी जे अग्निकोणमांछे, तेनो वर्ण रक्तछे. ३ जी पांखडी जे, दक्षिण दीशायेछे तेनो वर्ण, क्रिष्ण (काळो) छे. ४ पांखडी जे नैरुत्य दीशाये छे, ते नीला वर्णनीछे. ५ पांखडी जे, पश्चिम दीशायेछे, ते स्फाटीक जेवी श्वेत वर्णनीछे. ६ पांखडी जे वाव्य खुणेछे, तेनो रंग माणीक जेवोछे. ७ पांखडी जे, उत्तर दीशायेछे, तेनो वर्ण पीळोछे. अने ८ मी पांखडी जे इशानकोणमांछे, तेनो वर्ण (वैदुर्य) धुम्र जेवोछे. आ उपर कहेली मुख्य पाखडीनीं मध्ये, बीजी सुक्ष्म पांखडीयो पण छे, अने ते प्रत्येक पां-खडीने वर्ण होयछे, एवुं ध्यानबिंदु उपनीषदना प्रथम अध्यायमां कह्युंछे.

ए उपरथी जोता वर्णोनो संबंध मनुष्यप्राणीना स्थुळ शरीर मननी कल्पना,अने तेनी नीती विगेरेनी स्थितिनी साथे रहेलोछे. अने मनुष्यनी वर्तणुक उपर वर्णनी सत्ता छे, अने ते वर्तणुक, वर्ण उपरथी जणाइ आवेछे, एवुं महाभारतना मोक्ष धर्ममां कह्युं छे. जीवात्मा जे, मनुष्यना हृदयकमळमां रहेलोछे, ते आकर्षक वस्तु छे, मनुष्यप्राणीनी जे सारी,माठी, अने मध्यम वर्तणुको थायछे. ते समयने अनुसरी जीवात्मा उपर कहेली अष्टदळमांनी जे पांखडीमां ते

ते समये रेहेछे. तदवत थायछे, तेथी तेनी वर्तणुक प्रथक प्रथक समये भिन्न भिन्न होयछे. जे प्रमाणे कदापी जीवात्मानी स्थिति, उपर कहेली प्रथम पांखडीमां होय तो, ते मनुष्यनी इच्छा, सदगुणना कार्यो करवा उपर थायछे; अने बीजी पांखडीमां होय तो, निरोद्योगी अने आळसु थाय, त्रीजीमां होय तो, क्रोध उत्पन थाय; चोथीमां होय तो, दुर्गुणी थाय, पांचमीमां होय तो, भोग भोगववानी इच्छा थाय, छठीमां होय तो, मनने गुचवण, अने गभराट थाय; जो कदापी सातमीमां होय तो,संतोष अने त्रप्ति थाय, अने जो जीवात्मा आठमी पांखडीमां होय तो, दया अने नम्रता विगेरेनी इच्छा थाय ए प्रमाणे ध्यानबिंदु उपनीषद्मां कहेलुंछे. आ प्रसंगे एटलुं केहेवानुं अगत्यनु छे जे उपर कहेली सघळी रीतोनुं ए साधारण वर्णनछे, तेथी मनुष्यप्राणीमां उत्पन थता वर्णो अने तेनी वर्तणुक विगेरेनुं यथार्थ ज्ञान ए उपरथी थवुं कठणछे, केमजे मनुष्यनी कल्पना, अने विचारो अगणीत, अने घणा भिन्न भिन्न होय छे, माटे तेनी कल्पना उत्पन थयाथी जे वर्णो उत्पन थाय, ते पण अगणीत अने भिन्न भिन्न होवा जोइये, ते माटे ए समजवासारु प्रथक नियम केहेवो अने ते समजवो अति कठण छे, ते माटे प्रत्येक मनुष्ये पोते प्रत्येक दीवशे, अनुभव करी जोयाथी लाभ थशे, ते छतां गुप्त विद्याना प्रथम वि-

द्यार्थि जो, भागवत गिताना १४ मा अध्यायनो पांचमो श्लोक अने तेनोज १७ मो अध्याय परिपुर्ण लक्ष आपी विचार करशे तो तेने घणीज सहायता मळशे, तेनो सारांश एवोछे जे, सत्वगुण स्वच्छ अने निर्मळ छे, तेथी ते जीवात्माने अति परम सुखनी प्राप्ति करी शकेछे, तेनो वर्ण श्वेत छे. रजोगुण विकारवाळो छे ते संसारना सुख भोगववानी त्रष्णाथी उत्पन थायछे, तेथी ते जीवात्माने तेवाज कर्म करवाने दोरवेछे, तेनो वर्ण रक्त छे.

अने तमो गुण अज्ञानतानुं मुळ कारणछे, ते मननी सघळी कल्पनाओने, गुचवणमां नाखी मनुष्यने बुद्धिहिन करी जीवने अंधकारमां राखी, माद्य वस्तु पीधी होय, एवो मनुष्यने करेछे, तेनो वर्ण कृष्ण अथवा काळो होयछे. एवी रीते भगवतगीतामां केटलीएक अगत्यनी सुचना आपेलीछे.

हवे ए अदभुत प्रकाश, अने वर्णनी विद्या विषे हालना निष्पक्षपाती, पश्चिम भोमना आग्रही विद्वानोये, जे शोध कर्यो छे, ते विषे कांइक विचार करीये. आज लगी ए अलोकीक विद्यानुं ते देशना लोकने केवळ अज्ञान हतुं, अने आपणा देशनी ए अति प्राचिन विद्याने असत्य मानता हता, ते उपरथी आपणा देशना हालना पश्चिमदेशनी विद्या, अने ते लोकनी अभीमानी प्रकृतीनी सत्तावाळा, अल्प विद्वानो ए विद्याने, असत्य मानेछे. तेमना निश्चय

सारु थोडा द्रष्टांतो आ प्रसंगे आपवानी अगत्यछे. थोडा दिवस उपर पश्चिम देशमां, आस्त्रियादेशनो, अति आग्रही अने सत्य शोधक, "बेरनरीचनवेक" नामना ग्रहस्थे,प्रथम ए अद्भुत विद्यानुं अध्यन करी स्व अनुभव उपरथी, अने केटलाएक संस्कारी मनुष्यना प्रत्यक्ष द्रष्टांतो उपरथी, एवुं सिद्ध कर्युंछे जे, अति उत्तम वैश्वानर अग्नि अथवा शक्ति जेने ते देशना विद्वानो ओरा कहेछे, ते सघळा जाणीता तत्वोमांथी नीकळेछे, अने तेना सुंदर रंगो अने अलोकीक प्रकाप देखाइ शकेछे एटलुंज नहीं, पण ते त्वचाने लागी शकेछे. आ सिद्धांतने, बीजा एक न्युयोर्कना एडविनडी वेबीट नामना विद्वाने पुष्टि करेलीछे, तेणे पोताना प्रकाष अने रंग ए विषेना पुस्तकमां, प्रत्यक्ष अनुभवना घणा प्रमाणो आपेलाछे, तेमांथी एक प्रमाण आ प्रसंगे आप्याथी, सत्य जाणवानी इच्छा राखनारा, भणेला अने मानसिक ज्ञानवाळा पुरुषोने निश्चय थशे. मीस मीनीमेरटन एवुं केहेछे ज "मनुष्यना कपाळना निचला भागमां विषय भोगनी पशुवत भिति रहेलीछे अने ते ठेकाणेथी जे अतिं सुक्ष्म ज्वाळा निकळेछे, तेनो रंग रक्त जेवो लाल होयछे. अने जे मनुष्य अति निच स्वभावनो अने हलको होयछे, तेना कपाळ आगळथी, जे अती सुक्ष्म ज्वाळा निकळेछे, तेनो वर्ण घणुकरी श्याम होयछे. परंतु कपाळना उपला भागमां जे,

वर्णो रहेलाछे, ते उत्तम स्वभाववाळा मनुष्यना छे, अने तेनो रंग थोडो पीळाश पडतो होयछे, परंतु जे संपुर्ण नितिवान अने आत्मज्ञानी शक्तिवाळा अने समर्थ पुरुषोछे, तेना कपाळना उपला भागमांथी, जे ज्वाळा निकळेछे, तेनो वर्ण प्रकाषवाळो पीतरंग जणाता जणाता ते श्वेत वर्ण थइ जायछे अने ते सुर्यना प्रकाष करता पण अधिक सुंदर लागेछे. हवे कपाळना छेक उचा छेडा आगळ जे ठेकाणे वुद्धि अने न्यायनुं स्थानछे, त्यां मुख्यपणे नीलो अथवा भुरो होयछे. ते कपाळना उपला भाग तरफ जता, श्वेत थतो जायछे. अने नीचे उतरता चक्षु इंन्द्रि आगळ पापणनी पासे आवता काळो थतो जायछे, अने बाहारनी कोर आगळ, जरा पीळाश पडतो होयछे, जे परोपकारी वृतिना होयछे, तेना कपाळमांथी, अति सुंदर लीला रंगनी ज्वाळा नीकळेछे. जे आग्रहीछे, तेनो वर्ण जरा झाखो पीळाश पडतो होयछे, अने जे केवळ स्वार्थी ने पोताना वखाणने इच्छनारोछे, तेनी ज्वाळा जांबुडा रंगना जेवी होयछे, पछी जो तमे तमारी द्रष्टि मस्तकनी बाजु तरफ फेरवशो, तो उत्तम नितिनी शक्तिनी ज्वाळा वदलाइ, नीचला विषय भोग तरफ जती वखत वर्ण नारंगी रंगना जेवो थतो जायछे, पछी लाल थायछे, अने छेक मस्तकनी नीचली बाजुए, श्याम वर्ण देखायछे. मनुष्य ज्यारे हसेछे, अथवा ज्यारे सुखनी कल्पनाना

विचार करेछे, ते समये प्रकाषवाळा रंगो उचानीचा नर्त करता जणायछे, परंतु ज्यारे अतिशे क्रोध अने विषय विकार व्याप्त थयो होय. ते समये, अति चकचकीत लालरंग जेम बहार नीकळतो होय तेवो नीकळतो जणायछे. उपर कहेली सत्यतानी प्रोफेसर "बेनीट" एवी रीते पुष्टि करेछे जे, उपर जे वर्ण अथवा रंग विषे कह्युंछे, ते सघळु मारा पोताना स्व अनुभवथी, सत्य सिद्ध थयुंछे, "अने ए प्रमाणे रंगनो संबंध मनुष्यनी वर्तणुक साथे छे." एवुं सिद्ध कर्युंछे.

ए उपरथी साधारण मानसीक ज्ञानवाळा पुरुषोने जणाशे जे, मनुष्य प्राणीना आयुष पर्यंत, ते जेवी कल्पना अने कर्मो करेछे, तेना भिन्न भिन्न समये भिन्न भिन्न वर्णो, उपर कहेला नियम प्रमाणे जणाया करेछे. ते उपरथी मनुष्यनी साधारण चाल चलगत अने वृत्ति उत्तम ज्ञानीने जणाइ शकेछे. ते वर्णो अथवा रंगनी नीकळती स्फुर्णा उपरथी, मनुष्यना शुभ अथवा अशुभ कर्मनो निश्चय थइ शके छे. ए विद्यानो जेम जेम अधिक अनुभव थाय छे, तेम तेम तेने मनुष्यना कर्म यथास्थित जणाइ आवे छे. महाभारतमां एवुं कह्युं छे जे वर्णो अथवा रंगो जे मनुष्यप्राणीनी साधारण वर्तणुक अने शुभाशुभ गुणो दर्शावेछे, ते सप्त प्रकारना छे, १ क्रिश्न २. धुम अथवा धुमाडाना जेवो ३ निल अथवा भुरो ४ रक्त ५ हारिद्र अथवा पिळो ६ शुक्ल अथवा श्वेत अने सा-

तमो ७ परशुक्ल अथवा संपुर्ण श्वेत ए प्रमाणेछे तेमां
ज्यारे मनुष्यप्राणी, अशुभ कल्पना करेछे त्यारे ते-
नामांथी निकळती ज्योतीनो वर्ण काळो होयछे,अने
ते अति अधम दशानो मनुष्य होयछे, परंतु ते जेम
जेम निति अने शुभ ज्ञान मेळवतो जायछे, तेम तेम
तेनामांथी निकळतो ज्योती अथवा प्रकाषना वर्णो
बदलाता जायछे, एटले शुभ कार्य अथवा इच्छाना
प्रथम चर्णनो वर्ण अति श्यामथी धुमाडाना जेवो
थायछे. पछी ज्यारे ते मनुष्य अधिक निर्मळ बुद्धि-
नो, अने नितिवान थायछे,त्यारे निलो रंग जोवामां
आवे छे. अने ज्यां सद्गुण अने दुर्गुण निति अने
अनितिनी कल्पनामां विवेकथी कलह थायछे, एटले
कोइ समये संपुर्ण नितिथी, वर्तवानी इच्छा थाय,
अने कोइ समये कांइक अनिति तरफ वृत्ति जायछे,
त्यारे तेनामांथी निकळती अति सुक्ष्म ज्वाळानो रंग,
रक्त थायछे. अने दुर्गुण उपर आग्रहथी जय मेळव्यो,
एटले विश्वानर अग्नीनो रंग पीत अथवा पिळो दे-
खाय छे, तेथी अधिक आत्म ज्ञान प्राप्त थवा मांडयुं
एटले श्वेत रंग थायछे. अने संपुर्ण उत्तम आत्मज्ञान
प्राप्त थवाथी, स्फाटीक अथवा संपुर्ण श्वेत वर्ण ज-
णायछे. ए प्रमाणे महाभारतना १८१मा अध्यायमां
शांतीपर्वना मोक्ष धर्ममां स्पष्ट कहेलुंछे. अने एज
प्रमाणे मंडळ ब्राह्मण उपनीषदना प्रथम अध्यायमां
कह्युंछे. अने पातांजळीये पण मोक्षना अध्यायना,

सातमा सुत्रमां एज प्रमाणे कहेलुछे. ते छतां सांप्रत काळना पंडीत कथा करनार तेनो अति उत्तम शुभ भावार्थ समजी शकता नथी, तो पछी श्रोताजनने तेनुं ज्ञान मळवुं दुर्लभ होय,एमां कांइ आश्चर्य नथी. ए समजवाने प्रथमथी मानसिक ज्ञान यथार्थ उन्न· तिने पामेलु होवुं जोइये. उपर कह्यु एवी रीतना वर्णो साधारण संसारी मनुष्यना होयछे. महासमर्थ योगेश्वरने एवी रीतना भिन्न भिन्न वर्ण होता नथी, केमजे तेमने कांइ भिन्न भिन्न प्रकारनी कल्पनाओ थती नथी, तेमने तो मात्र एकज आत्मज्ञान तरफ द्रष्टी होयछे. तेथी तेमनी ज्योती सदा निर्मळ अने भव्य शोभायमानज होयछे.

हवे आ प्रसंगे एटलुं कहेवानुं अगत्यनुं छे जे, प्रकाश अने नाद ए बेउनो परस्पर अति नीकट संबंधछे; एटले सप्त वर्ण अथवा रंगनो संबंध सप्त नाद अथवा सुरनी साथेछे. नाद ए शब्द ना अने द उपरथी थयोछे. तेमां ना एटले प्राण अने द एटले तेज अथवा अग्नि जे शरीरमांथी नीकळेछे, ते माटे विश्वानर अग्नि अने नाद ए बेउनुं स्वरुप एकजछे, एवुं रघवेदमां कह्युंछे. अने चांडोग्य उपनीषदमां पण एमज कह्युंछे. वळी तेमां एवुं स्पष्ट कह्युंछे जे, कनीष्ट अथवा अधम माणसनी ज्वाळानो वर्ण श्याम होयछे. उत्तम मनुष्यनी ज्वाळानो रंग श्वेत होयछे. अने मध्यम पंक्तिना मनुष्यना विश्वानर अग्निनी

ज्वाळानो वर्ण, श्याम अने श्वेत मिश्र होयछे. वळी ब्रिहादारण्य अने मैत्री उपनीषदमां अने मारकंडेय, पुराणना छठा अध्यायना ३२ मा श्लोकमां एवी रीते कह्युंछे जे,आपणा शरीरमांथी जे मुख्य तात्विक ज्वाळा नीकळेछे, ते सघळी सुवासिक होयछे, मो उपरथी मनुष्य प्राणीना स्वभाव अने गुण विगेरे जाणवाना मुख्य साधन वर्ण, नाद, अने वास ए छे. एनुं अधिक वर्णन उपर जणावेला सत्य शास्त्रोमां दर्शविलुं छे.

ज्यारे अति आग्रही योग विद्याना विद्यार्थिने, पोताना अंतरमांथी अनहद शब्दनो नाद संभळाय छे, त्यारे तेने ते शब्द अति प्रिय लागवाथी, ते एक चित्ते सांभळेछे. त्यार पछी तेने ए अलोकिक नादनी मध्ये ज्योती, अने प्रकाश जणायछे, पछी ज्यारे तेनी संपुर्ण एकाग्रता महाअदभुत ज्योती प्रकाशमां थइ, एटले तेने हंसा अथवा पींडब्रह्मांडनो सुर्य जोवामां आवेछे. अने तेज सर्व व्यापक परब्रह्मनो अंश पोषण करता विष्णुछे. अने एज योग विद्याना विद्यार्थिनुं अंतनुं अति उत्तम परीणामछे.

आ व्याख्यानमां कहेली सघळी अदभुत वात छता जे, निष्पक्षपाती अने आग्रही विद्वान अने तत्ववेत्ता छे, तेनेतो ते सत्य जणाइ स्पष्ठ जणाशे के, मनुष्य प्राणीमांथी, अति सुक्ष्म द्रष्टोत्तपात्तिमां आवे नहीं, एवी जे, विश्वानर अग्निनो ज्वाळा निकळेछे,

ते कल्पित नथी, पण सत्यछे, माटे ए विषे बुद्धिवान अने निष्पक्षपाती विद्वानोये, अति आग्रहथी अनुभव करी सिद्ध करवानी अवश्य अगत्यछे केम जे, ए अनुभवथी सिद्ध थया पछी, मनुष्यप्राणीनी वर्तणुक अने गुणदोषो जाणवानुं ए मुख्य साधनछे. अनुभव उपरथी जणातु जशेके, मनुश्यप्राणीना आयुष पर्यंत, तेनी वर्तणुक अने गुण दोषो, भिन्नभिन्न अवस्थामां अने भिन्न भिन्न प्रसंगे भिन्न भिन्न होय छे, केम जे तेनी कल्पनाओ, भिन्न भिन्न निरंतर बदलाती रेहेछे, ते माटे भिन्न भिन्न समये तेना कर्म पण भिन्न होयछे, परंतु ए सघळा उत्तम मध्यम अने कनिष्ट भिन्न कर्मना एकंदर सरवाळा उपरथी, एक प्रथक पुनर जन्मने प्राप्त थायछे. अने तेणे जे जन्मांत्तरमां गुण अथवा दोषरूप कल्पना अने कार्यो कर्या होय, ते तेना स्थुळ शरीरनो त्याग कर्या पछी, पण जीवात्माने चोटी रेहेछे, तेगे करी पुनरावृत्तिने वारंवार पाम्या करेछे. अने ज्यारे शुभाशुभ कल्पनानो लय थइ, केवळ शुद्ध चैतन्य रहे त्यारेज कैवल्य मोक्ष केहेवायछे. एथी अधिक आ प्रसंगे केहेवानी कांइ अगत्य नथी, केमें जे संस्कार प्रमाणेज बोध कर्याथी, तेनी शुभ असर जलदी थइ, घणाने प्रिय लागे, माटे हवेथी ए विषे सांप्रत स्थिति ज्यां सुधी छे, त्यांसुधी अति दुर्गघट प्रयत्न करवाथी, यथार्थ रीते श्रोता अने वकताने श्रमना प्रमाणमां ला-

भ थइ शके, एम जणातु नथी, माटे ए विषमनी अधिक सुचना भाविष उपर राखी आवा प्रकारना व्याख्याननी संपुर्णता करीये छइये.

संवत १९४२ ना फालगुणवद्य ८ रवीवार

पुनरावृत्तिनो कार्या कारण संबंध.

आपणे पुर्वे घणे प्रसंगे सुचना आपेलीछे के, मनुष्य गमे तेवो अति उत्तम मानसिक ज्ञानवाळो अने संसारना सघळा कार्योमां अति उत्तम विवेकी होय, के जेना योगे ते बीजा न्युन ज्ञानवाळानी स्थिति संपादन करी शके,अथवा तेमने अति निर्बळ करी पोते धन संपाद करी ले, अथवा सर्वोपरी पोतानी अति प्रबळ सत्ता तेमना उपर बेसाडी, पोताना अर्थनी संपुर्ण रीते सिद्धि करी ले; तोपण ते मनुष्य निश्चयात्मक बुद्धिज्ञान, अने आत्मज्ञानना विषयोमां तो, अज्ञानी अथवा बाळक जेवो होयछे, तेने तेवा विषय उपर लक्ष आपवाने प्रिति थती नथी, तेथी आत्मज्ञानना विषयोमां विवेक हिन थवाथी, सत्य असत्यनो यथार्थ निश्चय तेनाथी निष्पक्षपात रीते थइ शकतो नथी, तेणे करी संसारना नाशवंत सुख अने दुखथी निरंतर हर्ष अने शोकने पामी पोताना आयुषनी मर्यादा पुरी करेछे. माटे एवो पुरुष सच्चिदानंद अखंड सुख प्राप्त करवाने मार्गे जइ शकतो नथी, ए सघळानुं कारण पुनरावृत्तिना संस्कारनी

न्युनता एजछे; केम जे श्रष्टिना अचालित सत्य नियम प्रमाणे जडचैतन्य अने पशुपक्षी आदी लइ मनुष्य, अने ब्रह्मादीक देवो पर्यंत, सघळानी प्रक्रतीना परमाणुओ उपर मनवांत्तर अने युगादीक काळे करी संस्कार थता थता उत्तरोत्तर जड परमाणुओनी न्युनता अने चैतन्य तात्विक परमाणुओनो अधिक संग्रह थवाथी, अति उत्तम मनुष्य देह प्राप्त थइ, तेमां निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी योगायोग सत्य समागमथी, अने आत्म बळना योगे, अंतरनी शुद्ध स्फुर्णा थायछे, तेणे करी तेने सत्य ज्ञान प्राप्त करवाने प्रिति उत्पन थायछे. ते शिवाय गमे तेवा अति महा समर्थ योगेश्वर होय, अने ते शुभ बोधथी अथवा पोताना महा अदभुत अलौकिक ऐश्वर्यना प्रतापथी, संस्कार वगरना मनुष्यने, आत्मज्ञान अने ब्रह्मज्ञाननो बोध करवा अने सनातन धर्मनी मर्यादीमां संपुर्ण रीते राखवा प्रयत्न करे तोपण जेवुं यथार्थ फळ थवानी इच्छा राखे ते प्रमाणे थइ शकतु नथी. तेवा घणा मनुष्यना समुहमांथी जे मनुष्य पुनरावृतिना संस्कारथी शुद्ध थया होय, तेवा थोडा मनुष्यने, सत्य मार्ग उपर प्रिति थायछे, माटे प्रयत्नना प्रमाणमां अर्थनी सिद्धी थती नथी, माटे युगादीक काळना नियमथी जे प्रमाणे शुभ संस्कार थयो होय, ते प्रमाणमां मनुष्य प्राणीने तेने रुचे एवो कांइक बोध आपी सत्य अने सनातन धर्मनी

મર્યાદામાં રાખવાનો પ્રયત્ન કર્યાથી, ઘણા મનુષ્યના સમોહને શુભ સંસ્કાર થવાથી તે આગળ ઉત્તરોત્તર વૃદ્ધિને પામતા જાય છે, એજ કારણને લીધે સત્ય ધર્મના પ્રવર્તક મહા સમર્થ ગુરુ અને આચાર્યો જો પ્રથમ દેશ, અને યુગાદીકકાળ, અને તેમાં ઉત્પન થયેલા મનુષ્ય પ્રાણીના શુભાશુભ સંસ્કાર, એ સઘળા ઉપર દ્રષ્ટિ રાખી ઉપદેશ કરેતો, ઘણા માણસના સમોહને અસર થઇ તેમનુ વલણ સત્ય માર્ગ તરફ વળી શકે, પણ કદાપી જો દેશકાળ ઉપર દ્રષ્ટિ નહી રાખતા, ત્યાગ અને વૈરાગ્યના બળથી, સંસારના સઘળા સુખને મિથ્યા અને ક્ષણભંગુર જાણી, સઘળા વિષયાશક્તજનોને, સંસારના સઘળા કાર્યોમાં અપ્રિતિ કરાવી, વિષયોનું જેમ જેમ ખંડન કરે તેમ તેમ, ઉલટા તેવા મનુષ્યને અભાવ આવ્યાથી, સત્ય માર્ગમાં અધિક અપ્રિતિ થાય.

હવે મનુષ્યપ્રાણીના ઘણા સમોહને શુભ સંસ્કાર શી રીતે થઇ શકે, તેનો વિચાર આ પ્રસંગે કરીયે. પ્રત્યેક મનવંતરમાં, સતયુગ, ત્રેતા, દ્વાપર, અને કલી એ પ્રમાણે ચારે યુગ પ્રવર્તે છે, પરંતુ પ્રત્યેક યુગમાં બાકીના ત્રણે યુગની ન્યુન અધિક સત્તા પ્રવર્તે છે; એટલે સતયુગમાં સતયુગ, ત્રેતા, દ્વાપર અને કલીયુગ, એ સઘળાનો આભાષ થાય છે. તે પ્રમાણે મનુષ્યપ્રાણીની ભિન્ન ભિન્ન વર્તણુક અને વલણ થાય છે. એટલે જે સમયે સતયુગ પ્રધાનપણે વર્તતો હોય, તે સ-

मये मनुष्यना घणा समोहनी वृति सनातन अने सत्य धर्मनी मर्यादामां रही आत्मज्ञाननी उन्नति अने तत्वज्ञान संबंधी विचार करवामां अहोनिष लक्ष रहेछे. अने संसारना सघळा सुखो मिथ्या अने क्षणभंगुर जाणी, तेथी निवृत्ति पामी संसार संबंधी मन उदासिन रहे छे, अने निरंत्तर सत्वगुण प्रधानपणे वर्ते छे, पछी ज्यारे मनुष्य प्राणीना घणा समोहनी वृत्ति, आत्मज्ञान अने सत्य ज्ञान संबंधी विचार करवामां न्युन थइ यज्ञ यागादीक वृत्त अने व्यवहारीक याग अने होमादीक कर्मकांड तरफ लक्ष जइ, इन्द्रादिक देवताओने संतुष्ट करी, पोताना कार्योना फळनी इच्छा राखवा मांडी, अने केवळ सत्वगुण गौण थइ कांइक रजोगुणना अंकुरो फुटवा माड्या एटले सतयुगमां त्रेता युग थयां एम जाणवुं अने ज्यारे रजोगुण प्रधानपणे वर्ते, अने मनुष्यप्राणीनी वृत्ति पोताना कर्मकांडादिक कर्ममां कुशळ रहे, तथा वर्णाश्रमना धर्म यथार्थ रीते द्रढपणे पाळवानी वृति थइ, मान प्रतिष्ठा अने सत्ता विगेरेनी इच्छा उत्पन थाय, त्यारे सतयुगमां द्वापरनी प्रवृति समजवी. अने जे समये मात्र कर्मकांडादिक कर्म अने वर्णाश्रमना धर्मो मनपुर्वक नही पण, मात्र रुढी प्रमाणे करवानी वृत्ति थइ, दंभ अने छळभेद करवानी वृतिं थाय त्यारे, सत्ययुगमां कलीनो प्रवेष थयो एम समजवुं. एवी रीते काळचक्रमां प्रत्येक यु-

गमां बीजा त्रण्ये युगो आवी जाय छे. अने जे स-
मये जे युगनुं प्रधानपणु होय, ते समये मनुश्यनी
मनोवृत्तिनुं वलण सत्य असत्य अने धर्म अधर्म संबं-
धी विचार उत्तम, मध्यम, अने कनिष्ट कल्पनाओ
अने विचारो उत्पन थइ, तेवा कार्यो करवानी
मनोवृत्ति स्वभाविक रीते थायछे.

हवे आपणे, काळचक्रना सांप्रतकाळनी स्थि-
तिनो विचार करवानी मुख्य अगत्यछे. हाल मुख्य-
त्वे करी कलीयुग प्रधानपणे आपणा आर्य देशमां
प्रवर्तेछे, एवुं शत शास्त्रमां पुर्वेना महाप्रतापी अने
दिर्घद्रष्टी महान पुरुषोये भविष करेलुं छे. ते आ-
पणा देशना घणा मनुश्यप्राणीनी वर्तणुक अने अ-
नुभव उपरथी सत्य ठरेछे. केम जे सांप्रतकाळमां
आर्यदेशमां सनातन सत्य धर्मनो लोप थइ, वर्णाश्र-
मनी स्थिति पण अव्यवस्थित थवा मांडीछे. एटले
ब्राह्मणादीक चारे वर्ण विद्या अने गुणे करी, बंधाता
नथी, पण मात्र परंमपराना नियम प्रमाणे चालवा-
थी, विद्याहिन अने गुणहिन थवा मांड्या. वळी
मन शुद्धि सारु वेदादिक कर्मकांड अने वायुनी शुद्धि
सारु होमादिक करवानी पद्धतिनो पण लय थइ,
अनेक प्रकारना नवा नवा भिन्न भिन्न मतपंथनी प्र-
वृत्ति थइ छतां, कोइ पण आचार्य अने धर्म प्रवर्त-
कथी अधिक समय सुधी अति आग्रहथी, सत्य अने
सनातन धर्म सत्य समजी ते प्रमाणे मनुश्यप्राणीने

वर्तवानी इच्छा करावी शकता नथी; परंतु मात्र हस्थ क्रियाथी अने स्थुळ, शरीरथी, बाह्योपचारथी पुजा सेवा, माळादान, धर्म, तेमां पात्र अपात्र जोवानोतो विवेक छेज नही, तेम करवाथी, आ लोक अने परलोकमां फळनी इच्छा राखी केटलाएक धर्मिगणायलाख्री पुरुषो करेछे. तेमां आत्मज्ञाननतो लेश मात्र नथी, तेथी केवळ परोपकार बुद्धिनो लय थवाथी, संसारना सुखनी तिव्र त्रष्णा उत्पन्न थइ, व्यवहारीक कार्योमां कपट अने छळभेद करवाथी, पाप थयुं एम समजता नथी. बीजा केटलाएक जेने बाळपणामांथी धर्म संबंधी कांइ पण सुचना अथवा बोध मळेलो नथी पण द्रव्य, व्यवहारादिकनुं अल्पमान, अने पोत पोतामां कांइक अल्प सत्तानी इच्छाथी, अल्प विद्या अने अल्प मानासिकज्ञान मेळववाने प्रयत्न करेछे, अने संसारनुं सुख प्राप्त करी लेवुं एज सत्य पुरुपार्थ समजी, सघळा धर्म मिथ्या अने कल्पित समजी, घणा युवावस्थावाळा पुरुपोने आत्मानी पण अनास्ता थायछे. तेथी स्वइच्छाये अयोग्य भक्ष पान करेछे, तेमां योग्य अयोग्यनो विवेक शून्य थइ जायछे. अने पशुथी पण अधिक विपयनी त्रष्णा रेहेछे; माटेज आपणा आर्य देशमां सांप्रत काळमां घणुं करी कलियुगमां कलियुगनो प्रवेश थयोछे, ए दिर्घ द्रष्टिये कहेलुं सत्य प्रमाणछे. एम छतां, एवा काळचक्रना समयमां बीजा त्रणे युगनी प्रवृत्ति थोडी घणी छे.

तेथी केटलाएक आत्मज्ञान, अने तत्वज्ञान, सनातन धर्म अने अधर्मनी मर्यादामां रहीने नीश्चयात्मक बुद्धिज्ञान अने आत्मज्ञाननी उन्नति करवा भणी लक्ष राखेछे, तेवा संस्कारी पुरुषो घणा थोडाज होयछे, तेथी आत्मविद्या, तत्वविद्या अने योगादीक गुप्त विद्यानी उन्नति करवा अति आग्रहथी, कोइपर समर्थ योगेश्वर प्रयत्न करे तोपण, मनुष्यना घणा समुहने, ते वात सत्य जणाइ, ते मार्गे जवानी वृत्ति थाय नही, तो आपणा श्रमनु यथायोग्य फळ आपणी आसवासना विषयभोगनी अपरीमित त्रष्णावाळा स्त्रि पुरुषोने, थवुं अति दुर्लभछे. माटे देश काळ अने मनुष्य प्राणीना घणा समोहनु, वलण ए उपर द्रष्टि राखी, प्रथम घणा स्त्रि पुरुषोने, सनातन धर्म अने अधर्मनी मर्यादामा राखी, उत्तमज्ञान प्राप्त थवाने, पात्र थवानो उद्योग कर्याथी, संस्कारी थइ शकशे;अने तेम थवाथी अधिक लाभ थवानो संभवछे.

हवे एवुं उत्तमज्ञान प्राप्त करी संस्कारी थवाना साधननो विचार आ प्रसंगे करीये. घणुकरी, साधारण मानसिक ज्ञानवाळा निष्पक्षपात रीते विचार करशे, तो तेने पण स्पष्ट जणाशे के, हाल घणुंकरी पुरुषोने विषय भोगनी अपरीमित त्रष्णाछे, तेने लीधे पोते कांइ पण भणेला अने विद्वान छता, कामांध थवाथी, स्व, कींवा पर, आविद्वान अने बुद्धिहिन अथवा कांइक लेखक वाचकना अल्पज्ञानवाळी

स्त्रियोने मोहरुप फासामां नाखी, पोते विवेकहिन थइ, असत्य अने दोषरुप मार्गे दोरायछे. ए माटे प्रथम बाळकी अने स्त्रिओने सनातन धर्ममां रहेवानी अगत्य जणावी, उत्तम प्रकारनी सत्य शास्त्रमां कहेली नितिनी केळवणी आप्यार्थीज, पुनरावृत्ति ना थता बाळक अने बाळकीओने, उत्तम संस्कार थवानो संभवेछे. साथी जे घणुं करी छोकरांओने बाळपणथी मातुनो संग अधिक होयछे, तेथी ते जो उत्तम नीतिनी केळवणीवाळा अने सनातन धर्मनी मर्यादामां रहेनारा होय तो,अल्प श्रमथी बाळक अने बाळकीओ ते प्रमाणे वर्ति उत्तम संस्कारी थाय, अने तेथी पाछा सत्ययुगना सुर्यनो उदय थवानो संभव पासे आवी शके; अने हाल आपणा जाणवामांछे जे युरोप अने अमेरीका देशमां ज्ञाननी उन्नति थइ, श्रेष्ट स्थिति थवाना प्रथम कारणोमां मुख्य कारण प्रोक्ष सनातन धर्म अने उत्तम प्रकारनी स्त्रिकेळवणी एजछे. माटे आपणे आपणा प्राचिन आर्यदेशनी पद्धाति प्रमाणे, सनातन धर्मनी द्रढता करी, आपणा नीति अने सत शास्त्रमां कह्या प्रमाणे,अति उत्तम प्रकारनी नितिनी केळवणी, मुख्यत्वे करी आपणी बाळकी अने स्त्रिओने, अति आग्रहथी, आप्याथी पुर्वे थइ गइ एवी अति उत्तम गुणवान, नितिवान, अने विद्वान, गार्गि, मैत्रि, सिता, अने दमयंती विगेरे जेवी शुशीळ स्त्रियो थवार्थीज,आपणे पाछळ कह्युं एवी रीते

तत्वज्ञान, आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान अने योगादीक विगेरे गुप्त विद्या प्राप्त करवाने संस्कारी पात्र घणा पुरुष अने स्त्रि उत्पन थवानो संभवछे; अने तेथीज पुनरावृत्तिना शुभ काळचक्र थवानो संभवछे.

हालमां विषय भोगनी अपरीमित त्रष्णाना काळ चक्रना समये, कोइ विरला संस्कारी पुरुषोने उपर कह्युं तेवी रीतनुं, अति उत्तम ज्ञान प्राप्त करी राजयोगादिक गुप्त विद्यानुं ज्ञान प्राप्त करवानी इच्छा अने वृति होशे तो, आपणे जे पाछळ गुप्त विद्याना विद्यार्थिओने जे अल्प सुचना करीछे, तेनुं मनपुर्वक निवृतिना समये, अति आग्रहथी अध्यन, अथवा श्रवण, मनन, अने निदिध्यास करशेतो, तेनो सत्य साक्षातकार एनी मेळे थइ पींडब्रह्मांड अथवा व्यष्टिमां रहेलो जे अति प्रतापवान ज्ञानरुप सुर्य तेनी स्फुर्णा थइ, अधिक प्राकाश थवाथी, आगळ ए राजयोगनी अति उत्तम विद्यानुं अधिक ज्ञान प्राप्त करवाना मार्गो अने साधनो अल्प श्रमे निश्चय मेळवी शकशे केमजे एवा उत्तम संस्कारी उपर सांप्रत समयना महा समर्थ प्रतापवान अने केवळ परोपकारी महात्मा अने योगेश्वरनी द्रष्टि निरंतर रहेली होयछे. एटली अल्प सुचना करी आ महत्वना विषयनी समाप्ति करीये छइये.

समाप्त.

सूचना.

सनातन धर्म तरफथी प्रसिद्ध थयेला पुस्तको मा-त्र नीचे सही करनार पासेथी रोकडी किमते मळशे.

सुबोधपत्रिका पुर्वार्ध. ए अति उपयोगी प्र-थम पुस्तक १३१ प्रष्टनुंछे. एनी कीमत आना १२ छे. एनी प्रत थोडी रहीछे. तेथी सुज्ञ धर्म जीज्ञा-सुनी इच्छा हशे तो रोकडी कीमते नीचे सही करनार पासेथी जलदी मंगावी लेशे.

सुबोधपत्रिका उत्तार्ध. एना पृष्ट २७१छे तेनी कीमत रु१—४—०छे. ते पण नीचे सही करनार पासेथीज रोकडी कीमते मळशे.

ए शिवाय मुक्त शास्त्र नामनो मोटोग्रंथ एना कर्ता काळीदास पंडित चीकलीकर एमणे करेलो छे. तेमां राजयोगना केटलाएक अति उपयोगी अनुभव करवाना विषयो ब्रह्मजीज्ञासु जनोने ज-णावेला छे. एनी कीमत रु ५) छे. ए ग्रंथनी यो-ग्यता अने महत्व जोता ब्रह्मजीज्ञासुने ए कीमत अधिक लागशे नहीं. माटे जेनी इच्छा होय तेमणे रोकडी कीमते ए काळीदास पंडीत पासेथी ची-कली जीले सुरत ए ठेकाणेथी मंगावी लेवुं.

नौतमराम उत्तमराम त्रीवेदी
सुरत सनातनधर्म सभाना सम्पादक
हवाडीयोचकलो आमलीरानतुं नाकुं सुरत